



This is a digital copy of a book that was preserved for generations on library shelves before it was carefully scanned by Google as part of a project to make the world's books discoverable online.

It has survived long enough for the copyright to expire and the book to enter the public domain. A public domain book is one that was never subject to copyright or whose legal copyright term has expired. Whether a book is in the public domain may vary country to country. Public domain books are our gateways to the past, representing a wealth of history, culture and knowledge that's often difficult to discover.

Marks, notations and other marginalia present in the original volume will appear in this file - a reminder of this book's long journey from the publisher to a library and finally to you.

Usage guidelines

Google is proud to partner with libraries to digitize public domain materials and make them widely accessible. Public domain books belong to the public and we are merely their custodians. Nevertheless, this work is expensive, so in order to keep providing this resource, we have taken steps to prevent abuse by commercial parties, including placing technical restrictions on automated querying.

We also ask that you:

- + *Make non-commercial use of the files* We designed Google Book Search for use by individuals, and we request that you use these files for personal, non-commercial purposes.
- + *Refrain from automated querying* Do not send automated queries of any sort to Google's system: If you are conducting research on machine translation, optical character recognition or other areas where access to a large amount of text is helpful, please contact us. We encourage the use of public domain materials for these purposes and may be able to help.
- + *Maintain attribution* The Google "watermark" you see on each file is essential for informing people about this project and helping them find additional materials through Google Book Search. Please do not remove it.
- + *Keep it legal* Whatever your use, remember that you are responsible for ensuring that what you are doing is legal. Do not assume that just because we believe a book is in the public domain for users in the United States, that the work is also in the public domain for users in other countries. Whether a book is still in copyright varies from country to country, and we can't offer guidance on whether any specific use of any specific book is allowed. Please do not assume that a book's appearance in Google Book Search means it can be used in any manner anywhere in the world. Copyright infringement liability can be quite severe.

About Google Book Search

Google's mission is to organize the world's information and to make it universally accessible and useful. Google Book Search helps readers discover the world's books while helping authors and publishers reach new audiences. You can search through the full text of this book on the web at <http://books.google.com/>

NEDL TRANSFER



HN 6NØZ 1

BIBLIOTHECA

TURNERIANA.



Digitized by Google

SCHOENHOF
MONT STREET
STON

M 110

KC9452

H. W. Burr

1901

HOMERI ILIAS

EDIDIT

GUILLIELMUS DINDORF.

EDITIO QUINTA CORRECTIOR QUAM CURAVIT

C. HENTZE.

PARS II.

ILIADIS XIII—XXIV.

EDITIO STEREOTYPA.



LIPSIAE

IN AEDIBUS B. G. TEUBNERI .

MCM.

KC 9452



40451

LIPSIÆ: TYPIS B. G. TEUBNERI.

Index lectionum a quarta editione discrepantium.

| | Ed. V. | Ed. IV. |
|---|--------------------|---------------|
| N | 10 ἀλαδς σκοπιήν | ἀλαοσκοπιήν |
| | 21 ἐνθα δέ | ἐνθα τέ |
| | 191 χρός | χρόος |
| | 234 μεθίησι | μεθίησι |
| | 285 ἐπεί κεν | ἐπήν δῆ |
| | 288 βλῆο | βλεῖο |
| | 380 Ἰλιον | Ἰλίου |
| | 423 στενάχοντα | στενάχοντε |
| | 465 πάρος γε | πάρος περ |
| | 541 Αἰνείας δ' | ἐνθ' Αἰνέας |
| | 663 Πολυίδου | Πολυείδου |
| | 666 Πολύιδος | Πολύειδος |
| | 707 ταμεῖν ἐπὶ | τεμεῖ δέ τε |
| | 734 δὲ καὐτὸς | δὲ κ' αὐτὸς |
| Ξ | 32 ἐπὶ προμνησιν | ἐπὶ προμνησιν |
| | 67 οἷς ἐπι | ῆ ἐπι |
| | 135 ἀλαδς σκοπιήν | ἀλαοσκοπιήν |
| | 202 = 303 οἷ με | οἷ μ' ἐν |
| | 249 ἄλλοτε σῆ | ἄλλο τεῆ |
| | 294 ἔρος | ἔρως |
| | 357 Ποσειδάων | Ποσειδάον |
| | 364 δῆ αὐτε | δ' αὐτε |
| | 373 χερσὶν δὲ | χερσὶν τε |
| | 376 ἔχη | ἔχει |
| | 388 ἐκόσμεε | ἐκόσμει |
| | 398 περὶ δρυσὶν | ποτὶ δρυσὶν |
| O | 32 ἰδης | ἰδῆ |
| | 79 δ' ἐξ | δὲ κατ' |
| | 155 οὐδέ σφωε | οὐδέ σφωιν |
| | 179 πολεμίζων | πολεμίζων |
| | 211 μέν γε | μέν κε |
| | 247 φέριστε, θεῶν, | φέριστε θεῶν, |

| | Ed. V. | Ed. IV. |
|---|-------------------------------------|-----------------------------|
| | 287 δὴ αὐτ' | δ' αὐτ' |
| | 297 στήομεν | στείομεν |
| | 478 ὁ δὲ | ὁ δ' αὖ |
| | 522 Πανθόου | Πάνθου |
| | 563 αἰδομένων | αἰδομένων δ' |
| | 578 ἀράβησε δὲ τεύχε' ἐπ' αὐτῷ. | τὸν δὲ σκότος ὕσσε κάλυπεν. |
| | 602 ὀρέξειν | ὀρέξαι |
| | 626 ἀήτη | ἀήτης |
| Π | 21 Πηληϊος | Πηλέος |
| | 41 αἶ κ' ἐ με | αἶ κ' ἐμὲ |
| | 96 θείης | θήης |
| | 177 υἷι | υἱῷ |
| | 227 ὅτε μὴ | ὅτι μὴ |
| | 252 ἐξαπονέεσθαι | ἐξ ἀπονέεσθαι |
| | 290 ἀμφιφύβηθεν | ἀμφεφύβηθεν |
| | 463 Θρασύδημον | Θρασύμηλον |
| | 497 περιμάρναο | πέρι μάρναο |
| | 509 ὃ τ' | ὅτ' |
| | 638 ὀρώρη | ὀρώρει |
| | 690 ὅτε — ἐποτρύνει μάχε- σασθαι | ὅτε — ἐποτρύνῃσι μάχεσθαι |
| | 830 κεραῖξέμεν | κεραῖξέμεν |
| | 857 ἀνδροτήτα | ἀδροτήτα |
| P | 9 — 23 — 59 Πανθόου | Πάνθου |
| | 37 ἄρητον | ἀρητὸν |
| | 40 Πανθόω | Πάνθω |
| | 44 χαλκός | χαλκόν |
| | 207 ἐκνοστήσαντι | ἐκ νοστήσαντι |
| | 367 σόν | σὼν |
| | 368 μάχης ἐπὶ θ' ὅσων | μάχης ἐπὶ ὅσοι |
| | 395 δὲ σφισιν | γάρ σφισιν |
| | 403 γάρ ϛ' | γὰρ |
| | 423 ἐκάστου | ἐταίρου |
| | 488 τῷ κεν | τῷ κεν |
| | 489 ἐθέλοις | ἐθέλεις |

| | Ed. V. | Ed. IV. |
|---|--------------------|---------------|
| | 501 ἔπκω | ἐπκους |
| | 534 τε ἰδὲ | τ' ἡδὲ |
| | 572 δέ οἱ | τέ οἱ |
| | 587 πάρος γε | πάρος περ |
| | 623 ὃ τ' | ὅτ' |
| | 662 ἀντίον | ἀντίοι |
| | 681 ἰδοίτο | ἰδοιο |
| Σ | 71 εἶο | ἐῆος |
| | 128 ἐτήτυμα | ἐτήτυμον |
| | 194 ὃ γ' | ὅδ' |
| | 209 οἱ δὲ | οὔτε |
| | 499 ἀποκταμένον | ἀποφθιμένον |
| | 512 ξεργεν | ἐέργοι |
| Τ | 95 Ζῆν' | Ζεὺς |
| | 134 δὴ αὖτε | δ' αὖτε |
| | 155 μὴ δὴ οὕτως | μὴ δ' οὕτως |
| | 189 αὐτόθι τεῖος | αὐθι τέως |
| | 216 Πηλῆος | Πηλέος |
| | 242 τετέλεστό τε | τετέλεστο δὲ |
| | 261 ἐπένεικα | ἐπενεῖκα |
| | 265 ὃ τέ | ὅτις |
| | 298 ἄξειν δ' ἐνὶ | ἄξειν τ' ἐνὶ |
| | 351 ἐκκατέπαλτο | ἐκ κατέπαλτο |
| | 354 ἔκηται | ἔκοιτο |
| | 393 ἔσαν | ἔσαν |
| | 403 αὐτόθι | αὐτοῦ |
| Τ | 11 ἐνίξανον | ἐφίξανον |
| | 42 τεῖος | τόφρα δ' |
| | 84 ὀπίσχεο | ὀπέσχεο |
| | 203 ἰδμεν δ' | ἰδμεν τ' |
| | 212 ἐξαπονέεσθαι | ἐξ ἀπονέεσθαι |
| | 229 ῥηγμῖνα | ῥηγμῖνος |
| | 255 πολλά τ' ἐόντα | πόλλ' ἐτεά τε |
| | 335 συμβλήσαι | συμβλήσει |
| | 450 ἐρύσατο | ἐρύσσατο |
| | 486 νηδύι | πνεύμονι |

Ed. V.

Ed. IV.

| | | | |
|---|-----|-----------------------|------------------------|
| Φ | 84 | ὅς με σοὶ | ὅς μέ σοι |
| | 89 | τῆς δὲ | τῆςδε |
| | 144 | τῷ ῥ' Ἀχιλεὺς | τῷ δ' Ἀχιλεὺς |
| | 213 | ἐκφθέγγετο | ἐκ φθέγγετο |
| | 243 | ῥιζέων | ῥιζῶν |
| | 248 | θεὸς μέγας — ἐπ' αὐτῷ | μέγας θεὸς — ἐπ' αὐτὸν |
| | 303 | ἴσχειν | ἔσχειν |
| | 311 | ἐμπύμπληθι | ἐμπίπληθι |
| | 344 | κατ' αὐτὸν | κατ' αὐτόθ' |
| | 351 | τε ἰδὲ | τ' ἡδὲ |
| | 376 | καιομένη, καίωσι | θαιομένη, θάιωσι |
| | 408 | τεύχεα δ' | τεύχεά τ' |
| | 421 | δῇ αὖθ' | δ' αὖθ' |
| | 433 | Ἴλιον | Ἰλίου |
| | 453 | σὸν μὲν | σοὶ μὲν |
| | 463 | πτολεμίζω | πτολεμίζω |
| | 520 | παρὰ πατρὶ | παρ Ζηνὶ |
| | 530 | ὄτρυνων | ὄτρυνέων |
| | 592 | ἀμφὶ δέ οἱ | ἀμφὶ δέ μιν |
| | 598 | ἐκπεμπε | ἐκ πέμπε |
| | 609 | πεφεύγειν | πεφεύγοι |
| | 610 | ἀσπασίως | ἐσσυμένως |
| X | 30 | ὃ γ' | ὃ δ' |
| | 109 | κατακτείναντι | κατακτείναντα |
| | 110 | αὐτῷ | αὐτὸν |
| | 165 | περιδινηθήτην | πέρη δινηθήτην |
| | 244 | ἦ κεν | εἴ κεν |
| | 246 | ἦ κεν | ἦ κεν |
| | 302 | υἷ | υἷεῖ |
| | 322 | τεύχεα | τεύχη |
| | 348 | ὥς | ὥς |
| | 349 | εἵκοσι νήριτ' | εἵκοσινήριτ' |
| | 363 | ἀνδροτήτα | ἀδροτήτα |
| | 382 | κ' ἔτι | κέ τι |
| | 400 | ἄέκοντε | ἄκοντε |

Ed. V.

Ed. IV.

| | |
|-----------------------|--------------------|
| 420 τῷ γε | τῷδε |
| 435 καί σφι | κέ σφι |
| 444 ἐκνοστήσαντι | ἐκ νοστήσαντι |
| 451 δέ μοι | δ' ἐμοί |
| 469 τε ἰδὲ | τ' ἡδὲ |
| Ψ 84 τράφομέν περ | ἐτράφημεν |
| 127 παρακάμβalon | παρακάββαλον |
| 159 ἀμφι πονησόμεθ' | ἀμφιπονησόμεθ' |
| 164 ἐκατόμπεδον | ἐκατόμποδον |
| 178 φίλον τ' | φίλον δ' |
| 220 ἀφυσσόμενος | ἀφυσσάμενος |
| 287 ἔγερθεν | ἔγερθεν |
| 477 ἐκδέρεται | ἐκ δέρεται |
| 547 τῷ κ' | τό κεν |
| 620 ὄψη | ὄψει |
| 640 παρ' αὐτόθι | παρ' αὐτόφι |
| 678 Μηκιστῆος | Μηκιστέος |
| 683 παρακάμβαλεν | παρακάββαλεν |
| 694 ἀνέπαλτο. ἀτὰρ | ἀνέπαλτ'. ἀτὰρ |
| 721 ἐυκνήμιδες Ἀχαιοί | ἐυκνήμιδας Ἀχαιούς |
| 727 καὶ δ' ἔπεσ' | καὶ δ' ἔβαλ' |
| 789 ἐμεῦ | ἐμεῖ' |
| Ω 6 ἀνδροτῆτά τε | ἀδροτῆτά τε |
| 7 ἄλγεα | ἄλγη |
| 17 τὸν δέ τ' ἔασκεν | τόνδε δ' ἔασκεν |
| 53 νεμεσσηθείμεν | νεμεσσηθῶμεν οἱ |
| 124 ἐντύνοντ' ἄριστον | ἐντύνοντο ἄριστον |
| 202 ἔκλε' | ἔκλεν |
| 207 ὃ γε | ὃδε |
| 213 ἄντιτα | ἄν τιτὰ |
| 322 γέρον ξεστοῦ | γεραῖος ἐοῦ |
| 377 = 387 ἔξεσσι | ἔξ ἐσσι |
| 397 ἔξειμι | ἔξ εἰμι |
| 473 τῷ | τῷ |
| 492 Τροίηθεν ἰόντα | Τροίηθε μολόντα |
| 529 = 531 δῶη | δοίη |

Ed. V.

563 δὲ σὲ
 578 ἐνσώατρον
 581 δοίῃ
 635 ὄφρα καὶ
 670 πόλεμον τόσσον
 722 δὴ θορήνεον
 741 ἄρρητον
 789 ἥγρετο

Ed. IV.

δέ σε
 ἐνέεστον
 δώῃ
 ὄφρα κεν
 τόσσον πόλεμον
 ἄρ' ἐθορήνεον
 ἀρητὸν
 ἔγρετο



ΙΛΙΑΔΟΣ Ν.

Μάχη ἐπὶ ταῖς ναυσίν.

Ζεὺς δ' ἐπεὶ οὖν Τρῳᾶς τε καὶ Ἑκτορα νηυσὶ πέλασσεν,
 τοὺς μὲν ἕα παρὰ τῇσι πόνον τ' ἐχέμεν καὶ οἰζὺν
 νωλεμέως, αὐτὸς δὲ πάλιν τρέπεν ὅσσε φαιινῶ,
 νόσφιν ἐφ' ἱπποπόλων Θρηκῶν καθορῶμενος αἶαν
 Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων καὶ ἀγαυῶν Ἰππημολγῶν 5
 γλακτοφάγων, Ἀβίων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων.
 ἐς Τροίην δ' οὐ πάμπαν ἔτι τρέπεν ὅσσε φαιινῶ·
 οὐ γὰρ ὃ γ' ἀθανάτων τιν' ἐέλεπετο ὃν κατὰ θυμὸν
 ἐλθόντ' ἢ Τρώεσσιν ἀρηξέμεν ἢ Δαναοῖσιν.

οὐδ' ἀλαδὲ σκοπιήν εἶχε κρείων ἐνοσίχθων· 10
 καὶ γὰρ ὁ θαυμάζων ἦστο πτόλεμόν τε μάχην τε
 ὑποῦ ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς Σάμου ὑληέσσης
 Θρηικίης· ἐνθεν γὰρ ἐφαίνετο πᾶσα μὲν Ἰδη,
 φαίνετο δὲ Πριάμοιο πόλις καὶ νῆες Ἀχαιῶν·
 ἐνθ' ἄρ' ὃ γ' ἐξ ἁλὸς ἕζετ' ἰών, ἐλείριε δ' Ἀχαιοὺς 15
 Τρῶσιν δαμναμένους, Διὶ δὲ κρατερῶς ἐνεμέσσα.
 αὐτίκα δ' ἐξ ὕρεος κατεβήσεται παιπαλόεντος
 κραιπνὰ ποσὶ προβιβᾶς· τρέμε δ' οὐρεα μακρὰ καὶ ὕλη
 ποσσὶν ὑπ' ἀθανάτοισι Ποσειδάωνος ἰόντος.
 τρὶς μὲν ὀρέξατ' ἰών, τὸ δὲ τέτρατον ἵκετο τέκμωρ, 20
 Αἰγᾶς· ἐνθα δέ οἱ κλυτὰ δῶματα βένθεσι λίμνης
 χροῦσα μαρμαίροντα τετεύχεται, ἄφθιτα αἰεὶ.
 ἐνθ' ἐλθὼν ὑπ' ὄχεσφι τιτύσκειτο χαλκόποδ' ἵππων

ὠκυπέτα, χρυσέησιν ἐθείρησιν κομόωντε,
 χρυσὸν δ' αὐτὸς ἔδυνε περὶ χροῦ, γέντο δ' ἱμάσθλην 25
 χρυσεῖην ἐτύκτον, ἐοῦ δ' ἐπεβήσετο δίφρου.
 βῆ δ' ἐλάαν ἐπὶ κύματ'· ἄταλλε δὲ κήτε' ὑπ' αὐτοῦ
 πάντοθεν ἐκ κευθμῶν, οὐδ' ἠγγυόησεν ἄνακτα·
 γηθοσύνη δὲ θάλασσα διίστατο· τοὶ δὲ πέτοντο
 ῥίμφα μάλ', οὐδ' ὑπένερχε διαίνετο χάλκεος ἄξων. 30
 τὸν δ' ἐς Ἀχαιῶν νῆας ἐύσκαρθμοι φέρον ἵπποι.

ἔστι δέ τι σπέος εὐρὺ βαθείης βένθεσι λίμνης,
 μεσσηγὺς Τενέδοιο καὶ Ἰμβρου παιπαλοέσσης·
 ἐνθ' ἵππους ἔστησε Ποσειδάων ἐνοσίχθων
 λύσας ἐξ ὀχέων, παρὰ δ' ἀμβρόσιον βάλεν εἶδαρ 35
 ἔδμεναι· ἀμφὶ δὲ ποσσὶ πέδας ἔβαλε χρυσείας
 ἄρρηκτους ἀλύτους, ὅφρ' ἔμπεδον αὐθι μένοιεν
 νοστήσαντα ἄνακτα. ὁ δ' ἐς στρατὸν ὥχετ' Ἀχαιῶν

Τρῶες δὲ φλογὶ ἴσοι ἀολλέες ἦε θυέλλη
 Ἔκτορι Πριαμίδῃ ἅμοτον μεμαῶτες ἔποντο, 40
 ἄβρομοι αὐίαχοι· ἔλποντο δὲ νῆας Ἀχαιῶν
 αἰρήσειν, κτενέειν δὲ παρ' αὐτόφιν πάντας ἀρίστους.
 ἀλλὰ Ποσειδάων γαιήοχος ἐννοσίγαιος
 Ἀργείους ὤτρυνε, βαθείης ἐξ ἁλὸς ἐλθῶν,
 εἰσάμενος Κάλχαντι δέμας καὶ ἀτειρέα φωνήν. 45
 Αἶαντε πρῶτω προσέφη, μεμαῶτε καὶ αὐτῷ·
 „Αἶαντε, σφῶ μέν τε σαώσετε λαὸν Ἀχαιῶν
 ἀλκῆς μνησαμένω, μηδὲ κρυεροῖο φόβοιο.
 ἄλλη μὲν γὰρ ἐγὼ γ' οὐ δεΐδια χεῖρας ἀάπτους
 Τρώων, οἳ μέγα τεῖχος ὑπερκατέβησαν ὁμίλῳ· 50
 ἔξουσιν γὰρ πάντας ἐκκνήμιδες Ἀχαιοί·
 τῇ δὲ δὴ αἰνότατον περιδιδίκα, μή τι πάθωμεν,
 ἦ ῥ' ὃ γ' ὁ λυσσώδης φλογὶ εἵκελος ἠγεμονεύει
 Ἔκτωρ, ὃς Διὸς εὖχετ' ἐρισθενέος πάϊς εἶναι.

σφῶιν δ' ὧδε θεῶν τις ἐνὶ φρεσὶ ποιήσειεν, 55
 αὐτῷ θ' ἐστάμεναι κρατερῶς καὶ ἀνωγέμεν ἄλλους·
 τῷ κε καὶ ἐσσύμενόν περ ἐρωήσαιτ' ἀπὸ νηῶν
 ὠκυπόρων, εἰ καὶ μιν Ὀλύμπιος αὐτὸς ἐγείρει.“

ἦ καὶ σκηπανίῳ γαιήοχος ἐννοσίγαιος
 ἀμφοτέρω κεκοπῶς πλήσεν μένεος κρατεροῖο, 60
 γυῖα δ' ἔδηκεν ἑλαφρά, πόδας καὶ χεῖρας ὑπερθεν.
 αὐτὸς δ', ὥς τ' ἰρηξ ὠκύπτερος ὥρτο πέτεσθαι,
 ὅς ῥά τ' ἀπ' αἰγίλιπος πέτρης περιμήκεος ἀρθεῖς
 ὁρμήσῃ πεδίοιο διώκειν ὄρνεον ἄλλο,
 ὥς ἀπὸ τῶν ἦιξε Ποσειδάων ἐνοσίχθων. 65

τοῖιν δ' ἔγνω πρόσθεν Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας,
 αἶψα δ' ἄρ' Αἰάντα προσέφη Τελαμώνιον υἱόν·
 „Αἴαν, ἐπεὶ τις νῶι θεῶν, οἳ Ὀλυμπον ἔχουσιν,
 μάντεϊ εἰδόμενος κέλεται παρὰ νηυσὶ μάχεσθαι —
 οὐδ' ὃ γε Κάλχας ἐστί, θεοπρόπος οἰωνιστής· 70
 ἰχνια γὰρ μετόπισθε ποδῶν ἠδὲ κνημῶν
 ρεῖ ἔγνω ἀπιδόντος· ἀρίγνωτοι δὲ θεοὶ περ.
 καὶ δ' ἐμοὶ αὐτῷ θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι φίλοισιν
 μᾶλλον ἐφορμάται πολεμίζειν ἠδὲ μάχεσθαι,
 μαιμῶωσι δ' ἐνερθε πόδες καὶ χεῖρες ὑπερθεν.“ 75

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη Τελαμώνιος Αἴας·
 „οὔτω νῦν καὶ ἐμοὶ περὶ δούρατι χεῖρες ἄαπτοι
 μαιμῶσιν, καὶ μοι μένος ὥρορε, νέρθε δὲ ποσσὶν
 ἐσσυμαι ἀμφοτέροισι· μενοινῶω δὲ καὶ οἶος
 Ἔκτορι Πριαμίδῃ ἄμοτον μεμαῶτι μάχεσθαι.“ 80

ὥς οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον
 χάρμῃ γηθόσυννοι, τήν σφιν θεὸς ἔμβαλε θυμῷ·
 τόφρα δὲ τοὺς ὕπιδεν γαιήοχος ὥρσεν Ἀχαιοὺς,
 οἳ παρὰ νηυσὶ θοῇσιν ἀνέψυχον φίλον ἦτορ.
 τῶν ῥ' ἅμα τ' ἀργαλέῳ καμάτῳ φίλα γυῖα λέλυντο, 85

καὶ σφιν ἄχος κατὰ θυμὸν ἐρίγνετο δερκομένοισιν
 Τρῶας, τοὶ μέγα τεῖχος ὑπερκατέβησαν ὀμίλῳ·
 τοὺς οἱ γ' εἰσορόωντες ὑπ' ὀφρύσι δάκρυα λείβον·
 οὐ γὰρ ἔφην φεῦξεσθαι ὑπὲρ κακοῦ. ἀλλ' ἐνοσίχθων
 ῥεῖα μετεισάμενος κρατερὰς ὥτρυνε φάλαγγας. 90
 Τεῦκρον ἐπὶ πρῶτον καὶ Αἴητον ἦλθε κελεύων
 Πηνέλεων θ' ἥρωα Θόαντά τε Διήλυρόν τε
 Μηριόνην τε καὶ Ἀντίλοχον, μήστωρας αὐτῆς·
 τοὺς δ' οἱ γ' ἐποτρύνων ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „αἰδώς, Ἀργεῖοι, κοῦροι νέοι· ὕμιν ἐγὼ γε 95
 μαρναμένοισι πέποιθα σαωσέμεναι νέας ἀμάς·
 εἰ δ' ὑμεῖς πολέμοιο μεθήσετε λευγαλέοιο,
 νῦν δὴ εἶδεται ἡμαρ ὑπὸ Τρώεσσι δαμῆναι.
 ὦ πόποι, ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὁρῶμαι,
 δεινόν, ὃ οὐ ποτ' ἐγὼ γε τελευτήσεσθαι ἔφασκον, 100
 Τρῶας ἐφ' ἡμετέρας ἵεναι νέας, οἳ τὸ πάρος περ
 φυζακινῆς ἐλάφοισιν εἰόκεσαν, αἳ τε καθ' ὕλην
 θώων παρδαλίων τε λύκων τ' ἦια πέλονται
 αὐτως ἡλάσκουσαι ἀνάλκιδες, οὐδ' ἐπὶ χάρμῃ·
 ὥς Τρῶες τὸ πρὶν γε μένος καὶ χεῖρας Ἀχαιῶν 105
 μίμνειν οὐκ ἐθέλεσκον ἐναντίον, οὐδ' ἡβαιόν.
 νῦν δὲ ἕκας πόλιος κοίλῃς ἐπὶ νηυσὶ μάχονται
 ἡγεμόνος κακότητι μεθημοσύνησί τε λαῶν,
 οἳ κείνῳ ἐρίσαντες ἀμυνέμεν οὐκ ἐθέλουσιν
 νηῶν ὠκυπόρων, ἀλλὰ κτείνονται ἀν' αὐτάς. 110
 ἀλλ' εἰ δὴ καὶ πάμπαν ἐτήτυμον αἰτίος ἐστίν
 ἥρως Ἀτρεΐδης εὐρὺ κρείων Ἀγαμέμνων,
 οὔνεκ' ἀπητίμησε ποδῶκεα Πηλεΐωνα,
 ἡμέας γ' οὐ πως ἔστι μεθιέμεναι πολέμοιο.
 ἀλλ' ἀκεῶμεθα θᾶσσον· ἀκεσταί τοι φρένες ἐσθλῶν. 115
 ὑμεῖς δ' οὐκέτι καλὰ μεθίετε θούριδος ἀλκῆς

πάντες ἄριστοι ἔόντες ἀνὰ στρατόν· οὐδ' ἂν ἐγὼ γε
ἀνδρὶ μαχησαίμην, ὅς τις πολέμοιο μεθιή
λυγρὸς ἐών· ὑμῖν δὲ νεμεσῶμαι περὶ κῆρι.

ὦ πέποινες, τάχα δὴ τι κακὸν ποιήσετε μεῖζον 120
τῇδε μεθημοσύνη· ἀλλ' ἐν φρεσὶ θέσθε ἕκαστος
αἰδῶ καὶ νέμεσιν· δὴ γὰρ μέγα νεῖκος ὄρωρεν.

Ἐκτωρ δὴ παρὰ νηυσὶ βοήν ἀγαθὸς πολεμίζει
καρτερὸς, ἔρρηξεν δὲ πύλας καὶ μακρὸν ὄχηα.

ὥς ῥα κελευτιῶν γαίηοχος ὥρσεν Ἀχαιοὺς. 125

ἀμφὶ δ' ἄρ' Αἴαντας δοιοὺς ἴσταντο φάλαγγες
καρτεραί, ἃς οὔτ' ἂν κεν Ἄρης ὀνόσαιτο μετελθὼν
οὔτε κ' Ἀθηναίη λαοσσόος· οἱ γὰρ ἄριστοι

κρινθέντες Τρῳᾶς τε καὶ Ἐκτορα δῖον ἔμιμνον
φράξαντες δόρυ δουρί, σάκος σάκει προθελύμνω· 130

ἀσπίς ἄρ' ἀσπίδ' ἔρειδε, κόρυς κόρυν, ἀνέρα δ' ἀνῆρ·
ψαῦον δ' ἱππόκομοι κόρυθες λαμπροῖσι φάλοισιν
νεύοντων· ὥς πυκνοὶ ἐφέστασαν ἀλλήλοισιν.

ἔγχεα δ' ἐπτύσσοντο θρασειάων ἀπὸ χειρῶν
σειόμεν'· οἱ δ' ἰθὺς φρόνεον, μέμασαν δὲ μάχεσθαι. 135

Τρῶες δὲ προύτυψαν ἀολλέες, ἦρχε δ' ἄρ' Ἐκτωρ
ἀντικρὺς μεμαῶς, ὀλοοίτροχος ὥς ἀπὸ πέτρης,
ὃν τε κατὰ στεφάνης ποταμὸς χειμάρροος ὥση,
ῥήξας ἀσπέτῳ ὕμβρῳ ἀναιδέος ἔχματα πέτρης·

ὑψὶ δ' ἀναθρόσκων πέτεται, κτυπέει δέ θ' ὑπ' αὐτοῦ 140
ῥῆγ' ὁ δ' ἀσφαλέως θέει ἔμπεδον, εἶος ἵκηται
ἰσόπεδον· τότε δ' οὐ τι κυλίνδεται ἐσσύμενός περ·

ὥς Ἐκτωρ εἶως μὲν ἀπείλει μέχρι θαλάσσης
ῥέα διελεύσεσθαι κλισίας καὶ νῆας Ἀχαιῶν

κτείνων· ἀλλ' ὅτε δὴ πυκινῆς ἐνέκυρσε φάλαγγιν, 145
στῇ ῥα μάλ' ἐγχιρμυθθεῖς· οἱ δ' ἀντίοι νῆες Ἀχαιῶν
νύσσοντες ξίφεσιν τε καὶ ἔγχεσιν ἀμφιγυνοῖσιν

ᾤσαν ἀπὸ σφείων· ὁ δὲ χασσάμενος πελεμίσθη.
 ἦυσεν δὲ διαπρῦσιον Τρώεσσι γεγωνῶς·

„Τρῶες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι ἀγχιμαχῆταί, 150
 παρμένετ’· οὐ τοι δηρὸν ἐμὲ σχήσουσιν Ἀχαιοί,
 καὶ μάλα πυργηδὸν σφέας αὐτοὺς ἀρτύναντες,
 ἀλλ’ ὀίω, χάσσονται ὑπ’ ἔργχeos, εἰ ἐτέόν με
 ᾤρσε θεῶν ᾠριστος, ἐρίγδουπος πόσις Ἥρης.“

ὣς εἰπὼν ᾤτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἐκάστου. 155
 Δηϊφοβος δ’ ἐν τοῖσι μέγα φρονέων ἐβεβήκειν
 Πριαμίδης, πρόσθεν δ’ ἔχεν ἀσπίδα πάντοσ’ ἐίσην,
 κοῦφα ποσὶ προβιβὰς καὶ ὑπασπίδια προποδίζων.

Μηριόνης δ’ αὐτοῖο τιτύσκετο δουρὶ φαεινῷ,
 καὶ βάλεν, οὐδ’ ἀφάμαρτε, κατ’ ἀσπίδα πάντοσ’ ἐίσην 160
 ταυρεῖν· τῆς δ’ οὐ τι διήλασεν, ἀλλὰ πολὺ πρὶν
 ἐν καυλῷ ἐάγη δολιχὸν δόρυ· Δηϊφοβος δὲ
 ἀσπίδα ταυρεῖν σχεθ’ ἀπὸ ἔο, δεῖσε δὲ θυμῷ
 ἔγχος Μηριόναο δαΐφρονος· αὐτὰρ ὃ γ’ ἦρως
 ἄψ ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο, χῶσατο δ’ αἰνῶς 165
 ἀμφότερον, νίκης τε καὶ ἔργχeos, ὃ ξυνέαξεν.
 βῆ δ’ ἰέναι παρὰ τε κλισίας καὶ νῆας Ἀχαιῶν
 οἰσόμενος δόρυ μακρόν, ὃ οἱ κλισίῃφι λέλειπτο.

οἱ δ’ ἄλλοι μάρναντο, βοή δ’ ἄσβεστος ὀρώρειν.
 Τεῦκρος δὲ πρῶτος Τελαμώνιος ἄνδρα κατέκτα, 170
 Ἴμβριον αἰχμητήν, πολυῖππου Μέντορος υἱόν.
 ναῖε δὲ Πηδαιὸν πρὶν ἐλθεῖν νῆας Ἀχαιῶν,
 κούρην δὲ Πριάμοιο νόθην ἔχε, Μηδεσικάστην·
 αὐτὰρ ἐπεὶ Δαναῶν νέες ἤλυθον ἀμφιέλισσαι,
 ἄψ εἰς Ἴλιον ἦλθε, μετέπρεπε δὲ Τρώεσσιν, 175
 ναῖε δὲ παρ Πριάμῳ· ὁ δέ μιν τίεν ἴσα τέκεσσιν.
 τὸν δ’ υἱὸς Τελαμῶνος ὑπ’ οὔατος ἔργχει μακροῦ
 νύξ’, ἐκ δ’ ἔσπασεν ἔγχος· ὁ δ’ αὐτ’ ἔπεσεν μελίῃ ὣς,

ἥ τ' ὄρεος κορυφῇ ἔκαθεν περιφαινομένοιο
 χαλκῷ ταμνομένη τέρενα χθονὶ φύλλα πελάσση· 180
 ὣς πέσεν, ἀμφὶ δέ οἱ βράχε τεύχεα ποικίλα χαλκῷ.
 Τεῦκρος δ' ὠρμήθη μεμαῶς ἀπὸ τεύχεα δῦσαι.
 Ἐκτωρ δ' ὀρμηθέντος ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ.
 ἀλλ' ὁ μὲν ἅντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος
 τυτθόν, ὁ δ' Ἀμφίμαχον Κτεάτου υἱ' Ἀκτορίωνος 185
 νισσόμενον πολεμόνδε κατὰ στήθος βάλε δουρί.
 δούπησεν δὲ πεσών, ἀράβησε δὲ τεύχε' ἐπ' αὐτῷ.
 Ἐκτωρ δ' ὠρμήθη κόρυθα κροτάφοις ἀραρυῖαν
 κρατὸς ἀφαρπάξαι μεγαλήτορος Ἀμφιμάχοιο.
 Αἴας δ' ὀρμηθέντος ὀρέξατο δουρὶ φαεινῷ 190
 Ἐκτορος· ἀλλ' οὐ πη χρῶς εἶσατο, πᾶς δ' ἄρα χαλκῷ
 σμερδαλέῳ κεκάλυφθ'. ὁ δ' ἄρ' ἀσπίδος ὀμφαλὸν οὔτα,
 ὥς τε δέ μιν σθένει μέγαν· ὁ δὲ χάσσαι' ὀπίσσω
 νεκρῶν ἀμφοτέρων, τοὺς δ' ἐξείρυσσαν Ἀχαιοί·
 Ἀμφίμαχον μὲν ἄρα Στιχίος διὸς τε Μενεσθεύς, 195
 ἀρχοὶ Ἀθηναίων, κόμισαν μετὰ λαὸν Ἀχαιῶν,
 Ἴμβριον αὖτ' Αἴαντε, μεμαότε θούριδος ἀλκῆς.
 ὣς τε δὴ αἶγα λέοντε κυνῶν ὑπο καρχαροδόντων
 ἀρπάξαντε φέρητον ἀνὰ ῥωπήια πυκνά,
 ὑψοῦ ὑπὲρ γαίης μετὰ γαμφηλῆσιν ἔχοντε, 200
 ὥς ῥα τὸν ὑψοῦ ἔχοντε δύω Αἴαντε κορυστὰ
 τεύχεα συλήτην· κεφαλὴν δ' ἀπαλῆς ἀπὸ δειρῆς
 κόψεν Οἰλιάδης, κεχολωμένος Ἀμφιμάχοιο,
 ἦκε δέ μιν σφαιρηδὸν ἐλιξάμενος δι' ὀμίλου·
 Ἐκτορι δὲ προπάρουθε ποδῶν πέσεν ἐν κονίῃσιν. 205
 καὶ τότε δὴ περὶ κῆρι Ποσειδάων ἐχολώθη
 νῆωνοιο πεσόντος ἐν αἰνῇ δηιοτήτι,
 βῆ δ' ἰέναι παρὰ τε κλισίας καὶ νῆας Ἀχαιῶν
 ὀτρυνέων Δαναούς, Τρώεσσι δὲ κήδε' ἔτευχεν.

Ἴδομενεὺς δ' ἄρα οἱ δουρικλυτοὺς ἀντεβόλησεν, 210
 ἐρχόμενος παρ' ἐταίρου, ὃ οἱ νέον ἐκ πολέμοιο
 ἦλθε κατ' ἰγνύην βεβλημένος ὀξεί χαλκῷ.
 τὸν μὲν ἐταῖροι ἐνεικαν, ὃ δ' ἰητροῖς ἐπιτείλας
 ἦεν ἐς κλισίην· ἔτι γὰρ πολέμοιο μενοίνα 215
 ἀντιάαν. τὸν δὲ προσέφη κρείων ἐνοσίχθων
 εἰσάμενος φθογγὴν Ἀνδραίμονος νῆι Θόαντι,
 ὃς πάσῃ Πλευρώνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι
 Αἰτωλοῖσιν ἄνασσε, θεὸς δ' ὥς τίετο δῆμῳ·
 „Ἴδομενεῦ Κρητῶν βουληφόρε, ποῦ τοι ἀπειλαὶ 220
 οἴχονται, τὰς Τρωσὶν ἀπείλεον υἷες Ἀχαιῶν;“
 τὸν δ' αὖτ' Ἴδομενεὺς Κρητῶν ἀγρὸς ἀντίον ἠΰδα·
 „ὦ Θόαν, οὗ τις ἀνὴρ νῦν γ' αἴτιος, ὅσσον ἐγὼ γε
 γιννώσκω· πάντες γὰρ ἐπιστάμεθα πτολεμίζειν.
 οὔτε τινὰ θεὸς ἴσχει ἀκήριον οὔτε τις ὄκνῳ 225
 εἰκὼν ἀνδύεται πόλεμον κακόν· ἀλλὰ που οὕτως
 μέλλει δὴ φίλον εἶναι ὑπερμενεί Κρονίωνι,
 νωνύμους ἀπολέσθαι ἀπ' Ἄργεος ἐνθάδ' Ἀχαιοὺς.
 ἀλλὰ Θόαν, καὶ γὰρ τὸ πάρος μενεδήιος ἦσθα,
 ὀτρύνεις δὲ καὶ ἄλλον, ὅθι μεθιέντα ἴδῃαι·
 τῷ νῦν μῆτ' ἀπόληγε κέλευέ τε φωτὶ ἐκάστω.“ 230
 τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα Ποσειδάων ἐνοσίχθων·
 „Ἴδομενεῦ, μὴ κεῖνος ἀνὴρ ἔτι νοστήσειεν
 ἐκ Τροίης, ἀλλ' αὖθι κυνῶν μέληθηθρα γένοιτο,
 ὃς τις ἐπ' ἥματι τῷδε ἐκὼν μεθιῇσι μάχεσθαι.
 ἀλλ' ἄγε τεύχεα δεῦρο λαβὼν ἴθι· ταῦτα δ' ἅμα χρὴ 235
 σπεύδειν, αἶ κ' ὄφελός τι γενώμεθα καὶ δῦ' ἐόντε.
 συμφερτὴ δ' ἄρετὴ πέλει ἀνδρῶν καὶ μάλα λυγρῶν·
 νῶϊ δὲ καὶ κ' ἀγαθοῖσιν ἐπισταίμεσθα μάχεσθαι.“
 ὥς εἰπὼν ὃ μὲν αὖτις ἔβη θεὸς ἅμ' πόνον ἀνδρῶν·
 Ἴδομενεὺς δ' ὅτε δὴ κλισίην ἐύτυχτον ἵκανεν, 240

δύσεται τεύχεα καλὰ περὶ χροῖ, γέντο δὲ δοῦρε,
 βῆ δ' ἱμεν ἄστεροπῇ ἐναλίγκιος, ἦν τε Κρονίων
 χειρὶ λαβὼν ἐτίναξεν ἀπ' αἰγλήεντος Ὀλύμπου,
 δεικνὺς σῆμα βροτοῖσιν· ἀρίζηλοι δέ οἱ αὐγαί·
 ὥς τοῦ χαλκὸς ἐλαμπε περὶ στήθεσσι θεόντος. 245
 Μηριόνης δ' ἄρα οἱ θεράπων ἐὺς ἀντεβόλησεν
 ἐγγὺς ἔτι κλισίης· μετὰ γὰρ δόρυ χάλκεον ἦεν
 οἰσόμενος· τὸν δὲ προσέφη σθένης Ἰδομενῆος·

„Μηριόνη Μόλου νῆε πόδας ταχύ, φίλταδ' ἐταίρων,
 τίπτ' ἤλθες πόλεμόν τε λιπὼν καὶ δημοτῆτα; 250
 ἦέ τι βέβληαι, βέλεος δέ σε τείρει ἀκωκή,
 ἦέ τευ ἀγγελίης μετ' ἔμ' ἤλυθες; οὐδέ τοι αὐτὸς
 ἦσθαι ἐνὶ κλισίῃσι λιλαίομαι, ἀλλὰ μάχεσθαι.“

τὸν δ' αὖ Μηριόνης πεπνυμένος ἀντίον ἦ᾽δα·
 [„Ἰδομενεῦ Κρητῶν βουληφόρε χαλκοχιτώνων,] 255
 ἔρχομαι, εἴ τί τοι ἔγχος ἐνὶ κλισίῃσι λέλειπται,
 οἰσόμενος· τό νυ γὰρ κατεάξαμεν, ὃ πρὶν ἔχεσκον,
 ἀσπίδα Διηφόβοιο βαλὼν ὑπερηνορέοντος.“

τὸν δ' αὖτ' Ἰδομενεὺς Κρητῶν ἀγὸς ἀντίον ἦ᾽δα·
 „δούρατα δ', αἰ κ' ἐθέλῃσθα, καὶ ἔν καὶ εἴκοσι δῆεις 260
 ἔστεῶτ' ἐν κλισίῃ πρὸς ἐνώπια παμφανόωντα,
 Τρώϊα, τὰ κταμένων ἀποαίνυμαι. οὐ γὰρ οἶω
 ἀνδρῶν δυσμενέων ἐκάς ἰστάμενος πολεμίζειν·
 τῷ μοι δούρατά τ' ἔστι καὶ ἀσπίδες ὀμφαλόεσσαι
 καὶ κόρυθες καὶ θώρηκες λαμπρὸν γανώοντες.“ 265

τὸν δ' αὖ Μηριόνης πεπνυμένος ἀντίον ἦ᾽δα·
 „καὶ τοι ἔμοι παρὰ τε κλισίῃ καὶ νηὶ μελαίνῃ
 πόλλ' ἔναρα Τρώων· ἀλλ' οὐ σχεδόν ἐστιν ἐλέσθαι.
 οὐδὲ γὰρ οὐδ' ἐμέ φημι λελασμένον ἔμμεναι ἀλκῆς,
 ἀλλὰ μετὰ πρῶτοις μάχην ἀνὰ κυδιάνειραν 270
 ἵσταμαι, ὅπποτε νείκος ὀρώρηται πολέμοιο.

ἄλλον πού τινα μᾶλλον Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων
λήθω μαρνάμενος, σὲ δὲ ἰδμεναι αὐτὸν ὀίω.“

τὸν δ' αὖτ' Ἰδομενεὺς Κρητῶν ἀγὸς ἀντίον ἠΐδα·
„οἶδ', ἀρετὴν οἷός ἐσσι· τί σε χρὴ ταῦτα λέγεσθαι; 275
εἰ γὰρ νῦν παρὰ νηυσὶ λεγοίμεθα πάντες ἄριστοι
ἐς λόχον, ἔνθα μάλιστ' ἀρετὴ διαειδεται ἀνδρῶν, —
ἐνθ' ὃ τε δειλὸς ἀνὴρ, ὅς τ' ἄλκιμος, ἐξεφαάνθη·
τοῦ μὲν γὰρ τε κακοῦ τρέπεται χρῶς ἄλλυδις ἄλλη,
οὐδέ οἱ ἀτρέμας ἦσθαι ἐρητύετ' ἐν φρεσὶ θυμός, 280
ἀλλὰ μετοκλάζει καὶ ἐπ' ἀμφοτέρους πόδας ἵξει,
ἐν δέ τέ οἱ κραδίη μεγάλα στέρνοισι πατάσσει
κῆρας ὀιομένω, πάταγος δέ τε γίγνεται ὀδόντων·
τοῦ δ' ἀγαθοῦ οὐτ' ἄρ' τρέπεται χρῶς οὔτε τι λήν
ταρβεί, ἐπεὶ κεν πρῶτον ἐσλίζηται λόχον ἀνδρῶν, 285
ἀρᾶται δὲ τάχιστα μιγήμεναι ἐν δαΐ λυγρῇ —
οὐδέ κεν ἔνθα τεόν γε μένος καὶ χεῖρας ὄνοιτο.
εἰ περ γὰρ κε βλήῃο πονεύμενος ἢ ἐτυπείης,
οὐκ ἂν ἐν αὐχέν' ὀπισθε πέσοι βέλος οὐδ' ἐνὶ νώτῳ,
ἀλλὰ κεν ἢ στέρνων ἢ νηδύος ἀντιάσειεν 290
πρόσσω ἱεμένοιο μετὰ προμάχων ὀαριστύν.
ἀλλ' ἄγε μηκέτι ταῦτα λεγόμεθα νηπύτιοι ὥς
ἔστεῳτες, μὴ πού τις ὑπερφιάλως νεμεσῇσῃ·
ἀλλὰ σύ γε κλισίηνδε κιῶν ἔλεν ὄβριμον ἔργος.“

ὥς φάτο, Μηριόνης δὲ θοῶ ἀτάλαντος Ἄρηι 295
καρπαλίμως κλισίηθεν ἀνείλετο χάλκεον ἔγχος,
ρῇ δὲ μετ' Ἰδομενῆα μέγα πτολέμοιο μεμηλῶς.
οἶος δὲ βροτολοιγὸς Ἄρης πολεμόνδε μέτεισιν,
τῷ δὲ Φόβος φίλος υἱὸς ἅμα κρατερὸς καὶ ἀταρβής
ἔσπετο, ὅς τ' ἐφόβησε ταλάφρονά περ πολεμιστὴν· 300
τῷ μὲν ἄρ' ἐκ Θωρήκης Ἐφύρους μετὰ θωρησσεσθον
ἢ μετὰ Φλεγύας μεγαλήτορας· οὐδ' ἄρα τῷ γε

ἔκλυνον ἀμφοτέρων, ἑτέροισι δὲ κῦδος ἔδωκαν·
τοῖοι Μηριόνης τε καὶ Ἴδομενεὺς ἀγοὶ ἀνδρῶν
ῥισαν ἐς πόλεμον κεκορυθμένοι αἰδοπι χαλκῷ. 306

τὸν καὶ Μηριόνης πρότερος πρὸς μῦθον ἔειπεν·
„Δευκαλίδη, πῇ τ' ἄρ' μέμονας καταδῦναι ὄμιλον;
ἥ ἐπὶ δεξιόφιν παντὸς στρατοῦ, ἥ ἀνὰ μέσσους,
ἥ ἐπ' ἀριστερόφιν; ἐπεὶ οὐ ποθὶ ἔλπομαι οὕτως
δενέσθαι πολέμοιο κάρη κομόωντας Ἀχαιούς.“ 310

τὸν δ' αὖτ' Ἴδομενεὺς Κρητῶν ἀγὼς ἀντίον ἠΰδα·
„νηυσὶ μὲν ἐν μέσσησιν ἀμύνειν εἰσὶ καὶ ἄλλοι,
Αἰαντὲς τε δ'ὼ Τεϋκρὸς θ', ὃς ἄριστος Ἀχαιῶν
τοξοσύνη, ἀγαθὸς δὲ καὶ ἐν σταδίῃ ὕσμινη·
οἳ μιν ἄδην ἐλώωσι καὶ ἐσσύμενον πολέμοιο, 316
[Ἔκτορα Πριαμίδην, καὶ εἰ μάλα καρτερός ἐστιν.]

αἰπὺ οἱ ἐσσεῖται, μάλα περ μεμαῶτι μάχεσθαι,
κείνων νικήσαντι μένος καὶ χεῖρας ἀάπτους
νῆας ἐνιπρῆσαι, ὅτε μὴ αὐτὸς γε Κρονίων
ἐμβάλοι αἰθόμενον θαλὸν νῆεσσι θοῇσιν. 320

ἀνδρὶ δέ κ' οὐκ εἴξειε μέγας Τελαμώνιος Αἴας,
ὃς θνητός τ' εἶη καὶ ἔδοι Δημήτερος ἀκτῆν,
χαλκῷ τε ῥηκτὸς μεγάλοισὶ τε χερμαδίοισιν.
οὐδ' ἂν Ἀχιλλῇι ῥηξήνορι χωρήσειεν
ἐν γ' αὐτοσταδίῃ· ποσὶ δ' οὐ πῶς ἐστὶν ἐρίζειν. 325
νῶϊν δ' ὧδ' ἐπ' ἀριστερ' ἔχε στρατοῦ, ὄφρα τάχιστα
εἶδομεν, ἥ ἐ τῷ εὐχος ὀρέξομεν ἥ ἐ τις ἡμῖν.“

ὥς φάτο, Μηριόνης δὲ θοῶ ἀτάλαντος Ἄρηι
ῥοχ' ἔμεν, ὄφρ' ἀφίκοντο κατὰ στρατόν, ἥ μιν ἀνώγειν.

οἱ δ' ὥς Ἴδομενῆα ἴδον φλογὶ εἵκελον ἀλκὴν, 330
αὐτὸν καὶ θεράποντα, σὺν ἔντεσι δαιδαλέοισιν,
κεκλόμενοι καθ' ὄμιλον ἐπ' αὐτῷ πάντες ἔβησαν.
τῶν δ' ὁμὸν ἵστατο νεῖκος ἐπὶ πρυμνῇσι νέεσσιν.

ὥς δ' ὅθ' ὑπὸ λιγέων ἀνέμων σπέρχωνσιν ἄελλαι
 ἥματι τῷ, ὅτε τε πλείστη κόνις ἀμφὶ κελεύθους, 335
 οἳ τ' ἄμυδις κονίης μεγάλην ἱστᾶσιν ὁμίχλην,
 ὥς ἄρα τῶν ὁμός' ἦλθε μάχη, μέμασαν δ' ἐνὶ θυμῷ
 ἀλλήλους καθ' ὁμιλον ἐναιρέμεν ὀξεί χαλκῷ.
 ἔφριξεν δὲ μάχη φθισίμβροτος ἐγχείησιν
 μακρῆς, ἃς εἶχον ταμεσίχροας· ὅσσε δ' ἄμερδεν 340
 αὐγὴ χαλκείη κορύθων ἄπο λαμπομενάων
 θωρήκων τε νεοσμήκτων σακέων τε φαεινῶν
 ἐρχομένων ἄμυδις. μάλα κεν θρασυκάρδιος εἴη,
 ὃς τότε γηθήσειεν ἰδὼν πόνον οὐδ' ἀκάχοιτο.

[τῷ δ' ἀμφὶς φρονέοντε δῶα Κρόνου νῆε κραταιῷ 345
 ἀνδράσιν ἡρώεσσιν ἐτεύχετον ἄλγεα λυγρά.
 Ζεὺς μὲν ἄρα Τρώεσσι καὶ Ἑκτορι βούλετο νίκην,
 κυδαίνων Ἀχιλῆα πόδας ταχύν· οὐδ' ὃ γε πάμπαν
 ἤθελε λαὸν ὀλέσθαι Ἀχαικὸν Ἴλιόθι πρό,
 ἀλλὰ Θέτιν κύδαινε καὶ νῆα καρτερόθυμον. 350
 Ἀργεῖους δὲ Ποσειδάων ὀρόθυνε μετελθὼν,
 λάθρη ὑπεξαναδὺς πολιῆς ἀλός· ἤχθετο γάρ ῥα
 Τρωσὶν δαμναμένους, Διὶ δὲ κρατερῶς ἐνεμέσσα.
 ἦ μὰν ἀμφοτέροισιν ὁμὸν γένος ἦδ' ἰα πάτρῃ,
 ἀλλὰ Ζεὺς πρότερος γέγρονει καὶ πλείονα ἦδη. 355
 τῷ ῥα καὶ ἀμφοδίνην μὲν ἀλεξέμεναι ἀλείνεν,
 λάθρη δ' αἶν ἐγείρε κατὰ στρατόν, ἀνδρὶ ἐοικώς.
 τοὶ δ' ἔριδος κρατερῆς καὶ ὁμοίου πολέμοιο
 πείραρ ἐπαλλάξαντες ἐπ' ἀμφοτέροισι τάνυσσαν,
 ἄρρηκτόν τ' ἄλυτόν τε, τὸ πολλῶν γούνατ' ἔλυσεν.] 360

ἔνθα, μεσαιπόλιός περ ἐὼν, Δαναοῖσι κελεύσας
 Ἴδομενεὺς Τρώεσσι μετάλμενος ἐν φόβον ὥρσεν.
 πέφνε γὰρ Ὀθρυονῆα Καβησόθεν ἐνδον ἐόντα,
 ὃς ῥα νέον πολέμοιο μετὰ κλέος εἰληλούθειν.

ἤτεε δὲ Πριάμοιο θυγατρῶν εἶδος ἀρίστην 365
 Κασσάνδρην ἀνάεδνον, ὑπέσχετο δὲ μέγα ἔργον,
 ἐκ Τροίης ἀέκοντας ἀπώσμεν υἷας Ἀχαιῶν.

τῷ δ' ὁ γέρων Πριάμος ὑπὸ τ' ἔσχετο καὶ κατένευσεν
 δωσέμεναι· ὁ δὲ μάρναθ' ὑποσχέσῃσι πιθῆσας.

Ἴδομενεὺς δ' αὐτοῖο τιτύσκετο δουρὶ φαεινῷ, 370

καὶ βάλεν ὕψι βιβάντα τυχῶν· οὐδ' ἤρκεσε θώρηξ
 χάλκεος, ὃν φορέεσκε, μέσῃ δ' ἐν γαστέρι πῆξεν.

δοῦπησεν δὲ πεσών· ὁ δ' ἐπέυξατο φώνησέν τε·

„Ὅθρυνονεῦ, περὶ δὴ σε βροτῶν αἰνίζομ' ἀπάντων,

εἰ ἔτεδν δὴ πάντα τελευτήσεις, ὅσ' ὑπέστης 375

Δαρδανίδῃ Πριάμῳ· ὁ δ' ὑπέσχετο θυγατέρα ἦν.

καὶ κέ τοι ἡμεῖς ταῦτά γ' ὑποσχόμενοι τελέσαιμεν,

δοῖμεν δ' Ἀτρεΐδαο θυγατρῶν εἶδος ἀρίστην,

Ἄργεος ἑξαγαγόντες, ὀπυιέμεν, εἴ κε σὺν ἄμμιν

Ἴλιον ἐκπέρσης, ἐν ναιόμενον πτολίεθρον. 380

ἀλλ' ἔπευ, ὅφρ' ἐπὶ νηυσὶ συνώμεθα ποντοπόροισιν

ἀμφὶ γάμῳ, ἐπεὶ οὗ τοι ἐδνωταὶ κακοὶ εἶμεν.“

ὥς εἰπὼν ποδὸς ἔλκε κατὰ κρατερὴν ὑσμίνην

ἥρως Ἴδομενεὺς· τῷ δ' Ἄσιος ἦλθεν ἀμύντωρ

πεξὸς πρόσθ' ἵππων· τὼ δὲ πνεῖοντε κατ' ὤμων 385

αἶεν ἔχ' ἡνίοχος θεράπων· ὁ δὲ ἴετο θυμῷ

Ἰδομενῆα βαλεῖν· ὁ δέ μιν φθάμενος βάλε δουρὶ

λαιμόν ὑπ' ἀνθερεῶνα, διαπρὸ δὲ χαλκὸν ἔλασσεν.

ἤριπε δ', ὥς ὅτε τις δρυὺς ἤριπεν ἢ ἀχερωὶς

ἢ ἐπίτυς βλωθρῇ, τήν τ' οὔρεσι τέκτονες ἄνδρες 390

ἑξέταμον πελέκεσσι νεήκεσι νήιον εἶναι·

ὥς ὁ πρόσθ' ἵππων καὶ δίφρου κεῖτο ταυνσθεῖς,

βεβρυχῶς κόνιος δεδραγμένος αἵματοέσσης.

ἐκ δὲ οἱ ἡνίοχος πλήγῃ φρένας, ἃς πάρος εἶχεν,

οὐδ' ὃ γ' ἐτόλμησεν δηίων ὑπὸ χεῖρας ἀλύξας 395

ἄψ ἵππους στρέψαι. τὸν δ' Ἀντίλοχος μενεχάρμης
 δουρὶ μέσον περόνησε τυχών· οὐδ' ἤρκεσε θώρηξ
 χάλκεος, ὃν φορέεσκε, μέσῃ δ' ἐν γαστέρι πῆξεν.
 αὐτὰρ ὃ γ' ἀσθμαίνων ἐνεργέος ἔκπεσε δίφρου,
 ἵππους δ' Ἀντίλοχος μεγαθύμου Νέστορος υἱὸς 400
 ἐξέλασε Τρώων μετ' ἐνκνήμιδας Ἀχαιοὺς.

Δηίφοβος δὲ μάλα σχεδὸν ἤλυθεν Ἰδομενεὴς,
 Ἀσίου ἀχνύμενος, καὶ ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ.
 ἀλλ' ὁ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος
 Ἰδομενεύς· κρύφθη γὰρ ὑπ' ἀσπίδι πάντοσ' ἐίσῃ, 405
 τὴν ἄρ' ὃ γε ῥινοῖσι βοῶν καὶ νώροπι χαλκῷ
 δινωτὴν φορέεσκε, δύω κανόνεσσ' ἀραρυῖαν·
 τῇ ὑπο πᾶς ἐάλη, τὸ δ' ὑπέρπτατο χάλκεον ἔγχος,
 καρφαλέον δέ οἱ ἀσπίς ἐπιθρέξαντος ἄυσεν
 ἔγχεος· οὐδ' ἄλιόν ῥα βαρείης χειρὸς ἀφῆκεν, 410
 ἀλλ' ἔβαλ' Ἰππασίδην Ὑψήνορα ποιμένα λαῶν
 ἦπαρ ὑπὸ πρᾶπίδων, εἶθαρ δ' ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν.
 Δηίφοβος δ' ἔκπαγλον ἐπεύξατο μακρὸν αὐσας·
 „οὐ μὰν αὐτ' ἄτιτος κεῖτ' Ἀσιος, ἀλλὰ ἔφημι
 εἰς Αἰδὸς περ ἰόντα πυλάρταο κρατεροῖο 415
 γηθήσειν κατὰ θυμόν, ἐπεὶ ῥά οἱ ὦπασα πομπόν.“

ὣς ἔφατ', Ἀργείοισι δ' ἄχος γένετ' εὐξαμένοιο,
 Ἀντιλόχῳ δὲ μάλιστα δαΐφρονι θυμὸν ὄρινεν·
 ἀλλ' οὐδ' ἀχνύμενός περ ἐοῦ ἀμέλησεν ἐταῖρου,
 ἀλλὰ θέων περίβη καὶ οἱ σάκος ἀμφεκάλυψεν. 420
 [τὸν μὲν ἔπειθ' ὑποδύντε δύω ἐρίηρες ἐταῖροι,
 Μηκιστεὺς Ἐχίοιο πάϊς καὶ δῖος Ἀλάστωρ,
 νῆας ἐπι γλαφυρὰς φερέτην βαρέα στενάχοντα·]
 Ἰδομενεὺς δ' οὐ λῆγε μένος μέγα, ἵετο δ' αἰεὶ
 ἢ τένα Τρώων ἐρεβεννῇ νυκτὶ καλύψαι 425
 ἢ αὐτὸς δουπῆσαι ἀμύνων λοιγὸν Ἀχαιοῖς.

ἐνθ' Αἰσυνήταο διοτρεφέος φίλον υἷόν,
 ἦρω' Ἀλκάθοον — γαμβρὸς δ' ἦν Ἀγχίσαο,
 πρεσβυτάτην δ' ὤπυιε θυγατρῶν Ἰπποδάμειαν,
 τὴν περὶ κῆρι φίλησε πατήρ καὶ πότνια μήτηρ 430
 ἐν μεγάρῳ· πᾶσαν γὰρ ὁμηλικίην ἐκέκαστο
 κάλλει· καὶ ἔργοισιν ἰδὲ φρεσί· τούνεκα καὶ μιν
 γῆμεν ἀνὴρ ὠριστος ἐνὶ Τροίῃ εὐρείῃ· —
 τὸν τόθ' ὑπ' Ἰδομενεῇ Ποσειδάων ἐδάμασσεν
 θέλξας ὅσσε φαεινά, πέδησε δὲ φαλιδίμα γυῖα· 435
 οὔτε γὰρ ἐξοπλίσω φυγέειν δύναιτ' οὔτ' ἀλέασθαι,
 ἀλλ' ὥς τε στήλην ἢ δένδρεον ὑψιπέτηλον
 ἀτρέμας ἐσταότα στήθεος μέσον οὔτασε δουρὶ
 ἦρως Ἰδομενεύς, ῥῆξεν δέ οἱ ἀμφὶ χιτῶνα
 χάλκεον, ὅς οἱ πρόσθεν ἀπὸ χροὸς ἦρκει ὄλεθρον· 440
 δὴ τότε γ' αὔουν ἄνυσεν ἐρεικόμενος περὶ δουρί.
 δούπησεν δὲ πεσῶν, δόρυ δ' ἐν κραδίῃ ἐπεπήγειν,
 ἣ ῥά οἱ ἀσπαίρουσα καὶ οὐρίαχον πελέμιζεν
 ἔγχεος· ἐνθα δ' ἔπειτ' ἀφίει μένος ὄβριμος Ἄρης.
 Ἰδομενεύς δ' ἐκπαγλὸν ἐπεύξατο μακρὸν ἀύσας· 445
 „Δηίφοβ', ἣ ἄρα δὴ τι εἰσκομεν ἄξιον εἶναι
 τρεῖς ἐνὸς ἀντὶ πεφάσθαι; ἐπεὶ σύ περ εὐχέαι οὔτως·
 δαιμόνι', ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ἐναντίον ἵστασ' ἐμεῖο,
 ὄφρα ἴδῃ, οἷος Ζηνὸς γόνος ἐνθάδ' ἰκάνω,
 ὅς πρῶτον Μίνωα τέκε Κρήτη ἐπίουρον· 450
 Μίνως δ' αὖ τέκεθ' υἷὸν ἀμύμονα Δευκαλίωνα,
 Δευκαλίων δ' ἐμὲ τίκτε πολέσσ' ἄνδρεςσιν ἄνακτα
 Κρήτη ἐν εὐρείῃ· νῦν δ' ἐνθάδε νῆες ἐνειακὰ
 σοὶ τε κακὸν καὶ πατρὶ καὶ ἄλλοισι Τρώεσσιν.“
 ὣς φάτο, Δηίφοβος δὲ διάνδιχα μερμήριξεν, 455
 ἣ τινά που Τρώων ἐταρίσσαιτο μεγαθύμων
 ἀψ' ἀναχωρήσας, ἣ πειρήσαιο καὶ οἷος.

ὥδε δέ οἱ φρονέοντι δοάσσατο κέρδιον εἶναι,
 βῆναι ἐπ' Αἰνείαν· τὸν δ' ὕστατον εὔρεν ὁμίλου
 ἔσπευ· αἰεὶ γὰρ Πριάμῳ ἐπεμήνιε δίῳ, 460
 οὐνεκ' ἄρ' ἐσθλὸν ἔοντα μετ' ἀνδράσιν οὐ τι τίεσκεν.
 ἀγχοῦ δ' ἰστάμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Αἰνεΐα Τρώων βουληφόρε, νῦν σε μάλα χρῆ
 γαμβρῷ ἀμυνέμεναι, εἰ πέρ τί σε κῆδος ἰκάνει.
 ἀλλ' ἔπευ, Ἀλκαθῷ ἐπαμύνομεν, ὅς σε πάρος γε 465
 γαμβρὸς ἔων ἔθρεψε δόμοις ἐνι τυτθὸν ἔοντα·
 τὸν δέ τοι Ἰδομενεὺς δουρικλυτὸς ἐξενάρϊξεν.“

ὥς φάτο, τῷ δ' ἄρα θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι νύρινεν,
 βῆ δὲ μετ' Ἰδομενεῖα μέγα πτολέμοιο μεμηλῶς.
 ἀλλ' οὐκ Ἰδομενεῖα φόβος λάβε τηλύγετον ὦς, 470
 ἀλλ' ἔμεν', ὥς ὅτε τις σῶς οὔρεσιν ἀλκῇ πεποιθὼς,
 ὅς τε μένει κολοσυρτὸν ἐπερχόμενον πολὺν ἀνδρῶν
 χώρῳ ἐν οἰοπόλῳ, φρίσσει δέ τε νῶτον ὑπερθεῖν·
 ὀφθαλμῷ δ' ἄρα οἱ πυρὶ λάμπετον· αὐτὰρ ὀδόντας
 θήγει, ἀλέξασθαι μεμαῶς κύνας ἡδὲ καὶ ἄνδρας· 475
 ὥς μένεν Ἰδομενεὺς δουρικλυτός, οὐδ' ὑπεχώρειν,
 Αἰνείαν ἐπιόντα βοηθόον· αὖτε δ' ἑταίρους,
 Ἀσκάλαφόν τ' ἐσορῶν Ἀφαρῆ᾽ τε Δηλιπυρόν τε
 Μηριόνην τε καὶ Ἀντίλοχον, μῆστωρας αὐτῆς·
 τοὺς δ' γ' ἐποτρύνων ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 480
 „δεῦτε, φίλοι, καὶ μ' οἶφ' ἀμύνετε· δεῖδια δ' αἰνῶς
 Αἰνεΐαν ἐπιόντα πόδας ταχύν, ὅς μοι ἔπεισιν,
 ὅς μάλα καρτερός ἐστι μάχῃ ἐνι φῶτας ἐναίρειν·
 καὶ δ' ἔχει ἥβης ἄνθος, ὃ τε κράτος ἐστὶ μέγιστον.
 εἰ γὰρ ὁμηλικίῃ γε γενοίμεθα τῷδ' ἐπὶ θυμῷ· 485
 αἰψά κεν ἡὲ φέροιτο μέγα κράτος ἡὲ φεροίμην.“

ὥς ἔφαδ', οἱ δ' ἄρα πάντες ἕνα φρεσὶ θυμὸν ἔχοντες
 πλησίον ἔστησαν, σάκε' ὤμοισι κλίναντες.

Αἰνείας δ' ἐτέρωθεν ἐκέκλετο οἷς ἐτάροισιν,
 Διήφοβόν τε Πάριν τ' ἐσορῶν καὶ Ἀγρήνορα δῖον, 490
 οὔ οἱ ἄμ' ἡγεμόνες Τρώων ἔσαν· αὐτὰρ ἔπειτα
 λαοὶ ἔπονθ', ὥς εἴ τε μετὰ κτίλον ἔσπετο μῆλα
 πίομεν' ἐκ βοτάνης· γάννυται δ' ἄρα τε φρένα ποιμήν·
 ὥς Αἰνεία θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι γεγῆθειν,
 ὥς ἶδε λαῶν ἔθνος ἐπισπόμενον ἑοῖ αὐτῷ. 495

οἱ δ' ἄμφ' Ἀλκαθῶ ἀντοσχεδὸν ὠρμήθησαν
 μακροῖσι ξυστοῖσι· περὶ στήθεσσι δὲ χαλκὸς
 σμερδαλέον κονάβιζε τιτυσκομένων κατ' ὄμιλον
 ἀλλήλων. δύο δ' ἄνδρες ἀρήιοι ἔξοχον ἄλλων,
 Αἰνείας τε καὶ Ἰδομενεύς, ἀτάλαντοι Ἄρηι, 500
 ἔεντ' ἀλλήλων ταμέειν χροά νηλεί χαλκῷ.
 Αἰνείας δὲ πρῶτος ἀκόντισεν Ἰδομενῆος·
 ἀλλ' ὁ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος,
 αἶχμη δ' Αἰνείαιο κραδαινομένη κατὰ γαίης
 ᾤχετ', ἐπεὶ ῥ' ἄλιον στιβαρῆς ἀπὸ χειρὸς ὄρουσεν. 505
 Ἰδομενεύς δ' ἄρα Οἰνόμαον βάλε γαστέρα μέσσην,
 ῥῆξε δὲ θώρηκος γύαλον, διὰ δ' ἔντερα χαλκὸς
 ἦφυσ'· ὁ δ' ἐν κονίησι πεσὼν ἔλε γαῖαν ἀροστῶ.
 Ἰδομενεύς δ' ἐκ μὲν νέκνος δολιχόσκιον ἔγχος
 ἐσπάσατ', οὐδ' ἄρ' ἔτ' ἄλλα δυνήσατο τεύχεα καλὰ 510
 ᾧμοιιν ἀφελέσθαι· ἐπείγετο γὰρ βελέεσσιν.
 οὐ γὰρ ἔτ' ἔμπεδα γυῖα ποδῶν ἦν ὀρμηθέντι
 οὔτ' ἄρ' ἐπ' αἵται μεθ' ἐδὸν βέλος οὔτ' ἀλέασθαι·
 τῷ ῥα καὶ ἐν σταδίῃ μὲν ἀμύνετο νηλεὲς ἦμαρ,
 τρέσσαι δ' οὐκέτι ῥίμφα πόδες φέρον ἐκ πολέμοιο. 515
 τοῦ δὲ βάδην ἀπίοντος ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ
 Διήφοβος· δὴ γάρ οἱ ἔχεν κότον ἐμμενὲς αἰεὶ.
 ἀλλ' ὅ γε καὶ τόθ' ἄμαρτεν, ὁ δ' Ἀσκάλαφον βάλε δουρί,
 υἱὸν ἐνυαλίοιο· δι' ᾧμου δ' ὄβριμον ἔγχος

ἔσχεν, ὃ δ' ἐν κονίῃσι πεσὼν ἔλε γαῖαν ἀγοστῷ. 520
 οὐδ' ἄρα πῶ τι πέπυστο βριήπυος ὄβριμος Ἄρης·
 υἱὸς ἑοῦ πεσόντος ἐνὶ κρατερῇ ὑσμίνῃ,
 ἀλλ' ὃ γ' ἄρ' ἄκρω Ὀλύμπῳ ὑπὸ χρυσεόισι νέφεσσι
 ἦστο, Διὸς βουλήσιν ἐελμένος, ἐνθα περ ἄλλοι
 ἀθάνατοι θεοὶ ἦσαν ἐεργόμενοι πολέμοιο. 525
 οἱ δ' ἄμφ' Ἀσκαλάφῳ αὐτοσχεδὸν ὠρμήθησαν.
 Διήφοβος μὲν ἀπ' Ἀσκαλάφου πῆληκα φαεινὴν
 ἤρπασε, Μηριόνης δὲ θοῷ ἀτάλαντος Ἄρηι
 δουρὶ βραχίονα τύψεν ἐπάλμενος, ἐκ δ' ἄρα χειρὸς
 αὐλῶπις τρυφάλεια χαμαὶ βόμβησε πεσοῦσα. 530
 Μηριόνης δ' ἐξαῦτις ἐπάλμενος, αἰγυπιδὸς ὤς,
 ἐξέρυσσε πρυμνοῖο βραχίονος ὄβριμον ἔγχος,
 ἃς δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο. τὸν δὲ Πολίτης
 αὐτοκασίγνητος, περὶ μέσσω χεῖρε τιτήνας,
 ἐξῆγεν πολέμοιο δυσηχέος, ὄφρ' ἵκεθ' ἵππους 535
 ὠκέας, οἳ οἱ ὀπισθε μάχης ἠδὲ πολέμοιο
 ἔστασαν ἡνίοχόν τε καὶ ἄρματα ποικίλ' ἔχοντες·
 οἷ τόν γε προτὶ ἅστν φέρον βαρέα στενάχοντα,
 τειρόμενον· κατὰ δ' αἶμα νεοντάτου ἔρρεε χειρὸς.
 οἱ δ' ἄλλοι μάρναντο, βοή δ' ἄσβεστος ὀρώρειν. 540
 Αἰνείας δ' Ἀφαρῆα Καλητορίδην ἐπορούσας
 λαίμῳν τύψ', ἐπὶ οἳ τετραμμένον, ὀξεί δουρί·
 ἐκλίνθη δ' ἐτέρωσε κάρη, ἐπὶ δ' ἀσπίς ἐάφθη
 καὶ κόρυς, ἀμφὶ δέ οἱ θάνατος χύτο θυμοραϊστής.
 Ἀντίλοχος δὲ Θόωνα μεταστρεφθέντα δοκεύσας. 545
 οὔτας' ἐπαῖξας, ἀπὸ δὲ φλέβα πᾶσαν ἔκερσεν,
 ἥ τ' ἀνὰ νῶτα θέουσα διαμπερὲς αὐχέν' ἰκάνει·
 τὴν ἀπὸ πᾶσαν ἔκερσεν, ὃ δ' ὑπτιος ἐν κονίῃσιν
 κάππεσεν, ἄμφω χεῖρε φίλοις ἐτάροισι πετάσσας.
 Ἀντίλοχος δ' ἐπόρουσε καὶ αἶνυτο τεύχε' ἀπ' ὤμων 550

παπταίνων· Τρῶες δὲ περισταδὸν ἄλλοθεν ἄλλος
 οὔταξον σάκος εὐρὺ παναίολον, οὐδὲ δύναντο
 εἶσω ἐπιγράψαι τέρενα χροά νηλεί χαλκῷ
 Ἀντιλόχου· πέρι γάρ ῥα Ποσειδάων ἐνοσίχθων
 Νέστορος υἱὸν ἔρυτο καὶ ἐν πολλοῖσι βέλεσσιν. 555
 οὐ μὲν γάρ ποτ' ἄνευ δηίων ἦν, ἀλλὰ κατ' αὐτοὺς
 στρωφᾷτ'· οὐδέ οἱ ἔγχος ἔχ' ἀτρέμας, ἀλλὰ μάλ' αἰεὶ
 σειόμενον ἐλέλικτο· τιτύσκετο δὲ φρεσὶν ἥσιν
 ἦ τευ ἀκοντίσσαι ἦε σχεδὸν ὀρμηθῆναι.

ἀλλ' οὐ λῆθ' Ἀδάμαντα τιτυσκόμενος καθ' ὅμιλον 560
 Ἀσιάδην, ὃ οἱ οὔτα μέσον σάκος ὀξεί χαλκῷ
 ἐγγύθεν ὀρμηθείς· ἀμενήνωσεν δέ οἱ αἰχμὴν
 κυανοχαῖτα Ποσειδάων, βιότοιο μεγέρας.
 καὶ τὸ μὲν αὐτοῦ μέιν' ὥς τε σκῶλος πυρίκαυστος,
 ἐν σάκει Ἀντιλόχοιο, τὸ δ' ἥμισυ κεῖτ' ἐπὶ γαίης· 565
 ἄψ δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο κῆρ' ἀλεείνων·
 Μηριόνης δ' ἀπιόντα μετασπόμενος βάλε δουρὶ
 αἰδοίων τε μεσηγνὸν καὶ ὀμφαλοῦ, ἐνθα μάλιστα
 γίγνεται Ἄρης ἀλεγεινὸς διζυροῖσι βροτοῖσιν.
 ἐνθα οἱ ἔγχος ἐπῆξεν· ὁ δ' ἐσπόμενος περὶ δουρὶ 570
 ἤσπαιρ', ὥς ὅτε βοῦς, τὸν τ' οὖρεσι βουκόλοι ἄνδρες
 ἰλλάσιν οὐκ ἐθέλοντα βίῃ δῆσαντες ἄγουσιν·
 ὥς ὁ τυπεὶς ἤσπαιρε μίνυνθά περ, οὐ τι μάλα δῆν,
 ὄφρα οἱ ἐκ χροὸς ἔγχος ἀνеспάσας ἐγγύθεν ἐλθὼν
 ἦρως Μηριόνης· τὸν δὲ σκότος ὄσσε κάλυψεν. 575

Δηίπυρον δ' Ἐλενος ξίφει σχεδὸν ἤλασε κόρσῃν
 Θρηικίῳ μεγάλῳ, ἀπὸ δὲ τρυφάλειαν ἄραξεν.
 ἦ μὲν ἀποπλαγχθεῖσα χαμαὶ πέσε, καὶ τις Ἀχαιῶν
 μαρναμένων μετὰ ποσσὶ κυλινδομένην ἐκόμισσεν·
 τὸν δὲ κατ' ὀφθαλμῶν ἐρεβεννὴ νύξ ἐκάλυψεν. 580
 Ἀτρεΐδην δ' ἄχος εἶλε, βοὴν ἀγαθὸν Μενέλαον,

βῆ δ' ἐπαπειλήσας Ἑλένω ἦρως ἄνακτι
 ὀξὺ δόρυ κραδᾶων· ὁ δὲ τόξου πῆχυν ἄνελεν.
 τῷ δ' ἄρ' ὀμαρτήδην ὁ μὲν ἔγχρ' ὀξυόεντι
 ἵετ' ἀκοντίσσαι, ὁ δ' ἀπὸ νευρῆφιν ὀιστῶ· 585
 Πριαμίδης μὲν ἔπειτα κατὰ στήθος βάλεν ἰῶ
 θώρηκος γύαλον, ἀπὸ δ' ἔπιτατο πικρὸς ὀιστός.
 ὥς δ' ὅτ' ἀπὸ πλατέος πτυόφιν μεγάλην κατ' ἄλωην
 θρώσκωσιν κύαμοι μελανόχροες ἢ ἐρέβινθοι
 πνοιῇ ὑπο λιγυρῇ καὶ λιμνητῆρος ἐρωῇ, 590
 ὥς ἀπὸ θώρηκος Μενελάου κυδαλίμοιο
 πολλὸν ἀποπλαγχθεὶς ἐκὰς ἔπιτατο πικρὸς ὀιστός.
 Ἀτρεΐδης δ' ἄρα χεῖρα, βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος,
 τὴν βάλεν, ἣ ῥ' ἔχε τόξον εὐξοον· ἐν δ' ἄρα τόξῳ
 ἀντικρὺς διὰ χειρὸς ἐλήλατο χάλκεον ἔγχος. 595
 ἄψ δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο κῆρ' ἀλεείνων,
 χεῖρα παρακρεμάσας· τὸ δ' ἐφέλκετο μείλινον ἔγχος.
 καὶ τὸ μὲν ἐκ χειρὸς ἔρυσεν μεγάρθυμος Ἀγένηρ,
 αὐτὴν δὲ ξυνέδησεν ἐυστρόφῳ οἴδῳ Ἀώτῳ,
 σφενδόνῃ, ἣν ἄρα οἱ θεράπων ἔχε ποιμένι λαῶν. 600
 Πείσανδρος δ' ἰθὺς Μενελάου κυδαλίμοιο
 ἦιε· τὸν δ' ἄγε μοῖρα κακὴ θανάτοιο τέλοσδε,
 σοί, Μενέλαε, δαμῆναι ἐν αἰνῇ δημοτῆτι.
 οἱ δ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 Ἀτρεΐδης μὲν ἄμαρτε, παρὰ δέ οἱ ἐτράπετ' ἔγχος, 605
 Πείσανδρος δὲ σάκος Μενελάου κυδαλίμοιο
 οὕτασεν, οὐδὲ διαπρὸ δυνήσατο χαλκὸν ἐλάσσαι·
 ἔσχεθε γὰρ σάκος εὐρύ, κατεκλάσθη δ' ἐνὶ κανυλῷ
 ἔγχος· ὁ δὲ φρεσὶν ἦσι χάρη καὶ ἐέλετο νίκη.
 Ἀτρεΐδης δὲ ἐρυσσάμενος ξίφος ἀργυρόηλον 610
 ἄλτ' ἐπὶ Πείσανδρῳ· ὁ δ' ὑπ' ἀσπίδος εἴλετο καλὴν
 ἀξίνην εὐχαλκον, ἐλαίνῳ ἀμφὶ πελέκῳ

μακροῦ ἐνξέστω· ἄμα δ' ἀλλήλων ἐφίκοντο.
 ἦ τοι ὁ μὲν κόρυθος φάλον ἤλασεν ἱπποδασειῆς
 ἄκρον ὑπὸ λόφον αὐτόν, ὁ δὲ προσιόντα μέτωπον 615
 ρινὸς ὑπερ πυμάτης· λάκε δ' ὅστέα, τῷ δέ οἱ ὄσσε
 παρ ποσὶν αἱματόεντα χαμαὶ πέσον ἐν κονίῃσιν,
 ἰδνώθη δὲ πεσών. ὁ δὲ λάξ ἐν στήθεσι βαίνων
 τεύχεά τ' ἐξενάριξε καὶ εὐχόμενος ἔπος ηὔδα·
 „λείψετε θην οὕτω γε νέας Δαναῶν ταχυπώλων, 620
 Τρῶες ὑπερφίαλοι, δεινῆς ἀκόρητοι ἀντῆς,
 ἄλλης μὲν λώβης τε καὶ αἵσχεος οὐκ ἐπιδευεῖς,
 ἦν ἐμὲ λωβήσασθε, κακαὶ κύνες, οὐδέ τι θυμῷ
 Ζηνὸς ἐριβρεμέτεω χαλεπὴν ἐδείσατε μῆνιν
 ξεινίου, ὅς τέ ποτ' ὕμμι διαφθέρσει πόλιν αἰπὴν· 625
 οἷ μιν κουριδίην ἄλογον καὶ κτήματα πολλὰ
 μὰψ οἴχεσθ' ἀνάγοντες, ἐπεὶ φιλέεσθε παρ' αὐτῇ·
 νῦν αὖτ' ἐν νηυσὶν μενεαίνετε ποντοπόροισιν
 πῦρ ὁλοὸν βαλέειν, κτείνειν δ' ἥρωας Ἀχαιοὺς.
 ἀλλὰ ποθὶ σχήσεσθε, καὶ ἐσσύμενοί περ, Ἄρηος. 630
 Ζεῦ πάτερ, ἦ τέ σέ φασι περὶ φρένας ἔμμεναι ἄλλων,
 ἀνδρῶν ἠδὲ θεῶν, σέο δ' ἐκ τάδε πάντα πέλονται·
 οἷον δὴ ἄνδρεςσι χαρίζεαι ὕβριστῆσιν,
 Τρωσίν, τῶν μένος αἰὲν ἀτάσθαλον, οὐδὲ δύνανται
 φυλόπιδος κορέσασθαι ὁμοίου πολέμοιο. 635
 πάντων μὲν κόρος ἐστί, καὶ ὕπνου καὶ φιλόττος
 μολπῆς τε γλυκερῆς καὶ ἀμύμονος ὀρχηθμοῖο,
 τῶν πέρ τις καὶ μᾶλλον ἐέλδεται ἐξ ἔρον εἶναι
 ἢ πολέμου· Τρῶες δὲ μάχης ἀκόρητοι ἔασιν.“
 ὣς εἰπὼν τὰ μὲν ἔντε' ἀπὸ χροῶς αἱματόεντα 640
 συλήσας ἐτάροισι δίδου Μενέλαος ἀμύμων,
 αὐτὸς δ' αὖτ' ἐξαῦτις ἰὼν προμάχοισιν ἐμίχθη.
 ἔνθα οἱ νῆος ἐπᾶλτο Πυλαιμένεος βασιλῆος

Ἀρπαλίων, ὃ ῥα πατρὶ φίλῳ ἔπετο πτολεμίδων
 ἐς Τροίην, οὐδ' αὖτις ἀφίκετο πατρίδα γαίαν· 645
 ὅς ῥα τότε Ἀτρεΐδαι μέσον σάκος οὔτασε δουρὶ
 ἐγγύθεν, οὐδὲ διαπρὸ δυνήσατο χαλκὸν ἐλάσσαι,
 ἅψ δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο κῆρ' ἀλεείνων,
 πάντοσε παπταίνων, μή τις χροά χαλκῷ ἐπαύρη.
 Μηριόνης δ' ἀπιόντος ἴει χαλκήρε' ὀιστόν 650
 καὶ ῥ' ἔβαλε γλουτὸν κάτω δεξιόν· αὐτὰρ ὀιστὸς
 ἀντικρὺς κατὰ κύστιν ὑπ' ὀστέον ἐξεπέρησεν.
 ἐξόμενος δὲ κατ' αὐθι, φίλων ἐν χερσὶν ἐταίρων
 θυμὸν ἀποπνείων, ὥς τε σκώληξ ἐπὶ γαίῃ
 κεῖτο ταθείς· ἐκ δ' αἶμα μέλαν ῥέε, δεῦε δὲ γαῖαν. 655
 τὸν μὲν Παφλαγόνες μεγαλήτορες ἀμφεπένοντο,
 ἐς δίφρον δ' ἀνέσαντες ἄγον προτὶ Ἴλιον ἱρήν
 ἀχνύμενοι· μετὰ δέ σφι πατὴρ κίε δάκρυα λείβων,
 ποινη δ' οὐ τις παιδὸς ἐγίγνετο τεθνηῶτος.

τοῦ δὲ Πάρις μάλα θυμὸν ἀποκταμένοιο χολώθη· 660
 ξείνος γάρ οἱ ἔην πολέσιν μετὰ Παφλαγόνεσσιν·
 τοῦ ὃ γε χωόμενος προῖει χαλκήρε' ὀιστόν.
 ἦν δέ τις Εὐχύνωρ Πολυῖδου μάντιος υἱὸς
 ἀφνειὸς τ' ἀγαθὸς τε, Κορινθόθι οἰκία ναίων,
 ὅς ῥ' ἐν εἰδῶς κῆρ' ὀλοήν ἐπὶ νηὸς ἔβαινε· 665
 πολλάκι γάρ οἱ ἔειπε γέρον ἀγαθὸς Πολύιδος
 νούσῳ ὑπ' ἀργαλέῃ φθίσθαι οἷς ἐν μεγάροισιν
 ἢ μετ' Ἀχαιῶν νηυσὶν ὑπὸ Τρώεσσι δαμῆναι·
 τῷ ῥ' ἄμα τ' ἀργαλέην θωὴν ἀλέεινεν Ἀχαιῶν
 νοῦσόν τε στυγερὴν, ἵνα μὴ πάθοι ἄλγεα θυμῷ. 670
 τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὔατος· ὦκα δὲ θυμὸς
 ᾤχετ' ἀπὸ μελέων, στυγερὸς δ' ἄρα μιν σκότος εἶλεν.

ὥς οἱ μὲν μάρναντο δέμας πυρὸς αἰθομένοιο·
 Ἔκτωρ δ' οὐκ ἐπέπυστο διίφιλος, οὐδέ τι ἤδη,

ὅττι ῥά οἱ νηῶν ἐπ' ἀριστερὰ δηϊόωντο 675
 λαοὶ ὑπ' Ἀργείων· τάχα δ' ἂν καὶ κῦδος Ἀχαιῶν
 ἐπλετο· τοῖος γὰρ γαιήοχος ἐννοσίγαιος
 ὦτρυν' Ἀργείους, πρὸς δὲ σθένει αὐτὸς ἄμυνεν·
 ἀλλ' ἔχεν, ἥ τὰ πρῶτα πύλας καὶ τεῖχος ἐσᾶλτο
 ῥηξάμενος Δαναῶν πυκινὰς στίχας ἀσπιστάων, 680
 ἐνθ' ἔσαν Αἴαντός τε νέες καὶ Πρωτεσιλάου
 θῖν' ἔφ' ἄλδς πολιῆς εἰρυμέναι, αὐτὰρ ὑπερθεῖν
 τεῖχος ἐδέδμητο χθαμαλώτατον, ἐνθα μάλιστα
 ζαχρηεῖς γίγνοντο μάχῃ αὐτοὶ τε καὶ ἵπποι.
 ἐνθα δὲ Βοιωτοὶ καὶ Ἰάονες ἐλκεχίτωνες, 685
 Λοκροὶ καὶ Φθῖοι καὶ φαιδιμόεντες Ἐπειοὶ
 σπουδῇ ἐπαῖσσοντα νεῶν ἔχον, οὐδὲ δύναντο
 ὤσαι ἀπὸ σφείων φλογὶ εἴκελον Ἑκτορα δῖον·
 οἱ μὲν Ἀθηναίων προλελεγμένοι· ἐν δ' ἄρα τοῖσιν
 ἦρχ' υἱὸς Πετεῶο Μενεσθεύς, οἱ δ' ἄμ' ἔποντο 690
 Φεΐδας τε Στιχίος τε Βίας τ'· ἐὺς· αὐτὰρ Ἐπειῶν
 Φυλεΐδης τε Μέγης Ἀμφίων τε Δρακίος τε,
 πρὸ Φθίων δὲ Μέδων τε μενεπτόλεμός τε Ποδάρκης.
 ἦ τοι ὁ μὲν νόθος υἱὸς Οἰλῆος θείοιο
 ἔσκε, Μέδων Αἴαντος ἀδελφεός, αὐτὰρ ἔναιεν 695
 ἐν Φυλάκῃ, γαίης ἅπο πατρίδος, ἄνδρα κατακτάς,
 γνωτὸν μητρυνῆς Ἐριώπιδος, ἣν ἔχ' Οἰλεύς·
 αὐτὰρ ὁ Ἰφίκλοιο πάϊς τοῦ Φυλακίδαο·
 οἱ μὲν πρὸ Φθίων μεγαθύμων θωρηχθέντες,
 ναῦφιν ἀμυνόμενοι μετὰ Βοιωτῶν ἐμάχοντο. 700
 Αἴας δ' οὐκέτι πάμπαν, Οἰλῆος ταχὺς υἱός,
 ἴστατ' ἀπ' Αἴαντος Τελαμωνίου, οὐδ' ἡβραῖόν,
 ἀλλ' ὥς τ' ἐν νειῷ βόε οἶνοπε πηκτὸν ἄροτρον
 ἴσον θυμὸν ἔχοντε τιταίνετον· ἀμφὶ δ' ἄρα σφιν
 πρυμνοῖσιν κεράεσσι πολὺς ἀνακηκίει ἰδρώς· 705

τὼ μὲν τε ξυγὸν οἶον ἐύξοον ἀμφὶς ἔεργει
 λεμένω κατὰ ὦλκα, ταμεῖν ἐπὶ τέλσον ἀρούρης·
 ὥς τὼ παρβεβαῶτε μάλ' ἔστασαν ἀλλήλοιιν.
 ἀλλ' ἦ τοι Τελαμωνιάδῃ πολλοὶ τε καὶ ἐσθλοὶ
 λαοὶ ἔπονθ' ἔταροι, οἳ οἱ σάκος ἐξεδέχοντο, 710
 ὀππότε μιν κάματός τε καὶ ἰδρὼς γούναθ' ἵκοιτο·
 οὐδ' ἄρ' Ὀιλιάδῃ μεγαλήτορι Λοκροὶ ἔποντο·
 οὐ γάρ σφι σταδίῃ ὑσμίνῃ μίμνε φίλον κῆρ·
 οὐ γὰρ ἔχον κόρυθας χαλκήρεας ἵπποδασείας,
 οὐδ' ἔχον ἀσπίδας εὐκύνκλους καὶ μέλινα δοῦρα, 715
 ἀλλ' ἄρα τόξοισιν καὶ ἐνστροφῷ οἷδς ἄωψ
 Ἴλιον εἰς ἅμ' ἔποντο πεποιδότες, οἷσιν ἔπειτα
 ταρφέα βάλλοντες Τρώων ρήγνυντο φάλαγγας.
 δὴ ῥα τόθ' οἱ μὲν πρόσθε σὺν ἔντεσι δαιδαλέοισιν
 μάραντο Τρωσὶν τε καὶ Ἑκτορι χαλκοκορυστῇ, 720
 οἱ δ' ὅπιθεν βάλλοντες ἐλάνθανον· οὐδέ τι χάρμης
 Τρῶες μιμνήσκοντο· συνεκλόνεον γὰρ ὀιστοί.

ἐνθα κε λευγαλέως νηῶν ἅπο καὶ κλισιάων
 Τρῶες ἐχώρησαν προτὶ Ἴλιον ἡνεμόεσσαν,
 εἰ μὴ Πουλυδάμας θρασὺν Ἑκτορα εἶπε παραστάς· 725
 „Ἑκτορ, ἀμήχανός ἐσσι παραρρητοῖσι πιθέσθαι.
 οὐνεκά τοι πέρι δῶκε θεὸς πολεμῆια ἔργα,
 τούνεκα καὶ βουλῇ ἐθέλεις περιίδμεναι ἄλλων.
 ἀλλ' οὐ πως ἅμα πάντα δυνήσσαι αὐτὸς ἐλέσθαι·
 ἄλλω μὲν γὰρ ἔδωκε θεὸς πολεμῆια ἔργα, 730
 [ἄλλω δ' ὀρχηστύν, ἑτέρω κίθαριν καὶ αἰοιδήν·]
 ἄλλω δ' ἐν στήθεσσι τιθεῖ νόον εὐρύοπα Ζεὺς
 ἐσθλόν, τοῦ δέ τε πολλοὶ ἐπαυρίσκοντ' ἄνθρωποι,
 καὶ τε πολέας ἐσάωσε, μάλιστα δὲ καὐτὸς ἀνέγνω.
 αὐτὰρ ἐγὼν ἐρέω, ὥς μοι δοκεῖ εἶναι ἄριστα. 735
 πάντῃ γὰρ σε περὶ στέφανος πολέμοιο δέδωκεν·

Τρῶες δὲ μεγάθυμοι, ἐπεὶ κατὰ τεῖχος ἔβησαν,
οἱ μὲν ἀφροσύνησιν σὺν τεύχεσιν, οἱ δὲ μάχονται
παυρότεροι πλεόνεσσι, κεδασθέντες κατὰ νῆας.
ἀλλ' ἀναχασσάμενος κάλει ἐνθάδε πάντας ἀρίστους. 740
ἐνθεν δ' ἂν μάλα πᾶσαν ἐπιφρασσάμεθα βουλὴν,
ἥ κεν ἐνὶ νῆεσσι πολυκλήσι πέσωμεν,
αἶ κ' ἐθέλῃσι θεὸς δόμεναι κράτος, ἥ κεν ἔπειτα
παρ νηῶν ἔλθωμεν ἀπήμονες. ἥ γὰρ ἐγὼ γε
δεῖδω, μὴ τὸ χθιζὸν ἀποστήσωνται Ἀχαιοὶ 745
χρεῖος, ἐπεὶ παρὰ νηυσὶν ἀνὴρ ἄτος πολέμοιο
μῖμνει, ὃν οὐκέτι πάγχυ μάχης σχήσεσθαι οἶω.“

ὣς φάτο Πουλυδάμας, ἅδε δ' Ἴκτορι μῦθος ἀπήμων,
[αὐτίκα δ' ἐξ ὀχέων σὺν τεύχεσιν ἄλτο χαμαῖζε,]
καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 750
„Πουλυδάμα, σὺ μὲν αὐτοῦ ἐρύκακε πάντας ἀρίστους,
αὐτὰρ ἐγὼ κεῖσ' εἶμι καὶ ἀντιόω πολέμοιο·
αἶψα δ' ἐλεύσομαι αὐτίς, ἐπὴν ἐν τοῖς ἐπιτείλω.“

ἥ ῥα καὶ ὥρμηθη ὄρεϊ νιφόμεντι ἰοικώς,
κεκληγώς, διὰ δὲ Τρώων πέτετ' ἡδ' ἐπικούρων. 755
οἱ δ' ἐς Πανθοῖδην ἀγαπήνορα Πουλυδάμαντα
πάντες ἐπεσσεύοντ', ἐπεὶ Ἴκτορος ἔκλυον αὐδὴν.
αὐτὰρ ὁ Διόφοβόν τε βίην θ' Ἐλένοιο ἄνακτος
Ἀσιάδην τ' Ἀδάμαντα καὶ Ἄσιον Ὑρτάκου υἱὸν
φοῖτα ἀνὰ προμάχους διζήμενος, εἰ που ἐφεύροι. 760
τοὺς δ' εὖρ' οὐκέτι πάμπαν ἀπήμονας οὐδ' ἀνολέθρους,
ἀλλ' οἱ μὲν δὴ νηυσὶν ἐπὶ πρυμνήσιν Ἀχαιῶν
χερσὶν ὑπ' Ἀργείων κέατο ψυχὰς ὀλέσαντες,
οἱ δ' ἐν τείχει ἔσαν βεβλημένοι οὐτάμενοί τε.
τὸν δὲ τάχ' εὖρε μάχης ἐπ' ἀριστερὰ δακρυόεσσης 765
δίου Ἀλέξανδρον, Ἐλένης πόσιν ἡυκόμοιο,
θαρσύνονθ' ἐτάρους καὶ ἐποτρύνοντα μάχεσθαι.

ἀγχοῦ δ' ἰστάμενος προσέφη αἰσχροῖς ἐπέεσσιν·
 „Δύσπαρι, εἶδος ἄριστε, γυναιμανὲς ἡπεροπεντά,
 ποῦ τοι Δηίφοβός τε βίη θ' Ἑλένοιο ἄνακτος 770
 Ἀσιάδης τ' Ἀδάμας ἡδ' Ἄσιος Ὑρτάκου υἱός;
 ποῦ δέ τοι Ὀδρυνεύς; νῦν ὦλετο πᾶσα κατ' ἄκρης
 Ἴλιος αἰπεινή, νῦν τοι σῶς αἰπὺς ὄλεθρος.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπεν Ἀλέξανδρος θεοειδής·
 „Ἔκτορ, ἐπεὶ τοι θυμὸς ἀναίτιον αἰτιάσθαι, 775
 ἄλλοτε δὴ ποτε μᾶλλον ἐρωῆσαι πολέμοιο
 μέλλω, ἐπεὶ οὐδ' ἐμὲ πάμπαν ἀνάλκιδα γέλνατο μήτηρ·
 ἐξ οὗ γὰρ παρὰ νηυσὶ μάχην ἡγείρας ἐταίρων,
 ἐκ τοῦ δ' ἐνθάδ' ἐόντες ὀμιλέομεν Δαναοῖσιν
 νωλεμέως· ἔταροι δὲ κατέκταθεν, οὓς σὺ μεταλλάξ· 780
 οἷω Δηίφοβός τε βίη θ' Ἑλένοιο ἄνακτος
 οἴχεσθον, μακρῇσι τετυμμένω ἐγχείησιν
 ἀμφοτέρω κατὰ χεῖρα, φόνον δ' ἤμυνε Κρονίων.
 νῦν δ' ἄρχ', ὅππῃ σε κραδίη θυμὸς τε κελεύει·
 ἡμεῖς δ' ἐμμεμαῶτες ἅμ' ἐψόμεθ', οὐδέ τί φημι 785
 ἀλκῆς δευήσεσθαι, ὅση δύνάμεις γε πάρεστιν·
 παρ δύναμιν δ' οὐκ ἔστι καὶ ἐσσύμενον πολεμίζειν.“

ὣς εἰπὼν παρέπεισεν ἀδελφειοῦ φρένας ἥρως.
 βᾶν δ' ἴμεν, ἐνθα μάλιστα μάχῃ καὶ φύλοπις ἦεν,
 ἀμφὶ τε Κεβριόνην καὶ ἀμύμονα Πουλυδάμαντα, 790
 Φάλκην Ὀρθαῖόν τε καὶ ἀντίθεον Πολυφήτην
 Πάλλυν τ' Ἀσκανίον τε Μόρυν θ' υἱ' Ἴπποτίωνος,
 οἳ ῥ' ἐξ Ἀσκανίης ἐριβόλακος ἦλθον ἀμοιβοὶ
 ἦοι τῇ προτέρῃ· τότε δὲ Ζεὺς ὤρσε μάχεσθαι.
 οἳ δ' ἴσαν ἀργαλέων ἀνέμων ἀτάλαντοι ἀέλλη, 795
 ἢ ῥά θ' ὑπὸ βροντῆς πατρὸς Διὸς εἴσι πέδονδε,
 θεσπεσίῳ δ' ὁμάδῳ ἄλλ' μίσγεται, ἐν δέ τε πολλὰ
 κύματα παφλάζοντα πολυφλοίσβοιο θαλάσσης,

χυρτὰ φαληριόωντα, πρὸ μὲν τ' ἄλλ', αὐτὰρ ἐπ' ἄλλα·
ὥς Τρῶες πρὸ μὲν ἄλλοι ἀρηρότες, αὐτὰρ ἐπ' ἄλλοι, 800
χαλκῷ μαρμαίροντες ἅμ' ἡγεμόνεσσιν ἔποντο.

Ἐκτωρ δ' ἡγείτο βροτολοιγῷ ἴσος Ἄρηι,
Πριαμίδης· πρόσθεν δ' ἔχεν ἀσπίδα πάντοσ' εἰσὴν,
φίνοϊσιν πυκινήν, πολλὸς δ' ἐπελήλατο χαλκός·
ἄμφι δέ οἱ κροτάφοισι φαεινὴ σείετο πήληξ. 805

πάντη δ' ἄμφι φάλαγγας ἐπειρᾶτο προποδίζων,
εἰ πῶς οἱ εἴξειαν ὑπασπίδια προβιβάντι·
ἀλλ' οὐ σύγγει θυμὸν ἐνὶ στήθεσσιν Ἀχαιῶν.

Αἴας δὲ πρῶτος προκαλέσσατο, μακρὰ βιβιάσθων·
„δαιμόνιε, σχεδὸν ἔλθέ· τί ἦ δειδίσσεαι αὐτως 810
Ἀργείους; οὐ τοί τι μάχης ἀδαήμονές εἰμεν,
ἀλλὰ Διὸς μάστιγι κακῇ ἐδάμνημεν Ἀχαιοί.

ἦ θῆν πού τοι θυμὸς ἐέλπεται ἐξαλαπάξειν
νῆας· ἄφαρ δέ τε χεῖρες ἀμύνειν εἰσὶ καὶ ἡμῖν.
ἦ κε πολὺ φθαίῃ ἐν ναιομένη πόλιν ὑμῇ 815
χερσὶν ὅφ' ἡμετέρησιν ἀλοῦσά τε περθομένη τε.

σοὶ δ' αὐτῷ φημι σχεδὸν ἔμμεναι, ὅπποτε φεύγων
ἀρήσῃ Διὶ πατρὶ καὶ ἄλλοις ἀθανάτοισιν
θάσσοντας ἱρήκων ἔμμεναι καλλίτριχας ἵππους,
οἳ σε πόλινδ' οἴσουσι κονίοντες πεδίοιο.“ 820

ὥς ἄρα οἱ εἰπόντι ἐπέπτατο δεξιὸς ὄρνις,
αἰετὸς ὑψιπέτης· ἐπὶ δ' ἴαχε λαὸς Ἀχαιῶν
θάρσυνος οἶωνῷ. ὁ δ' ἀμείβετο φαίδιμος Ἐκτωρ·

„Αἴαν ἀμαρτοεπές, βουγᾶιε, ποῖον ξειπες.
εἰ γὰρ ἐγὼν οὕτω γε Διὸς πάϊς αἰγιόχοιο 825

εἶην ἡματα πάντα, τέκοι δέ με πότνια Ἥρη,
τιοίμην δ', ὥς τίετ' Ἀθηναίη καὶ Ἀπόλλων,
ὥς νῦν ἡμέρη ἥδε κακὸν φέρει Ἀργείοισιν
πᾶσι μάλ'· ἐν δὲ σὺ τοῖσι πεφῆσαι, αἶ κε ταλάσσης

μείναι ἐμὸν δόρυ μακρόν, ὃ τοι χρῶα λειριόεντα 830
 δάψει· ἀτὰρ Τρώων κορέεις κύνας ἡδ' οἰωνοὺς
 δημῷ καὶ σάρκεσσι, πεσῶν ἐπὶ νηυσὶν Ἀχαιῶν.“

ὣς ἄρα φωνήσας ἡγήσατο, τοὶ δ' ἅμ' ἔποντο
 ἡχῇ θεσπεσίῃ, ἐπὶ δ' ἰαχε λαὸς ὀπισθεν.
 Ἀργεῖοι δ' ἐτέρωθεν ἐπίαχον, οὐδὲ λάθοντο 835
 ἀλκῆς, ἀλλ' ἔμενον Τρώων ἐπιόντας ἀρίστους.
 ἡχῇ δ' ἀμφοτέρων ἵκετ' αἰδέερα καὶ Διὸς αὐγὰς.

ΙΛΙΑΔΟΣ Ξ.

Διὸς ἀπάτη.

Νέστορα δ' οὐκ ἔλαθεν ἰαχὴ πίνοντά περ ἔμπης,
 ἀλλ' Ἀσκληπιάδην ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „φράξο, δῖε Μαχᾶον, ὅπως ἔσται τάδε ἔργα·
 μείζων δὴ παρὰ νηυσὶ βοή θαλερῶν αἰζηῶν.
 ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν πῖνε καθήμενος αἶθοπα οἶνον, 5
 εἰς ὃ κε θερμὰ λοετρὰ ἐνπλόκαμος Ἐκαμήδη
 θερμήνῃ καὶ λούσῃ ἅπο βρότον αἱματόεντα·
 αὐτὰρ ἐγὼν ἐλθὼν τάχα εἶσομαι ἐς περιωπῆν.“

ὣς εἰπὼν σάκος εἴλε τετυγμένον υἱὸς ἑοῖο,
 κείμενον ἐν κλισίῃ, Θρασυμήδεος ἵπποδάμοιο, 10
 χαλκῷ παμφαῖνον· ὃ δ' ἔχ' ἀσπίδα πατρὸς ἑοῖο·
 εἴλετο δ' ἄλκιμον ἔγχος, ἀκαχμένον ὀξεί χαλκῷ.
 στῇ δ' ἐκτὸς κλισίης, τάχα δ' εἴσιδεν ἔργον ἀεικές,
 τοὺς μὲν ὀρινομένους, τοὺς δὲ κλονέοντας ὀπισθεν,
 Τρῶας ὑπερθύμους· ἐρέριπτο δὲ τεῖχος Ἀχαιῶν. 15
 ὥς δ' ὅτε πορφύρῃ πέλαγος μέγα κύματι κωφῷ,
 ὁσσομένον λιγέων ἀνέμων λαιψηρὰ κέλευθα,

αὐτως, οὐδ' ἄρα τε προκυλίνδεται οὐδ' ἐτέρωσε
 πρὶν τινα κεκριμένον καταβήμεναι ἐκ Διὸς οὔρον,
 ὥς ὁ γέρων ὠρμαινε δαλζόμενος κατὰ θυμόν 20
 διχθαδί', ἥ μεθ' ὅμιλον ἰοι Δαναῶν ταχυπώλων
 ἦε μετ' Ἀτρεΐδην Ἀγαμέμνονα ποιμένα λαῶν.
 ὦδε δέ οἱ φρονέοντι δοάσσατο κέρδιον εἶναι,
 βῆναι ἐπ' Ἀτρεΐδην. οἱ δ' ἀλλήλους ἐνάριζον
 μαρνάμενοι, λάκε δέ σφι περὶ χροῖ χαλκὸς ἀτειρῆς 25
 νυσσομένων ξίφεσιν τε καὶ ἔγχεσιν ἀμφιγύοισιν.

Νέστορι δὲ ξύμβληντο διοτρεφέες βασιλῆες
 παρ νηῶν ἀνιόντες, ὅσοι βεβλήατο χαλκῷ,
 Τυδεΐδης Ὀδυσσεύς τε καὶ Ἀτρεΐδης Ἀγαμέμνων.
 πολλὸν γάρ ῥ' ἀπάνευθε μάχης εἰρύατο νῆες 30
 θῖν' ἔφ' ἄλός πολιῆς· τὰς γὰρ πρῶτας πεδίονδε
 εἵρυσαν, αὐτὰρ τεῖχος ἐπὶ πρυμνήσιν ἔδειμαν.
 οὐδὲ γὰρ οὐδ' εὐρύς περ ἑὼν ἐδυνήσατο πάσας
 αἰγιαλὸς νῆας χαδέειν, στείνοντο δὲ λαοί·
 τῷ ῥα προκρόσσας ἔρυσαν, καὶ πλῆσαν ἀπάσης 35
 ἡιόνος στόμα μακρόν, ὅσον συνεέργαθον ἄκραι.
 τῷ ῥ' οἱ γ' ὀψείοντες ἀντῆς καὶ πολέμοιο,
 ἔγχει ἐρειδόμενοι κίον ἄθροοι· ἄχνητο δέ σφιν
 θυμὸς ἐνὶ στήθεσσιν· ὁ δὲ ξύμβλητο γεραιὸς
 [Νέστωρ, πτῆξε δὲ θυμόν ἐνὶ στήθεσσιν Ἀχαιῶν.] 40
 τὸν καὶ φωνήσας προσέφη κρείων Ἀγαμέμνων·
 „ὦ Νέστορ Νηληιάδη, μέγα κῦδος Ἀχαιῶν,
 τίπτε λιπὼν πόλεμον φθισήνορα δεῦρ' ἀφικάνεις;
 δαίδω, μὴ δὴ μοι τελέσῃ ἔπος ὕβριμος Ἔκτωρ,
 ὥς ποτ' ἐπηπείλησεν ἐνὶ Τρώεσσ' ἀγορεύων, 45
 μὴ πρὶν παρ νηῶν προτὶ Ἴλιον ἀπονέεσθαι,
 πρὶν πυρὶ νῆας ἐνιπρῆσαι, κτείνειν δὲ καὶ αὐτούς.
 κείνος τῷ ἀγόρευε· τὰ δὲ νῦν πάντα τελεῖται.

ὦ πόποι, ἦ ῥα καὶ ἄλλοι ἐυκνήμιδες Ἀχαιοὶ
ἐν θυμῷ βάλλονται ἐμοὶ χόλον, ὥς περ Ἀχιλλεύς, 50
οὐδ' ἐθέλουσι μάχεσθαι ἐπὶ πρυμνῇσι νέεσσιν.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα Γερήνιος ἱππότης Νέστωρ·
„ἦ δὴ ταῦτά γ' ἐτοῖμα τετεύχεται, οὐδέ κεν ἄλλως
Ζεὺς ὑψιβρεμέτης αὐτὸς παρατεκτῆναιτο.

τείχος μὲν γάρ δὴ κατερήριπεν, ᾧ ἐπέπιθμεν 55
ἄρρηκτον νηῶν τε καὶ αὐτῶν εἴλαρ ἔσεσθαι·
οἱ δ' ἐπὶ νηυσὶ θοῇσι μάχην ἀλλίστον ἔχουσιν
νωλεμές· οὐδ' ἂν ἔτι γνοίης, μάλα περ σκοπιάζων,
δοποτέρωθεν Ἀχαιοὶ ὀρινόμενοι κλονέονται·
ὥς ἐπιμῖξ κτείνονται, αὐτὴ δ' οὐρανὸν ἵκει. 60
ἡμεῖς δὲ φραζώμεθ', ὅπως ἔσται τάδε ἔργα,
εἴ τι νόος ῥέξει· πόλεμον δ' οὐκ ἄμμε κελεύω
δύμεναι· οὐ γάρ πως βεβλημένον ἔστι μάχεσθαι.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων·
„Νέστορ, ἐπεὶ δὴ νηυσὶν ἐπὶ πρυμνῇσι μάχονται, 65
τείχος δ' οὐκ ἔχραισμε τετυγμένον οὐδέ τι τάφος,
οἷς ἐπὶ πόλλ' ἔπαθον Δαναοί, ἔλποντο δὲ θυμῷ
ἄρρηκτον νηῶν τε καὶ αὐτῶν εἴλαρ ἔσεσθαι,
οὔτω που Διὶ μέλλει ὑπερμενέει φίλον εἶναι,
[γωνύμνους ἀπολέσθαι ἀπ' Ἀργεὸς ἐνθάδ' Ἀχαιούς.] 70
ἦδεα μὲν γάρ, ὅτε πρόφρων Δαναοῖσιν ἄμυνεν,
οἶδα δὲ νῦν, ὅτι τοὺς μὲν ὁμῶς μακάρεσσι θεοῖσιν
κυδάνει, ἡμέτερον δὲ μένος καὶ χεῖρας ἔδωκεν.
ἀλλ' ἄγεθ', ὥς ἂν ἐγὼ εἶπω, πειθώμεθα πάντες.
νῆες ὅσαι πρῶται εἰρύαται ἄγχι θαλάσσης, 75
ἔλκωμεν, πάσας δὲ ἐρύσσομεν εἰς ἄλλα δῖαν,
ὑψὶ δ' ἐπ' εὐνάων ὀρμίσσομεν, εἰς ὃ κεν ἔλθῃ
νῦξ ἀβρότη, ἣν καὶ τῇ ἀπόσχονται πολέμοιο
Τρῶες· ἔπειτα δέ κεν ἐρυσσάμεθα νῆας ἀπάσας.

οὐ γάρ τις νέμεσις φυγέειν κακόν, οὐδ' ἀνὰ νύκτα. 80
βέλτερον, ὃς φεύγων προφύγῃ κακὸν ἢ ἐλῶν.

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς·
„Ἀτρεΐδῃ, ποῖόν σε ἔπος φύγεν ἕρκος ὀδόντων.

οὐλόμεν', αἰθ' ὥφελλες ἀεικελίου στρατοῦ ἄλλου
σημαίνειν, μηδ' ἄμμιν ἀνασσέμεν, οἷσιν ἄρα Ζεὺς 85
ἐκ νεότητος ἔδωκε καὶ ἐς γῆρας τολυπεύειν
ἀργαλέους πολέμους, ὅφρα φθιόμεσθα ἕκαστος.

οὕτω δὴ μέμονας Τρώων πόλιν εὐρυάγνιαν
καλλεΐψειν, ἧς εἵνεκ' οἰζύομεν κακὰ πολλὰ;

σίγα, μὴ τίς τ' ἄλλος Ἀχαιῶν τοῦτον ἀκούσῃ 90
μῦθον, ὃν οὐ κεν ἀνὴρ γε διὰ στόμα πάμπαν ἄγοιτο,
ὃς τις ἐπίσταιτο ἧσι φρεσὶν ἔρτια βάζειν

σκηπτοῦχός τ' εἴη καὶ οἱ πειθοίατο λαοὶ
τοσσοῖδ', ὅσσοισιν σὺ μετ' Ἀργείοισιν ἀνάσσεις·

[νῦν δέ σευ ὠνοσάμην πάγχυ φρένας, οἷον ἔειπες] 95
ὃς κέλει πολέμοιο συνεσταότος καὶ αὐτῆς

νῆας ἐυσσέλμους ἅλαδ' ἐλκέμεν, ὅφρ' ἔτι μᾶλλον
Τρωσὶ μὲν εὐκτὰ γένηται ἐπικρατέουσιν περ ἔμπης,

ἡμῖν δ' αἰπὺς ὄλεθρος ἐπιρρέπῃ. οὐ γὰρ Ἀχαιοὶ
σχήσουσιν πόλεμον νηῶν ἅλαδ' ἐλκομενάων, 100

ἀλλ' ἀποπαπτανέουσιν, ἐρωήσουσι δὲ χάρμης.
ἐνθα κε σὴ βουλή δηλήσεται, ὄρχαμε λαῶν.

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων·
„ὦ Ὀδυσσεῦ, μάλα πῶς με καθίκεο θυμὸν ἐνιπῇ

ἀργαλέῃ· ἀτὰρ οὐ μὲν ἐγὼν ἀέκοντας ἄνωγα 105
νῆας ἐυσσέλμους ἅλαδ' ἐλκέμεν νῆας Ἀχαιῶν.

νῦν δ' εἴη, ὃς τῆσδέ γ' ἀμείνονα μῆτιν ἐνίσποι,
ἢ νέος ἢ παλαιός· ἐμοὶ δὲ κεν ἀσμένῳ εἴη.

τοῖσι δὲ καὶ μετέειπε βοὴν ἀγαθὸς Διομήδης·
„ἔγγυς ἀνὴρ — οὐ δηθὰ ματεύσομεν —, αἰκ' ἐθέλῃτε 110

πείθεσθαι καὶ μὴ τι κότε ἀγάσῃσθε ἕκαστος,
 οὐνεκα δὴ γενεῇφι νεώτατός εἰμι μεθ' ὑμῖν·
 πατὴρ δ' ἐξ ἀγαθοῦ καὶ ἐγὼ γένος εὖχομαι εἶναι
 Τυδέος, ὃν Θήβησι χυτὴ κατὰ γαῖα καλύπτει.
 Πορθεῖ γὰρ τρεῖς παῖδες ἀμύμονες ἐξεγένοντο, 115
 ᾧκεον δ' ἐν Πλευρώνι καὶ αἰπεινῇ Καλυδῶνι,
 Ἄγριος ἠδὲ Μέλας, τρίτατος δ' ἦν ἱππότα Οἶνεύς,
 πατὴρ ἐμοῖο πατὴρ· ἀρετῇ δ' ἦν ἑξοχος αὐτῶν.
 ἀλλ' ὁ μὲν αὐτόθι μέινει, πατὴρ δ' ἐμὸς Ἄργεϊ νάσθῃ
 πλαγχθείς· ὧς γάρ που Ζεὺς ἤθελε καὶ θεοὶ ἄλλοι. 120
 Ἀδρήστοιο δ' ἐγγίμε θυγατρῶν, ναῖε δὲ δῶμα
 ἀφνειὸν βιότοιο, ἅλις δέ οἱ ἦσαν ἄρουραι
 πυροφόροι, πολλοὶ δὲ φυτῶν ἔσαν ὄρχατοι ἀμφίς,
 πολλὰ δέ οἱ πρόβατ' ἔσκε· κέκαστο δὲ πάντας Ἀχαιοὺς
 ἐγγείη· τὰ δὲ μέλλειτ' ἀκουέμεν, εἰ ἔτεόν περ. 125
 τῷ οὐκ ἂν με γένος γε κακὸν καὶ ἀνάλκιδα φάντες
 μῦθον ἀτιμῆσαιτε πεφασμένον, ὃν κ' ἐν εἶπω.
 δεῦτ' ἱομεν πολεμόνδε, καὶ οὐτάμενοί περ, ἀνάγκη·
 ἐνθα δ' ἔπειτ' αὐτοὶ μὲν ἐχώμεθα δημοτῆτος
 ἐκ βελέων, μὴ πού τις ἐφ' ἔλκει ἔλκος ἄρηται· 130
 ἄλλους δ' ὀτρύνοντες ἐνήσομεν, οἳ τὸ πάρος περ
 θυμῷ ἦρα φέροντες ἀφροσῆσ' οὐδὲ μάχονται.“
 ὧς ἔφαθ', οἳ δ' ἄρα τοῦ μάλα μὲν κλύον ἠδὲ πίθοντο·
 βᾶν δ' ἵμεν, ἦρχε δ' ἄρα σφιν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων.
 οὐδ' ἄλαος σκοπιῆν | εἶχε κλυτὸς ἐννοσίγαιος, 135
 ἀλλὰ μετ' αὐτοὺς ἦλθε παλαιῷ φωτὶ ἐοικώς,
 δεξιτερὴν δ' ἔλε χεῖρ' Ἀγαμέμνονος Ἀτρεΐδαο,
 καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Ἀτρεΐδῃ, νῦν δὴ που Ἀχιλλῆος ὀλοὸν κῆρ
 γηθεῖ ἐνὶ στήθεσσι, φόνον καὶ φύξαν Ἀχαιῶν 140
 δερκομένῳ, ἐπεὶ οὐ οἳ ἐνὶ φρένες, οὐδ' ἡβαιαί.

ἀλλ' ὁ μὲν ὥς ἀπόλοιτο, θεὸς δέ ἐ σιφλώσειεν·
 σοὶ δ' οὐ πω μάλα πάγχυ θεοὶ μάκαρες κοτέουσιν,
 ἀλλ' ἔτι που Τρώων ἡγήτορες ἡδὲ μέδοντες
 εὐρὺ κονίσουσιν πεδίον, σὺ δ' ἐπόψαι αὐτοὺς 145
 φεύγοντας προτὶ ἄστν νεῶν ἄπο καὶ κλισιάων.“

ὥς εἰπὼν μέγ' ἄυσεν, ἐπεσσύμενος πεδίοιο.
 ὅσσον δ' ἐννεάχιλοι ἐπίαχον ἢ δεκάχιλοι
 ἀνέρες ἐν πολέμῳ, ἐριδα ξυνάγοντες Ἄρηος,
 τόσσην ἐκ στήθεσφιν ὅπα κρείων ἐνοσίχθων 150
 ἤκεν· Ἀχαιοῖσιν δὲ μέγα σθένος ἐμβαλ' ἐκάστω
 καρδίῃ, ἄλληλκτον πολεμίζειν ἡδὲ μάχεσθαι.

Ἥρη δ' εἰσεῖδε χρυσόθρονος ὀφθαλμοῖσιν
 σταῖς' ἐξ Οὐλύμποιο ἀπὸ οἴου· ἀντίκα δ' ἔγνω
 τὸν μὲν ποιπνύοντα μάχην ἀνὰ κυδιάνειραν, 155
 αὐτοκασίγνητον καὶ δαέρα, χαῖρε δὲ θυμῷ·
 Ζῆνα δ' ἐπ' ἀκροτάτης κορυφῆς πολυπίδακος Ἴδης
 ἤμενον εἰσεῖδε, στυγερός δέ οἱ ἐπλετο θυμῷ.
 μερμήριξε δ' ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρη,
 ὅπως ἐξαπάφοιτο Διὸς νόον αἰγιοόχοιο. 160
 ἦδε δέ οἱ κατὰ θυμὸν ἀρίστη φαίνετο βουλή,
 ἔλθειν εἰς Ἴδην ἐν ἐντύνασαν ἔ αὐτήν,
 εἰ πως ἱμεῖραιτο παραδραθῆειν φιλότῃ
 ἢ χροῖῃ, τῷ δ' ὕπνον ἀπήμονά τε λιαρόν τε
 χεῦν ἐπὶ βλεφάροισιν ἰδὲ φρεσὶ πενκαλίμησιν. 165
 βῆ δ' ἱμεν ἐς θάλαμον, τὸν οἱ φίλος υἱὸς ἔτευξεν
 Ἥφαιστος, πυκινὰς δὲ θύρας σταθμοῖσιν ἐπῆρσεν
 κληῖδι κρυπτῇ· τὴν δ' οὐ θεὸς ἄλλος ἀνῶγεν.
 ἐνθ' ἢ γ' εἰσελθοῦσα θύρας ἐπέθηκε φαεινὰς.
 ἀμβροσίῃ μὲν πρῶτον ἀπὸ χροὸς ἱμερόεντος 170
 λύματα πάντα κάθηρεν, ἀλείψατο δὲ λίπ' ἐλαίῳ
 ἀμβροσίῳ ἐδανῶ, τό ῥά οἱ τεθυωμένον ἦεν·

τοῦ καὶ κινυμένοιο Διὸς κατὰ χαλκοβατὲς δῶ
 ἔμπης ἐς γαῖάν τε καὶ οὐρανὸν ἵκει' ἀντμή.
 τῷ ῥ' ἦ γε χρὸα καλὸν ἀλειψαμένη, ἰδὲ χαίτας 175
 πεξαμένη, χερσὶ πλοκάμους ἐπλεξε φαεινοῦς
 καλοῦς ἀμβροσίους ἐκ κράατος ἀθανάτοιο.

ἀμφὶ δ' ἄρ' ἀμβρόσιον ἑανὸν ἔσαθ', ὅν οἱ Ἀθήνη
 ἔξυσ' ἀσκήσασα, τίθει δ' ἐνὶ δαίδαλα πολλά·
 χρυσεῖης δ' ἐνετῆσι κατὰ στήθος περονᾶτο. 180

ζώσατο δὲ ζώονην ἑκατὸν θυσάνοις ἀραρυῖαν,
 ἐν δ' ἄρα ἔρματα ἦκεν ἐντρήτοισι λοβοῖσιν
 τρίγληνα μορβέοντα· χάρις δ' ἀπελάμπετο πολλή.
 κρηδέμνω δ' ἐφύπερθε καλύψατο δῖα θεᾶων
 καλῷ νηγατέφ'· λαμπρὸν δ' ἦν ἥελιος ὥς ^{ἐν κρυπτοῖς κεν} 185
 ποσσὶ δ' ὑπὸ λιπαροῖσιν ἐδήσατο καλὰ πέδιλα.

αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ πάντα περὶ χροῖ θήκατο κόσμον,
 βῆ ῥ' ἴμεν ἐκ θαλάμοιο, καλεσσομένη δ' Ἀφροδίτην
 τῶν ἄλλων ἀπάνευθε θεῶν πρὸς μῦθον ἔειπεν·
 „ἦ ῥά νῦ μοί τι πύθοιο, φίλον τέκος, ὅτι κεν εἴπω, 190
 ἦέ κεν ἀρνήσαιο, κοτεσσομένη τό γε θυμῷ,
 οὔνεκ' ἐγὼ Δαναοῖσι, σὺ δὲ Τρῶεσσιν ἀρήγεις;“

τὴν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη·
 „Ἥρη, πρέσβα θεά, θύγατερ μεγάλοιο Κρόνοιο,
 αὐδα, ὅ τι φρονέεις· τελέσαι δέ με θυμὸς ἄνωγεν, 195
 εἰ δύναιμαι τελέσαι γε καὶ εἰ τετελεσμένον ἐστίν.“

τὴν δὲ δολοφρονέουσα προσηύδα πότνια Ἥρη·
 „δὸς νῦν μοι φιλότητα καὶ ἥμερον, ᾧ τε σὺ πάντας
 δαμνᾷ ἀθανάτους ἡδὲ θνητοὺς ἀνθρώπους.
 εἴμι γὰρ ὀψομένη πολυφόρβον πείρατα γαίης 200
 Ὠκεανόν τε θεῶν γένεσιν καὶ μητέρα Τηθύν,
 οἷ με σφοῖσι δόμοισιν ἐν τρέφον ἡδ' ἀτίταλλον,
 δεξάμενοι Πείης, ὅτε τε Κρόνον εὐρύοπα Ζεὺς

γαίης νέρθε καθείσε καὶ ἀτρυνέτοιο θαλάσσης·
 τοὺς εἶμ' ὀψομένη, καὶ σφ' ἄκριτα νείκεα λύσω. 205
 ἦδη γὰρ δηρὸν χρόνον ἀλλήλων ἀπέχονται
 εὐνῆς καὶ φιλότῆτος, ἐπεὶ χόλος ἔμπεσε θυμῷ.
 εἰ κείνω γ' ἐπέεσσι παραιπεπιθοῦσα φίλον κῆρ
 εἰς εὐνὴν ἀνέσαιμι ὁμωθῆναι φιλότῃτι,
 αἰεὶ κέ σφι φίλῃ τε καὶ αἰδοίῃ καλεοίμην.“ 210

τὴν δ' αὖτε προσέειπε φιλομμειδῆς Ἀφροδίτη·
 „οὐκ ἔστ' οὐδὲ ἔοικε τεδὸν ἔπος ἀρνήσασθαι·
 Ζηνὸς γὰρ τοῦ ἀρίστου ἐν ἀγκοίνῃσιν ἰαύεις.“

ἦ καὶ ἀπὸ στήθεσφιν ἐλύσατο κεστὸν ἱμάντα
 ποικίλον, ἐνθα τέ οἱ θελκτήρια πάντα τέτυκτο· 215
 ἐνθ' ἐνὶ μὲν φιλότῆς, ἐν δ' ἱμερος, ἐν δ' ὀαριστὺς
 πάρφαις, ἥ τ' ἔκλεψε νόον πύκα περ φρονεόντων.
 τὸν δ' αὖ οἱ ἔμβαλε χερσίν, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν·
 „τῇ νῦν, τοῦτον ἱμάντα τεῷ ἐγκάτθεο κόλπῳ
 ποικίλον, ᾧ ἐνὶ πάντα τετεύχεται· οὐδέ σε φημι 220
 ἄπρηκτόν γε νέεσθαι, ὃ τι φρεσὶ σῇσι μενοινᾷς.“

ὥς φάτο, μείδησεν δὲ βοῶπις πότνια Ἥρη,
 μειδίσασα δ' ἔπειτα ἑῷ ἐγκάτθετο κόλπῳ.

ἦ μὲν ἔβη πρὸς δῶμα Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη,
 Ἥρη δ' αἰξάσα λίπεν φίλον Οὐλύμποιο, 225
 Πιερίην δ' ἐπιβάσα καὶ Ἡμαθίην ἐρατεινὴν
 σεύατ' ἐφ' ἱπποπόλων Θρηκῶν ὄρεα νιφόεντα,
 ἀκροτάτας κορυφάς, οὐδὲ χθόνα μάρπτε ποδοῖν·
 ἐξ Ἀθώω δ' ἐπὶ πόντον ἐβήσετο κυμαίνοντα.
 Αἴημον δ' εἰσαφίκανε, πόλιν θείλοιο Θόαντος· 230
 ἐνθ' Ἰπνῷ ξύμβλητο, κασιγνήτῳ Θανάτοιο,
 ἐν τ' ἄρα οἱ φῶ χεῖρί, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν·
 „Ἰπνε, ἄναξ πάντων τε θεῶν πάντων τ' ἀνθρώπων,
 ἡμὲν δὴ ποτ' ἐμὸν ἔπος ἐκλυες, ἦδ' ἔτι καὶ νῦν

πείθην· ἐγὼ δὲ κέ τοι ἰδέω χάριν ἤματα πάντα. 235
 κοίμησόν μοι Ζηνὸς ὑπ' ὀφρύσιν ὅσσε φαιινῶ,
 αὐτίκ' ἐπεὶ κεν ἐγὼ παραλέξομαι ἐν φιλότῃτι.
 δῶρα δέ τοι δώσω καλὸν θρόνον, ἄφθιτον αἰεὶ,
 χρύσειον· Ἥφαιστος δέ κ' ἐμὸς πάϊς ἀμφιγυήεις
 τεύξει ἀσκήσας, ὑπὸ δὲ θρηῖνον ποσὶν ἦσει, 240
 τῷ κεν ἐπισχοίης λιπαροὺς πόδας εἰλαπινάζων·
 τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσεφώνεε νήδυμος Ἵπνος·
 „Ἥρῃ, πρέσβα θεά, θύγατερ μεγάλαιο Κρόνοιο,
 ἄλλον μὲν κεν ἐγὼ γε θεῶν αἰειγενετάων
 ρεία κατευνήσαιοι, καὶ ἂν ποταμοῖο ῥέεθρα 245
 Ὠκεανοῦ, ὅς περ γένεσις πάντεσσι τέτυκται·
 Ζηνὸς δ' οὐκ ἂν ἐγὼ γε Κρονίου ἄσσον ἰκοίμην
 οὐδὲ κατευνήσαιμ', ὅτε μὴ αὐτός γε κελεύοι.
 ἦδη γάρ με καὶ ἄλλοτε σὴ ἐπίνυσσεν ἐφετμή,
 ἤματι τῷ, ὅτε κείνος ὑπέρθυμος Διὸς υἱὸς 250
 ἐπλεεν Ἰλιόθεν, Τρώων πόλιν ἐξαλαπάξας.
 ἦ τοι ἐγὼ μὲν ἔλεξα Διὸς νόον αἰγιοόχοιο
 νήδυμος ἀμφιχυθείς, σὺ δέ οἱ κακὰ μῆσαι θυμῷ
 ὄρσας ἀργαλέων ἀνέμων ἐπὶ πόντον ἀήτας,
 καὶ μιν ἔπειτα Κόωνδ' ἐν ναιομένην ἀπένεικας, 255
 νόσφι φίλων πάντων. ὁ δ' ἐπεγρόμενος χαλέπαινε
 ριπτάζων κατὰ δῶμα θεοῦς, ἐμὲ δ' ἔξοχα πάντων
 ζήτει· καὶ κέ μ' αἰστον ἀπ' αἰθέρος ἐμβαλε πόντῳ,
 εἰ μὴ Νηξὶ δμήτειρα θεῶν ἐσάωσε καὶ ἀνδρῶν·
 τὴν ἰκόμην φεύγων, ὁ δ' ἐπαύσατο χωόμενός περ· 260
 ἄξετο γάρ, μὴ Νυκτὶ θεῶν ἀποθύμια ἔρδοι.
 νῦν αὖ τοῦτό μ' ἄνωγας ἀμήχανον ἄλλο τελέσσαι·
 τὸν δ' αὖτε προσέειπε βοῶπις πότνια Ἥρῃ·
 „Ἵπνε, τί ἦ δὲ σὺ ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῇσι μενοινᾷς;
 ἦ φῆς ὥς Τρώεσσιν ἀρηξέμεν εὐρύοπα Ζῆν, 265

ὥς Ἡρακλῆος περιχώσατο, παιδὸς ἑοῖο;
 ἀλλ' ἰθ', ἐγὼ δέ κέ τοι χαρίτων μίαν ὀπλοτεράων
 δώσω ὀπνιέμεναι καὶ σὴν κεκλησθαι ἄκοιτιν,
 [Πασιδέην, ἧς αἶν ἐέλδεται ἡματα πάντα.] 269

ὥς φάτο, χήρατο δ' Ὕπνος, ἀμειβόμενος δὲ προσηύδα·
 „ἄγρει νῦν μοι ὁμοσσον ἁάατον Στυγὸς ὕδωρ,
 χειρὶ δὲ τῇ ἐτέρῃ μὲν ἔλε χθόνα πουλυβότειραν,
 τῇ δ' ἐτέρῃ ἄλλα μαρμαρέην, ἵνα νῶιν ἅπαντες
 μάρτυροι ᾧσ' οἱ ἐνερθε θεοὶ Κρόνον ἀμφὶς ἐόντες,
 ἧ μὲν ἐμοὶ δώσειν χαρίτων μίαν ὀπλοτεράων, 275
 Πασιδέην, ἧς τ' αὐτὸς ἐέλδομαι ἡματα πάντα.“

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε θεά, λευκώλενος Ἥρη,
 ᾧμνε δ', ὥς ἐκέλευε, θεοὺς δ' ὀνόμηνεν ἅπαντας
 τοὺς ὑποταρταρίους, οἳ Τιτῆνες καλέονται.
 αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ὁμοσέν τε τελεύτησέν τε τὸν ὄρκον, 280
 τῷ βήτην, Αἴημον τε καὶ Ἰμβρου ἄστν λιπόντε,
 ἡέρα ἐσσαμένω ρίμφα πρήσσοντε κέλευθον.
 Ἰδην δ' ἱκέσθην πολυπίδακα, μητέρα θηρῶν,
 Λεκτόν, ὅθι πρῶτον λιπέτην ἄλλα· τῷ δ' ἐπὶ χέρσου
 βήτην, ἀκροτάτῃ δὲ ποδῶν ὑπο σείετο ὕλη. 285

ἔνθ' Ὕπνος μὲν ἔμεινε πάρος Διὸς ὅσσε ιδέσθαι,
 εἰς ἐλάτην ἀναβὰς περιμήκετον, ἧ τότε ἐν Ἰδῇ
 μακροτάτῃ πεφυυῖα δι' ἡέρος αἰθέρ' ἵκανεν·
 ἔνθ' ἦστ' ὄξοισιν πεπνυκασμένος εἰλατίνοισιν,
 ὄρνιθι λιγυρῇ ἐναλίγκιος, ἦν τ' ἐν ὄρεσιν 290
 χαλκίδα κικλήσκουσι θεοί, ἄνδρες δὲ κύμινδιν.
 Ἥρη δὲ κραιπνῶς προσεβήσετο Γάργαραν ἄκρον
 Ἰδῆς ὑψηλῆς· ἰδε δὲ νεφεληγερέτα Ζεὺς.

ὥς δ' ἰδεν, ὥς μιν ἔρος πυκινὰς φρένας ἀμφεκάλυψεν,
 οἶον ὅτε πρῶτόν περ ἐμισγέσθην φιλότῃτι, 295
 εἰς εὐνὴν φοιτῶντε φίλους λήθοντε τοκῆας.

στῇ δ' αὐτῆς προπάροιθεν, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν
 „Ἥρη, πῇ μεμανῖα κατ' Οὐλύμπου τόδ' ἱκάνεις;
 ἵπποι δ' οὐ παρέασι καὶ ἄρματα, τῶν κ' ἐπιβαίης.“

τὸν δὲ δολοφρονέουσα προσηύδα πότνια Ἥρη· 300
 „ἔρχομαι ὄψομένη πολυφόρβου πείρατα γαίης
 Ὠκεανὸν τε θεῶν γενέσιν καὶ μητέρα Τηθύν,
 οἷ με σφοῖσι δόμοισιν ἐν τρέφον ἡδ' ἀτίταλλον·
 τοὺς εἰμ' ὄψομένη, καὶ σφ' ἄκριτα νείκεα λύσω.
 ἤδη γὰρ δηρὸν χρόνον ἀλλήλων ἀπέχονται 305
 εὐνῆς καὶ φιλότῃτος, ἐπεὶ χόλος ἔμπεσε θυμῷ.
 ἵπποι δ' ἐν πρυμνωρεῖη πολυπίδακος Ἴδης
 ἔσταισ', οἷ μ' οἴσουσιν ἐπὶ τραφερῇν τε καὶ ὑγρῇν.
 νῦν δὲ σεῦ εἵνεκα δεῦρο κατ' Οὐλύμπου τόδ' ἱκάνω,
 μή πῶς μοι μετέπειτα χολώσσαι, αἶ κε σιωπῇ 310
 οἴχωμαι πρὸς δῶμα βαθυρρόου Ὠκεανοῦ.“

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·
 „Ἥρη, κεῖσε μὲν ἔστι καὶ ὕστερον ὀρμηθῆναι,
 νῦν δ' ἄγ' ἐν φιλότῃτι τραπέομεν εὐνηθέντε·
 οὐ γάρ πώ ποτέ μ' ὧδε θεᾶς ἔρος οὐδὲ γυναικὸς 315
 θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι περιπροχυνθεὶς ἐδάμασσεν,
 [οὐδ' ὁπότε ἡρασάμην Ἰξιονίης ἀλόχοιο,
 ἣ τέκε Πειρίθοον θεόφιν μήστωρ' ἀτάλαντον·
 οὐδ' ὅτε περ Δανάης καλλισφύρου Ἀκρισιῶνης,
 ἣ τέκε Περσῆα πάντων ἀριδείκετον ἀνδρῶν· 320
 οὐδ' ὅτε Φοῖνικος κούρης τηλεκλειτοιο,
 ἣ τέκε μοι Μίνω τε καὶ ἀντίθεον Ῥαδάμανθυν·
 οὐδ' ὅτε περ Σεμέλης οὐδ' Ἀλκμήνης ἐνὶ Θήβῃ,
 ἣ ῥ' Ἡρακλῆα κρατερόφρονα γείνατο παῖδα·
 ἣ δὲ Διώνυσον Σεμέλῃ τέκε χάρμα βροτοῖσιν· 325
 οὐδ' ὅποτε Λητοῦς ἐρικυδέος, οὐδὲ σεῦ αὐτῆς,]

ὥς σέο νῦν ἔραμαι καί με γλυκὺς ἥμερος αἰρεῖ.“

τὸν δὲ δολοφρονέουσα προσηύδα πότνια Ἥρη·
 „αἰνότατε Κρονίδη, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες. 330

εἰ νῦν ἐν φιλότῃ λιλαίεαι εὐνηθῆναι

Ἴδης ἐν κορυφῇσι, τὰ δὲ προπέφανται ἅπαντα·

πῶς κ' ἔοι, εἴ τις νῶι θεῶν αἰγιγενετάων

εὐδοντ' ἀθρήσειε, θεοῖσι δὲ πᾶσι μετελθὼν

πεφράδοι; οὐκ ἂν ἐγὼ γε τεὸν πρὸς δῶμα νεοίμην 335

ἔξ εὐνῆς ἀνστάσας, νεμεσσητὸν δέ κεν εἴη.

ἀλλ' εἰ δὴ ῥ' ἐθέλεις καί τοι φίλον ἐπλετο θυμῷ,

ἔστιν τοι θάλαμος, τὸν τοι φίλος νῆος ἔτευξεν

Ἥφαιστος, πνικινὰς δὲ θύρας σταθμοῖσιν ἐπῆρσεν·

ἐνθ' ἴομεν κέλοντες, ἐπεὶ νύ τοι εὐαδεν εὐνή.“ 340

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·

„Ἥρη, μήτε θεῶν τό γε δείδιθι μήτε τιν' ἀνδρῶν

ὑψεσθαι· τοῖόν τοι ἐγὼ νέφος ἀμφικαλύψω

χρύσειον· οὐδ' ἂν νῶι διαδράκοι Ἡέλιός περ,

οὗ τε καὶ ὀξύτατον πέλεται φάος εἰσοράασθαι.“ 345

ἣ ῥα καὶ ἀγκὰς ἔμαρπτε Κρόνου παῖς ἦν παράκοιτιν·

τοῖσι δ' ὑπὸ χθῶν διὰ φύεν νεοθηλέα ποίην,

λωτόν θ' ἐρσήεντα ἰδὲ κρόκον ἠδ' ὑάκινθον

πυκνὸν καὶ μαλακόν, ὃς ἀπὸ χθονὸς ὑψόσ' ἔεργεν.

τῷ ἐνι λεξάσθην, ἐπὶ δὲ νεφέλῃν ἕσσαντο 350

καλὴν χρυσεῖην· στιλπνὰ δ' ἀπέπιπτον ἔερσαι.

ὥς ὁ μὲν ἀτρέμας εὐδὲ πατήρ ἀνὰ Γαργάρῳ ἄκρῳ,

ἕπνῳ καὶ φιλότῃ δαμείς, ἔχε δ' ἀγκὰς ἄκοιτιν·

βῆ δὲ θέειν ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν νήδυμος Ἵπνος

ἀγγελίην ἐρέων γαιηόχῳ ἐννοσιγαίῳ. 355

ἀγχοῦ δ' Ἰστάμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„πρόφρων νῦν Δαναοῖσι, Ποσειδάων, ἐπάμννε,

καί σφιν κῦδος ὕπαξε μίνυνθά περ, ὕφρ' ἔτι εὐδῇ

Ζεύς, ἐπεὶ αὐτῷ ἐγὼ μαλακὸν περὶ κῶμα κάλυψα·
 Ἥρη δ' ἐν φιλότῃ παρήπαφεν εὐνηθῆναι.“ 360

ὥς εἰπὼν ὁ μὲν ᾤχετ' ἐπὶ κλυτὰ φύλ' ἀνθρώπων,
 τὸν δ' ἔτι μᾶλλον ἀνῆκεν ἀμυνέμεναι Δαναοῖσιν.
 αὐτίκα δ' ἐν πρώτοισι μέγα προθορῶν ἐκέλευσεν·
 „Ἀργεῖοι, καὶ δὴ αὐτε μεθίεμεν Ἑκτορι νίκην
 Πριαμίδῃ, ἵνα νῆας ἔλῃ καὶ κῦδος ἄρῃται; 365
 ἀλλ' ὁ μὲν οὕτω φησὶ καὶ εὖχεται, οὐνεκ' Ἀχιλλεὺς
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσι μένει κεχολωμένος ἥτορ·
 κείνου δ' οὔ τι λίην ποθὴ ἔσσεται, εἴ κεν οἱ ἄλλοι
 ἡμεῖς ὀτρυνώμεθ' ἀμυνέμεν ἀλλήλοισιν·

ἀλλ' ἄγεθ', ὥς ἂν ἐγὼ εἶπω, πειθώμεθα πάντες. 370
 ἀσπίδες ὄσσαι ἔρισται ἐνὶ στρατῷ ἡδὲ μέγισται,
 ἐσσάμενοι, κεφαλὰς δὲ παναΐδησιν κορύθεσσι
 κρύφαντες, χερσὶν δὲ τὰ μακρότατ' ἔγχε' ἐλόντες,
 ἴομεν· αὐτὰρ ἐγὼν ἡγήσομαι, οὐδ' ἔτι φημί

Ἑκτορα Πριαμίδην μενέειν μάλα περ μεμαῶτα. 375
 [ὅς δέ κ' ἀνὴρ μενέχαρμος, ἔχῃ δ' ὀλίγον σάκος ὦμῳ,
 χεῖροσι φωτὶ δότω, ὁ δ' ἐν ἀσπίδι μέλζονι δύτω“.]

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα τοῦ μάλα μὲν κλύουν ἡδὲ πίθοντο.
 τοὺς δ' αὐτοὶ βασιλῆες ἐκόσμεον οὐτάμενοί περ,
 Τυδεΐδης Ὀδυσσεύς τε καὶ Ἀτρεΐδης Ἀγαμέμνων· 380
 [οἰχόμενοι δ' ἐπὶ πάντας ἀρήια τεύχε' ἄμβειβον.
 ἐσθλὰ μὲν ἐσθλὸς ἔδυνε, χέρηα δὲ χεῖροσι δόσκεν.]

αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ἔσσαντο περὶ χροῖ νώροπα χαλκόν,
 βάν ῥ' ἴμεν· ἦρχε δ' ἄρα σφι Ποσειδάων ἐνοσίχθων,
 δεινὸν ἄορ ταυνήκες ἔχων ἐν χειρὶ παχείῃ, 385
 εἰκελὸν ἀστεροπῇ· τῷ δ' οὐ θέμις ἐστὶ μιγῆναι
 ἐν δαΐ λευγαλέῃ, ἀλλὰ δέος ἰσχάνει ἄνδρας.

Τρῶας δ' αὐτ' ἐτέρωθεν ἐκόσμεε φαίδιμος Ἑκτωρ.
 δὴ ῥα τότε αἰνοτάτην ἔριδα πτολέμοιο τάνυσσαν

κυανοχαῖτα Ποσειδάων καὶ φαίδιμος Ἔκτωρ,
 ἦ τοι ὁ μὲν Τρώεσσιν, ὁ δ' Ἀργείοισιν ἀρήγων.
 ἐκλύσθη δὲ θάλασσα ποτὶ κλισίας τε νέας τε
 Ἀργείων· οἱ δὲ ξύνισαν μεγάλῳ ἀλαλητῷ.
 οὔτε θαλάσσης κῦμα τόσον βοᾶα ποτὶ χέρσον,
 ποντιόθεν ὀρνύμενον πνοιῇ Βορέῳ ἀλεγεινῇ,
 οὔτε πυρὸς τόσσοι γε πέλει βρόμος αἰθομένοιο
 οὔρεος ἐν βήσσης, ὅτε τ' ὤρετο καίεμεν ὕλην,
 οὔτ' ἄνεμος τόσσον γε περὶ δρυσὶν ὑψιχόμοισιν
 ἠπύει, ὅς τε μάλιστα μέγα βρέμεται χαλεπαίνων,
 ὅσση ἄρα Τρώων καὶ Ἀχαιῶν ἐπλετο φωνή
 δεινὸν ἀνσάντων, ὅτ' ἐπ' ἀλλήλοισιν ὄρουσαν.

Αἰαντος δὲ πρῶτος ἀκόντισε φαίδιμος Ἔκτωρ
 ἔρχει, ἐπεὶ τέτραπτο πρὸς ἰθύ οἱ, οὐδ' ἀφάμαρτεν,
 τῇ ῥα δύω τελαμῶνε· περὶ στήθεσσι τετάσθην,
 ἦ τοι ὁ μὲν σάκεος, ὁ δὲ φασγάνου ἀργυροήλου·
 τῷ οἱ θυσάσθην τέρενα χροά· χῶσατο δ' Ἔκτωρ,
 ὅτι ῥά οἱ βέλος ὤκν' ἐτώσιον ἐκφυγε χειρὸς,
 ἅψ δ' ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο κῆρ' ἀλεείνων.
 τὸν μὲν ἔπειτ' ἀπιόντα μέγας Τελαμώνιος Αἴας
 χερμαδίῳ, τὰ ῥα πολλὰ θοάων ἔχματα νηῶν
 παρ ποσὶ μαρναμένων ἐκυλίνδετο, τῶν ἐν αἰέρας
 στῆθος βεβλήκειν ὑπὲρ ἄντυγος, ἀγχόθι δειρῆς,
 στρόμβον δ' ὥς ἔσσευε βαλῶν, περὶ δ' ἔδραμε πάντη.
 ὥς δ' ὅθ' ὑπὸ πληγῆς πατρὸς Διὸς ἐξερίπη δρυῖς
 πρόρριζος, δεινὴ δὲ θεείου γίγνεται ὁδμῇ
 ἐξ αὐτῆς· τὸν δ' οὐ περ ἔχει θράσος, ὅς κεν ἰθνηται
 ἐγγὺς ἐών, χαλεπὸς δὲ Διὸς μέγαλοιο κεραυνός·
 ὥς ἔπεσ' Ἔκτορος ὥκα χαμαὶ μένος ἐν κονίῃσιν.
 χειρὸς δ' ἐκβαλεν ἔγχος, ἐπ' αὐτῷ δ' ἀσπίς ἐάφθη
 καὶ κόρυς, ἀμφὶ δέ οἱ βράχε τεύχεα ποικίλα χαλκῷ.

οἱ δὲ μέγα ἰάχοντες ἐπέδραμον νῆες Ἀχαιῶν,
 ἐλπόμενοι ἐρύεσθαι, ἀκόντιζον δὲ θαμειᾶς
 αἰχμᾶς· ἄλλ' οὐ τις ἐδυνήσατο ποιμένα λαῶν
 οὐτάσαι οὐδὲ βαλεῖν· πρὶν γὰρ περίβησαν ἄριστοι,
 Πούλυδάμας τε καὶ Αἰνείας καὶ δῖος Ἀγήμερος 425
 Σαρπηδῶν τ' ἀρχὸς Λυκίων καὶ Γλαῦκος ἀμύμων·
 τῶν δ' ἄλλων οὐ τις εὖ ἀκήδεσεν, ἀλλὰ πάροιθεν
 ἀσπίδας εὐκύνκλους σχέθον αὐτοῦ. τὸν δ' ἄρ' ἑταῖροι
 χερσὶν αἰείραντες φέρον ἐκ πόνου, ὄφρ' ἴκεθ' ἵππους
 ὠκέας, οἳ οἱ ὕπισθε μάχης ἡδὲ πτολέμοιο 430
 ἕστασαν ἡνίοχόν τε καὶ ἄρματα ποικίλ' ἔχοντες·
 οἳ τὸν γε προτὶ ἄστυ φέρον βαρεῖα στενάχοντα.
 ἀλλ' ὅτε δὴ πόρον ἵξον ἐυρρεὶος ποταμοῖο,
 Ξάνθου δινήεντος, δν ἀθάνατος τέκετο Ζεὺς,
 ἔνθα μιν ἐξ ἵππων πέλασαν χθονί, καὶ δέ οἱ ὕδωρ 435
 χεῦαν· ὁ δ' ἀμπνύνθη καὶ ἀνέδρακεν ὀφθαλμοῖσιν,
 ἐξόμενος δ' ἐπὶ γοῦνα κελαινεφὲς αἶμ' ἀπέμεσσεν.
 αὐτίς δ' ἐξοπίσω πλῆτο χθονί, τὼ δέ οἱ ὄσσε
 νύξ ἐκάλυψε μέλαινα, βέλος δ' ἔτι θυμὸν ἐδάμνα.
 Ἀργεῖοι δ' ὥς οὖν ἴδον Ἐκτορα νόσφι κίοντά, 440
 μᾶλλον ἐπὶ Τρῳέσσι θόρον, μνήσαντο δὲ χάρις.
 ἔνθα πολὺν πρῶτιστος Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας
 Σάτνιον οὔτασε δουρὶ μετάλμενος δεσφέντι
 Ἥνοπίδην, δν ἄρα νύμφη τέκε νηὶς ἀμύμων
 Ἥνοπι βονκολέοντι παρ' ὄχθας Σατνιδέοντος. 445
 τὸν μὲν Ὀϊλιάδης δουρικλυτὸς ἐγγύθεν ἐλθὼν
 οὔτα κατὰ λαπάρην· ὁ δ' ἀνετράπεται, ἀμφὶ δ' ἄρ' αὐτῷ
 Τρῶες καὶ Δαναοὶ σύναγον κρατερὴν ὑσμίνην.
 τῷ δ' ἐπὶ Πούλυδάμας ἐγγέσπαλος ἦλθεν ἀμύντωρ
 Πανθοῖδης, βάλε δὲ Προθοήνορα δεξιὸν ὦμον, 450
 νῖδον Ἀρηιλύκοιο· δι' ὦμου δ' ὄβριμον ἔγχος

ἔσχευ, ὁ δ' ἐν κονίῃσι πεσὼν ἔλε γαίαν ἀγοστῶ.
 Πουλυδάμας δ' ἔκπαγλον ἐπεύξατο μακρὸν ἀύσας·
 „οὐ μὰν αὐτ' ὀίω μεγαθύμου Πανθοῖδαο
 χειρὸς ἄπο στιβαρῆς ἄλιον πηδῆσαι ἄκοντα, 455
 ἀλλὰ τις Ἀργείων κόμισε χροῦ, καὶ μιν ὀίω
 αὐτῷ σκηπτόμενον κατίμεν δόμον Ἄιδος εἴσω.“

ὣς ἔφατ', Ἀργείοισι δ' ἄχος γένετ' εὐξαμένοιο·
 Αἴαντι δὲ μάλιστα δαΐφρονι θυμὸν ὄρινεν,
 τῷ Τελαμωνιάδῃ· τοῦ γὰρ πέσεν ἄγχι μάλιστα. 460
 καρπαλίμως δ' ἀπιόντος ἀκόντισε δουρὶ φαιινῷ·
 Πουλυδάμας δ' αὐτὸς μὲν ἀλεύατο κῆρα μέλαιναν
 λικριφίς ἀίξας, κόμισεν δ' Ἀντήνορος νῆος
 Ἀρχέλοχος· τῷ γὰρ ῥα θεοὶ βούλευσαν ὀλεθρον.
 τὸν ῥ' ἔβαλεν κεφαλῆς τε καὶ αὐχένος ἐν συνοχυμῷ, 465
 νεύατον ἀστράγαλον, ἀπὸ δ' ἄμφω κέρσε τένοντε·
 τοῦ δὲ πολὺ πρότερον κεφαλῇ στόμα τε ῥίνες τε
 οὐδὲι πλήντ' ἢ περ κνῆμαι καὶ γούνα πεσόντος.
 Αἴας δ' αὐτ' ἐγέγωνεν ἀμύμονι Πουλυδάμαντι·
 „φράξο, Πουλυδάμα, καὶ μοι νημερτὲς ἐνίσπες· 470
 ἦ ῥ' οὐχ οὗτος ἀνὴρ Προθοήνορος ἀντὶ πεφάσθαι
 ἄξιος; οὐ μὲν μοι κακὸς εἶδεται οὐδὲ κακῶν ἔξ,
 ἀλλὰ κασίγνητος Ἀντήνορος ἱπποδάμοιο
 ἦ παῖς· αὐτῷ γὰρ γενεὴν ἄγχιστα ἐφύκειν.“

ἦ ῥ' εὖ γιγνώσκων, Τρῶας δ' ἄχος ἔλλαβε θυμόν. 475
 ἔνθ' Ἀκάμας Πρόμαχον Βοιωτίον οὐτάσε δουρί,
 ἀμφὶ κασιγνήτῳ βεβαῶς· ὁ δ' ὕφελκε ποδοῖν.
 τῷ δ' Ἀκάμας ἔκπαγλον ἐπεύξατο μακρὸν ἀύσας·
 „Ἀργεῖοι ἰόμωροι, ἀπειλῶν ἀκόρητοι,
 οὐ θῆν οἰοσὶν γε πόνος τ' ἔσεται καὶ διζὺς 480
 ἡμῖν, ἀλλὰ ποθ' ὥδε κατακτανέσθε καὶ ὕμμες.
 φράξεσθ', ὥς ὑμῖν Πρόμαχος δεδμημένος εὐδὲι

ἔγχει ἐμῷ, ἵνα μή τι κασιγνήτοιο γε ποιινή
 δηρὸν ἄτιτος ἔη. τῷ καὶ κέ τις εὖχεται ἀνήρ
 γνωτὸν ἐνὶ μεγάροισιν ἀρῆς ἀλκτῆρα λιπέσθαι.“ 485

ὧς ἔφατ', Ἀργείοισι δ' ἄχος γένητ' εὐξαμένοιο.
 Πηνέλεω δὲ μάλιστα δαΐφρονι θυμὸν ὄρινεν.
 ὠρμήθη δ' Ἀκάμαντος· ὁ δ' οὐχ ὑπέμεινεν ἐρωήν
 Πηνελέωο ἄνακτος· ὁ δ' οὐτασεν Ἴλιονῆα

υἱὸν Φόρβαντος πολυμήλου, τὸν ῥα μάλιστα 490
 Ἑρμείας Τρώων ἐφίλει καὶ κτῆσιν ὕπασσεν.

τῷ δ' ἄρ' ὑπὸ μήτηρ μοῦνον τέκεν Ἴλιονῆα.
 τὸν τόθ' ὑπ' ὀφρύος οὐτα κατ' ὀφθαλμοῖο θέμεθλα,
 ἐκ δ' ὥσε γλήνῃν· δόρυ δ' ὀφθαλμοῖο διαπρὸ
 καὶ διὰ ἰνίου ἤλθεν, ὁ δ' ἔξετο χεῖρε πετάσσας 495

ἄμφω. Πηνέλεως δὲ ἐρυσσάμενος ξίφος ὀξὺ
 αὐχένα μέσσον ἔλασσεν, ἀπήραξεν δὲ χαμᾶζε
 αὐτῇ σὺν πήληκι κάρη· ἔτι δ' ὄβριμον ἐγχος
 ἦεν ἐν ὀφθαλμῷ· ὁ δὲ φῆ κώδειαν ἀνασχὼν
 πέφραδέ τε Τρώεσσι καὶ εὐχόμενος ἔπος ἠΐδα· 500

„εἰπέμεναί μοι, Τρῶες, ἀγανοῦ Ἴλιονῆος
 πατρὶ φίλῳ καὶ μητρὶ γοήμεναι ἐν μεγάροισιν·
 οὐδὲ γὰρ ἡ Προμάχοιο δάμαρ Ἀλεγνηνορίδαο
 ἀνδρὶ φίλῳ ἐλθόντι γανύσσεται, ὅπποτε κεν δῇ
 ἐκ Τροίης σὺν νηυσὶ νεώμεθα κοῦροι Ἀχαιῶν.“ 505

ὧς φάτο, τοὺς δ' ἄρα πάντας ὑπὸ τρόμος ἔλλαβε γυῖα,
 πάπτηνεν δὲ ἕκαστος, ὅπη φύγοι αἰπὺν ὄλεθρον.

ἔσπετε νῦν μοι, μοῦσαι Ὀλύμπια δώματ' ἔχουσαι,
 ὅς τις δὴ πρῶτος βροτόεντ' ἀνδράγρι' Ἀχαιῶν
 ἦρατ', ἐπεὶ ῥ' ἐκλινε μάχην κλυτὸς ἐννοσίγαιος. 510

Αἴας ῥα πρῶτος Τελαμώνιος Ὕρτιον οὐτα
 Γυρτιάδην, Μυσῶν ἡγήτορα καρτεροθύμων·
 Φάληκν δ' Ἀντίλοχος καὶ Μέριμερον ἐξενάριξεν·

Μηριόνης δὲ Μόρυν τε καὶ Ἴκποτίωνα κατέκτα,
 Τεῦκρος δὲ Προδόωνά τ' ἐνήρατο καὶ Περιφήτην. 515
 Ἀτρεΐδης δ' ἄρ' ἐπειθ' Ὑπερήνορα ποιμένα λαῶν
 οὔτα κατὰ λαπάρην, διὰ δ' ἐντερα χαλκὸς ἄφυσσεν
 δηώσας· ψυχὴ δὲ κατ' οὔταμένην ὠτειλὴν
 ἔσσυτ' ἐπειγομένη, τὸν δὲ σκότος ὄσσε κάλυψεν.
 πλείστους δ' Αἴας εἶλεν Ὀϊλῆος ταχὺς υἱός· 520
 οὐ γάρ οἱ τις ὁμοῖος ἐπισπένσθαι ποσὶν ἦεν
 ἀνδρῶν τρεσσάντων, ὅτε τε Ζεὺς ἐν φόβον ὄρση.

ΙΛΙΑΔΟΣ Ο.

Παλίωξις παρὰ τῶν νεῶν.

αὐτὰρ ἐπεὶ διὰ τε σκόλοπας καὶ τάφρον ἐβησαν
 φεύγοντες, πολλοὶ δὲ δάμεν Δαναῶν ὑπὸ χειρσίν,
 οἳ μὲν δὴ παρ' ὄχεσφιν ἐρητύοντο μένοντες,
 χλωροὶ ὑπάλ θείους, πεφοβημένοι, ἔγρετο δὲ Ζεὺς
 Ἰδης ἐν κορυφῇσι παρὰ χρυσοθρόνου Ἥρης. 5
 στῆ δ' ἄρ' ἀναΐξας, ἶδε δὲ Τρῶας καὶ Ἀχαιοὺς,
 τοὺς μὲν ὀρινομένους, τοὺς δὲ κλονέοντας ὀπισθεν
 Ἀργεῖους, μετὰ δέ σφι Ποσειδάωνα ἄνακτα.
 Ἔκτορα δ' ἐν πεδίῳ ἶδε κείμενον, ἀμφὶ δ' ἑταῖροι
 εἶαθ'· ὁ δ' ἀργαλέω ἔχετ' ἄσθματι κῆρ ἀπινύσσων, 10
 αἶμ' ἐμέων, ἐπεὶ οὐ μιν ἀφανρότατος βάλ' Ἀχαιῶν.
 τὸν δὲ ἰδὼν ἐλέησε πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε,
 δεινὰ δ' ὑπόδρα ἰδὼν Ἥρην πρὸς μῦθον ἔειπεν·
 „ἦ μάλα δὴ κακότεχνος, ἀμήχανε, σὸς δόλος, Ἥρη,
 Ἔκτορα δῖον ἐπαυσε μάχης, ἐφόβησε δὲ λαούς. 15

οὐ μὰν οἶδ', εἰ αὖτε κακορραφίης ἀλεγεινῆς
 πρώτη ἐπαύρηται καὶ σε πληγῆσιν ἱμάσσω.
 ἦ οὐ μέμνη, ὅτε τε κρέμω ὑψόθεν; ἐκ δὲ ποδοῖν
 ἄκμονας ἦκα δύω, περὶ χερσὶ δὲ δεσμὸν ἱηλα
 χρύσειον ἄρρηκτον, σὺ δ' ἐν αἰθέρι καὶ νεφέλῃσιν 20
 ἐκρέμω· ἡλάστεον δὲ θεοὶ κατὰ μακρὸν Ὀλυμπον,
 λῦσαι δ' οὐκ ἐδύναντο παρασταδόν· ὃν δὲ λάβοιμι,
 ῥίπτασκον τεταγὼν ἀπὸ βηλοῦ, ὄφρ' ἂν ἵκηται
 γῆν ὀλιγηπελέων. ἐμὲ δ' οὐδ' ὥς θυμὸν ἀνέι
 ἄζηχῆς ὀδύνη Ἡρακλῆος θείοιο, 25
 τὸν σὺ ξὺν Βορέῃ ἀνέμῳ πεπιθοῦσα θυέλλας
 πέμψας ἐπ' ἀτρύγετον πόντον κακὰ μητιώσα
 καὶ μιν ἔπειτα Κόωνδ' ἐν ναιομένην ἀπένεικας.
 τὸν μὲν ἐγὼν ἔνθεν ῥυσάμην καὶ ἀνήγαγον αὐτὶς
 Ἄργος ἐς ἱππόβοτον, καὶ πολλὰ περ ἀθλήσαντα. 30
 τῶν σ' αὐτὶς μνήσω, ἵν' ἀπολλήξεῃς ἀπατάων,
 ὄφρα ἰδῇς, ἦν τοι χραίσμη φιλότης τε καὶ εὐνή,
 ἦν ἐμίγης ἐλθοῦσα θεῶν ἄπο καὶ μ' ἀπάτησας.“
 ὥς φάτο, ῥίγησεν δὲ βοῶπις πότνια Ἥρη,
 καὶ μιν φωνήσας' ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 35
 „ἴστω νῦν τόδε γαῖα καὶ οὐρανὸς εὐρὺς ὑπερθεῖν
 καὶ τὸ καταιβόμενον Στυγὸς ὕδωρ, ὅς τε μέγιστος
 ὄρκος δεινότατός τε πέλει μακάρεσσι θεοῖσιν,
 σὴ θ' ἱερὴ κεφαλὴ καὶ νωίτερον λέχος αὐτῶν
 κουρίδιον, τὸ μὲν οὐκ ἂν ἐγὼ ποτε μᾶψ ὁμόσαιμι· 40
 μὴ δι' ἐμὴν ἰότητα Ποσειδάων ἐνοσίχθων
 πημαίνει Τρῳάς τε καὶ Ἑκτορα, τοῖσι δ' ἀρήγει,
 ἀλλὰ που αὐτὸν θυμὸς ἐποτρύνει καὶ ἀνώγει,
 τειρομένους δ' ἐπὶ νηυσὶν ἰδὼν ἐλέησεν Ἀχαιοὺς·
 αὐτὰρ τοι καὶ κείνῳ ἐγὼ παραμυθησαίμην 45
 τῇ ἴμεν, ἥ κεν δῇ σύ, κελαινεφές, ἡγεμονεύης.“

ὥς φάτο, μείδησεν δὲ πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε,
καὶ μιν ἀμειβόμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
„εἰ μὲν δὴ σύ γ' ἔπειτα, βοῶπις πότνια Ἥρη,
ἴσον ἔμοι φρονέουσα μετ' ἀθανάτοισι καθίζεις· 50
τῷ κε Ποσειδάων γε, καὶ εἰ μάλα βούλεται ἄλλη,
αἶψα μεταστρέψει νόον μετὰ σὸν καὶ ἐμὸν κῆρ.
ἀλλ' εἰ δὴ ῥ' ἐτεόν γε καὶ ἀτρεκέως ἀγορεύεις,
ἔρχεο νῦν μετὰ φῦλα θεῶν καὶ δεῦρο κάλεσσον
Ἴρίν τ' ἐλθέμεναι καὶ Ἀπόλλωνα κλυτότοξον, 55
ὄφρ' ἡ μὲν μετὰ λαὸν Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων
ἔλθῃ καὶ εἴπῃσι Ποσειδάωνι ἕνακτι
παυσάμενον πολέμοιο τὰ ἃ πρὸς δῶμαθ' ἰκέσθαι,
Ἔκτορα δ' ὀτρύνῃσι μάχην ἐς Φοῖβος Ἀπόλλων,
αὐτίς δ' ἐμπνεύσῃσι μένος, λελάθῃ δ' ὀδυνάων, 60
αἷ νῦν μιν τείρουσι κατὰ φρένας, αὐτὰρ Ἀχαιοὺς
αὐτίς ἀποστρέψῃσιν ἀνάλκιδα φύζαν ἐνόρσας,
φεύγοντες δ' ἐν νηυσὶ πολυκλήμισι πέσωσιν
[Πηλεΐδew Ἀχιλλῆος· ὁ δ' ἀνστήσει δν ἑταῖρον
Πάτροκλον· τὸν δὲ κτενεῖ ἔγχει φαίδιμος Ἔκτωρ 65
Ἴλίου προπάραιθε, πολέας ὀλέσαντ' αἰζηνοὺς
τοὺς ἄλλους, μετὰ δ' υἱὸν ἐμὸν Σαρπηδόνα διον.
τοῦ δὲ χολωσάμενος κτενεῖ Ἔκτορα διὸς Ἀχιλλεύς.
ἐκ τοῦ δ' ἔν τοι ἔπειτα παλιῶξιν παρὰ νηῶν
αἶψα ἐγὼ τεύχοιμι διαμπερές, εἰς δ' κ' Ἀχαιοὶ 70
Ἴλιον αἰπὺν ἔλοιεν Ἀθηναίης διὰ βουλᾶς.]
τὸ πρὶν δ' οὕτ' ἄρ' ἐγὼ πάῳ χόλον οὔτε τιν' ἄλλον
ἀθανάτων Δαναοῖσιν ἀμυνέμεν ἐνθάδ' ἐάσω,
πρὶν γε τὸ Πηλεΐδαο τελευτηθῆναι ἐέλδωρ,
ὥς οἱ ὑπέστην πρῶτον, ἐμῷ δ' ἐπένευσα κάρητι, 75
ἡματι τῷ, ὅτ' ἐμεῖο θεὰ Θέτις ἤψατο γούνων
λίσσομένη τιμῆσαι Ἀχιλλῆα πτολίπορθον.“

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε θεά, λευκώλενος Ἥρη,
 βῆ δ' ἐξ Ἰδαίων ὀρέων ἐς μακρὸν Ὀλυμπον.
 ὥς δ' ὅτ' ἂν ἀίξῃ νόος ἀνέρος, ὅς τ' ἐπὶ πολλήν 80
 γαῖαν ἐληλουθῶς φρεσὶ πευκαλίμησι νοήσῃ
 „ἐνθ' εἴην ἢ ἐνθα“ μενοιμήησίν τε πολλά,
 ὥς κραιπνῶς μεμανυῖα διέπτατο πότνια Ἥρη.
 ἵκετο δ' αἰπὸν Ὀλυμπον, ὀμηγερέεσσι δ' ἐπῆλθεν
 ἀθανάτοισι θεοῖσι Διὸς δόμῳ· οἱ δὲ ἰδόντες 85
 πάντες ἀνήξαν καὶ δεικανόωντο δέπασσιν.
 ἡ δ' ἄλλους μὲν ἔασε, Θέμιστι δὲ καλλιπαρῆφ
 δέκτο δέπας· πρώτη γὰρ ἐναντίῃ ἦλθε θεούσα,
 καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Ἥρη, τίπτε βέβηκας; ἀτυξομένη δὲ ἔοικας· 90
 ἡ μάλα δὴ σ' ἐφόβησε Κρόνου πάϊς, ὅς τοι ἀκοίτης.“
 τὴν δ' ἡμεῖβει ἔπειτα θεά, λευκώλενος Ἥρη·
 „μή με, θεὰ Θέμι, ταῦτα διείρεο· οἶσθα καὶ αὐτῇ,
 οἷος ἐκείνου θυμὸς, ὑπερφίαλος καὶ ἀπηνής.
 ἀλλὰ σύ γ' ἄρχε θεοῖσι δόμοις ἐνὶ δαιτὸς εἰσης· 95
 ταῦτα δὲ καὶ μετὰ πᾶσιν ἀκούσσαι ἀθανάτοισιν,
 οἷα Ζεὺς κακὰ ἔργα πιφαύσκεται· οὐδέ τί φημι
 πᾶσιν ὁμῶς θυμὸν κεχαρησέμεν, οὔτε βροτοῖσιν
 οὔτε θεοῖς, εἰ πέρα τις ἔτι νῦν δαίνυνται εὐφρων.“
 ἡ μὲν ἄρ' ὥς εἰποῦσα καθέζετο πότνια Ἥρη, 100
 ὥχθησαν δ' ἀνὰ δῶμα Διὸς θεοί· ἡ δὲ γέλασεν
 χεῖλεσιν, οὐδὲ μέτωπον ἐπ' ὀφρύσι κυανέησιν
 ἰάνθη· πᾶσιν δὲ νεμεσσηθεῖσα μετηύδα·
 „νηπίοι, οἳ Ζηνὶ μενεαίνομεν ἀφρονέοντες.
 ἡ ἔτι μιν μέμαμεν καταπαυσέμεν ἄσσον ἰόντες 105
 ἡ ἔπει ἥε βίη· ὁ δ' ἀφήμενος οὐκ ἀλεγίξει
 οὐδ' ὄθεται· φησὶν γὰρ ἐν ἀθανάτοισι θεοῖσιν
 κάρτεϊ τε σθένει τε διακριδὸν εἶναι ἄριστος.

τῷ ἔχεθ', ὅττι κεν ὕμμι κακὸν πέμπησιν ἐκάστω.
 ἦδη γὰρ νῦν ἔλπομ' Ἄρηι γε πῆμα τετύχθαι· 110
 υἱὸς γάρ οἱ ὄλωλε μάχῃ ἐνι, φίλτατος ἀνδρῶν,
 Ἀσκάλαφος, τὸν φησιν ὄν ἔμμεναι ὄβριμος Ἄρης.“

ὥς ἔφατ', αὐτὰρ Ἄρης θαλερῶ πεπλήγετο μηρῷ
 χερσὶ καταπρηνέσσ', ὀλοφυρόμενος δ' ἔπος ηὔδα·
 „μὴ νῦν μοι νεμεσήσεται, Ὀλύμπια δώματ' ἔχοντες, 115
 τίσασθαι φόνον υἱὸς ἰόντ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν,
 εἰ πέρ μοι καὶ μοῖρα Διὸς πληγέντι κεραυνῷ
 κεῖσθαι ὁμοῦ νεκύεσσι μεθ' αἵματι καὶ κονίησιν.“

ὥς φάτο, καὶ ῥ' ἵππους κέλετο Δεῖμόν τε Φόβον τε
 ζευγνύμεν, αὐτὸς δ' ἔντε' ἐδύσετο παμφανόωντα. 120
 ἐνθα κ' ἔτι μείζων τε καὶ ἀργαλεώτερος ἄλλος
 παρ Διὸς ἀθανάτοισι χόλος καὶ μῆνις ἐτύχθη,
 εἰ μὴ Ἀθήνη πᾶσι περιδείσασα θεοῖσιν
 ᾤρτο διέκ προθύρου, λίπε δὲ θρόνον, ἐνθα θάσασεν
 τοῦ δ' ἀπὸ μὲν κεφαλῆς κόρυθ' εἴλετο καὶ σάκος ὦμων, 125
 ἔργχος δ' ἔστησε στιβαρῆς ἀπὸ χειρὸς ἑλοῦσα
 χάλκεον· ἥ δ' ἐπέεσσι καθάπτετο θυῶρον Ἄρηα·
 „μαινόμενε, φρένας ἡλέ, διέφθορας. ἦ νύ τοι αὐτως
 οὔατ' ἀκουέμεν ἔστι, νόος δ' ἀπόλωλε καὶ αἰδώς.
 οὐκ αἰεὶς, ἅ τέ φησι θεά, λευκώλενος Ἥρη, 130
 ἦ δὴ νῦν παρ Ζηνὸς Ὀλυμπίου εἰλήλουθεν;
 ἦ ἐθέλεις αὐτὸς μὲν ἀναπλήσας κακὰ πολλὰ
 ἄψ ἱμεν Οὐλυμπόνδε, καὶ ἀχνύμενός περ, ἀνάγκη,
 αὐτὰρ τοῖς ἄλλοισι κακὸν μέγα πᾶσι φντεῦσαι;
 αὐτίκα γὰρ Τρῶας μὲν ὑπερθύμους καὶ Ἀχαιοὺς 135
 λείψει, ὁ δ' ἡμέας εἰσι κυδοιμήσων ἐς Ὀλυμπον,
 μάρψει δ' ἐξείης, ὅς τ' αἴτιος ὅς τε καὶ οὐκί.
 τῷ σ' αὖ νῦν κέλομαι μεθέμεν χόλον υἱὸς ἔηος·
 ἦδη γὰρ τις τοῦ γε βίην καὶ χεῖρας ἀμείνων

ἢ πέφατ' ἢ καὶ ἔπειτα πεφήσεται· ἀργαλέον δὲ 149
πάντων ἀνθρώπων ῥῦσθαι γενεήν τε τόκον τε.“

ὥς εἰποῦς ἰδρυσε θρόνον ἐνι θοῦρον Ἄρηα.
Ἦρη δ' Ἀπόλλωνα καλέσσατο δώματος ἐκτὸς
Ἴριν θ', ἣ τε θεοῖσι μετ' ἄγγελος ἀθανάτοισιν,
καὶ σφας φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα 145
„Ζεὺς σφῶ εἰς Ἴδην κέλετ' ἐλθέμεν ὅττι τάχιστα·
αὐτὰρ ἐπὴν ἔλθῃτε Διὸς τ' εἰς ὧπα ἰδησθε,
ἔρδειν, ὅττι κε κείνος ἐποτρύνῃ καὶ ἀνώγῃ.“

ἣ μὲν ἄρ' ὥς εἰποῦσα πάλιν κίε πότνια Ἦρη,
ἔξετο δ' εἰνὶ θρόνῳ· τὼ δ' αἵξαντε πετέσθην. 150

Ἴδην δ' ἱκανον πολυπίδακα, μητέρα θηρῶν,
εὐρον δ' εὐρύοπα Κρονίδην ἀνὰ Γαργάρῳ ἄκρῳ
ἤμενον· ἀμφὶ δέ μιν θυόεν νέφος ἐστεφάνωτο.
τὼ δὲ πάροιθ' ἐλθόντε Διὸς νεφεληγερέταο
στήτην· οὐδὲ σφωε ἰδὼν ἐχολώσατο θυμῷ, 155
ὅττι οἱ ὧκ' ἐπέεσσι φίλης ἀλόχοιο πιθέσθην.

Ἴριν δὲ προτέρην ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
„βάσκ' ἴθι, Ἴρι ταχεῖα, Ποσειδάωνι ἄνακτι
πάντα τάδ' ἀγγεῖλαι, μηδὲ ψευδ' ἄγγελος εἶναι.
παυσάμενόν μιν ἄνωχθι μάχης ἡδὲ πτολέμοιο 160
ἔρχεσθαι μετὰ φῦλα θεῶν ἢ εἰς ἄλα δῖαν.

εἰ δέ μοι οὐκ ἐπέεσσ' ἐπιπείσεται, ἀλλ' ἀλογήσει,
φραζέσθω δὴ ἔπειτα κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,
μή μ' οὐδὲ κρατερός περ ἐὼν ἐπιόντα ταλάσῃ
μεῖναι, ἐπεὶ εὖ φημι βίῃ πολὺν φέρτερος εἶναι 165
καὶ γενεῇ πρότερος, τοῦ δ' οὐκ ὄθεται φίλον ἦτορ
ἶσον ἐμοὶ φάσθαι, τόν τε στυγέουσι καὶ ἄλλοι.“

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε ποδὴν νειμὸς ὠκέα Ἴρις,
βῇ δὲ κατ' Ἰδαίων ὀρέων εἰς Ἴλιον ἱρήν.
ὥς δ' ὅτ' ἂν ἐκ νεφέων πτήται νιφὰς ἡὲ χάλαζα 170

ψυχρῇ ὑπὸ ῥιπῆς αἰθρηγενέος Βορέας,
 ὥς κραιπνῶς μεμανυῖα διέπτατο ὠκέα Ἴρις.
 ἄγχοῦ δ' ἵσταμένη προσέφη κλυτὸν ἐννοσίγαιον·
 „ἀγγελίην τινά τοι, γαιήοχε κυανοχαῖτα,
 ἦλθον δεῦρο φέρουσα παραλ Διὸς αἰγιόχοιο. 175
 παυσάμενόν σ' ἐκέλευσε μάχης ἡδὲ πτολέμοιο
 ἔρχεσθαι μετὰ φῦλα θεῶν ἢ εἰς ἄλλα δῖαν.
 εἰ δέ οἱ οὐκ ἐπέεσσ' ἐπιπείσεις, ἀλλ' ἀλογήσεις,
 ἡπείλεις καὶ κείνος ἐναντίβιον πολεμίζων
 ἐνθάδ' ἐλεύσεσθαι· σὲ δ' ὑπεξαλέασθαι ἀνώγειν 180
 χεῖρας, ἐπεὶ σέο φησὶ βίη πολὺ φέρτερος εἶναι
 καὶ γενεῇ πρότερος, σὸν δ' οὐκ ὕθεται φίλον ἦτορ
 ἴσόν οἱ φάσθαι, τὸν τε στυγέουσι καὶ ἄλλοι.“

τὴν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη κλυτὸς ἐννοσίγαιος·
 „ὦ πόποι, ἦ ῥ' ἀγαθὸς περ ἐὼν ὑπέροπλον εἶπεν, 185
 εἰ μ' ὁμότιμον ἐόντα βίη ἀέκοντα καθέξει.
 τρεῖς γάρ τ' ἐκ Κρόνου εἰμὲν ἀδελφεοί, οὓς τέκετο Ῥέα,
 Ζεὺς καὶ ἐγώ, τρίτατος δ' Ἀΐδης ἐνέροισιν ἀνάσσω·
 τριχθὰ δὲ πάντα δέδασται, ἕκαστος δ' ἔμμορε τιμῆς·
 ἦ τοι ἐγὼν ἔλαχον πολιὴν ἄλα ναιέμεν αἰεὶ 190
 παλλομένων, Ἀΐδης δ' ἔλαχε ζόφον ἡερόεντα,
 Ζεὺς δ' ἔλαχ' οὐρανὸν εὐρὺν ἐν αἰθέρι καὶ νεφέλῃσιν·
 γαῖα δ' ἐτι ξυνὴ πάντων καὶ μακρὸς Ὀλυμπος.
 τῷ ῥα καὶ οὐ τι Διὸς βέομαι φρεσίν, ἀλλὰ ἔκηλος,
 καὶ κρατερός περ ἐὼν, μενέτω τριτάτῃ ἐνὶ μοίρῃ. 195
 χερσὶ δὲ μὴ τί με πάγχυ κακὸν ὥς δειδισσέσθω·
 θυγατέρεςσιν γάρ τε καὶ υἱάσι βέλτερον εἴη
 ἐκπάγλοις ἐπέεσσιν ἐνισσέμεν, οὓς τέκεν αὐτός·
 οἳ ἔθεν ὀτρύνοντος ἀκούσονται καὶ ἀνάγκη.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα ποδὴνεμος ὠκέα Ἴρις· 200
 „οὔτω γὰρ δὴ τοι, γαιήοχε κυανοχαῖτα,

τόνδε φέρω Διὶ μῦθον ἀπηνέα τε κρατερόν τε,
ἧ τι μεταστρέψεις; στρεπταὶ μὲν τε φρένες ἐσθλῶν.
οἷσθ', ὥς πρεσβυτέροισιν ἐρινύες αἰὲν ἔπονται.“

τὴν δ' αὖτε προσέειπε Ποσειδάων ἐνοσίχθων· 205
„Ἰρι θεά, μάλα τοῦτο ἔπος κατὰ μοῖραν ἔειπες·
ἐσθλὸν καὶ τὸ τέτυκται, ὅτ' ἄγγελος αἵσιμα εἶδῃ.
ἀλλὰ τόδ' αἰνὸν ἄχος κραδίην καὶ θυμὸν ἰκάνει,
ὅππότε' ἂν ἰσόμορον καὶ ὁμῇ πεπρωμένον αἶσῃ
νυκτεῖν ἐθέλῃσι χολωτοῖσιν ἐπέεσσιν. 210

ἀλλ' ἦ τοι νῦν μὲν γε νεμεσσηθεὶς ὑποείξω,
ἄλλο δέ τοι ἐρέω, καὶ ἀπειλήσω τό γε θυμῷ·
αἶ κεν ἄνευ ἐμέθεν καὶ Ἀθηναίης ἀγελείης,
[Ἥρης Ἑρμείω τε καὶ Ἡφαίστοιο ἄνακτος]
Ἴλίου αἰπεινῆς πεφιδήσεται, οὐδ' ἐθελήσει 215
ἐκέρσαι, δοῦναι δὲ μέγα κράτος Ἀργείοισιν,
ἴστω τοῦθ', ὅτι νῶϊν ἀνήμετος χόλος ἔσται.“

ὥς εἰπὼν λίπε λαὸν Ἀχαιοὺν ἐννοσίγαιος,
δῶκε δὲ πόντον ἰῶν, πόθεσαν δ' ἥρωες Ἀχαιοί.
καὶ τότε Ἀπόλλωνα προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς· 220
„ἔρχεο νῦν, φίλε Φοῖβε, μεθ' Ἐκτορα χαλκοκορυστήν·
ἦδῃ μὲν γάρ τοι γαιήοχος ἐννοσίγαιος
οἴχεται εἰς ἄλα δῖαν, ἀλευάμενος χόλον αἰπὺν
ἡμέτερον· μάλα γάρ κε μάχης ἐπύθοντο καὶ ἄλλοι,
οἳ περ ἐνέρτεροί εἰσι θεοί, Κρόνον ἀμφὶς ἔοντες. 225
ἀλλὰ τόδ' ἡμὲν ἐμοὶ πολὺ κέρδιον ἢ δέ οἱ αὐτῷ
ἔπλετο, ὅττι πάροιθε νεμεσσηθεὶς ὑπόειξεν
χεῖρας ἐμάς, ἐπεὶ οὐ κεν ἀνιδρωτὶ γε τελέσθῃ.
ἀλλὰ σύ γ' ἐν χεῖρεσσι λάβ' αἰγίδα θυσανόεσσαν,
τὴν μάλ' ἐπισσείων φοβέειν ἥρωας Ἀχαιοὺς· 230
σοὶ δ' αὐτῷ μελέτω, ἑκατηβόλε, φαίδιμος Ἐκτωρ·
τόφρα γὰρ οὖν οἱ ἔγειρε μένος μέγα, ὅφρ' ἂν Ἀχαιοὶ

φεύγοντες νῆας τε καὶ Ἑλλήσποντον ἴκωνται.

κεῖθεν δ' αὐτὸς ἐγὼ φράσσομαι ἔργον τε ἔπος τε,

ὣς κε καὶ αὐτίς Ἀχαιοὶ ἀναπνεύσωσι πόνοιο.“ 235

ὣς ἔφατ', οὐδ' ἄρα πατρὸς ἀνηκούστησεν Ἀπόλλων,
βῆ δὲ κατ' Ἰδαίων ὀρέων ἱρῆκι εἰοικῶς

ὠκείῃ φασσοφόνῳ, ὅς τ' ὤκιστος πετεηνῶν.

εὖρ' υἷὸν Πριάμοιο δαΐφρονος, Ἑκτορα δῖον,

ἤμενον, οὐδ' ἔτι κεῖτο, νέον δ' ἐσαγείρετο θυμόν, 240

ἀμφὶ δὲ γιγνώσκων ἐτάρους, ἀτὰρ ἄσθμα καὶ ἰδρώς

παύετ', ἐπεὶ μιν ἔγειρε Διὸς νόος αἰγιδόχοιο.

ἀγχοῦ δ' ἰστάμενος προσέφη ἐκάεργος Ἀπόλλων

„Ἑκτορ υἱὲ Πριάμοιο, τί ἦ δὲ σὺ νόσφιν ἀπ' ἄλλων
ἦσ' ὀλιγηπελέων; ἦ πού τί σε κῆδος ἰκάνει;“ 245

τὸν δ' ὀλιγοδραπέων προσέφη κορυθαίολος Ἑκτωρ·

„τίς δὲ σὺ ἔσσι, φέριστε, θεῶν, ὅς μ' εἴρειαι ἄντην;

οὐκ αἰεὶς, ὃ με νηυσὶν ἐπὶ πρυμνήσιν Ἀχαιῶν

οὕς ἐτάρους ὀλέκοντα βοήν ἀγαθὸς βάλεν Αἴας

χερμαδίῳ πρὸς στῆθος, ἔπαυσε δὲ θούριδος ἀλκῆς; 250

καὶ δὴ ἐγὼ γ' ἐφάμην νέκυας καὶ δῶμ' Αἶδαο

ἤματι τῷδ' ἵξεσθαι, ἐπεὶ φίλον ἄιον ἦτορ.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ, ἐκάεργος Ἀπόλλων·

„θάρσει νῦν· τοῖόν τοι ἀοσσητῆρα Κρονίων

ἔξ Ἰδῆς προέηκε παρεστάμεναι καὶ ἀμύνειν, 255

Φοῖβον Ἀπόλλωνα χρυσάορον, ὅς σε πάρος περ

ῥύομ', ὁμῶς αὐτόν τε καὶ αἰπεινὸν πτολίεθρον.

ἀλλ' ἄγε νῦν ἱππεῦσιν ἐπότηρυνον πολέεσσιν

νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐλαυνέμεν ὠκέας ἵππους·

αὐτὰρ ἐγὼ προπάροισθε κιῶν ἵπποισι κέλευθον 260

πᾶσαν λειανέω, τρέψω δ' ἥρωας Ἀχαιούς.“

ὣς εἰπὼν ἔμπνευσε μένος μέγα ποιμένι λαῶν.

ὥς δ' ὅτε τις στατὸς ἵππος, ἀκοστήσας ἐπὶ φάτνῃ,

δεσμὸν ἀπορρήξας θείῃ πεδίῳιο κροαίνων,
 εἰωθὼς λούεσθαι ἐν ῥοεῖοις ποταμῶ, 265
 κυδιῶν· ὑψοῦ δὲ κάρη ἔχει, ἀμφὶ δὲ χαῖται
 ὤμοις αἰσσοῦνται· ὁ δ' ἀγλατῆφι πεποιθὼς,
 ῥίμφα ἐ γούνα φέρει μετὰ τ' ἤθεα καὶ νομὸν ἵππων·
 ὥς Ἐκτωρ λαιψήρᾳ πόδας καὶ γούνατ' ἐνώμα
 ὀτρύνων ἱππῆας, ἐπεὶ θεοῦ ἔκλυεν αὐδὴν. 270
 οἱ δ', ὥς τ' ἡ ἔλαφον κεραὸν ἢ ἄγριον αἶγα
 ἐσσεύαντο κύνες τε καὶ ἀνέρες ἀγροῖσθαι·
 τὸν μὲν τ' ἡλίβατος πέτρῃ καὶ δάσκιος ὕλῃ
 εἰρύσατ', οὐδ' ἄρα τέ σφι κιχήμεναι αἰσιμον ἦεν·
 τῶν δέ θ' ὑπὸ ἰαχῆς ἐφάνη λῆς ἡνυγένειος 275
 εἰς ὁδόν, αἶψα δὲ πάντας ἀπέτραπε καὶ μεμαῶτας·
 ὥς Δαναοὶ εἴως μὲν ὀμιλαδὸν αἰὲν ἔποντο
 νύσσοντες ξίφεσίν τε καὶ ἐγχέσιν ἀμφιγύοισιν,
 αὐτὰρ ἐπεὶ ἶδον Ἐκτορ' ἐποιχόμενον στίχας ἀνδρῶν,
 τάρβησαν, πᾶσιν δὲ παραλ ποσὶ κάππεσε θυμὸς. 280
 τοῖσι δ' ἔπειτ' ἀγόρευε Θόας Ἀνδραίμονος υἱός,
 Αἰτωλῶν ὄχ' ἄριστος, ἐπιστάμενος μὲν ἄκοντι,
 ἐσθλὸς δ' ἐν σταδίῃ· ἀγορῇ δέ ἐ παῦροι Ἀχαιῶν
 νίκων, ὁππότε κοῦροι ἐρίσσειαν περὶ μύθων·
 ὃ σφιν ἐν φρονέων ἀγορήσατο καὶ μετέειπεν· 285
 „ὦ πόποι, ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὀρῶμαι·
 οἶον δὴ αὐτ' ἐξαυτὶς ἀνέστη κῆρας ἀλύξας
 Ἐκτωρ· ἡ θῆν μιν μάλα ἔλπετο θυμὸς ἐκάστου
 χερσὶν ὑπ' Αἰάντος θανέειν Τελαμωνιάδαο.
 ἀλλὰ τις αὐτε θεῶν ἐρρύσατο καὶ ἐσάσεν 290
 Ἐκτορ', ὃ δὴ πολλῶν Δαναῶν ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν,
 ὥς καὶ νῦν ἐσσεσθαι οἴομαι· οὐ γὰρ ἄτερ γε
 Ζηνὸς ἐριγδούπου πρόμος ἵσταται ὧδε μενοιπῶν.
 ἀλλ' ἄγεθ', ὥς ἂν ἐγὼ εἶπω, πειθώμεθα πάντες.

πληθύν μὲν ποτὶ νῆας ἀνώξομεν ἀπονέεσθαι· 295
 αὐτοὶ δ', ὅσσοι ἄριστοι ἐνὶ στρατῷ εὐχόμεθ' εἶναι,
 στήομεν, εἰ κε πρῶτον ἐρύξομεν ἀντιάσαντες
 δοῦρατ' ἀνασχόμενοι· τὸν δ' οἶω καὶ μεμαῶτα
 θυμῷ δειśεσθαι Δαναῶν καταδύναι δμῖλον·“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα τοῦ μάλα μὲν κλύουν ἡδὲ πίθοντο. 300
 οἱ μὲν ἄρ' ἄμφ' Αἴαντα καὶ Ἴδομενεῖα ἄνακτα,
 Τεῦκρον Μηριόνην τε Μέγην τ' ἀτάλαντον Ἄρηι,
 Ὑσμίνην Ἡρηνον, ἀριστῆας καλέσαντες,
 Ἔκτορι καὶ Τρώεσσιν ἐναντίον· αὐτὰρ ὀπίσσω
 ἢ πληθὺς ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν ἀπονέοντο. 305

Τρῶες δὲ προὔντυψαν ἀολλέες, ἦρχε δ' ἄρ' Ἔκτωρ
 μακρὰ βιβάς· πρόσθεν δὲ κί' αὐτοῦ Φοῖβος Ἀπόλλων
 εἰμένος ὥμοιιν νεφέλην, ἔχε δ' αἰγίδα θυοῦριν
 δεινὴν ἀμφιδάσειαν ἀριπρεπέ', ἦν ἄρα χαλκεὺς
 Ἥφαιστος Διὶ δῶκε φορήμεναι ἐς φόβον ἀνδρῶν· 310
 τὴν ἄρ' ὃ γ' ἐν χεῖρεσσιν ἔχων ἠγήσατο λαῶν.
 Ἀργεῖοι δ' ὑπέμειναν ἀολλέες, ὥρτο δ' αὐτῇ
 ὄξει' ἀμφοτέρωθεν, ἀπὸ νευρῆφι δ' οἶστοι
 θρῶσκον· πολλὰ δὲ δοῦρα θρασειάων ἀπὸ χειρῶν
 ἄλλα μὲν ἐν χορῇ πῆγνυτ' ἀρηιθῶων αἰζήων, 315
 πολλὰ δὲ καὶ μεσσηγύ, πάρος χροά λευκὸν ἐπαυρεῖν,
 ἐν γαίῃ ἴσταντο, λιλαιόμενα χροὸς ἄσαι.
 ὄφρα μὲν αἰγίδα χερσὶν ἔχ' ἀτρέμα Φοῖβος Ἀπόλλων,
 τόφρα μάλ' ἀμφοτέρων βέλε' ἤπτετο, πῆπτε δὲ λαός·
 αὐτὰρ ἐπεὶ κατενῶπα ἰδὼν Δαναῶν ταχυπώλων 320
 σεῖσ', ἐπὶ δ' αὐτοὺς ἄνυσε μάλα μέγα, τοῖσι δὲ θυμὸν
 ἐν στήθεσσιν ἐθελξε, λάθοντο δὲ θούριδος ἀλκῆς.
 οἱ δ', ὥς τ' ἡὲ βοῶν ἀγέλην ἢ πῶν μέγ' οἶων
 θῆρε δύω κλονέωσι μελαίνης νυκτὸς ἀμολγῷ,
 ἐλθόντ' ἐξαπίνης σημάντορος οὐ παρεόντος, 325

ὥς ἐφόβηθεν Ἀχαιοὶ ἀνάλκιδες· ἐν γὰρ Ἀπόλλων
ἦκε φόβον, Τρωσὶν δὲ καὶ Ἑκτορι κῦδος ὕπαζεν.

ἔνθα δ' ἀνὴρ ἔλεν ἄνδρα κεδασθεΐσης ὑσμίνης.
Ἑκτωρ μὲν Στιχίον τε καὶ Ἀρκεσίλαον ἐπεφνεν,
τὸν μὲν Βοιωτῶν ἡγήτορα χαλκοχιτώνων, 330

τὸν δὲ Μενεσθῆος μεγαθύμου πιστὸν ἑταῖρον·
Αἰνείας δὲ Μέδοντα καὶ Ἴασον ἐξενάριξεν·
ἦ τοι ὁ μὲν νόθος υἱὸς Οἰλῆος θείοιο
ἔσσι, Μέδων Αἰάντος ἀδελφεός, αὐτὰρ ἔναιεν
ἐν Φυλάκῃ, γαίης ἅπο πατρίδος, ἄνδρα κατακτάς, 335
γνωτὸν μητρυιῆς Ἑριώπιδος, ἣν ἔχ' Οἰλεύς·

Ἴασος αὖτ' ἀρχὸς μὲν Ἀθηναίων ἐτένυκτο,
υἱὸς δὲ Σφήλαιο καλέσκετο Βουκολίδαο.
Μηκιστῇ δ' ἔλε Πουλυδάμας, Ἑχίον δὲ Πολίτης
πρώτῃ ἐν ὑσμίνῃ, Κλονίου δ' ἔλε δῖος Ἀγῆνωρ. 340

Δηίοχον δὲ Πάρις βάλε νεύατον ὦμον ὀπισθεν
φεύγοντ' ἐν προμάχοισι, διαπρὸ δὲ χαλκὸν ἔλασσεν.

ὄφρ' οἱ τοὺς ἐνάριζον ἀπ' ἔντεα, τόφρα δ' Ἀχαιοὶ
τάφρῳ καὶ σκολόπεσσιν ἐνιπλήξαντες ὀρυκτῇ
ἔνθα καὶ ἔνθα φέροντο, δύνοντο δὲ τεῖχος ἀνάγκῃ. 345
Ἑκτωρ δὲ Τρώεσσιν ἐκέκλετο μακρὸν αὐσας·

„νηυσὶν ἐπισσεύεσθαι, ἑᾶν δ' ἑναρα βροτόεντα·
ὄν δ' ἂν ἐγὼν ἀπάνευθε νεῶν ἐτέρωθι νοήσω,
αὐτοῦ οἱ θάνατον μητίσομαι, οὐδέ νυ τὸν γε
γνωτοί τε γνωταί τε πυρὸς λελάχωσι θανόντα, 350
ἀλλὰ κύνες ἐρύουσι πρὸ ἄστεος ἡμετέροιο.“

ὥς εἰπὼν μάστιγι κατωμαδὸν ἤλασεν ἵππους,
κεκλόμενος Τρώεσσι κατὰ στίχας. οἱ δὲ σὺν αὐτῷ
πάντες ὁμοκλήσαντες ἔχον ἐρυσάρματας ἵππους
ἡχῇ θεσπεσίῃ· προπάροιθε δὲ Φοῖβος Ἀπόλλων 355
ρεῖ' ὄχθας καπέτοιο βαθείης ποσσὶν ἐρείπων

ἔς μέσσον κατέβαλλε, γεφύρωσεν δὲ κέλευθον
μακρὴν ἥδ' εὐρεΐαν, ὅσον τ' ἐπὶ δουρὸς ἔρωή
γίγνεται, ὅππότε ἄνθρωπος πειρώμενος ἦσιν.
τῇ δ' οἷ γε προχέοντο φαλαγγηδόν, πρὸ δ' Ἀπόλλων 360
αἰγίδ' ἔχων ἐρίτιμον· ἔρειπε δὲ τεῖχος Ἀχαιῶν
ῥεῖα μάλ', ὥς ὅτε τις ψάμαθον πάϊς ἄγχι θαλάσσης,
ὅς τ' ἐπεὶ οὖν ποιήσῃ ἀθύρματα νηπιέησιν,
ἃς αὐτίς συνέχευε ποσὶν καὶ χερσὶν ἀθύρων.
ὥς ῥα σύ, ἦϊε Φοῖβε, πολλὸν κάματος καὶ διζύν 365
σύγχεας Ἀργείων, αὐτοῖσι δὲ φύξαν ἐνῶρσας.

ὥς οἱ μὲν παρὰ νηυσὶν ἐρητύοντο μένοντες,
ἀλλήλοισί τε κεκλόμενοι καὶ πᾶσι θεοῖσιν
χεῖρας ἀνίσχοντες μεγάλ' εὐχετόωντο ἕκαστος·
Νέστωρ αὖτε μάλιστα Γερήνιος, οὗρος Ἀχαιῶν, 370
εὖχετο, χεῖρ' ὀρέγων εἰς οὐρανὸν ἀστερόεντα·
„Ζεῦ πάτερ, εἰ ποτέ τις τοι ἐν Ἀργεῖ περ πολυπύρρῳ
ἦ βοὸς ἢ ὄϊος κατὰ πῖονα μηρία καίων
εὖχετο νοστήσαι, σὺ δ' ὑπέσχεο καὶ κατένευσας,
τῶν μνησθαι καὶ ἄμνηνον, Ὀλύμπιε, νηλεὲς ἦμαρ, 375
μηδ' οὕτω Τρῶεσσιν ἔα δάμνασθαι Ἀχαιοὺς.“

ὥς ἔφατ' εὐχόμενος, μέγα δ' ἔκτυπε μητίετα Ζεὺς,
ἄρᾶν αἶων Νηληιάδαο γέροντος.

Τρῶες δ' ὥς ἐπύθοντο Διὸς κτύπον αἰγιδόχοιο,
μᾶλλον ἐπ' Ἀργείοισι θόρον, μνήσαντο δὲ χάρμης. 380
οἱ δ', ὥς τε μέγα κύμα θαλάσσης εὐρυπόροιο
νῆος ὑπὲρ τοίχων καταβήσεται, ὅππότε ἐπέλγῃ
ἰς ἀνέμου· ἦ γάρ τε μάλιστά γε κύματ' ὀφέλλει·
ὥς Τρῶες μεγάλη λαχῇ κατὰ τεῖχος ἔβαινον,
ἵππους δ' εἰσελάσαντες ἐπὶ πρύμνησι μάχοντο 385
ἔργεσιν ἀμφιγύοις αὐτοσχεδόν, οἱ μὲν ἀφ' ἵππων,
οἱ δ' ἀπὸ νηῶν ὕψι μελαινώων ἐπιβάντες

μακροῖσι ξυστοῖσι, τά ῥά σφ' ἐπὶ νηυσὶν ἔκειτο
ναύμαχα κολλήεντα, κατὰ στόμα εἰμένα χαλκῷ.

Πάτροκλος δ', εἴως μὲν Ἀχαιοὶ τε Τρῶές τε 390
τείχεος ἀμφεμάχοντο θοάων ἔκτοθι νηῶν,
τόφρ' ὃ γ' ἐνὶ κλισίῃ ἀγαπήνορος Εὐρύπυλοιο
ἦστό τε καὶ τὸν ἔτερπε λόγοις, ἐπὶ δ' ἔλκει λυγρῷ
φάρμακ' ἀκέσματ' ἔπασσε μελαινάων ὀδυνάων.

αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ τεῖχος ἐπεσσυμένους ἐνόησεν 395
Τρῶας, ἀτὰρ Δαναῶν γένετο ἰαχὴ τε φόβος τε,
ῥῶμξέν τ' ἄρ' ἔπειτα καὶ ὦ πεπλήγετο μηρῷ
χερσὶ καταπρηνέσσ', ὀλοφυρόμενος δ' ἔπος ηὔδα·
„Εὐρύπυλ', οὐκέτι τοι δύνamai χατέοντί περ ἔμψης
ἐνθάδε παρμενέμεν· δὴ γὰρ μέγα νεῖκος ὄρωρεν· 400
ἀλλὰ σὲ μὲν θεράπων ποτιτερπέτω, αὐτὰρ ἐγὼ γε
σπεύσομαι εἰς Ἀχιλλῆα, ἵν' ὀτρύνω πολεμίζειν.
τίς δ' οἶδ', εἰ κέν οἱ σὺν δαίμονι θυμὸν ὀρίνω
παρειπών; ἀγαθὴ δὲ παραίφασίς ἐστιν ἑταίρου.“

τὸν μὲν ἄρ' ὥς εἰπόντα πόδες φέρον· αὐτὰρ Ἀχαιοὶ 405
Τρῶας ἐπερχομένους μένον ἔμπεδον, οὐδὲ δύναντο
παυροτέρους περ ἰόντας ἀπώσασθαι παρὰ νηῶν·
οὐδέ ποτε Τρῶες Δαναῶν ἐδύναντο φάλαγγας
ῥηξάμενοι κλισίῃσι μιγήμεναι ἠδὲ νέεσσιν.

ἀλλ' ὥς τε στάθμη δόρυ νήιον ἐξιθύνει 410
τέκτονος ἐν παλάμῃσι δαήμονος, ὃς ῥά τε πάσης
εὖ εἰδὴ σοφίης ὑποθημοσύνησιν Ἀθήνης,
ὥς μὲν τῶν ἐπὶ ἴσα μάχῃ τέτατο πτόλεμός τε·
ἄλλοι δ' ἀμφ' ἄλλῃσι μάχην ἐμάχοντο νέεσσιν.

Ἐκτὼρ δ' ἄντ' Αἴαντος εἰείσατο κυδαλίμοιο. 415
τῷ δὲ μῆς περὶ νηὸς ἔχον πόνον, οὐδὲ δύναντο
οὔθ' ὃ τὸν ἐξελάσαι καὶ ἐνιπρῆσαι πυρὶ νῆα,
οὔθ' ὃ τὸν ἄψ ὥσασθαι, ἐπεὶ ῥ' ἐπέλασσε γε δαίμων.

ἐνθ' υἷα Κλυτίοιο Καλήτορα φαίδιμος Αἴας
 πῦρ ἐς νῆα φέροντα κατὰ στῆθος βάλε δουρί· 420
 δοῦπησεν δὲ πεσών, δαλὸς δέ οἱ ἔκπεσε χειρός.
 Ἔκτωρ δ' ὥς ἐνόησεν ἀνεψιδὸν ὄφθαλμοῖσιν
 ἐν κονίῃσι πεσόντα νεὸς προπάροιθε μελαίνης,
 Τρῳσί τε καὶ Λυκίοισιν ἐκέκλετο μακρὸν αὖσας·
 „Τρῶες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι ἀγχιμαχῆταί, 425
 μὴ δὴ πῶ χάξεσθε μάχης ἐν στείνει τῷδε,
 ἀλλ' υἷα Κλυτίοιο σαώσατε, μὴ μιν Ἀχαιοὶ
 τεύχεα συλήσῃσι νεῶν ἐν ἄγῳνι πεσόντα.“

ὥς εἰπὼν Αἴαντος ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ·
 τοῦ μὲν ἄμαρθ', ὁ δ' ἔπειτα Λυκόφρονα Μάστορος υἱόν, 430
 Αἴαντος θεράποντα Κυθήριον, ὅς ῥα παρ' αὐτῷ
 ναί', ἐπεὶ ἄνδρα κατέκτα Κυθήροισι ξαθέοισιν,
 τὸν ῥ' ἔβαλεν κεφαλὴν ὑπὲρ οὐατος ὀξεί χαλκῷ
 ἔστεῶτ' ἄγχ' Αἴαντος· ὁ δ' ὑπτιος ἐν κονίῃσιν
 νηὸς ἔπο πρυμνῆς χαμάδις πέσε, λύντο δὲ γυῖα. 435
 Αἴας δ' ἐρρίγησε, κασίγνητον δὲ προσηύδα·
 „Τεῦκρε πέπον, δὴ νῶν ἀπέκτατο πιστὸς ἑταῖρος
 Μαστορίδης, ὃν νῶι Κυθηρόθεν ἔνδον ἔοντα
 ἴσα φίλοισι τοκεῦσιν ἐτίομεν ἐν μεγάροισιν·
 τὸν δ' Ἔκτωρ μεγάρυμος ἀπέκτανε. ποῦ νύ τοι ἰοὶ 440
 ὠκύμοροι καὶ τόξον, ὃ τοι πόρε Φοῖβος Ἀπόλλων;“

ὥς φάθ', ὁ δὲ ξυνέηκε, θέων δέ οἱ ἄγχι παρέσθη
 τόξον ἔχων ἐν χειρὶ παλίντονον ἥδὲ φαρέτρην
 ἰοδόκον· μάλα δ' ὦκα βέλεα Τρῳέεσσιν ἐφίει.
 καὶ ῥ' ἔβαλε Κλεῖτον Πεισὴνορος ἀγλαὸν υἱόν, 445
 Πουλυδάμαντος ἑταῖρον ἀγανοῦ Πανθοῖδαο,
 ἠνία χερσὶν ἔχοντα· ὁ μὲν πεπόννητο καθ' ἵππους·
 τῇ γὰρ ἔχ', ἥ ῥα πολὺ πλείσται κλονέοντο φάλαγγες,
 Ἔκτορι καὶ Τρῳέεσσι χαριζόμενος· τάχα δ' αὐτῷ

ἦλθε κακόν, τό οἱ οὐ τις ἐρύκακεν ἱεμένων περ. 450
 αὐχένι γάρ οἱ ὀπισθε πολύστονος ἔμπεσεν ἰός·
 ἥριπε δ' ἐξ ὀχέων, ὑπερώησαν δέ οἱ ἵπποι
 κείν' ὄχεα κροτέοντες. ἄναξ δ' ἐνόησε τάχιστα
 Πουλυδάμας, καὶ πρῶτος ἐναντίος ἦλυθεν ἵππων.
 τοὺς μὲν ὃ γ' Ἀστυνόφῳ Προτιάονος νῆει δῶκεν, 455
 πολλὰ δ' ἐπώτρυνε σχεδὸν ἰσχεῖν εἰσορόωντα
 ἵππους· αὐτὸς δ' αὐτίς ἰὼν προμάχοισιν ἐμίχθη.

Τεῦκρος δ' ἄλλον ὀιστὸν ἐφ' Ἑκτορι χαλκοκορυστῇ
 αἶνυτο, καὶ κεν ἔπαυσε μάχην ἐπὶ νηυσὶν Ἀχαιῶν,
 εἴ μιν ἀριστεύοντα βαλὼν ἐξείλετο θυμὸν. 460
 ἀλλ' οὐ λῆθε Διὸς πυκινὸν νόον, ὃς ῥα φύλασσεν
 Ἑκτορ', ἀτὰρ Τεῦκρον Τελαμώνιον εὐχὸς ἀπηύρα,
 ὃς οἱ ἐυστρεφέα νευρὴν ἐν ἀμύμονι τόξῳ
 ῥῆξ' ἐπὶ τῷ ἐρύοντι· παρεπλάγχθη δέ οἱ ἄλλη
 ἰὸς χαλκοβαρῆς, τόξον δέ οἱ ἔκπεσε χειρός. 465
 Τεῦκρος δ' ἐρρίγησε, κασίγνητον δὲ προσηύδα·
 „ὦ πόποι, ἦ δὴ πάγχυ μάχης ἐπὶ μῆδεα κείρει
 δαίμων ἡμετέρης, ὃ τέ μοι βιὸν ἔκβαλε χειρός,
 νευρὴν δ' ἐξέρρηξε νεόστροφον, ἣν ἐνέδησα
 πρῶιον, ὅφρ' ἀνέχοιτο θαμὰ θρώσκοντας ὀιστούς.“ 470

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα μέγας Τελαμώνιος Αἴας·
 „ὦ πέπον, ἀλλὰ βιὸν μὲν ἔα καὶ ταρφέας ἰοὺς
 κεῖσθαι, ἐπεὶ συνέχευε θεὸς Δαναοῖσι μεγάρης·
 αὐτὰρ χερσὶν ἐλὼν δολιχὸν δόρυ καὶ σάκος ὦμφ
 μάρναό τε Τρῶεσσι καὶ ἄλλους ὄρνυθι λαούς. 475
 μὴ μὰν ἀσπονδί γε, δαμασσάμενοί περ, ἔλοιεν
 νῆας ἐυσσέλμους, ἀλλὰ μνησώμεθα χάρμης.“

ὧς φάθ', ὃ δὲ τόξον μὲν ἐνὶ κλισίῃσιν ἔθηκεν,
 αὐτὰρ ὃ γ' ἄμφ' ὦμοισι σάκος θέτο τετραθέλυμνον,
 κρατὶ δ' ἐπ' ἰφθίμῳ κυνέην ἐτύκτον ἔθηκεν 480

[Ἴππουριν, δεινὸν δὲ λόφος καθύπερθεν ἔνευεν·]
εἴλετο δ' ἄλκιμον ἔγχος, ἀκαχμένον ὀξεί χαλκῷ,
βῆ δ' ἰέναι, μάλα δ' ὤκα θέων Αἰάντι παρέσθη.

Ἐκτωρ δ' ὥς εἶδεν Τεύκρου βλαφθέντα βέλεμνα,
Τρωσὶ τε καὶ Λυκίοισιν ἐκέκλετο μακρὸν ἀύσας· 485

„Τρωῆες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι ἀγχιμαχηταί,
ἄνδρες ἔστε, φίλοι, μνήσασθε δὲ θούριδος ἀλκῆς
νῆας ἀνὰ γλαφυράς· δὴ γὰρ ἶδον ὀφθαλμοῖσιν
ἄνδρὸς ἀριστῆος Διόδεν βλαφθέντα βέλεμνα.

ῥεῖα δ' ἀρίγνωτος Διὸς ἀνδράσι γίγνεται ἀλκή, 490
ἡμὲν ὁτέοισιν κῦδος ὑπέρτερον ἐγγυαλίξῃ,

ἥδ' ὅτινας μινύθῃ τε καὶ οὐκ ἐθέλῃσιν ἀμύνειν,
ὥς νῦν Ἀργείων μινύθει μένος, ἄμμι δ' ἀρήγει.

ἀλλὰ μάχεσθ' ἐπὶ νηυσὶν ἀολλέες· ὃς δέ κεν ὕμεων
βλήμενος ἦε τυπεῖς θάνατον καὶ πότμον ἐπίσπῃ, 495

τεθνάτω· οὐ οἱ ἀεικὲς ἀμυνομένῳ περὶ πάτρης
τεθνάμεν· ἀλλ' ἄλοχός τε σόῃ καὶ παῖδες ὀπίσσω,

καὶ οἶκος καὶ κλῆρος ἀκήρατος, εἴ κεν Ἀχαιοὶ
οἴχωνται σὺν νηυσὶ φίλῃν ἐς πατρίδα γαῖαν.“

ὣς εἰπὼν ὤτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἐκάστου. 500

Αἴας δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ἐκέκλετο οἷς ἐτάροισιν·

„αἰδώς, Ἀργεῖοι· νῦν ἄρκιον ἢ ἀπολέσθαι

ἢ ἐσαωθῆναι καὶ ἀπώσασθαι κακὰ νηῶν.

ἢ ἔλπεσθ', ἦν νῆας ἔλῃ κορυθαίολος Ἐκτωρ,

ἐμβαδὸν ἵξεσθαι ἦν πατρίδα γαῖαν ἕκαστος; 505

ἢ οὐκ ὀτρύνοντος ἀκούετε λαὸν ἅπαντα

Ἐκτορος, ὃς δὴ νῆας ἐνιπρῆσαι μένεαίνει;

οὐ μὰν ἐς γε χορὸν κέλετ' ἐλθέμεν, ἀλλὰ μάχεσθαι.

ἡμῖν δ' οὐ τις τοῦδε νόος καὶ μῆτις ἀμείνων,

ἢ αὐτοσχεδὶν μῖξαι χεῖρας τε μένος τε. 510

βέλτερον ἢ ἀπολέσθαι ἓνα χρόνον ἢ ἐβιώναι,

ἢ δηθὰ στρεύγεσθαι ἐν αἰνῇ δημοτῇτι
ὧδ' αὐτως παρὰ νηυσὶν ὑπ' ἀνδράσι χειροτέροισιν.“

ὧς εἰπὼν ὥτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἐκάστου.
ἐνθ' Ἔκτωρ μὲν ἔλε Σχεδίον Περιμήδεος υἱόν, 515
ἄρχον Φωκίων, Αἶας δ' ἔλε Λαοδάμαντα
ἡγεμόνα πρυλέων, Ἀντήνορος ἀγλαὸν υἱόν·
Πουλυδάμας δ' Ὀτον Κυλλήνιον ἐξενάριξεν,
Φυλεῖδεω ἔταρον, μεγαθύμων ἄρχον Ἐπειῶν.
τῷ δὲ Μέγης ἐπόρουσεν ἰδὼν· ὁ δ' ὑπαιθα λιάσθη 520
Πουλυδάμας. καὶ τοῦ μὲν ἀπήμβροτεν· οὐ γὰρ Ἀπόλλων
εἶα Πανθόου υἱὸν ἐνὶ προμάχοισι δαμῆναι·
αὐτὰρ ὃ γε Κροίσμου στῆθος μέσον οὔτασε δουρί.
δοῦπήσεν δὲ πεσὼν, ὁ δ' ἀπ' ὧμων τεύχε' ἐσύλα.
τόφρα δὲ τῷ ἐπόρουσε Δόλοψ αἰχμῆς ἐν εἰδῶς, 525
Λαμπετίδης, ὃν Λάμπρος ἐγείνατο φέρετατος ἀνδρῶν,
Λαομεδοντιάδης, ἐν εἰδότα θούριδος ἀλκῆς·
ὃς τότε Φυλεῖδαο μέσον σάκος οὔτασε δουρὶ
ἐγγύθεν ὀρμηθεὶς· πυκινὸς δέ οἱ ἤρκεσε θώρηξ,
τόν ῥ' ἐφόρει γυάλοισιν ἀρηρότα· τόν ποτε Φυλεὺς 530
ἦγαγεν ἐξ Ἐφύρης, ποταμοῦ ἅπο Σελλήεντος·
ξεῖνος γὰρ οἱ ἔδωκεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἐυφήτης
εἰς πόλεμον φορέειν δηρίων ἀνδρῶν ἀλεωρήν·
ὃς οἱ καὶ τότε παιδὸς ἀπὸ χροὸς ἤρκεσ' ὄλεθρον.
τοῦ δὲ Μέγης κόρυθος χαλκήρεος ἵπποδασειῆς 535
κύμβαχον ἀκρότατον νύξ' ἐγχεῖ ὀξυόεντι,
ῥῆξε δ' ἀφ' ἱππειον λόφον αὐτοῦ· πᾶς δὲ χαμᾶζε
κάππεσεν ἐν κονίῃσι, νέον φοίνικι φαινός.
εἶος ὁ τῷ πολέμιζε μένων, ἔτι δ' ἔλπετο νίκην,
τόφρα δὲ οἱ Μενέλαος ἀρήιος ἦλθεν ἀμύντωρ, 540
στῇ δ' εὐρὰξ σὺν δουρὶ λαθῶν, βάλε δ' ὧμον ὀπισθεν·
αἰχμὴ δὲ στέρνοιο διέσσυτο μαιμώωσα,

πρόσσω Ιεμένη· ὁ δ' ἄρα πρηνῆς ἐλιάσθη.
 τῷ μὲν εἰσιάσθην χαλκήρεα τεύχε' ἀπ' ὤμων
 συλήσειν· Ἔκτωρ δὲ κασιγνήτοισι κέλευσεν 545
 παῖσι μάλα, πρῶτον δ' Ἴκεταονίδην ἐνένιπεν
 Ἰφθιμον Μελάνιππον. ὁ δ' ὄφρα μὲν εἰλίποδας βοῦς
 βόσκ' ἐν Περκώτῃ, δηίων ἀπονόσφιν ἐόντων
 αὐτὰρ ἐπεὶ Δαναῶν νέες ἤλυθον ἀμφιέλισσαι,
 ἄψ εἰς Ἴλιον ἦλθε, μετέπρεπε δὲ Τρώεσσιν, 550
 ναῖε δὲ παρ Πριάμῳ, ὁ δέ μιν τίεν ἴσα τέκεσσιν·
 τὸν ῥ' Ἔκτωρ ἐνένιπεν, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν·
 „οὔτῳ δὴ, Μελάνιππε, μεθήσομεν; οὐδέ νυ σοὶ περ
 ἐντρέπεται φίλον ἦτορ ἀνεψιοῦ κταμένοιο;
 οὐχ ὀράας, οἷον Δόλοπος περὶ τεύχε' ἔπουνσιν; 555
 ἀλλ' ἔπευ· οὐ γὰρ ἔτ' ἔστιν ἀποσταδὸν Ἀργείοισιν
 μάρνασθαι, πρὶν γ' ἢ κατακτάμεν ἢ κατ' ἄκρης
 Ἴλιον αἰπεινήν· ἑλέειν κτάσθαι τε πολίτας.“

ὧς εἰπὼν ὁ μὲν ἦρχ', ὁ δ' ἄμ' ἔσπετο ἰσόθεος φῶς.
 Ἀργείους δ' ὥτρυνε μέγας Τελαμώνιος Αἴας· 560
 „ὦ φίλοι, ἀνέρες ἔστε καὶ αἰδῶ θεῶν· ἐνὶ θυμῷ,
 ἀλλήλους τ' αἰδεῖσθε κατὰ κρατερὰς ὑσμῖνας.
 αἰδομένων ἀνδρῶν πλέονες σοοὶ ἢ ἐφάνται·
 φευγόντων δ' οὔτ' ἄρ κλέος ὄρνυται οὔτε τις ἀλκή.“

ὧς ἔφαθ', οἱ δὲ καὶ αὐτοὶ ἀλέξασθαι μενέαινον, 565
 ἐν θυμῷ δ' ἐβάλοντο ἔπος, φράξαντο δὲ νῆας
 ἔρκεϊ χαλκείῳ· ἐπὶ δὲ Ζεὺς Τρῶας ἐγειρεν.
 Ἀντίλοχον δ' ὥτρυνε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος·
 „Ἀντίλοχ', οὐ τις σεῖο νεώτερος ἄλλος Ἀχαιῶν,
 οὔτε ποσὶν θάσσωσιν οὔτ' ἄλκιμος ὥς σὺ μάχεσθαι· 570
 εἴ τινα πού Τρώων ἐξάλμενος ἄνδρα βάλοιςθα.“

ὧς εἰπὼν ὁ μὲν αὐτίς ἀπέσσυτο, τὸν δ' ὀρόθυνεν·
 ἐκ δ' ἔθορε προμάχων, καὶ ἀκόντισε δοῦρϊ φαιινῷ

ἀμφὶ ἔ παπτήνας· ὑπὸ δὲ Τρῶες κεκάδοντο
 ἀνδρὸς ἀκοντίσσαντος· ὁ δ' οὐχ ἄλιον βέλος ἤκεν, 575
 ἀλλ' Ἰκετάονος υἱὸν ὑπέρθυμον Μελάνιππον
 νισσόμενον πολεμόνδε βάλε στῆθος παρὰ μαζόν.
 δούπησεν δὲ πεσών, ἀράβησε δὲ τεύχε' ἐπ' αὐτῷ.
 Ἀντίλοχος δ' ἐπόρουσε κύων ὥς, ὅς τ' ἐπὶ νεβρῷ
 βλημένῳ αἰῖξῃ, τόν τ' ἐξ εὐνήφι θορόντα 580
 θηρητῆρ ἐτύχησε βαλὼν, ὑπέλυσε δὲ γυῖα·
 ὥς ἐπὶ σοί, Μελάνιππε, θόρ' Ἀντίλοχος μενεχάρμης
 τεύχεα συλήσων. ἀλλ' οὐ λάθην Ἔκτορα δῖον,
 ὅς ῥά οἱ ἀντίος ἦλθε θέων ἀνὰ δημοτῆτα.
 Ἀντίλοχος δ' οὐ μείνε, θοός περ ἔων πολεμιστής, 585
 ἀλλ' ὁ γ' ἄρ' ἔτρεσε θηρὶ κακὸν ῥέξαντι ჯοικῶς,
 ὅς τε κύνα κτείνας ἢ βουκόλον ἀμφὶ βόεσσιν
 φεύγει, πρὶν περ ὅμιλον ἀολλίσθῃμεναι ἀνδρῶν·
 ὥς τρέσε Νεστορίδης, ἐπὶ δὲ Τρῶές τε καὶ Ἔκτωρ
 ἡχῇ θεσπεσίῃ βέλεα στονόεντα χέοντο· 590
 στῆ δὲ μεταστρεφθεῖς, ἐπεὶ ἵκετο ἔθνος ἑταίρων.

Τρῶες δὲ λείουσιν ἑοικότες ὠμοφάγοισιν
 νηυσὶν ἐπεσσεύοντο, Διὸς δ' ἐτέλειον ἐφετμάς,
 ὃ σφισιν αἰὲν ἔγειρε μένος μέγα, θέλγε δὲ θυμὸν
 Ἀργείων καὶ κῦδος ἀπαίνυτο, τοὺς δ' ὀρόθυνεν. 595
 Ἔκτορι γάρ οἱ θυμὸς ἐβούλετο κῦδος ὀρέξαι
 Πριαμίδῃ, ἵνα νηυσὶ κορωνίσιν θεσπιδαῆς πῦρ
 ἐμβάλοι ἀκάματον, Θέτιδος δ' ἐξαίσιον ἀρὴν
 πᾶσαν ἐπικρῆναι· τὸ γὰρ μένε μητίετα Ζεὺς,
 νηὸς καιομένης σέλας ὀφθαλμοῖσιν ἰδέσθαι· 600
 ἐκ γὰρ δὴ τοῦ ἔμελλε παλῖωξιν παρὰ νηῶν
 θησέμεναι Τρώων, Δαναοῖσι δὲ κῦδος ὀρέξειν.
 τὰ φρονέων νήεσσιν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἔγειρεν
 Ἔκτορα Πριαμίδην, μάλα περ μεμαῶτα καὶ αὐτόν.

μαίνεται δ', ὥς δὲ Ἴφης ἐγχείσπαλος ἢ ὀλοὸν πῦρ 605
 οὔρεσι μαίνεται βαθέης ἐν τάρφεσιν ὕλης·
 ἀφλοισμὸς δὲ περὶ στόμα γίννεται, τῷ δέ οἱ ὄσσε
 λαμπέσθην βλοσυρῇσιν ὑπ' ὀφρύσιν, ἀμφὶ δὲ πῆληξ
 σμερδαλέον κροτάφοισι τινάσσεται μαρναμένοιο
 [Ἐκτορος· αὐτὸς γάρ οἱ ἀπ' αἰθέρος ἦεν ἀμύντωρ 610
 Ζεὺς, ὃς μιν πλεόνεσσι μετ' ἀνδράσι μοῦνον ἔοντα
 τέμα καὶ κύδαινε. μινυνθάδιος γὰρ ἔμελλεν
 ἔσσεσθ'· ἤδη γάρ οἱ ἐπώρνευε μόρσιμον ἡμαρ
 Παλλὰς Ἀθηναίη ὑπὸ Πηλεΐδαο βίηφιν.]
 καὶ ῥ' ἔθελεν ῥῆξαι σίγῃς ἀνδρῶν, πειρητίζων, 615
 ἣ δὴ πλείστον ὄμιλον ὄρα καὶ τεύχε' ἄριστα·
 ἀλλ' οὐδ' ὥς δύνατο ῥῆξαι, μάλα περ μενεαίνων·
 ἴσχον γὰρ πυργηδὸν ἀρηρότες, ἥντε πέτρῃ
 ἠλίβατος μεγάλη, πολιῆς ἁλὸς ἐγγὺς ἐοῦσα,
 ἣ τε μένει λιγέων ἀνέμων λαιψηρὰ κέλευθα 620
 κύματά τε τροφόμενα, τὰ τε προσερεύγεται αὐτῇν·
 ὥς Δαναοὶ Τρῶας μένον ἔμπεδον οὐδὲ φέβοντο.
 αὐτὰρ ὁ λαμπόμενος πυρὶ πάντοθεν ἔνθορ' ὀμίλῳ,
 ἐν δ' ἔπεσ', ὥς ὅτε κύμα θοῇ ἐν νηὶ πέσῃσιν
 λάβρον ὑπὸ νεφέων ἀνεμοτρεφές· ἣ δὲ τε πᾶσα 625
 ἄχνη ὑπεκρύφθη, ἀνέμοιο δὲ δεινὸς ἀήτη
 ἰστίῳ ἐμβρέμεται, τρομέουσι δὲ τε φρένα ναῦται
 δειδιότες· τυτθὸν γὰρ ὑπέκ θανάτοιο φέρονται·
 ὥς ἰδαίξετο θυμὸς ἐνὶ στήθεσσιν Ἀχαιῶν.
 αὐτὰρ ὁ γ' ὥς τε λέων ὀλοόφρων βουσὶν ἐπελθὼν, 630
 αἷ ῥά τ' ἐν εἰαμενῇ ἔλεος μεγάλοιο νέμονται
 μυρίαί, ἐν δὲ τε τῇσι νομεὺς οὐ πω σάφα εἰδὼς
 θηρὶ μαχῆσασθαι ἔλικος βοδὸς ἀμφὶ φονῇσιν·
 ἣ τοι ὁ μὲν πρώτῃσι καὶ ὑστατίῃσι βόεσσιν
 αἶν ὁμοστιχάει, ὁ δὲ τ' ἐν μέσσησιν ὀρούσας 635

βοῦν ἔδει, αἱ δέ τε πᾶσαι ὑπέτρεσαν· ὥς τότ' Ἀχαιοὶ
 θεσπεσίως ἐφόβηθεν ὑφ' Ἑκτορι καὶ Διὶ πατρὶ
 πάντες, ὃ δ' οἷον ἔπεφνε Μυκηναῖον Περιφήτην,
 Κοπρῆος φίλον υἱόν, ὃς Εὐρυσθέης ἄνακτος
 ἀγγελίης οἴχνεσκε βίῃ Ἑρακλεΐῃ· 640

τοῦ γένετ' ἐκ πατρὸς πολὺν χεῖρονος υἱὸς ἀμείνων
 παντοίας ἀρετάς, ἡμὲν πόδας ἡδὲ μάχεσθαι,
 καὶ νόον ἐν πρώτοισι Μυκηναίων ἐτέτυκτο·
 ὃς ῥα τόθ' Ἑκτορι κῦδος ὑπέτερον ἐγγυάλιξεν.
 στρεφθεῖς γὰρ μετόπισθεν ἐν ἀσπίδος ἄντυγι πάλτο, 645
 τὴν αὐτὸς φορέεσκε ποδηνεκ', ἔρκος ἀκόντων·
 τῇ δ' γ' ἐνὶ βλαφθεῖς πέσεν ὕπτιος, ἀμφὶ δὲ πῆληξ
 σμερδαλέον κονάβησε περὶ κροτάφοισι πεσόντος.
 Ἑκτωρ δ' ὄξυ νόησε, θεῶν δέ οἱ ἄγχι παρέσθη,
 στηθεὶ δ' ἐν δόρῳ πῆξε, φίλων δέ μιν ἐγγὺς ἐταίρων 650
 κτεῖν· οἱ δ' οὐκ ἐδύναντο, καὶ ἀχνύμενοί περ ἑταίρου,
 χραιοσμεῖν· αὐτοὶ γὰρ μάλα δεΐδισαν Ἑκτορα δῖον.

εἰσωποὶ δ' ἐγένοντο νεῶν, περὶ δ' ἐσχεθον ἄκραι
 νῆες, ὅσαι πρῶται εἰρύατο· τοὶ δ' ἐπέχυντο.

Ἀργεῖοι δὲ νεῶν μὲν ἐχώρησαν καὶ ἀνάγκη 655
 τῶν πρωτέων, αὐτοῦ δὲ παρὰ κλισίῃσιν ἔμειναν
 ἄθροοι, οὐδ' ἐκέδασθεν ἀνὰ στρατόν· ἴσχε γὰρ αἰδῶς
 καὶ δέος· ἀζηχῆς γὰρ ὁμόκλεον ἀλλήλοισιν.

Νέστωρ αὖτε μάλιστα Γερήνιος, οὗρος Ἀχαιῶν,
 λίσσεθ' ὑπὲρ τοκέων γουνούμενος ἄνδρα ἕκαστον· 660

„ὦ φίλοι, ἀνέρες ἔστε, καὶ αἰδῶ θέσθ' ἐνὶ θυμῷ
 ἄλλων ἀνθρώπων, ἐπὶ δὲ μνήσασθε ἕκαστος
 παίδων ἡδ' ἀλόχων καὶ κτήσιος ἡδὲ τοκῆων,
 ἡμὲν ὅτεφ ζώουσι καὶ ᾧ κατατεθνήκασιν·

τῶν ὑπερ ἐνθάδ' ἐγὼ γουνάξομαι οὐ παρεόντων 665
 ἐστάμεναι κρατερῶς, μηδὲ τρωπᾶσθε φόβονδε.“

ὣς εἰπὼν ὥτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἑκάστου.
 [τοῖσι δ' ἀπ' ὀφθαλμῶν νέφος ἀχλύος ὥσεν Ἀθήνη
 θεσπέσιον· μάλα δέ σφι φόως γένετ' ἀμφοτέρωθεν,
 ἡμὲν πρὸς νηῶν καὶ ὁμοίου πολέμοιο· 670
 Ἔκτορα δὲ φράσσαντο βοήν ἀγαθὴν καὶ ἑταίρους,
 ἡμὲν ὅσοι μετόπισθεν ἀφέστασαν οὐδὲ μάχοντο,
 ἡδ' ὅσοι παρὰ νηυσὶ μάχην ἐμάχοντο θοῇσιν.]
 οὐδ' ἄρ' ἔτ' Αἴαντι μεγαλήτορι ἦνδανε θυμῷ
 ἑστάμεν, ἔνθα περ ἄλλοι ἀφέστασαν νῆες Ἀχαιῶν· 675
 ἀλλ' ὃ γε νηῶν ἱκρί' ἐπώχετο μακρὰ βιβιάσθων,
 νῶμα δὲ ξυστὸν μέγα νάυμαχον ἐν παλάμῃσιν,
 κολλητὸν βλήτροισι, θυωκαεικοσίπηχυν.
 ὥς δ' ὅτ' ἀνὴρ ἵπποισι κελητίζειν ἐν εἰδῶς,
 ὧς τ' ἐπεὶ ἐκ πολέων πύργους συναίρεται ἵππους, 680
 σεύας ἐκ πεδίοιο μέγα προτὶ ἄστυ δίηται
 λαοφόρον καθ' ὁδόν· πολέες τέ εἰ θηγήσαντο
 ἀνέρες ἠδὲ γυναῖκες· ὃ δ' ἐμπεδὸν ἀσφαλὲς αἰεὶ
 θρώσκων ἄλλοτ' ἐπ' ἄλλον ἀμείβεται, οἱ δὲ πέτονται·
 ὥς Αἴας ἐπὶ πολλὰ θοάων ἱκρία νηῶν 685
 φοῖτα μακρὰ βιβιάς, φωνὴ δὲ οἱ αἰθέρ' ἴκανε.
 αἰεὶ δὲ σμερδὸν βόων Δαναοῖσι κέλευεν
 νηυσὶ τε καὶ κλισίῃσιν ἀμυνέμεν. οὐδὲ μὲν Ἔκτωρ
 μέμνεν ἐνὶ Τρώων ὁμάδῃ πύκα θωρηκτάων·
 ἀλλ' ὥς τ' ὀρνίθων πετεηνῶν αἰετὸς αἰθῶν 690
 ἔθνος ἐφορμᾶται, ποταμὸν πάρα βοσκομενάων,
 χηνῶν ἢ γεράνων ἢ κύκνων δουλιχοδείρων,
 ὥς Ἔκτωρ ἴθυσσε νεὸς κυανοπρώροιο
 ἀντίος ἀίξας· τὸν δὲ Ζεὺς ὥσεν ὀπισθεν
 χειρὶ μάλα μεγάλῃ, ὥτρυνε δὲ λαὸν ἄμ' αὐτῷ. 695
 αὐτὶς δὲ δοριμεία μάχῃ παρὰ νηυσὶν ἐτύχθη·
 φαίης κ' ἀκμητάς καὶ ἀτειρέας ἀλλήλοισιν

ἄντεσθ' ἐν πολέμῳ· ὥς ἐσσυμένως ἐμάχοντο.
 τοῖσι δὲ μαρναμένοισιν ὄδ' ἦν νόος· ἥ τοι Ἀχαιοὶ
 οὐκ ἔφασαν φεύξεσθαι ὑπὲκ κακοῦ, ἀλλ' ὀλέεσθαι, 700
 Τρωσὶν δ' ἔλπετο θυμὸς ἐνὶ στήθεσσιν ἐκάστου
 νῆας ἐνιπρήσειν κτενέειν θ' ἥρωας Ἀχαιοὺς.

οἱ μὲν τὰ φρονέοντες ἐφέστασαν ἀλλήλοισιν·
 Ἐκτωρ δὲ πρύμνης νεὸς ἤψατο ποντοπόροιο,
 καλῆς ὠκυάλου, ἣ Πρωτεσίλαον ἔνεικεν 705
 ἐς Τροίην, οὐδ' αὖτις ἀπήγαγε πατρίδα γαίαν.
 τοῦ περ δὴ περὶ νηὸς Ἀχαιοὶ τε Τρῳῆς τε
 δῆρουν ἀλλήλους αὐτοσχεδόν· οὐδ' ἔρα τοί γε
 τόξων αἰκᾶς ἀμφὶς μένον οὐδέ τ' ἀκόντων,
 ἀλλ' οἷ γ' ἐγγύθεν ἰστάμενοι ἓνα θυμὸν ἔχοντες 710
 ὀξέσι δὴ πελέκεσσι καὶ ἀξίνησι μάχοντο
 καὶ ξίφεσιν μεγάλοισι καὶ ἔγχεσιν ἀμφιγύοισιν.
 πολλὰ δὲ φάσγανα καλὰ μελάνδετα κωπήεντα
 ἄλλα μὲν ἐκ χειρῶν χαμάδις πέσον, ἄλλα δ' ἀπ' ὤμων
 ἀνδρῶν μαρναμένων· ῥέε δ' αἷματι γαῖα μέλαινα. 715
 Ἐκτωρ δὲ πρύμνηθεν ἐπεὶ λάβεν, οὐχὶ μεθίει
 ἄφλαστον μετὰ χερσὶν ἔχων, Τρωσὶν δὲ κέλευεν·
 „οἴσσετε πῦρ, ἅμα δ' αὐτοὶ ἀολλέες ὄρνυτ' ἀντήν·
 νῦν ἡμῖν πάντων Ζεὺς ἄξιον ἡμᾶρ ἔδωκεν,
 νῆας ἐλεῖν, αἷ' δεῦρο θεῶν ἀέκητι μολοῦσαι 720
 ἡμῖν πῆματα πολλὰ θέσαν, κακότητι γερόντων,
 οἷ μ' ἐθέλοντα μάχεσθαι ἐπὶ πρυμνῆσι νέεσσιν
 αὐτόν τ' ἰσχανάσσκον ἐρητύοντό τε λαόν.

ἀλλ' εἰ δὴ ῥα τότε βλάπτε φρένας εὐρύοπα Ζεὺς
 ἡμετέρας, νῦν αὐτὸς ἐποτρύνει καὶ ἀνώγει.“ 725

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἔρα μᾶλλον ἐπ' Ἀργείοισιν ὄρουσαν.
 Αἴας δ' οὐκέτ' ἐμίμνε· βιάζετο γὰρ βελέεσσιν·
 ἀλλ' ἀνεχάζετο τυτθόν, οἰόμενος θανέεσθαι,

Θρῆνν ἐφ' ἑπταπόδην, λίπε δ' ἱκρία νηὸς εἰσης.
 ἔνθ' ἄρ' ὃ γ' ἐστήκει δεδοκμημένος, ἔγχει δ' αἰεὶ 730
 Τρῶας ἄμυνε νεῶν, ὅς τις φέροι ἀκάματον πῦρ·
 αἰεὶ δὲ σμερδνὸν βοόων Δαναοῖσι κέλευεν·
 „ὦ φίλοι ἦρωες Δαναοί, θεράποντες Ἄρης,
 ἄνδρες ἔστε, φίλοι, μνήσασθε δὲ θούριδος ἀλκῆς·
 ἦέ τινάς φαμεν εἶναι ἀσσητῆρας ὀπίσσω, 735
 ἦέ τι τεῖχος ἄρειον, ὃ κ' ἀνδράσι λοιγὸν ἀμύναι;
 οὐ μὲν τι σχεδὸν ἐστὶ πόλις πύργοις ἀραρυῖα,
 ἣ κ' ἀπαμυναίμεσθ' ἑτεραλκεία δῆμον ἔχοντες·
 ἀλλ' ἐν γὰρ Τρώων πεδίῳ πύκα θωρηκτῶν,
 πόντῳ κεκλιμένοι, ἐκὰς ἡμεῖθα πατρίδος αἰῆς· 740
 τῷ ἐν χερσὶ φόως, οὐ μείλιχίη πολέμοιο.“

ἦ καὶ μαιμώνων ἔφεπ' ἔγχει ὀξυόεντι.
 ὅς τις δὲ Τρώων κοίλῃς ἐπὶ νηυσὶ φέροιτο
 σὺν πυρὶ κηλείῳ, χάριν Ἑκτορος ὀτρύναντος,
 τὸν δ' Αἴας οὔτασκε δεδεγμένος ἔγχει μακρῷ· 745
 δῶδεκα δὲ προπάροιθε νεῶν αὐτοσχεδὸν οὔτα.

ΙΛΙΑΔΟΣ II.

Πατρόκλεια.

ὧς οἱ μὲν περὶ νηὸς ἐυσσέλμοιο μάχοντο·
 Πάτροκλος δ' Ἀχιλλῇ παρίστατο ποιμένι λαῶν
 δάκρυα θερμὰ χέων ὧς τε κρήνη μελάνυδρος, 12.13
 ἥ τε κατ' αἰγίλιπος πέτρης δνοφερόν χέει ὕδωρ.
 τὸν δὲ ἰδὼν ᾤκτειρε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς, 5
 καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„τίπτε δεδάκρυσαι, Πατρόκλεις, ἥντε κούρη
 νηπίη, ἥ δ' ἄμα μητρὶ θεοῦσ' ἀνελέσθαι ἀνώγει,
 εἰανοῦ ἀπτομένη, καὶ τ' ἐσσυμένην κατερύκει,
 δακρυόεσσα δέ μιν ποτιδέσκειται, ὄφρ' ἀνέλθαι· 10
 τῇ ἱκελος, Πάτροκλε, τέρεν κατὰ δάκρυον εἴβεις.
 ἦέ τι Μυρμιδόνεσσι πιφαύσκεαι; ἦ ἔμοι αὐτῷ;
 ἦέ τιν' ἀγγελίην Φθίης ἔξ ἐκλυες οἶος;
 ζῶειν μὰν ἔτι φασὶ Μενοίτιον Ἄκτορος υἱόν,
 ζῶει δ' Αἰακίδης Πηλεὺς μετὰ Μυρμιδόνεσσιν, 15
 τῶν κε μάλ' ἀμφοτέρων ἀκαχοίμεθα τεθνηῶτων.
 ἦε σύ γ' Ἀργείων ὀλοφύρεαι, ὥς ὀλέκονται
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ὑπερβασίης ἔνεκα σφῆς;
 ἐξαύδα, μὴ κεῦθε νόφ, ἵνα εἶδομεν ἄμφω.“

τὸν δὲ βαρὺ στενάχων προσέφησ, Πατρόκλεις ἱππεῦ·
 „ὦ Ἀχιλεῦ Πηλῆος υἱέ, μέγα φέρτατ' Ἀχαιῶν, 21
 μὴ νεμέσα· τοῖον γὰρ ἄχος βεβίηκεν Ἀχαιοῦς.
 οἱ μὲν γὰρ δὴ πάντες, ὅσοι πάρος ἦσαν ἄριστοι,
 ἐν νηυσὶν κέεται βεβλημένοι οὐτάμενοί τε.
 βέβληται μὲν ὁ Τυδεΐδης κρατερὸς Διομήδης, 25
 οὔτασται δ' Ὀδυσσεὺς δουρικλυτὸς ἠδ' Ἀγαμέμνων,
 βέβληται δὲ καὶ Εὐρύπυλος κατὰ μηρὸν ὀιστῶ.
 τοὺς μὲν τ' ἱητροὶ πολυφάρμακοι ἀμφιπένονται,
 ἔλκε' ἀκείόμενοι· σὺ δ' ἀμήχανος ἔπλευ, Ἀχιλλεῦ.
 μὴ ἐμέ γ' οὖν οὗτός γε λάβοι χόλος, ὃν σὺ φυλάσσεις,
 αἰναρέτη· τί σευ ἄλλος ὀνήσεται ὀψίγονός περ, 31
 αἶ κε μὴ Ἀργείοισιν ἀεικέα λοιγὸν ἀμύνῃς;
 νηλεές, οὐκ ἄρα σοὶ γε πατήρ ἦν ἱππότα Πηλεὺς
 οὐδὲ Θέτις μήτηρ· γλαυκὴ δέ σε τίκτε θάλασσα
 πέτραι τ' ἡλίβατοι, ὅτι τοι νόος ἐστὶν ἀπηνής. 35
 εἰ δέ τινα φρεσὶ σῇσι θεοπροπίην ἀλεείνεις
 καὶ τινά τοι παρ Ζηνὸς ἐπέφραδε πότνια μήτηρ,

ἀλλ' ἐμέ περ πρόες ὦχ', ἅμα δ' ἄλλον λαὸν ὄπασσον
Μυρμιδόνων, ἣν πού τι φόως Δαναοῖσι γένωμαι.

δὸς δέ μοι ὥμουιν τὰ σὰ τεύχεα θωρηχθῆναι, 40

αἶ κέ με σοὶ ἴσκοντες ἀπόσχωνται πολέμοιο
Τρῶες, ἀναπνεύσωσι δ' ἀρήιοι νῆες Ἀχαιῶν
τειρόμενοι· ὀλίγη δέ τ' ἀνάπνευσις πολέμοιο.

θεῖα δέ κ' ἀκμηῆτες κεκμηότας ἄνδρας ἀντῇ
ῥῶσαιμεν προτὶ ἄστρ' νεῶν ἄπο καὶ κλισιάων.“ 45

ὥς φάτο λισσόμενος μέγα νήπιος· ἥ γὰρ ἔμελλεν
οἱ αὐτῷ θάνατόν τε κακὸν καὶ κῆρα λιτέσθαι.
τὸν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
„ὦ μοι, διογενὲς Πατρόκλεις, οἷον εἶπες·
οὔτε θεοπροπίης ἐμπάζομαι, ἣν τινα οἶδα, 50
οὔτε τί μοι παρ Ζηνὸς ἐπέφραδε πότνια μήτηρ·
ἀλλὰ τόδ' αἰνὸν ἄχος κραδίην καὶ θυμὸν ἰκάνει,
ὅππότε δὴ τὸν ὁμοῖον ἀνὴρ ἐθέλῃσιν ἀμέρσαι
καὶ γέρας ἄψ ἀφελέσθαι, ὃ τε κράτει προβεβήκη·
αἰνὸν ἄχος τό μοι ἐστίν, ἐπεὶ πάθον ἄλγεα θυμῷ. 55
κούρην, ἣν ἄρα μοι γέρας ἔξελον νῆες Ἀχαιῶν,
δουρὶ δ' ἐμῷ κτεάτισσα, πόλιν ἐντείχεα πέρσας,
τὴν ἄψ ἐκ χειρῶν ἔλετο κρείων Ἀγαμέμνων
'Ατρεΐδης ὥς εἰ τιν' ἀτίμητον μετανάστην.

ἀλλὰ τὰ μὲν προτετύχθαι ἐάσομεν, οὐδ' ἄρα πως ἦν
ἄσπερχές κεχολῶσθαι ἐνὶ φρεσίν· ἥ τοι ἔφην γε 61
οὐ πρὶν μνηιδμὸν καταπαυσέμεν, ἀλλ' ὅπότ' ἂν δὴ
νῆας ἐμὰς ἀφίκηται ἀντὶ τε πτόλεμός τε.

τὴν γ' δ' ὥμουιν μὲν ἐμὰ κλυτὰ τεύχεα δῦθι,
ἄρχε δὲ Μυρμιδόνεσσι φιλοπτολέμοισι μάχεσθαι, 65
εἰ δὴ κυάνεον Τρώων νέφος ἀμφιβέβηκεν
νηυσὶν ἐπικρατέως, οἳ δὲ φηγμῖνι θαλάσσης
κεκλίεται, χώρης ὀλίγην ἔτι μοῖραν ἔχοντες,

[Ἀργεῖοι· Τρώων δὲ πόλις ἐπὶ πᾶσα βέβηκεν
 θάρσυνος· οὐ γὰρ ἐμῆς κόρυθος λεύσσουσι μέτωπον 70
 ἐγγύθι λαμπομένης· τάχα κεν φεύγοντες ἐναύλους
 πλήσειαν νεκῶν, εἰ μοι κρείων Ἀγαμέμνων
 ἦπια εἰδείη· νῦν δὲ στρατὸν ἀμφιμάχονται.
 οὐ γὰρ Τυδεΐδew Διομήδεος ἐν παλάμῃσιν
 μαίνεται ἐγχεῖη Δαναῶν ἀπὸ λoιγὸν ἀμύναι· 75
 οὐδέ πω Ἀτρεΐδew ὁπὸς ἔκλυον αὐδῆσαντος
 ἐχθρῆς ἐκ κεφαλῆς· ἀλλ' Ἔκτορος ἀνδροφόνουio
 Τρωσὶ κελεύοντος περιάγνυνται, οἱ δ' ἀλαλητῶ
 πᾶν πεδίον κατέχουσι, μάχῃ νικῶντες Ἀχαιοὺς.]
 ἀλλὰ καὶ ὧς, Πάτροκλε, νεῶν ἀπὸ λoιγὸν ἀμύνων 80
 ἔμπεσ' ἐπικρατέως, μὴ δὴ πυρὸς αἰθομένοιο
 νῆας ἐνιπρήσωσι, φίλον δ' ἀπὸ νόστον ἔλονται.
 πείθεο δ', ὧς τοι ἐγὼ μύθου τέλος ἐν φρεσὶ θείω,
 [ὥς ἂν μοι τιμὴν μεγάλην καὶ κῦδος ἄρῃαι
 πρὸς πάντων Δαναῶν, ἅτᾳρ οἱ περικαλλέα κούρην 85
 ἂψ ἀπονάσσωσιν, ποτὶ δ' ἀγλαὰ δῶρα πόρωσιν.]
 ἐκ νηῶν ἐλάσας ἰέναι πάλιν· εἰ δέ κεν αὖ τοι
 δῶν κῦδος ἀρέσθαι ἐρίγδουπος πόσις Ἥρης,
 μὴ σύ γ' ἄνευθεν ἐμεῖo λιλαιέσθαι πολεμίζειν
 Τρωσὶ φιλοπτολέμοισιν· ἀτιμότερον δέ με θήσεις· 90
 μῆδ' ἐπαγαλλόμενος πολέμῳ καὶ δημοτῇτι,
 Τρῶας ἐναιρόμενος προτὶ Ἴλιον ἡγεμονεύειν,
 μή τις ἀπ' Οὐλύμποιο θεῶν αἰειγενετάων
 ἐμβήῃ· μάλα τοὺς γε φιλεῖ ἐκάεργος Ἀπόλλων·
 ἀλλὰ πάλιν τρωπᾶσθαι, ἐπὴν φάος ἐν νήεσσιν 95
 θείῃς, τοὺς δέ τ' ἔαν πεδίον κάτα δηριάσθαι.“
 [αἶ γάρ, Ζεῦ τε πάτερ καὶ Ἀθηναίη καὶ Ἀπολλων,
 μήτε τις οὖν Τρώων θάνατον φύγοι, ὅσσοι ἔασιν,
 μήτε τις Ἀργείων, νῶιν δ' ἐκδῶμεν ὄλεθρον,

ὕφρ' οἶοι Τροίης ἱερὰ κρήδεμνα λύωμεν.] 100

ὥς οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον,
 Αἴας δ' οὐκέτ' ἔμιμνε· βιάζετο γὰρ βελέεσσιν·
 δάμνα μιν Ζηνὸς τε νόος καὶ Τρῶες ἀγαυοὶ
 βάλλοντες· δεινὴν δὲ περὶ κροτάφοισι φαεινὴ
 πῆληξ βαλλομένη καναχὴν ἔχε, βάλλετο δ' αἰεὶ 105
 καὶ πφάλαρ' εὐποίηθ'· ὁ δ' ἀριστερὸν ὦμον ἔκαμνεν,
 ἔμπεδον αἶν ἐχων σάκος αἰόλον, οὐδὲ δύναντο
 ἄμφ' αὐτῷ πελεμῖξαι ἐρείδοντες βελέεσσιν.
 αἰεὶ δ' ἀργαλέφ ἔχετ' ἄσθματι, καὶ δέ οἱ ἰδρῶς
 πάντοθεν ἐκ μελέων πολὺς ἔρρεεν, οὐδέ πη εἶχεν 110
 ἀμπνεῦσαι· πάντη δὲ κακὸν κακῷ ἐστήρικτο.

ἔσπετε νῦν μοι, μοῦσαι Ὀλύμπια δώματ' ἔχουσai,
 ὅπως δὴ πρῶτον πῦρ ἔμπεσε νηυσὶν Ἀχαιῶν.
 Ἐκτωρ Αἴαντος δόρυ μέλινον ἄγχι παραστάς
 πληξ' ἄορι μεγάλῳ, αἰχμῆς παρὰ κανλὸν ὀπισθεν, 115
 ἀντικρὺς δ' ἀπάραξε· τὸ μὲν Τελαμώνιος Αἴας
 πῆλ' αὐτῶς ἐν χειρὶ κόλον δόρυ, τῆλε δ' ἀπ' αὐτοῦ
 αἰχμὴ χαλκείη χαμάδις βόμβησε πεσοῦσα.
 γυνὸ δ' Αἴας κατὰ θυμὸν ἀμύμονα, ῥίγησέν τε,
 ἔργα θεῶν, ὃ ῥα πάγχυ μάχης ἐπὶ μῆδεα κείρεν 120
 Ζεὺς ὑψιβρεμέτης, Τρῶεσσι δὲ βούλετο νίκην·
 χάζετο δ' ἐκ βελέων. τοὶ δ' ἔμβαλον ἀκάματον πῦρ
 νηὶ θοῇ· τῆς δ' αἶψα κατ' ἀσβέστη κέχυτο φλόξ.

ὥς τὴν μὲν πρυμνὴν πῦρ ἄμφεπεν· αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 μηρῷ πληξάμενος Πατροκλῆα προσέειπεν· 125
 „ὄρσεο, διογενὲς Πατρόκλεις, ἱπποκέλευθε·
 λεύσσω δὴ παρὰ νηυσὶ πυρὸς δηίοιο ἰωήν·
 μὴ δὴ νῆας ἔλωσι καὶ οὐκέτι φυκτὰ πέλωνται·
 δύσεο τεύχεα θᾶσσον, ἐγὼ δέ κε λαὸν ἀγείρω.“

ὥς φάτο, Πάτροκλος δὲ κορύσσετο νώροπι χαλκῷ

κνημίδας μὲν πρῶτα περὶ κνήμησιν ἔθηκεν 131
καλάς, ἀργυρέοισιν ἐπισφυρίοις ἀραρνίας·
δεύτερον αὖ θώρηκα περὶ στήθεσιν ἔδυνεν
ποικίλον ἀστερόεντα ποδώκεος Αἰακίδαο.

ἄμφι δ' ἄρ' ὥμοισιν βάλετο ξίφος ἀργυρόηλον 135
χάλκεον, αὐτὰρ ἔπειτα σάκος μέγα τε στιβαρόν τε·
κρατὶ δ' ἐπ' ἰφθίμῳ κυνέην ἐτύκτον ἔθηκεν
ἵππουριν· δεινὸν δὲ λόφος καθύπερθεθεν ἔνευεν.
εἵλετο δ' ἄλκιμα δοῦρε, τὰ οἱ παλάμῃφιν ἀρήρειν.

[ἔγχος δ' οὐχ ἔλετ' οἶον ἀμύμονος Αἰακίδαο, 140
βριθὺ μέγα στιβαρόν· τὸ μὲν οὐ δύνατ' ἄλλος Ἀχαιῶν
πάλλειν, ἀλλὰ μιν οἷος ἐπίστατο πηλαί Ἀχιλλεύς,
Πηλιάδα μελίην, τὴν πατρὶ φίλῳ πόρε Χείρων
Πηλίου ἐκ κορυφῆς, φόνον ἐμμεναι ἠρώεσσιν.]

ἵππους δ' Αὐτομέδοντα θοῶς ζευγνύμεν ἄνωγεν, 145
τὸν μετ' Ἀχιλλῆα φηξήνορα τίε μάλιστα,
πιστότατος δέ οἱ ἔσκε μάχῃ ἐνὶ μεῖναι ὁμοκλήν.
τῷ δὲ καὶ Αὐτομέδων ὑπαγε ζυγὸν ὠκέας ἵππους,
Ἐάνθον καὶ Βαλλίον, τῷ ἅμα πνοιῆσι πετέσθην,
τοὺς ἔτεκε Ζεφύρῳ ἀνέμῳ ἄρπυια Ποδάργη 150
βοσκομένη λειμῶνι παρὰ ῥόον Ὀκεανοῖο.

ἐν δὲ παρηογίῃσιν ἀμύμονα Πηδάσον ἴει,
τόν ῥά ποτ' Ἑτίωνος ἐλὼν πόλιν ἤγαγ' Ἀχιλλεύς,
ὃς καὶ θνητὸς ἐὼν ἔπεδ' ἵπποις ἀθανάτοισιν.

Μυρμιδόνας δ' ἄρ' ἐποιχόμενος θώρηξεν Ἀχιλλεύς
πάντας ἀνὰ κλισίας σὺν τεύχεσιν· οἱ δὲ λύκοι ὥς 155
ῥομοφάγοι, τοῖσιν τε περὶ φρεσὶν ἄσπετος ἀλκή,
οἳ τ' ἔλαφον κεραὸν μέγαν οὖρεσι δηλώσαντες
δάπτουσιν· πᾶσιν δὲ παρήιον αἵματι φοινόν·
καὶ τ' ἀγεληδὸν ἱασιν ἀπὸ κρήνης μελανύδρου 160
λάφοντες γλώσσησιν ἀραιῇσιν μέλαν ὕδωρ

ἄκρον, ἐρευνγόμενοι φόνον αἵματος· ἐν δέ τε θυμὸς
 στήθεσιν ἄτρομός ἐστι, περιστένεται δέ τε γαστήρ·
 τοιοῖο Μυρμιδόνων ἡγήτορες ἡδὲ μέδοντες
 ἄμφ' ἀγαθὸν θεράποντα ποδάρεος Αἰακίδαο 165
 ῥῶοντ'. ἐν δ' ἄρα τοῖσιν ἀρήιος ἴστατ' Ἀχιλλεὺς
 ὀτρύνων ἵππους τε καὶ ἀνέρας ἀσπιδιώτας.

πεντήκοντ' ἦσαν νῆες θοαί, ἥσιν Ἀχιλλεὺς
 ἐς Τροίην ἡγεῖτο διύφιλος· ἐν δὲ ἐκάστη
 πεντήκοντ' ἔσαν ἄνδρες ἐπὶ κληῖσιν ἑταῖροι· 170
 πέντε δ' ἄρ' ἡγεμόνας ποιήσατο, τοῖς ἐπεποίθειν,
 σημαίνειν, αὐτοὺς δὲ μέγα κρατέων ἥνασσεν.
 τῆς μὲν ἱῆς στιχὸς ἦρχε Μενέσθιος αἰολοδώρηξ,
 υἱὸς Σπερχειοῖο διυπετέος ποταμοῖο,
 δν τέκε Πηλῆος θυγάτηρ καλὴ Πολυδῶρη 175
 Σπερχειῷ ἀκάμαντι, γυνὴ θεῷ εὐνηθεῖσα,
 αὐτὰρ ἐπὶ κλησιν Βῶρῳ Περιήρεος υἱί,
 ὅς ῥ' ἀναφανδὸν ὄπυι, πορῶν ἀπερείσια ἔδνα.
 τῆς δ' ἐτέρης Εὐδωρος ἀρήιος ἡγεμόνευσεν
 παρθένιος, τὸν ἔτικτε χορῷ καλὴ Πολυμήλη, 180
 Φύλαντος θυγάτηρ· τῆς δὲ κρατὺς ἀργεῖφόντης
 ἠράσαστ', ὀφθαλμοῖσιν ἰδὼν μετὰ μελπομένησιν
 ἐν χορῷ Ἀρτέμιδος χρυσηλακάτου κελαδεινῆς.
 ἀντίκα δ' εἰς ὑπερῷ' ἀναβὰς παρελῆξατο λάθρη
 Ἑρμείας ἀκάκητα, πόρεν δὲ οἱ ἀγλαὸν υἷον 185
 Εὐδωρον, πέρι μὲν θέλειν ταχὺν ἡδὲ μαχητήν.
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ τὸν γε μογοστόκος Εἰλείθυια
 ἐξάγαγε πρὸ φῶσδε καὶ ἡελίου ἰδεν αὐγάς,
 τὴν μὲν Ἑχεκλῆος κρατερὸν μένος Ἀκτορίδαο
 ἠγάγετο πρὸς δώματ', ἐπεὶ πόρε μυρία ἔδνα, 190
 τὸν δ' ὁ γέρον Φύλας ἐν ἔτρεφεν ἡδ' ἀτίταλλεν,
 ἀμφαγαπαζόμενος ὥς εἰ θ' ἔδν υἷον ἐόντα.

τῆς δὲ τρίτης Πείσανδρος ἀρήιος ἡγεμόνευεν
 Μαιμαλίδης, ὃς πᾶσι μετέπρεπε Μυρμιδόνεσσιν
 ἔγχεϊ μάρνασθαι μετὰ Πηλεΐωνος ἑταῖρον. 195
 τῆς δὲ τετάρτης ἦρχε γέρον ἱππηλάτα Φοῖνιξ,
 πέμπτης δ' Ἀλκιμέδων Λαέρκεος υἱὸς ἀμύμων.
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ πάντας ἅμ' ἡγεμόνεσσιν Ἀχιλλεὺς
 στήσεν ἐν κρίνας, κρατερὸν δ' ἐπὶ μῦθον ἔτελλεν·
 „Μυρμιδόνες, μή τίς μοι ἀπειλάων λελαθέσθω, 200
 ὃς ἐπὶ νηυσὶ θοῇσιν ἀπειλεῖτε Τρώεσσιν
 πάνθ' ὑπὸ μνηϊθμόν, καὶ μ' ἤττιάσθε ἕκαστος·
 ,σχέτλιε Πηλέος υἱέ, χόλῳ ἄρα σ' ἔτρεφε μήτηρ,
 νηλεές, ὃς παρὰ νηυσὶν ἔχεις ἀέκοντας ἑταίρους·
 οἴκαδ' περ σὺν νηυσὶ νεώμεθα ποντοπόροισιν 205
 αὐτίς, ἐπεὶ ῥά τοι ὧδε κακὸς χόλος ἔμπεσε θυμῷ.
 ταῦτά μ' ἀγειρόμενοι θάμ' ἐβάξετε· νῦν δὲ πέφανται
 φυλόπιδος μέγα ἔργον, ἔης τὸ πρὶν γ' ἐράασθε·
 ἔνθα τις ἄλκιμον ἦτορ ἔχων Τρώεσσι μαχέσθω.“
 ὧς εἰπὼν ὥτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἑκάστου. 210
 μᾶλλον δὲ στίχες ἄρθεν, ἐπεὶ βασιλῆος ἄκουσαν.
 ὥς δ' ὅτε τοῖχον ἀνὴρ ἀράρη πυκινοῖσι λίθοισιν
 δώματος ὑψηλοῦ, βίας ἀνέμων ἄλεινων,
 ὧς ἄραρον κόρυθές τε καὶ ἀσπίδες ὀμφαλόεσσαι.
 ἀσπίς ἄρ' ἀσπὶδ' ἐριδε, κόρυς κόρυν, ἀνέρα δ' ἀνὴρ.
 ψαῦον δ' ἱππόκομοι κόρυθες λαμπροῖσι φάλοισιν 216
 νευόντων· ὧς πυκνοὶ ἐφέστασαν ἀλλήλοισιν.
 πάντων δὲ προπάροιθε δῦ' ἀνέρε θωρήσσοντο,
 Πάτροκλός τε καὶ Ἀντομέδων, ἓνα θυμὸν ἔχοντες,
 πρόσθεν Μυρμιδόνων πολεμιζέμεν. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς 220
 βῆ ῥ' ἵμεν ἐς κλισίην, χηλοῦ δ' ἀπὸ πῶμ' ἀνέφγεν
 καλῆς δαιδαλέης, τήν οἱ Θέτις ἀργυρόπεζα
 θῆκε· ἐπὶ νηὸς ἄγεσθαι, ἐν πλήσασα χιτώνων

χλαινάων τ' ἀνεμοσκεπέων οὐλων τε ταπήτων.
 ἔνθα δέ οἱ δέπας ἔσκε τετυγμένον, οὐδέ τις ἄλλος 225
 οὔτ' ἀνδρῶν πίνεσκεν ἀπ' αὐτοῦ αἶθοπα οἶνον,
 οὐ τέ τεφ σπένδεσκε θεῶν, ὅτε μῆ Διὶ πατρί.
 τό ῥα τότε' ἐκ χηλοιο λαβὼν ἐκάθηρε θεεῖφ
 πρῶτον, ἔπειτα δ' ἐνιψ' ὕδατος καλῆσι φοῆσιν,
 νύφατο δ' αὐτὸς χεῖρας, ἀφύσσατο δ' αἶθοπα οἶνον. 230
 εὐχετ' ἔπειτα στὰς μέσφ' ἔρκαε, λείβε δὲ οἶνον
 οὐρανὸν εἰσανιδῶν· Δία δ' οὐ λάθε τερπικέραννον·
 „Ζεῦ ἄνα Δωδωναίε Πελασγικέ, τηλόθι ναίων,
 Δωδώνης μεδέων δυσχειμέρου, ἀμφὶ δὲ Σελλοὶ
 σοὶ ναίουσ' ὑποφῆται ἀνιπτόποδες χαμαιεῦναι. 235
 ἡμὲν δὴ ποτ' ἐμὸν ἔπος ἔκλυες εὐξάμενοιο,
 τίμησας μὲν ἐμέ, μέγα δ' ἱψαιο λαὸν Ἀχαιῶν·
 ἡδ' ἔτι καὶ νῦν μοι τόδ' ἐπικρήνηνον ἐέλδωρ.
 αὐτὸς μὲν γὰρ ἐγὼ μενέω νηῶν ἐν ἀγῶνι,
 ἀλλ' ἔταρον πέμπω πολέσιν μετὰ Μυρμιδόνεσσιν 240
 μάρνασθαι· τῷ κῦδος ἅμα πρόες, εὐρύοπα Ζεῦ,
 θάρσυνον δέ οἱ ἦτορ ἐνὶ φρεσίν, ὄφρα καὶ Ἑκτορ
 εἴσεται, ἥ ῥα καὶ οἶος ἐπίστυται πολεμίζειν
 ἡμέτερος θεράπων, ἥ οἱ τότε χεῖρες ἄπτοι
 μαίνονθ', ὁππότε' ἐγὼ περ ἴω μετὰ μῶλον Ἄρῃος. 245
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ἀπὸ ναῦφι μάχην ἐνοπήν τε δέηται,
 ἀσκηθῆς μοι ἔπειτα θοὰς ἐπὶ νῆας ἵκοιτο
 τεύχεσί τε ξὺν πᾶσι καὶ ἀγχεμάχοις ἐτάροισιν.“

ὃς ἔφατ' εὐχόμενος, τοῦ δ' ἔκλυε μητίετα Ζεὺς.
 τῷ δ' ἕτερον μὲν ἔδωκε πατήρ, ἕτερον δ' ἀνένευσεν·
 νηῶν μὲν οἱ ἀπώσασθαι πόλεμόν τε μάχην τε 251
 ὤκε, σόον δ' ἀνένευσε μάχης ἑξαπονέεσθαι.

ἥ τοι ὁ μὲν σπείσας τε καὶ εὐξάμενος Διὶ πατρὶ
 ἄψ κλισίην εἰσῆλθε, δέπας δ' ἀπέθηκ' ἐνὶ χηλῷ,

στῇ δὲ πάροιθ' ἔλθων κλισίης, ἔτι δ' ἤθελε θυμῷ 255
εἰσιδέειν Τρώων καὶ Ἀχαιῶν φύλοπιν αἰνὴν·

οἱ δ' ἄμα Πατρόκλῳ μεγαλήτορι θωρηχθέντες
ἔστιχον, ὄφρ' ἐν Τρωσὶ μέγα φρονέοντες ὄρουσαν.

αὐτίκα δὲ σφήκεσσιν ἑοικότες ἔξεχέοντο
εἰνοδίους, οὓς παῖδες ἐριδμαίνωσιν ἔθοντες, 260

[αἰεὶ κερτομέοντες, ὁδῷ ἐπὶ οἴκῳ ἔχοντας,]

νηπίαχοι· ξυνὸν δὲ κακὸν πολέεσσι τιθεῖσιν·

τοὺς δ' εἰ περ παρὰ τίς τε κιὼν ἄνθρωπος ὁδίτης
κινήσῃ ἀέκων, οἱ δ' ἄλκιμον ἦτορ ἔχοντες
πρόσσω πᾶς πέτεται καὶ ἀμύνει οἷσι τέκεσσιν. 265

τῶν τότε Μυρμιδόνες κραδίην καὶ θυμὸν ἔχοντες
ἐκ νηῶν ἔχέοντο· βοή δ' ἄσβεστος ὀρώρειν.

Πάτροκλος δ' ἐτάροισιν ἐκέκλετο μακρὸν ἄσας·

„Μυρμιδόνες, ἔταροι Πηληϊάδεω Ἀχιλλῆος,
ἄνδρες ἔστε, φίλοι, μνήσασθε δὲ θούριδος ἀλκῆς, 270

ὥς ἂν Πηλεΐδην τιμήσομεν, ὃς μὲν' ἄριστος
Ἀργείων παρὰ νηυσὶ καὶ ἀγχέμαχοι θεράποντες,
γυνῷ δὲ καὶ Ἀτρεΐδης εὐρὺ κρείων Ἀγαμέμνων
ἦν ἄτην, ὃ τ' ἄριστον Ἀχαιῶν οὐδὲν ἔτισεν.“

ὥς εἰπὼν ὥτρυνε μένος καὶ θυμὸν ἐκάστου. 275

ἐν δ' ἔπεσον Τρώεσσιν ἀολλέες· ἀμφὶ δὲ νῆες

σμερδαλέον κονάβησαν ἀνσάντων ὑπ' Ἀχαιῶν.

Τρῶες δ' ὥς εἶδοντο Μενoitίου ἄλκιμον υἱόν,

αὐτὸν καὶ θεράποντα σὺν ἔντεσι μαρμαίροντας,
πᾶσιν ὀρίνθη θυμός, ἐκίνηθεν δὲ φάλαγγες, 280

ἐλπόμενοι παρὰ ναῦφι ποδῶκεα Πηλεΐωνα

μηνιδμὸν μὲν ἀπορροῖψαι, φιλότητα δ' ἐλέσθαι·

πάπτηνεν δὲ ἕκαστος, ὅπη φύγοι αἰπὸν ὄλεθρον.

Πάτροκλος δὲ πρῶτος ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ
ἀντικρὺς κατὰ μέσσον, ὅθι κλείστοι κλονέοντο, 285

νηὶ πάρα πρυμνῇ μεγαθύμου Πρωτεσιλάου,
καὶ βάλε Πυραίχμην, ὃς Παίονας ἱπποκορυστὰς
ἤγαγεν ἐξ Ἀμυδῶνος ἀπ' Ἀξιοῦ εὐρὺν ῥέοντος·
τὸν βάλε δεξιὸν ὦμον· ὃ δ' ὕπιος ἐν κονίησιν
κάππεσεν οἰμῶξας, ἔταροι δέ μιν ἀμφιφόβηθεν 290
Παίονες· ἐν γὰρ Πάτροκλος φόβον ἤκεν ἅπασιν
ἡγεμόνα κτείνας, ὃς ἀριστεύεσκε μάχεσθαι.

ἐκ νηῶν δ' ἔλασεν, κατὰ δ' ἔσβεσεν αἰθόμενον πῦρ.
ἡμιδαῆς δ' ἄρα νηὺς λίπετ' αὐτόθι· τοὶ δὲ φόβηθεν
Τρῶες θεσπεσίῳ ὁμάδῳ, Δαναοὶ δ' ἐπέχυντο 295
νῆας ἀνὰ γλαφυράς· ὄμαδος δ' ἀλλιάστος ἐτύχθη.
ὥς δ' ὅτ' ἀπ' ὑψηλῆς κορυφῆς ὄρεος μέγαλοιο
κινήσῃ πνικινὴν νεφέλην στεροπηγερέτα Ζεὺς,
ἐκ τ' ἔφανευ πᾶσαι σκοπιαὶ καὶ πρόωνες ἄκροι
καὶ νάπαι, οὐρανόθεν δ' ἄρ' ὑπερράγῃ ἄσπετος αἰθήρ,
ὥς Δαναοὶ νηῶν μὲν ἀπωσάμενοι δῆλιον πῦρ 301
τυτθὸν ἀνέπνευσαν, πολέμου δ' οὐ γίγνεται ἔρωή·
οὐ γάρ πώ τι Τρῶες ἀρηιφίλων ὑπ' Ἀχαιῶν
προτροπάδην φοβέοντο μελαινάων ἀπὸ νηῶν,
ἀλλ' ἔτ' ἄρ' ἀνθίσταντο, νεῶν δ' ὑπόεικον ἀνάγκη. 305

ἐνθα δ' ἀνὴρ ἔλεν ἄνδρα κεδασθείσης ὕσμίνης
ἡγεμόνων. πρῶτος δὲ Μενoitίου ἄλκιμος υἱὸς
αὐτίκ' ἄρα στρεφθέντος Ἀρηιλύκου βάλε μῆρὸν
ἔγχει ὀξύνεντι, διαπρὸ δὲ χαλκὸν ἔλασεν·
ῥῆξεν δ' ὀστέον ἐγχος, ὃ δὲ προηνῆς ἐπὶ γαίῃ 310
κάππεσ'. ἀτὰρ Μενέλαος ἀρήιος οὔτα Θόαντα
στέρονον γυμνωθέντα παρ' ἀσπίδα, λῦσε δὲ γυῖα.
Φυλείδης δ' Ἀμφικλον ἐφορμηθέντα δοκεύσας
ἔφθη ὀρεξάμενος πρυμνὸν σκέλος, ἐνθα πάχιστος
μυὼν ἀνθρώπου πέλεται· περὶ δ' ἔγχεος αἰχμῇ 315
νεῦρα διεσχίσθη, τὸν δὲ σκότος ὕσσε κάλυψεν.

Νεστορίδαι δ' ὁ μὲν οὔτας' Ἀτύμνιον ὀξεί δουρὶ
 Ἀντίλοχος, λαπάρης δὲ διήλασε χάλκεον ἔγχος·
 ἤριπε δὲ προπάροιθε. Μάρις δ' αὐτοσχεδὰ δουρὶ
 Ἀντιλόχῳ ἐπόρουσε κασιγνήτοιο χολωθείς, 320
 στὰς πρόσθεν νέκυσ· τοῦ δ' ἀντίθεος Θρασυμήδης
 ἔφθη ὀρεξάμενος πρὶν οὐτάσαι, οὐδ' ἀφάμαρτεν,
 ὦμον ἄφαρ· πρυμνὸν δὲ βραχίονα δουρὸς ἀκωκῇ
 δρύψ' ἀπὸ μυώνων, ἀπὸ δ' ὀστέον ἄχρις ἔραξεν.
 δούπησεν δὲ πεσών, κατὰ δὲ σκότος ὄσσε κάλυψεν. 325
 ὥς τῷ μὲν δοιοῖσι κασιγνήτοισι δαμέντε
 βήτην εἰς ἔρεβος, Σαρπηδόνης ἐσθλοὶ ἑταῖροι,
 υἷες ἀκοντισταὶ Ἀμισωδάρου, ὅς φη Χίμαιραν
 θρέψεν ἀμαιμακέτην πολέσιν κακὸν ἀνθρώποισιν.
 Αἴας δὲ Κλεόβουλον Ὀϊλιάδης ἐπορούσας 330
 ζῶν ἐλε, βλαφθέντα κατὰ κλόνον· ἀλλὰ οἱ αὐθι
 λῦσε μένος, πλήξας ξίφει αὐχένα κωπήνεντι.
 πᾶν δ' ὑπεθερμάνθη ξίφος αἵματι· τὸν δὲ κατ' ὄσσε
 ἔλλαβε πορφυρέος θάνατος καὶ μοῖρα κραταιή.
 Πηνέλεως δὲ Λύκων τε συνέδραμον· ἐγχεσι μὲν γὰρ
 ἡμβροτον ἀλλήλων, μέλεον δ' ἠκόντισαν ἄμφω, 336
 τῷ δ' αὐτὶς ξιφέεσσι συνέδραμον. ἐνθα Λύκων μὲν
 ἱπποκόμου κόρυθος φάλον ἤλασεν, ἀμφὶ δὲ καυλὸν
 φάσγανον ἐρραίσθη· ὁ δ' ὑπ' οὔατος αὐχένα θείνεν
 Πηνέλεως, πᾶν δ' εἴσω ἔδν ξίφος, ἐσχεθε δ' οἶον 340
 δέρμα, παρηέρθη δὲ κάρη, ὑπέλυντο δὲ γυῖα.
 Μηριόνης δ' Ἀκάμαντα κιχεῖς ποσὶ καρπαλίμοισιν
 νύξ' ἱππων ἐπιβησόμενον κατὰ δεξιὸν ὦμον·
 ἤριπε δ' ἐξ ὀχέων, κατὰ δ' ὀφθαλμῶν κέχυτ' ἀχλύς.
 Ἴδομενεὺς δ' Ἐρύμαντα κατὰ στόμα νηλεί χαλκῷ 345
 νύξε· τὸ δ' ἀντικρὺς δόρυ χάλκεον ἐξεπέρησεν
 νέρθην ὑπ' ἐγκεφάλαιο, κέασσε δ' ἄρ' ὅστέα λευκά·

ἐκ δ' εἵναχθεν ὀδόντες, ἐνέπλησθεν δέ οἱ ἄμφω
αἵματος ὀφθαλμοί· τὸ δ' ἀνὰ στόμα καὶ κατὰ ῥίνας
πρῆσε χανών· θανάτου δὲ μέλαν νέφος ἀμφεκάλυπεν. 350

οὔτοι ἄρ' ἡγεμόνες Δαναῶν ἔλον ἄνδρα ἕκαστος.
ὥς δὲ λύκοι ἄρνεσσιν ἐπέχραον ἢ ἐρίφοισιν
σίνται, ὑπὲκ μῆλων αἰρεύμενοι, αἷ τ' ἐν ὄρεσσιν
ποιμένος ἀφραδίῃσι διέτμαγεν· οἱ δὲ ἰδόντες
αἶψα διαρπάζουσιν ἀνάλκιδα θυμὸν ἐχούσας· 355
ὥς Δαναοὶ Τρῶεσσιν ἐπέχραον· οἱ δὲ φόβοιο
δυσκελάδου μνήσαντο, λάθοντο δὲ θούριδος ἀλκῆς.

Αἴας δ' ὁ μέγας αἰὲν ἐφ' Ἑκτορι χαλκοκορυστῇ
ἴετ' ἀκοντίσσαι· ὁ δὲ ἰδρεῖη πολέμοιο,
ἄσπιδι ταυρεῖη κεκαλυμμένος εὐρέας ὦμους, 360
σκέπτειτ' ὀιστῶν τε ῥοῖζον καὶ δοῦπον ἀκόντων.
ἦ μὲν δὴ γίγνωσκε μάχης ἑτεραλκεία νίκην·
ἀλλὰ καὶ ὥς ἀνέμιμνε, σάω δ' ἐρίηρας ἑταίρους.

ὥς δ' ὅτ' ἀπ' Οὐλύμπου νέφος ἔρχεται οὐρανὸν εἰσω
αἰθέρος ἐκ δίης, ὅτε τε Ζεὺς λαίλαπα τείνῃ, 365
ὥς τῶν ἐκ νηῶν γένητο ἰαχὴ τε φόβος τε,
οὐδὲ κατὰ μοῖραν πέραον πάλιν. Ἑκτορα δ' ἵπποι
ἐκφερον ὠκύποδες σὺν τεύχεσι, λείπε δὲ λαὸν
Τρωικόν, οὓς ἀέκοντας ὀρυκτὴ τάφρος ἔρυκεν.
πολλοὶ δ' ἐν τάφρῳ ἐρυσάρματα ὠκέες ἵπποι 370
ἄξαντ' ἐν πρώτῳ ὄνυμῳ λίπον ἄρματ' ἀνάκτων.
Πάτροκλος δ' ἔπειτο σφεδανὸν Δαναοῖσι κελεύων,
Τρῶσι κακὰ φρονέων· οἱ δὲ ἰαχῇ τε φόβῳ τε
πάσας πλῆσαν ὁδοὺς, ἐπεὶ ἄρ' ἐμάχεν· ὕψι δ' ἄελλα
σκίδναθ' ὑπὸ νεφέων, τανύοντο δὲ μώνυχες ἵπποι 375
ἄσπορον προτὶ ἕστυ νεῶν ἄπο καὶ κλισιάων.

Πάτροκλος δ', ἣ πλεῖστον ὀρινόμενον ἶδε λαόν,
τῇ ῥ' ἔχ' ὁμοκλήσας· ὑπὸ δ' ἄξοσι φῶτες ἐπιπτον

πρηνέες ἐξ ὀχέων, δίφροι δ' ἀνεκνυβαλίσσον.
 ἀντικρὺς δ' ἄρα τάφρον ὑπέρθορον ὠκέες ἵπποι 380
 [ἄμβροτοι, οὓς Πηλῆι θεοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα,]
 πρόσσω ἰέμενοι, ἐπὶ δ' Ἑκτορι κέκλετο θυμός·
 ἵετο γὰρ βαλέειν· τὸν δ' ἔκφερον ὠκέες ἵπποι.
 ὥς δ' ὑπὸ λαίλαπι πᾶσα κελαινὴ βέβριθε χθών
 ἤματ' ὀπωρινῷ, ὅτε λαβρότατον χέει ὕδωρ 385
 Ζεὺς, ὅτε δὴ ῥ' ἀνδρεςσι κοτεσσάμενος χαλεπήνη,
 οἷ βίῃ εἶν ἀγορῇ σκολιάς κρίνωσι θέμιστας,
 ἐκ δὲ δίκην ἐλάσσωσι, θεῶν ὕπιν οὐκ ἀλέγοντες·
 τῶν δέ τε πάντες μὲν ποταμοὶ πλήθουσι ῥέοντες,
 πολλὰς δὲ κλιτῷς τότ' ἀποτμήγουσι χαράδραι, 390
 ἐς δ' ἄλλα πορφυρέην μεγάλα στενάχουσι ῥέουσai
 ἐξ ὀρέων ἐπὶ κάρ, μινύθει δέ τε ἔργ' ἀνθρώπων·
 ὥς ἵπποι Τρῶαι μεγάλα στενάχοντο θεόυσai.

Πάτροκλος δ' ἐπεὶ οὖν πρῶτας ἐπέκερσε φάλαγγας,
 ἄψ ἐπὶ νῆας ἔεργε παλιμπετές, οὐδὲ πόλῃος 395
 εἷα ἰεμένους ἐπιβαινέμεν, ἀλλὰ μεσηγὺς
 [νηῶν καὶ ποταμοῦ καὶ τείχεος ὑψηλοῖο]
 κτεῖνε μεταῖσσων, πολέων δ' ἀπετίνντο ποιινήν.
 ἐνθ' ἣ τοι Πρόνοον πρῶτον βάλε δουρὶ φαεινῷ,
 στέρνον γυμνωθέντα παρ' ἀσπίδα, λῦσε δὲ γυνῖα· 400
 δούπησεν δὲ πεσών. ὁ δὲ Θέστορα Ἥνοπος υἱὸν
 δευτέρου ὀρμηθεῖς — ὁ μὲν εὐξέστω ἐνὶ δίφρῳ
 ἦστο ἀλεις· ἐκ γὰρ πλήγῃ φρένας, ἐκ δ' ἄρα χειρῶν
 ἠνία ἠίχθησαν· ὁ δ' ἔγχεϊ νύξε παραστάς
 γναθμὸν δεξιτερὸν, διὰ δ' αὐτοῦ πείρεν ὀδόντων, 405
 ἔλκε δὲ δουρὸς ἔλων ὑπὲρ ἄντυγος, ὥς ὅτε τις φῶς
 πέτρῃ ἐπιπροβλήτι καθήμενος ἱερὸν ἰχθὺν
 ἐκ πόντοιο θύραζε λίνῳ καὶ ἥνοπι χαλκῷ·
 ὥς ἔλκε· ἐκ δίφροιο κεχηνότα δουρὶ φαεινῷ, 410

καὶ δ' ἄρ' ἐπὶ στόμ' ἔωσε· πεσόντα δέ μιν λίπε θυμός.
 αὐτὰρ ἔπειτ' Ἑρύλαον ἐπεσσύμενον βάλε πέτρῳ 411
 μέσσην καὶ κεφαλὴν· ἣ δ' ἄνδιχα πᾶσα κεᾶσθη
 ἐν κόρυθι βριαρῇ· ὁ δ' ἄρα πρηνῆς ἐπὶ γαίῃ
 κάππεσεν, ἀμφὶ δέ μιν θάνατος χύτο θυμοραϊστής.
 αὐτὰρ ἔπειτ' Ἑρύμαντα καὶ Ἀμφοτερὸν καὶ Ἐπάλτην
 Τληπόλεμόν τε Δαμαστορίδην Ἐχίον τε Πύρριν τε 416
 Ἴφέα τ' Εὐιππὸν τε καὶ Ἀργεάδην Πολύμηλον
 πάντας ἐπασσυτέρους πέλασε χθονὶ πουλυβοτείρῃ.

Σαρπηδὼν δ' ὥς οὖν ἰδ' ἀμιτροχίτωνας ἐταίρους
 χέρσ' ὑπο Πατρόκλοιο Μενoitιάδαο δαμέντας, 420
 κέκλετ' ἄρ' ἀντιθέοισι καθαρπτόμενος Λυκίοισιν·
 „αἰδώς, ὦ Λύκιοι, πόσε φεύγετε; νῦν θοοὶ ἐστε·
 ἀντήσω γὰρ ἐγὼ τοῦδ' ἀνέρος, ὄφρα δαείω,
 ὅς τις ὅδε κρατέει καὶ δὴ κακὰ πολλὰ ἔοργεν
 Τρῶας, ἐπεὶ πολλῶν τε καὶ ἐσθλῶν γούνατ' ἔλυσεν.“

ἣ ῥα καὶ ἐξ ὀχέων σὺν τεύχεσιν ἄλτο χαμᾶζε. 426
 Πάτροκλος δ' ἐτέρωθεν, ἐπεὶ ἰδεν, ἔκθορε δίφρου.
 οἱ δ', ὥς τ' αἰγυπιοὶ γαμφώνυχες ἀγκυλοχεῖλαι
 πέτρῃ ἐφ' ὕψηλῃ μεγάλα κλάζοντες μάχωνται,
 ὥς οἱ κεκλήγοντες ἐπ' ἀλλήλοισιν ὄρουσαν. 430

τοὺς δὲ ἰδὼν ἐλέησε Κρόνου πάϊς ἀγκυλομήτεω,
 Ἥρην δὲ προσέειπε κασιγνήτην ἄλοχόν τε·
 „ὦ μοι ἐγών, ὅτε μοι Σαρπηδόνα φίλτατον ἀνδρῶν
 μοῖρ' ὑπὸ Πατρόκλοιο Μενoitιάδαο δαμῆναι.
 διχθὰ δέ μοι κραδίη μέμονε φρεσὶν ὀρμαίνοντι, 435
 ἣ μιν ζῶν ἐόντα μάχης ἄπο δακρυοέσσης
 θείω ἀναρπάξας Λυκίης ἐν πίοιι δήμῳ,
 ἣ ἤδη ὑπὸ χερσὶ Μενoitιάδαο δαμάσσω.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρῃ·
 „αἰνότατε Κρονίδη, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες. 440

ἄνδρα θνητὸν ἔοντα, πάλαι πεπρωμένον αἵσῃ,
 ἄψ' ἐθέλεις θανάτοιο δυσηχέος ἐξαναλῦσαι;
 ἔρδ'· ἀτὰρ οὐ τοι πάντες ἐπαινέομεν θεοὶ ἄλλοι.
 ἄλλο δέ τοι ἐρέω, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλεο σῆσιν·
 αἶ κε ζῶν πέμψῃς Σαρπηδόνα θνδε δόμονδε, 445
 φράζεο, μὴ τις ἔπειτα θεῶν ἐθέλῃσι καὶ ἄλλος
 πέμπειν δν φίλον υἷον ἀπὸ κρατερῆς ὑσμίνης·
 πολλοὶ γὰρ περὶ ἔστυ μέγα Πριάμοιο μάχονται
 υἷες ἀθανάτων, τοῖσιν κότον αἶνδον ἐνήσεις.
 ἀλλ' εἴ τοι φίλος ἐστί, τεδν δ' ὀλοφύρεται ἦτορ, 450
 ἦ τοι μὲν μιν ἔασον ἐνὶ κρατερῇ ὑσμίνῃ
 χέρσ' ὑπο Πατρόκλοιο Μενoitιιάδαο δαμῆναι·
 αὐτὰρ ἐπὴν δὴ τὸν γε λίπη ψυχὴ τε καὶ αἰών,
 πέμπειν μιν Θάνατόν τε φέρειν καὶ νήδυμον Ὕπνον,
 εἰς ὃ κε δὴ Λυκίης εὐρείης δῆμον ἴκωνται, 455
 ἐνθα ἑ ταρχύσουσι κασίγνητοὶ τε ἔται τε
 τύμβῳ τε στήλῃ τε· τὸ γὰρ γέρας ἐστὶ θανόντων·
 ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπὶδῃσε πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε.
 αἵματοέσσας δὲ ψιάδας κατέχευεν ἔραξε
 παιδα φίλον τιμῶν, τὸν οἱ Πάτροκλος ἐμελλεν 460
 φθίσειν ἐν Τροίῃ ἐριβόλακι, τηλόθι πάτρης.
 οἱ δ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 ἐνθ' ἦ τοι Πάτροκλος ἀγκαλειτὸν Θρασύδημον,
 ὅς ῥ' ἦνδς θεράπων Σαρπηδόνος ἦεν ἄνακτος,
 τὸν βάλε νείαιραν κατὰ γαστέρα, λῦσε δὲ γυῖα· 465
 Σαρπηδὼν δ' αὐτοῦ μὲν ἀπήμβροτε δουρὶ φαιινῷ
 δεύτερος ὀρμηθεὶς, ὃ δὲ Πήδασον οὔτασεν ἵππον
 ἐγγεῖ δεξιὸν ὦμον· ὃ δ' ἐβραχε θυμὸν ἀίσθων,
 καὶ δ' ἐπεσ' ἐν κονίῃσι μακῶν, ἀπὸ δ' ἔπτατο θυμός.
 τῷ δὲ διαστήτην, κρίκε δὲ ζυγόν, ἡνία δὲ σφιν 470
 σύγχυτ', ἐπεὶ δὴ κεῖτο παρήορος ἐν κονίῃσιν.

τοιο μὲν Ἀυτομέδων δουρικλυτὸς εὗρετο τέκμωρ·
 σπασσάμενος τανύηκες ἄορ παχέος παρὰ μηροῦ,
 αἶψας ἀπέκοψε παρήορον οὐδὲ μάτησεν,
 τῷ δ' ἰθὺνθήτην, ἐν δὲ ῥυτῇρσι τάνυσθεν· 475
 τῷ δ' αὖτις συνίτην ἔριδος πέρι θυμοβόροιο.

ἐνθ' αὖ Σαρπηδὼν μὲν ἀπήμβροτε δουρὶ φαεινῷ,
 Πατρόκλου δ' ὑπὲρ ὦμον ἀριστερόν ἤλυθ' ἀκωκῇ
 ἔγχεος, οὐδ' ἔβαλ' αὐτόν· ὁ δ' ὕστερος ὤρνυτο χαλκῷ
 Πάτροκλος· τοῦ δ' οὐχ ἄλιον βέλος ἔκφυγε χειρός, 480
 ἀλλ' ἔβαλ', ἐνθ' ἄρα τε φρένες ἐρχεται ἀμφ' ἀδινὸν κῆρ.
 ἤριπε δ', ὥς ὅτε τις δρυς ἤριπεν ἢ ἀχερωὶς
 ἥ ἐ πίτυς βλωθρή, τήν τ' οὖρεσι τέκτονες ἄνδρες
 ἐξέταμον πελέκεσσι νεήκεσι νήιον εἶναι·

ὥς ὁ πρόσθ' ἵππων καὶ δίφρου κεῖτο τανυσθεῖς, 485
 βεβρυχῶς κόνιος δεδραγμένος αἵματοέσσης.
 ἤυτε ταῦρον ἐπεφνε λέων ἀγέληφι μετελθὼν,
 αἰθῶνα μεγάθυμον, ἐν εἰλιπόδεσσι βόεσσιν,
 ὦλετό τε στενάχων ὑπὸ γαμφηλῆσι λέοντος,
 ὥς ὑπὸ Πατρόκλῳ Λυκίων ἀγρὸς ἀσπιστάων 490
 κτεινόμενος μενέαινε, φίλον δ' ὀνόμηνεν ἑταῖρον·

„Γλαῦκε πέπον, πολεμιστὰ μετ' ἀνδράσι, νῦν σε μάλα χρὴ
 αἰχμητήν τ' ἔμεναι καὶ θαρσαλέον πολεμιστήν·
 νῦν τοι ἐελδέσθω πόλεμος κακός, εἰ θοός ἐσσι.
 πρῶτα μὲν ὄτρυνον Λυκίων ἡγήτορας ἄνδρας, 495
 πάντῃ ἐποιχόμενος, Σαρπηδόνοιο ἀμφιμάχεσθαι·
 αὐτὰρ ἔπειτα καὶ αὐτὸς ἐμεῦ περιμάρανο χαλκῷ.
 σοὶ γὰρ ἐγὼ καὶ ἔπειτα κατηφείῃ καὶ ὄνειδος
 ἔσσομαι ἥματα πάντα διαμπερές, εἴ κέ μ' Ἀχαιοὶ
 τεύχεα συλήσωσι νεῶν ἐν ἀγῶνι πεσόντα. 500
 ἀλλ' ἔχεο κρατερῶς, ὄτρυνε δὲ λαὸν ἅπαντα.“

ὥς ἄρα μιν εἰπόντα τέλος θανάτοιο κάλυψεν

ὀφθαλμοὺς ῥίνας θ'· ὁ δὲ λάξ ἐν στήθεσι βαίνων
 ἐκ χροὸς ἔλκε δόρυ, προτὶ δὲ φρένες αὐτῷ ἔποντο·
 τοιοῦτον δ' ἅμα ψυχὴν τε καὶ ἔγχος ἐξέρυσ' αἰχμὴν. 505
 Μυρμιδόνες δ' αὐτοῦ σχέθον ἵππους φυσιόωντας,
 ἰεμένους φοβέσθαι, ἐπεὶ λίπον ἄρματ' ἀνάκτων. *Conf. 271*

Γλαῦκῳ δ' αἰνὸν ἄχος γένετο φθογγῆς αἰόντι·
 ὠρίνθη δέ οἱ ἦτορ, ὃ τ' οὐ δύνατο προσαμῦναι.
 χειρὶ δ' ἑλὼν ἐπέεξε βραχίονα· τείρε γὰρ αὐτὸν 510
 ἔλκος, ὃ δὴ μιν Τεῦκρος ἐπεσσύμενον βάλεν ἰῶ
 τείχεος ὑψηλοῦ, ἀρῇν ἐτάροισιν ἀμύνων.
 εὐχόμενος δ' ἄρα εἶπεν ἐκηβόλῳ Ἀπόλλωνι·
 „κλυῖτι, ἄναξ, ὅς που Λυκίης ἐν πίοιι δῆμῳ
 εἷς ἢ ἐνὶ Τροίῃ· δύνασαι δὲ σὺ πάντοσ' ἀκούειν 515
 ἀνέρι κηδομένῳ, ὥς νῦν ἐμὲ κῆδος ἰκάνει.
 ἔλκος μὲν γὰρ ἔχω τόδε καρτερόν, ἀμφὶ δέ μοι χεῖρ
 ὀξείης ὀδύνησιν ἐλήλαται, οὐδέ μοι αἶμα
 τερσῆναι δύναται, βαρύνθαι δέ μοι ὤμος ὑπ' αὐτοῦ·
 ἔγχος δ' οὐ δύναμαι σχεῖν ἔμπεδον, οὐδὲ μάχεσθαι 520
 ἐλθὼν δυσμενέεσσιν. ἀνὴρ δ' ὤριστος ὄλωλεν,
 Σαρπηδὼν Διὸς υἱός· ὁ δ' οὐδ' οὐ παιδὸς ἀμύνει.
 ἀλλὰ σὺ πέρ μοι, ἄναξ, τόδε καρτερόν ἔλκος ἄκυσσαι,
 κοίμησον δ' ὀδύνας, δὸς δὲ κράτος, ὅφρ' ἐτάροισιν
 κεκλόμενος Λυκίοισιν ἐποτρύνῃς πολεμίζειν, 525
 αὐτός τ' ἀμφὶ νέκνυ κατατεθνηῶτι μάχωμαι.“

ὥς ἔφατ' εὐχόμενος, τοῦ δ' ἔκλυε Φοῖβος Ἀπόλλων.
 ἀντίκα παῦσ' ὀδύνας, ἀπὸ δ' ἔλκος ἀργαλέοιο
 αἶμα μέλαν τέρσηνε, μένος δέ οἱ ἔμβαλε θυμῷ.
 Γλαῦκος δ' ἔγνω ἧσιν ἐνὶ φρεσὶ, γήθησέν τε, 530
 διττὶ οἱ ὥκ' ἤκουσε μέγας θεὸς εὐξαμένοιο.
 πρῶτα μὲν ὤτρυνεν Λυκίων ἡγήτορας ἄνδρας,
 πάντῃ ἐποικόμενος, Σαρπηδόνοσ' ἀμφιμάχεσθαι·

αὐτὰρ ἔπειτα μετὰ Τρῶας κίε μακρὰ βιβιάσθων,
 Πουλυδάμαντ' ἐπι Πανθοῖδην καὶ Ἀγήνορα δῖον, 535
 βῆ δὲ μετ' Αἰνείαν τε καὶ Ἑκτορα χαλκοκορυστήν.
 ἄγχου δ' ἰστάμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Ἑκτορ, νῦν δὴ πάγχυ λελασμένος εἰς ἐπικούρων,
 οἷ σέθεν εἵνεκα τῆλε φίλων καὶ πατρίδος αἵης
 θυμὸν ἀποφθινύθουσι, σὺ δ' οὐκ ἐθέλεις ἐπαμύνειν.
 κεῖται Σαρπηθῶν Λυκίων ἀγὸς ἀσπιστάων, 541
 δς Λυκίην εἶρυτο δίκησί τε καὶ σθένει ᾧ·
 τὸν δ' ὑπὸ Πατρόκλῳ δάμασ' ἔρχει χάλκεος Ἄρης.
 ἀλλὰ, φίλοι, πάρσσητε, νεμεσσήθητε δὲ θυμῷ,
 μὴ ἀπὸ τεύχε' ἔλονται, ἀεικίσσωσι δὲ νεκρὸν 545
 Μυρμιδόνες, Δαναῶν κεχολωμένοι, ὅσσοι ὄλοντο,
 τοὺς ἐπὶ νηυσὶ θοῆσιν ἐπέφνομεν ἐγγεῖησιν.“

ὣς ἔφατο, Τρῶας δὲ κατὰ κρῆθιν λάβε πένθος
 ἄσχετον, οὐκ ἐπιεικτόν, ἐπεὶ σφισιν ἔρμα πόλης
 ἔσκε, καὶ ἀλλοδαπὸς περ ἑὸν· πολέες γὰρ ἄμ' αὐτῷ 550
 λαοὶ ἔποντ', ἐν δ' αὐτὸς ἀριστεύεσκε μάχεσθαι.
 βὰν δ' ἰθὺς Δαναῶν λεληημένοι· ἦρχε δ' ἄρα σφιν
 Ἑκτώρ χωόμενος Σαρπηδόνοσ. αὐτὰρ Ἀχαιοὺς
 ὦρσε Μενoitιάδεω Πατροκλῆος λάσιον κῆρ·
 Αἴαντε πρῶτω προσέφη, μεμαῶτε καὶ αὐτῷ· 555
 „Αἴαντε, νῦν σφῶιν ἀμύνεσθαι φίλον ἔστω,
 οἷοί περ πάρος ἦτε μετ' ἀνδράσιν, ἧ καὶ ἀρείους.
 κεῖται ἀνὴρ, δς πρῶτος ἐσῆλατο τεῖχος Ἀχαιῶν,
 Σαρπηθῶν· ἀλλ' εἰ μιν ἀεικισσαίμεθ' ἐλόντες,
 τεύχεά τ' ὥμοιιν ἀφελοίμεθα, καὶ τιν' ἐταίρων 560
 αὐτοῦ ἀμυνομένων δαμασσαίμεθα νηλεῖ χαλκῷ.“

ὣς ἔφαθ', οἱ δὲ καὶ αὐτοὶ ἀλέξασθαι μενέαινον.
 οἱ δ' ἐπεὶ ἀμφοτέρωθεν ἐκαρτύναντο φάλαγγας,
 Τρῶες καὶ Λύκιοι καὶ Μυρμιδόνες καὶ Ἀχαιοί,

σύμβαλον ἄμφι νέκυι κατατεθνηῶτι μάχεσθαι 565
 δεινὸν ἀύσαντες· μέγα δ' ἔβραχε τεύχεα φωτῶν.
 Ζεὺς δ' ἐπὶ νύκτ' ὅλοῃν τάνυσσε κρατερῇ ὕσμινῃ,
 ὄφρα φίλῳ περὶ παιδί μάχης ὁλοὸς πόνος εἴη.

ὥσαν δὲ πρότεροι Τρῶες ἐλίκωπας Ἀχαιοὺς·
 βλήτο γὰρ οὗ τι κάκιστος ἀνὴρ μετὰ Μυρμιδόνεσσιν,
 υἷος Ἀγακλῆος μεγαθύμου, δῖος Ἐπειγεύς, 571
 ὃς ῥ' ἐν Βουδείῳ ἐν ναιομένῳ ἦνασσεν
 τὸ πρὶν· ἀτὰρ τότε γ' ἐσθλὸν ἀνεψιὸν ἐξαναρίξας
 ἐς Πηλῆν' ἰκέτευσε καὶ ἐς Θέτιν ἀργυρόπεζαν·
 οἱ δ' ἄμ' Ἀχιλλῆϊ ρηξήνορι πέμπον ἐπεσθαι 575
 Ἴλιον εἰς ἐύπωλον, ἵνα Τρώεσσι μάχοιτο.

τόν ῥα τόθ' ἀπτόμενον νέκυος βάλε φαίδιμος Ἴκτωρ
 χειρμαδίῳ κεφαλῇν· ἥ δ' ἄνδιχα πᾶσα κεάσθη
 ἐν κόρυθι βριαρῇ· ὁ δ' ἄρα προηνῆς ἐπὶ νεκρῷ
 κάμπεσεν, ἄμφι δέ μιν θάνατος χύτο θυμοραϊστής. 580
 Πατρόκλῳ δ' ἄρ' ἄχος γένετο φθιμένον ἐτάροιο,
 ἰθυσεν δὲ διὰ προμάχων ἱρηκι ἐοικῶς
 ὦκέι, ὃς τ' ἐφόβησε κολοιούς τε ψῆράς τε·
 ὥς ἰθὺς Λυκίων, Πατρόκλεις ἱπποκέλευθε,
 ἔσσυο καὶ Τρώων, κεχόλωσο δὲ κῆρ ἐτάροιο. 585

καὶ ῥ' ἔβαλε Σθενέλαον Ἰθαιμένεος φίλον υἷον
 αὐχένα χειρμαδίῳ, ρῆξεν δ' ἀπὸ τοῦο τένοντας.
 χώρησαν δ' ὑπὸ τε πρόμαχοι καὶ φαίδιμος Ἴκτωρ.
 ὄσση δ' αἰγανέης ριπῇ ταναοῖο τέτυκται,
 ἦν ῥά τ' ἀνὴρ ἀφῆν πειρώμενος ἢ ἐν ἀέθλῳ 590
 ἦε καὶ ἐν πολέμῳ δῆλιον ὑπο θυμοραϊστέων,
 τόσσον ἐχώρησαν Τρῶες, ὥσαντο δ' Ἀχαιοί.
 Γλαῦκος δὲ πρῶτος, Λυκίων ἀγρὸς ἀσπιστάων,
 ἐτράπετ', ἔκτεινεν δὲ Βαθυκλῆα μεγάρυμον,
 Χάλκωνος φίλον υἷον, ὃς Ἑλλάδι οἰκία ναίων 595

ὄλβῳ τε πλούτῳ τε μετέπρεπε Μυρμιδόνεσσιν.
 τὸν μὲν ἄρα Γλαῦκος στήθεος μέσον οὔτασε δουρί,
 στρεφθεὶς ἐξαπίνης, ὅτε μιν κατέμαρπτε διώκων·
 δούπησεν δὲ πεσών· πυκινὸν δ' ἄχος ἔλλαβ' Ἀχαιοὺς,
 ὥς ἔπες' ἐσθλὸς ἀνὴρ· μέγα δὲ Τρῶες κεχάροντο, 600
 στὰν δ' ἄμφ' αὐτὸν ἰόντες ἀολλέες· οὐδ' ἄρ' Ἀχαιοὶ
 ἀλκῆς ἐξελάθοντο, μένος δ' ἰθὺς φέρον αὐτῶν.
 ἔνθ' αὖ Μηριόνης Τρώων ἔλεν ἄνδρα κορυστήν,
 Λαόγονον θρασὺν υἱὸν Ὀνήτορος, ὃς Διὸς ἱεὺς
 Ἰδαίου ἐτέτυκτο, θεὸς δ' ὧς τίετο δῆμψ· 605
 τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὐατος· ὦκα δὲ θυμὸς
 ᾧχετ' ἀπὸ μελέων, στυγερὸς δ' ἄρα μιν σκότος εἶλεν.
 Αἰνείας δ' ἐπὶ Μηριόνη δόρυ χάλκεον ἤκεν·
 ἔλπετο γὰρ τεύξεσθαι ὑπασπίδια προβιβάντος.
 ἀλλ' ὁ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος· 610
 πρόσσω γὰρ κατέκνυψε, τὸ δ' ἐξόπιθεν δόρυ μακρὸν
 οὔδαι ἐνισκίμφθη, ἐπὶ δ' οὐρίαχος πελεμίσθη
 ἔγχος· ἔνθα δ' ἔπειτ' ἀφίει μένος ὄβριμος Ἄρης.
 [αἰχμῇ δ' Αἰνείαιο κραδαινομένη κατὰ γαίης
 ᾧχετ', ἐπεὶ ῥ' ἄλιον στιβαρῆς ἀπὸ χειρὸς ὄρουσεν.] 615
 Αἰνείας δ' ἄρα θυμὸν ἐχώσατο φώνησέν τε·
 „Μηριόνη, τάχα κέν σε καὶ ὀρχηστήν περ ἐόντα
 ἔγχος ἐμὸν κατέπαυσε διαμπερές, εἰ σ' ἐβαλὼν περ.“
 τὸν δ' αὖ Μηριόνης δουρικλυτὸς ἀντίον ἠΐδα·
 „Αἰνεία, χαλεπὸν σε καὶ ἰφθιμὸν περ ἐόντα 620
 πάντων ἀνθρώπων σβέσσαι μένος, ὃς κέ σευ ἄντα
 ἔλθῃ ἀμυνόμενος· θνητὸς δέ νυ καὶ σὺ τέτυξαι.
 εἰ καὶ ἐγὼ σε βάλοιμι τυχῶν μέσον ὀξεί χαλκῷ,
 αἰψά κε καὶ κρατερός περ ἐὼν καὶ χερσὶ πεποιθὼς
 εὔχος ἐμοὶ δοίης, ψυχὴν δ' Ἄιδι κλυτοπόλῳ.“ 625
 ὧς φάτο, τὸν δ' ἐνένιπε Μενoitίῳ ἄλκιμος υἱός·

„Μηριόνη, τί σὺ ταῦτα καὶ ἐσθλὸς ἐὼν ἀγορεύεις;
ὦ πέπον, οὐ τοι Τρῶες ὀνειδείοις ἐπέεσσιν
νεκροῦ χωρήσουσι· πάρος τινὰ γαῖα καθέξει.
ἐν γὰρ χερσὶ τέλος πολέμου, ἐπέων δ' ἐνὶ βουλῇ· 630
τῷ οὐ τι χρὴ μῦθον ὀφέλλειν, ἀλλὰ μάχεσθαι.“

ὣς εἰπὼν ὁ μὲν ἤρχ', ὁ δ' ἅμ' ἔσπετο ἰσόθεος φάως.
τῶν δ', ὥς τε δρυτόμων ἀνδρῶν ὀρυμαγδὸς ὀρώρη
οὔρεος ἐν βήσσης· ἔκαθεν δέ τε γίγνεται ἀκουή·
ὥς τῶν ὄρνυτο δοῦπος ἀπὸ χθονὸς ἐρυοδείης, 635
χαλκοῦ τε ῥινοῦ τε βοῶν τ' ἐνποιετῶν,
νυσσομένων ξίφεσιν τε καὶ ἐγχέσιν ἀμφιγύοισιν.
οὐδ' ἂν ἔτι φράδμων περ ἀνὴρ Σαρπηδόνα δῖον
ἔγνω, ἐπεὶ βελέεσσι καὶ αἵματι καὶ κονίησιν
ἐκ κεφαλῆς εἴλυτο διαμπερὲς ἐς πόδας ἄκρους. 640
οἱ δ' αἰεὶ περὶ νεκρὸν ὀμίλειον, ὥς ὅτε μυταὶ
σταθμῷ ἐνὶ βρομέωσι περιγλαγέας κατὰ πέλλας
ὤρη ἐν εἰαρινῇ, ὅτε τε γλάγος ἄγγεα δεύει·
ὥς ἄρα τοὶ περὶ νεκρὸν ὀμίλειον. οὐδέ ποτε Ζεὺς
τρέψεν ἀπὸ κρατερῆς ὑσμίνης ὅσσε φαεινῷ, 645
ἀλλὰ κατ' αὐτοὺς αἰὲν ὄρα, καὶ φράζετο θυμῷ
πολλὰ μάλ' ἀμφὶ φόνῳ Πατρόκλου μερμηρίζων,
ἣ ἦδη καὶ κεῖνον ἐνὶ κρατερῇ ὑσμίνῃ
αὐτοῦ ἐπ' ἀντιθέῳ Σαρπηδόνι φαίδιμος Ἴκτωρ
χαλκῷ δηώσῃ ἀπὸ τ' ὤμων τεύχε' ἔληται, 650
ἣ ἔτι καὶ πλεόνεσσιν ὀφέλλειεν πόνον αἰπύν.
ὥδε δέ οἱ φρονέοντι δοάσσατο κέρδιον εἶναι,
ὄφρ' ἥνυς θεράπων Πηληιάδεω Ἀχιλλῆος
ἐξαυτίς Τρῶας τε καὶ Ἴκτορα χαλκοκορυστήν
ῥῶσαιτο προτὶ ἄστυ, πολέων δ' ἀπὸ θυμὸν ἔλοιτο. 655
Ἴκτορι δὲ πρωτίστῳ ἀνάγκιδα θυμὸν ἐνήκεν·
ἐς δίφρον δ' ἀναβὰς φύγαδ' ἔτραπε, κέκλετο δ' ἄλλους

Τρῶας φευγέμεναι· γνῶ γὰρ Διὸς ἱρὰ τάλαντα.
 ἔνθ' οὐδ' ἰφθιμοὶ Λύκιοι μένον, ἀλλὰ φόβηθεν
 πάντες, ἐπεὶ βασιλῆα Ἴδον βεβλαμμένον ἦτορ 660
 κείμενον ἐν νεκύων ἀγύρει· πολέες γὰρ ἐπ' αὐτῷ
 κάππεσον, εὗτ' ἔριδα κρατερὴν ἐτάνυσσε Κρονίων.
 οἱ δ' ἄρ' ἀπ' ὤμοιιν Σαρπηδόνοσ ἐντὲ' ἔλοντο
 χάλκεα μαρμαίροντα· τὰ μὲν κοίλας ἐπὶ νῆας
 δῶκε φέρειν ἐτάροισι Μενoitίου ἄλκιμος υἱός. 665

καὶ τότε Ἀπόλλωνα προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·
 „εἰ δ' ἄγε νῦν, φίλε Φοῖβε, κελαινεφές αἶμα κάθηρον
 ἐλθὼν ἐκ βελέων Σαρπηδόνα, καὶ μιν ἔπειτα
 πολλὸν ἀποπρὸ φέρων λοῦσον ποταμοῖο ῥοῇσιν
 χρῖσόν τ' ἄμβροσίῃ, περὶ δ' ἄμβροτα εἶματα ἔσسون· 670
 πέμπε δέ μιν πομποῖσιν ἄμα κραιπνοῖσι φέρεσθαι,
 Ὕπνω καὶ Θανάτῳ διδυμάοσιν, οἳ ῥά μιν ὦκα
 δῆσους ἐν Λυκίῃς εὐρείῃς πῖονι δῆμῳ,
 ἔνθα ἔταρχύσουσι κασίγνητοί τε ἔται τε
 τύμβῳ τε στήλῃ τε· τὸ γὰρ γέρας ἐστὶ θανόντων.“ 675

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἄρα πατρὸς ἀνηκούστησεν Ἀπόλλων.
 βῆ δὲ κατ' Ἰδαίων ὀρέων ἐς φύλοπιν αἰνὴν,
 αὐτίκα δ' ἐκ βελέων Σαρπηδόνα δῖον αἶερας,
 πολλὸν ἀποπρὸ φέρων λοῦσεν ποταμοῖο ῥοῇσιν
 χρῖσέν τ' ἄμβροσίῃ, περὶ δ' ἄμβροτα εἶματα ἔσσεν· 680
 πέμπε δέ μιν πομποῖσιν ἄμα κραιπνοῖσι φέρεσθαι,
 Ὕπνω καὶ Θανάτῳ διδυμάοσιν, οἳ ῥά μιν ὦκα
 κάτθεσαν ἐν Λυκίῃς εὐρείῃς πῖονι δῆμῳ.

Πάτροκλος δ' ἵπποισι καὶ Ἀντομέδοντι κελεύσας
 Τρῶας καὶ Λυκίους μετεκίαθε, καὶ μέγ' ἀάσθη 685
 νῆπιος· εἰ δὲ ἔπος Πηληιάδαο φύλαξεν,
 ἦ τ' ἂν ὑπέκφυγε κῆρα κακὴν μέλανος θανάτοιο.
 ἀλλ' αἰεὶ τε Διὸς κρείστων νόος ἥε περ ἀνδρῶν·

[ὅς τε καὶ ἄλκιμον ἄνδρα φοβεῖ καὶ ἀφείλετο νίκην
 ῥηιδίως, ὅτε δ' αὐτὸς ἐποτρύνει μαχέσασθαι] 690
 ὃς οἱ καὶ τότε θυμὸν ἐνὶ στήθεσσιν ἀνῆκεν.

ἐνθα τίνα πρῶτον, τίνα δ' ὕστατον ἐξεναρίξας,
 Πατρόκλεις, ὅτε δὴ σε θεοὶ θανατόνδε κάλεσσαν;
 Ἄδρηστον μὲν πρῶτα καὶ Αὐτόνοον καὶ Ἐχεκλον
 καὶ Πέριμον Μεγάδην καὶ Ἐπίστορα καὶ Μελάνιππον,
 αὐτὰρ ἔπειτ' Ἐλασον καὶ Μούλιον ἠδὲ Πυλάρτην· 696
 τοὺς ἔλεν, οἱ δ' ἄλλοι φύγαδε μνῶντο ἕκαστος.

ἐνθα κεν ὑψίπυλον Τροίην ἔλον υἷες Ἀχαιῶν
 Πατρόκλου ὑπὸ χερσὶ· περιπρὸ γὰρ ἔρχετ' ὄνεν·
 εἰ μὴ Ἀπόλλων Φοῖβος ἐυδμήτου ἐπὶ πύργου 700
 ἔστη, τῷ ὅλοα φρονέων, Τρώεσσι δ' ἀρήγων.
 τρὶς μὲν ἐπ' ἀγκῶνος βῆ τείχεος ὑψηλοῖο
 Πάτροκλος, τρὶς δ' αὐτὸν ἀπεστυφέλιξεν Ἀπόλλων,
 χεῖρεσσ' ἀθανάτησι φαιινὴν ἀσπίδα νύσσων.
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὸ τέταρτον ἐπέσσυτο δαίμονι ἴσος, 705
 δεινὰ δ' ὁμοκλήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „χάζεο, διογενὲς Πατρόκλεις· οὐ νύ τοι αἶσα
 σῶ ὑπὸ δουρὶ πόλιν πέρθαι Τρώων ἀγερώχων,
 οὐδ' ὑπ' Ἀχιλλῆος, ὃς περ σέο πολλὸν ἀμείνων.“
 ὥς φάτο, Πάτροκλος δ' ἀνεχάζετο πολλὸν ὀπίσσω, 710
 μῆνιν ἀλευάμενος ἑκατηβόλου Ἀπόλλωνος.

Ἐκτωρ δ' ἐν Σκαιῇσι πύλης ἔχε μώνυχας ἵππους·
 δῖξε γάρ, ἥε μάχοιτο κατὰ κλόνον αὐτὶς ἐλάσσας,
 ἥ λαοὺς ἐς τείχος ὁμοκλήσειεν ἀλῆναι.
 ταῦτ' ἄρα οἱ φρονέοντι παρίστατο Φοῖβος Ἀπόλλων
 ἀνέρι εἰσάμενος αἰζήτῳ τε κρατερῷ τε, 716
 Ἀσίῳ, ὃς μήτρως ἦν Ἐκτορος ἵπποδάμοιο,
 αὐτοκασίγνητος Ἑκάβης, υἷος δὲ Δύμαντος,
 ὃς Φρυγίῃ ναίεσκε ῥοῆς ἐπὶ Σαγγαρίοιο·

τῷ μιν εἰσάμενος προσέφη Διὸς υἱὸς Ἀπόλλων· 720
 „Ἔκτορ, τίπτε μάχης ἀποπαύεαι; οὐδέ τί σε χρή.
 αἰδ’ ὅσον ἦσσαν εἰμί, τόσον σέο φέρτερος εἶην·
 τῷ κε τάχα στυγερώς πολέμου ἀπερρώσειας.

ἀλλ’ ἄγε Πατρόκλῳ ἔφεπε κρατερῶνυχας ἵππους,
 αἰ κέν πῶς μιν ἔλῃς, δῶη δέ τοι εὐχος Ἀπόλλων.“ 725

ὣς εἰπὼν ὁ μὲν αὖτις ἔβη θεὸς ἄμ πόνον ἀνδρῶν,
 Κεβριόνη δ’ ἐκέλευσε δαΐφρονι φαίδιμος Ἔκτωρ
 ἵππους ἐς πόλεμον πεπληγέμεν. αὐτὰρ Ἀπόλλων
 δύσεθ’ Ὀμίλον ἰών, ἐν δὲ κλόνον Ἀργείοισιν
 ἦκε κακόν, Τρῶσιν δὲ καὶ Ἔκτορι κῦδος ὕπαζεν. 730

Ἔκτωρ δ’ ἄλλους μὲν Δαναοὺς ἔα οὐδ’ ἐνάριζεν,
 αὐτὰρ ὁ Πατρόκλῳ ἔφεπε κρατερῶνυχας ἵππους.

Πάτροκλος δ’ ἐτέρωθεν ἀφ’ ἵππων ἄλτο χαμαῖζε
 σκαιῇ ἔγχος ἔχων· ἐτέρηφι δὲ λάζετο πέτρον ^{ἀντιπροσέκλειον}
 μάρμαρον ὀκριόενθ’, ὃν οἱ περὶ χεῖρ ἐκάλυπεν· 735

ἦκε δ’ ἐρεισάμενος, οὐδὲ δὴν χάζετο φωτός,
 οὐδ’ ἀλίωσε βέλος, βάλε δ’ Ἔκτορος ἡνιοχῆα
 Κεβριόνην, νόθον υἱὸν ἀγακλῆος Πριάμοιο,
 ἵππων ἡνί’ ἔχοντα, μετώπιον ὀξεί λαϊ.

ἀμφοτέρως δ’ ὀφρῦς σύνειλεν λίθος, οὐδέ οἱ ἔσχεν 740
 ὀστέον, ὀφθαλμοὶ δὲ χαμαὶ πέσον ἐν κονίῃσιν
 αὐτοῦ πρόσθε ποδῶν· ὁ δ’ ἄρ’ ἀρνευτήρι ἔοικώς
 κάππεσ’ ἀπ’ εὐεργέος δῖφρου, λίπε δ’ ὀστέα θυμός.

τὸν δ’ ἐπικερτομέων προσέφησ, Πατρόκλεις ἱππεῦ·
 „ὦ πόποι, ἦ μάλ’ ἐλαφρὸς ἀνὴρ, ὥς ρεῖα κυβιστᾷ. 745

εἰ δὴ που καὶ πόντῳ ἐν ἰχθυόεντι γένοιτο,
 πολλοὺς ἂν κορέσειεν ἀνὴρ ὅδε τήθεα διφῶν,
 νηὸς ἀποθρῶσκων, εἰ καὶ δυσπήμελος εἴη, ^{δυσπήμελος}
 ὥς νῦν ἐν πεδίῳ ἐξ ἵππων ρεῖα κυβιστᾷ.

ἦ ῥα καὶ ἐν Τρώεσσι κυβιστητῆρες ἔασιν.“ 750

ὥς εἰπὼν ἐπὶ Κεβριόνη ἦρωι βεβήκειν
 οἶμα λέοντος ἔχων, ὃς τε σταθμοὺς κεραΐζων
 ἔβλητο πρὸς στήθος, ἐή τέ μιν ὤλεσεν ἀλκή·
 ὥς ἐπὶ Κεβριόνη, Πατρόκλεις, ἄλσο μεμαῶς.
 Ἔκτωρ δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ἀφ' ἵππων ἄλτο χαμᾶζε. 755
 τὼ περὶ Κεβριόναο λέονθ' ὥς θηρινθήτην,
 ὧ τ' ὄρεος κορυφῇσι περὶ κταμένης ἐλάφοιο,
 ἄμφω πεινῶντες, μέγα φρονέοντες μάχεσθον·
 ὥς περὶ Κεβριόναο δ'ὗω μῆστωρες ἀντῆς,
 Πάτροκλός τε Μενoitιάδης καὶ φαίδιμος Ἔκτωρ, 760
 ἵεντ' ἀλλήλων ταμέειν χροά νηλεί χαλκῷ.
 Ἔκτωρ μὲν κεφαλήφιν ἐπεὶ λάβεν, οὐχὶ μεθίει·
 Πάτροκλος δ' ἐτέρωθεν ἔχεν ποδός· οἱ δὲ δὴ ἄλλοι
 Τρῶες καὶ Δαναοὶ σύναγον κρατερὴν ὑσμίνην.
 ὥς δ' Εὐρύς τε Νότος τ' ἐριδαίνετον ἀλλήλοιν 765
 οὔρεος ἐν βήσσης βαθέην πελεμιζέμεν ὕλην,
 φηγόν τε μελίην τε τανύφλοιόν τε κράνειαν,
 αἷ τε πρὸς ἀλλήλας ἔβαλον τανυθήκας ὄζους
 ἡχῇ θεσπεσίῃ, πάταγος δέ τε ἀγνυμενάων,
 ὥς Τρῶες καὶ Ἀχαιοὶ ἐπ' ἀλλήλοισι θορόντες 770
 δῆουν, οὐδ' ἔτεροι μνῶντ' ὀλοοῖτο φόβοιο.
 πολλὰ δὲ Κεβριόνην ἄμφ' ὀξέα δοῦρα πεπήγειν
 ἰοί τε πτερόεντες ἀπὸ νευρῇφι θορόντες,
 πολλὰ δὲ χερμάδια μεγάλ' ἀσπίδας ἐστυφέλιξαν
 μαρναμένων ἄμφ' αὐτόν· ὃ δ' ἐν στροφάλιγγι κονίης
 κεῖτο μέγας μεγαλωστί, λελασμένος ἵπποσυνάων. 776
 ὄφρα μὲν ἥελιος μέσον οὐρανὸν ἀμφιβεβήκειν,
 τόφρα μάλ' ἀμφοτέρων βέλε' ἤπτετο, πίπτε δὲ λαός·
 ἦμος δ' ἥελιος μετενίσσετο βουλυτόνδε,
 καὶ τότε δὴ ῥ' ὑπὲρ αἶσαν Ἀχαιοὶ φέρτεροι ἦσαν. 780
 ἐκ μὲν Κεβριόνην βελέων ἦρωα ἐρυσσαν

Τρώων ἐξ ἐνοπῆς, καὶ ἀπ' ὤμων τεύχε' ἔλοντο,
 Πάτροκλος δὲ Τρωσὶ κακὰ φρονέων ἐνόρουσεν.
 τρὶς μὲν ἔπειτ' ἐπόρουσε θεοῦ ἀτάλαντος Ἄρηι,
 σμερδαλέα ἰάχων, τρὶς δ' ἐννέα φῶτας ἔπεφνεν· 785
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὸ τέταρτον ἐπέσσυτο δαίμονι ἴσος,
 ἐνθ' ἄρα τοι, Πάτροκλε, φάνη βιότοιο τελευτή·
 ἦντετο γάρ τοι Φοῖβος ἐνὶ κρατερῇ ὑσμίνῃ
 δεινός. ὁ μὲν τὸν ἰόντα κατὰ κλόνον οὐκ ἐνόησεν·
 ἥερι γὰρ πολλῇ κεκαλυμμένος ἀντεβόλησεν· 790
 στῇ δ' ὀπιθε, πλῆξεν δὲ μετάφρενον εὐρέε τ' ὤμω
 χειρὶ καταπρηνεῖ, στρεφεδίνηθεν δέ οἱ ὄσσε.
 [τοῦ δ' ἀπὸ μὲν κρατὸς κυνέην βάλε Φοῖβος Ἀπόλλων·
 ἡ δὲ κυλινδομένη καναχὴν ἔχε ποσσὶν ὑφ' ἵππων
 αὐλῶπις τρυφάλεια, μιάνθησαν δὲ ἔθειραι 795
 αἵματι καὶ κονίησι. πάρος γε μὲν οὐ θέμις ἦεν
 ἱππόκομον πῆληκα μιάνεσθαι κονίησιν,
 ἀλλ' ἀνδρὸς θείοιο κάρη χαρίεν τε μέτωπον
 ῥύετ', Ἀχιλλῆος· τότε δὲ Ζεὺς ἔκτορι δῶκεν
 ἥ κεφαλῇ φορέειν, σχεδόθεν δέ οἱ ἦεν ὄλεθρος. 800
 πᾶν δέ οἱ ἐν χεῖρεσσιν ἄγῃ δολιχόσκιον ἔγχος,
 βριθὺν μέγα στιβαρόν κεκορυθμένον· αὐτὰρ ἀπ' ὤμων
 ἀσπίς σὺν τελαμῶνι χαμαὶ πέσε τερμίδεσσα.
 λῦσε δέ οἱ θώρηκα ἄναξ Διὸς υἱὸς Ἀπόλλων.]
 τὸν δ' ἄτῃ φρένας εἶλε, λύθεν δ' ὑπὸ φαιδίμα γυῖα,
 στῇ δὲ ταφών· ὀπιθεν δὲ μετάφρενον ὀξεί δουρὶ 806
 ὤμων μεσσηγνὺς σχεδόθεν βάλε Δάρδανος ἀνὴρ,
 Πανθοῖδης Εὐφορβος, ὃς ἡλικίην ἐκέκαστο
 ἐγχεῖ θ' ἱπποσύνῃ τε πόδεσσί τε καρπαλίμοισιν·
 καὶ γὰρ δὴ τότε φῶτας εἰκόσι βῆσεν ἀφ' ἵππων, 810
 πρῶτ' ἐλθὼν σὺν ὄχεσφι, διδασκόμενος πολέμοιο·
 ὃς τοι πρῶτος ἐφῆκε βέλος, Πατρόκλεις ἱππεῦ,

οὐδὲ δάμασς· ὁ μὲν αὐτίς ἀνέδραμε, μίκτο δ' ὀμίλῳ,
[ἐκ χροὸς ἀρπάξας δόρυ μέλινον, οὐδ' ὑπέμεινεν
Πάτροκλον, γυμνὸν περ ἰόντ', ἐν δημοτῇτι.] 815

Πάτροκλος δὲ θεοῦ πληγῇ καὶ δουρὶ δαμασθεὶς
ἄψ ἐτάρων εἰς ἔθνος ἐχάζετο κῆρ' ἀλεείνων.
Ἔκτωρ δ' ὥς εἶδεν Πατροκλῆα μεγάρθυμον
ἄψ ἀναχαζόμενον βεβλημένον ὀξεί χαλκῷ,
ἀγχίμολόν ῥά οἱ ἦλθε κατὰ στίχας, οὔτα δὲ δουρὶ 820
νεύατον ἐς κενεῶνα, διαπρὸ δὲ χαλκὸν ἔλασσεν.

δούπησεν δὲ πεσών, μέγα δ' ἤκαχε λαὸν Ἀχαιῶν.
ὥς δ' ὅτε σὺν ἀκάμαντα λέων ἐβίησατο χάρμη,
ὦ τ' ὄρεος κορυφῇσι μέγα φρονέοντε μάχεσθον
πίδακος ἀμφ' ὀλίγης· ἐθέλουσι δὲ πιέμεν ἄμφω· 825
πολλὰ δέ τ' ἀσθμαίνοντα λέων ἐδάμασσε βίηφιν·

ὥς πολέας πεφνόντα Μενoitίου ἄλκιμον υἱὸν
Ἔκτωρ Πριαμίδης σχεδὸν ἔγχει θυμὸν ἀπηύρα,
καὶ οἱ ἐπευχόμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
„Πάτροκλ', ἧ που ἐφησθα πόλιν κεραϊζέμεν ἀμῆν, 830

Τρῳιάδας δὲ γυναικας, ἐλεύθερον ἡμᾶρ ἀπούρας,
ἄξειν ἐν νήεσσι φίλην ἐς πατρίδα γαίαν,
νήπιε· τᾶων δὲ πρόσθ' Ἔκτορος ὠκέες ἵπποι
ποσσὶν ὀρωρέχεται πολεμίζειν· ἔγχει δ' αὐτὸς
Τρῳσὶ φιλοπτολέμοισι μεταπρέπω, ὃ σφιν ἀμύνω 835
ἡμᾶρ ἀναγκαῖον· σὲ δέ τ' ἐνθάδε γυῖες ἔδονται.

ἂ δεῖλ', οὐδέ τοι ἐσθλὸς ἐὼν χραΐσμησεν Ἀχιλλεύς,
ὅς πού τοι μάλα πολλὰ μένων ἐπετέλλετ' ἰόντι·
μή μοι πρὶν ἰέναι, Πατρόκλεις ἱπποκέλευθε,
νῆας ἐπι γλαφυράς, πρὶν Ἔκτορος ἀνδροφόνουιο 840
αἱματόεντα χιτῶνα περὶ στήθεσσι δαΐξαι.

ὥς πού σε προσέφη, σοὶ δὲ φρένας ἄφρονι πεῖθεν.

τὸν δ' ὀλιγοδρανέων προσέφη, Πατρόκλεις ἱππεῦ·

„ἤδη νῦν, Ἔκτορ, μεγάλη εὖχεο· σοὶ γὰρ ἔδωκεν
 νίκην Ζεὺς Κρονίδης καὶ Ἀπόλλων, οἳ με δάμασσαν
 [ῥηιδίως· αὐτοὶ γὰρ ἀπ' ὤμων τεύχε' ἔλοντο.] 846
 τοιοῦτοι δ' εἰ πέρ μοι ἐείκοσιν ἀντεβόλησαν,
 πάντες κ' αὐτόθ' ὄλοντο ἐμῷ ὑπὸ δουρὶ δαμέντες.
 ἀλλὰ με μοῖρ' ὀλοή καὶ Λητοῦς ἔκτανεν νίος,
 ἀνδρῶν δ' Εὐφορβος· σὺ δέ με τρίτος ἐξεναρρίζεις. 850
 ἄλλο δέ τοι ἐρέω, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλεο σῆσιν·
 οὐ θην οὐδ' αὐτὸς δηρὸν βέη, ἀλλὰ τοι ἦδη
 ἄγχι παρέστηκεν θάνατος καὶ μοῖρα κραταιή,
 χειρὶ δαμέντ' Ἀχιλῆος ἀμύμονος Αἰακίδαο.“

ὣς ἄρα μιν εἰπόντα τέλος θανάτοιο κάλυψεν· 855
 ψυχὴ δ' ἐκ ῥεθέων πταμένη Αἰδόσδε βεβήκειν,
 δν πότμον γοώσασα, λιποῦσ' ἀνδροτῆτα καὶ ἥβην.
 τὸν καὶ τεθνηῶτα προσηύδα παίδιμος Ἔκτωρ·
 „Πατρόκλεις, τί νύ μοι μαντεύεαι αἰπὺν ὄλεθρον;
 τίς δ' οἶδ', εἰ κ' Ἀχιλεὺς Θέτιδος πάϊς ἠνυκόμοιο 860
 φθῆῃ ἐμῷ ὑπὸ δουρὶ τυπεῖς ἀπὸ θυμὸν ὀλέσσαι;

ὣς ἄρα φωνήσας δόρυ χάλκεον ἐξ ὠτειλῆς
 εἵρυσσε, λάξ προσβάς, τὸν δ' ὕπτιον ὥς ἀπὸ δουρός.
 ἀντίκα δὲ ξὺν δουρὶ μετ' Αὐτομέδοντα βεβήκειν,
 ἀντίθεον θεράποντα ποδώκεος Αἰακίδαο· 865
 ἵετο γὰρ βαλέειν· τὸν δ' ἔκφερον ὠκέες ἵπποι
 ἄμβροτοι, οὓς Πηλῆι θεοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα.

ΙΛΙΑΔΟΣ P.

Μενελάου ἀριστεία.

οὐδ' ἔλαθ' Ἀτρεὺς νῖδον ἀρηίφιλον Μενέλαον
 Πάτροκλος Τρώεσσι δαμείς ἐν δημοτῇτι.

βῆ δὲ διὰ προμάχων κεκορυθμένος αἰδοπι χαλκῶ,
 ἀμφὶ δ' ἄρ' αὐτῷ βαῖν', ὥς τις περὶ πόρτακι μῆτηρ
 πρωτοτόκος κινυρή, οὐ πρὶν εἰδυῖα τόκοιο· 5
 ὥς περὶ Πατρόκλῳ βαῖνε ξανθὸς Μενέλαος.
 πρόσθε δέ οἱ δόρυ τ' ἔσχε καὶ ἄσπιδα πάντοσ' εἴσῃν,
 τὸν κτάμεναι μεμαῶς, ὅς τις τοῦ γ' ἀντίος ἔλθοι.
 οὐδ' ἄρα Πανθόου υἱὸς ἐνυμελὴς ἀμέλησεν
 Πατρόκλοιο πεσόντος ἀμύμονος· ἄγχι δ' ἄρ' αὐτοῦ 10
 ἔσθη, καὶ προσέειπεν ἀρηίφιλον Μενέλαον·
 „Ἀτρεΐδῃ Μενέλαε διοτρεφές, ὄρχαμε λαῶν,
 χάξεο, λείπε δὲ νεκρόν, ἕα δ' ἔναρα βροτόεντα·
 οὐ γάρ τις πρότερος Τρώων κλειτῶν τ' ἐπικούρων
 Πάτροκλον βάλε δουρὶ κατὰ κρατερὴν ὑσμίνην· 15
 τῷ με ἕα κλέος ἐσθλὸν ἐνὶ Τρώεσσιν ἀρέσθαι·
 μή σε βάλλω, ἀπὸ δὲ μελιθδεά θυμὸν ἔλωμαι.“
 τὸν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη ξανθὸς Μενέλαος·
 „Ζεῦ πάτερ, οὐ μὲν καλὸν ὑπέρβιον εὐχετάσθαι.
 οὔτ' οὖν παρδάλιος τόσσον μένος οὔτε λέοντος 20
 οὔτε σὺνδὸς κάπρου ὀλοόφρονος, οὔτε μέγιστος
 θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι περὶ σθένει βλεμαίνει,
 ὅσσον Πανθόου υἱὲς ἐνυμελῖαι φρονέουσιν.
 οὐδὲ μὲν οὐδὲ βίῃ Ὑπερήνορος ἱπποδάμοιο
 ἧς ἥβης ἀπόνηθ', ὅτε μ' ὦνατο καὶ μ' ὑπέμεινεν 25
 καὶ μ' ἔφατ' ἐν Δαναοῖσιν ἐλέγχιστον πολεμιστὴν
 ἔμμεναι· οὐδέ ἔφημι πόδεσσί γε οἷσι κίοντα
 εὐφορῆναι ἄλοχόν τε φίλην κεδνούς τε τοκῆας.
 ὥς θην καὶ σὸν ἐγὼ λύσω μένος, εἴ κέ μεν ἄντα
 στήης· ἀλλὰ σ' ἐγὼ γ' ἀναχωρήσαντα κελεύω 30
 ἐς πληθὺν ἰέναι, μῆδ' ἀντίος ἵστασ' ἐμεῖο,
 πρὶν τι κακὸν παθεῖν· ῥεχθὲν δέ τε νήπιος ἔγνω.“
 ὥς φάτο, τὸν δ' οὐ πεῖθεν· ἀμειβόμενος δὲ προσηύδα·

„νῦν μὲν δὴ, Μενέλαε διοτρεφές, ἡ μάλα τίσεις
 γνωτὸν ἐμόν, τὸν ἐπεφνες, ἐπευχόμενος δ' ἄγορεύεις,
 χήρωσας δὲ γυναῖκα μυχῶ θαλάμοιο νέοιο, 36
 ἄρρητον δὲ τοκεῦσι γόον καὶ πένθος ἔθηκας.
 ἡ κέ σφιν δειλοῖσι γόου κατάπανυμα γενοίμην,
 εἴ κεν ἐγὼ κεφαλὴν τε τεῆν καὶ τεύχε' ἐνείκας
 Πανθόφῳ ἐν χεῖρεσσι βάλω καὶ Φρόντιδι δῖῃ. 40
 ἀλλ' οὐ μὰν ἐτι δηρὸν ἀπείρητος πόνος ἔσται
 οὐδέ τ' ἀδήριτος, ἢ τ' ἄλκῃς ἢ τε φόβοιο.“

ὥς εἰπὼν οὕτωςε κατ' ἀσπίδα πάντοσ' ἔειπεν·
 οὐδ' ἔρρηξεν χαλκός, ἀνεγνάμφθη δέ οἱ αἰχμὴ
 ἀσπὶδ' ἐνὶ κρατερῇ. ὁ δὲ δεύτερος ὤρνετο χαλκῷ 45
 Ἀτρεΐδης Μενέλαος, ἐπευξάμενος Διὶ πατρί,
 ἅψ δ' ἀναχαζομένοιο κατὰ στομάχοιο θέμεθλα
 νύξ', ἐπὶ δ' αὐτὸς ἔφρισε, βαρεῖν χειρὶ πιθήσας·
 ἀντικρὺς δ' ἀπαλοτο δι' αὐχένος ἤλυθ' ἀκωκή.
 δούπησεν δὲ πεσὼν, ἀράβησε δὲ τεύχε' ἐπ' αὐτῷ· 50
 αἵματι οἱ δεύοντο κόμαι χαρίτεσσιν ὁμοῖαι
 πλοχομοὶ θ', οἷ χροσῷ τε καὶ ἀργύρῳ ἐσφήκωντο.
 οἶον δὲ τρέφει ἔρνος ἀνὴρ ἐριδιηλὲς ἐλαίης
 χώρῳ ἐν οἰοπόλῳ, ὅθ' ἄλις ἀναβέβρυχεν ὕδωρ,
 καλὸν τηλεθάον· τὸ δέ τε πνοιαὶ δονέουσιν 55
 παντοίων ἀνέμων, καὶ τε βρύει ἄνθει λευκῷ·
 ἐλθὼν δ' ἐξαπίνης ἄνεμος σὺν λαίλαπι πολλῇ
 βόθρου τ' ἐξεστρεψε καὶ ἐξετάγυσσ' ἐπὶ γαίῃ·
 τοῖον Πανθόου νῆδον ἐνμμελίην Ἐυφορβον
 Ἀτρεΐδης Μενέλαος ἐπεὶ κτάνε, τεύχε' ἐσύλα. 60
 ὥς δ' ὅτε τίς τε λέων ὄρεσίτροφος, ἀλκὴ πεποιθώς,
 βοσκομένης ἀγέλης βοῦν ἀρπάσῃ, ἢ τις ἀρίστη
 τῆς δ' ἐξ αὐχέν' ἔαξε λαβὼν κρατεροῖσιν ὁδοῦσιν
 πρῶτον, ἔπειτα δέ θ' αἶμα καὶ ἔγκατα πάντα λαφύσσει

δηῶν· ἀμφὶ δὲ τὸν γε κύνες τ' ἄνδρες τε νομῆες 65
 πολλὰ μάλ' ἰύζουσιν ἀπόπροθεν οὐδ' ἐθέλουσιν
 ἀντίον ἐλθέμεναι· μάλα γὰρ χλωρὸν δέος αἰρεῖ·
 ὧς τῶν οὗ τιμι θυμὸς ἐνὶ στήθεσσι ἐτόλμα
 ἀντίον ἐλθέμεναι Μενελάου κυδαλλίμοιο.

ἐνθα κε ρεῖα φέροι κλυτὰ τεύχεα Πανθοῖδαο 70
 Ἀτρεΐδης, εἰ μὴ οἱ ἀγάσσατο Φοῖβος Ἀπόλλων,
 ὃς ῥά οἱ Ἔκτορ' ἐπῶρσε θεῶ ἀτάλαντον Ἄρηι,
 ἀνέρι εἰσάμενος, Κικόνων ἡγήτορι Μέντη·
 καί μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„Ἔκτορ, νῦν σὺ μὲν ὧδε θέεις ἀκίχητα διώκων, 75
 ἵππους Αἰακίδαο δαΐφρονος· οἱ δ' ἀλεγεινοὶ
 ἀνδράσι γε θνητοῖσι δαμήμεναι ἢδ' ὀχέεσθαι,
 ἄλλω γ' ἢ Ἀχιλῇι, τὸν ἀθανάτη τέκε μήτηρ.
 τόφρα δέ τοι Μενέλαος ἀρήιος Ἀτρεὺς υἱὸς
 Πατρόκλῳ περιβὰς Τρώων τὸν ἄριστον ἔπεφνε, 80
 Πανθοῖδην Εὐφορβον, ἔπαυσε δὲ θούριδος ἀλκῆς.“

ὧς εἰπὼν ὁ μὲν αὐτίς ἔβη θεὸς ἄμ πόνον ἀνδρῶν,
 Ἔκτορα δ' αἰνὸν ἄχος πύκασε φρένας ἀμφιμελαίνας.
 πάπτηνεν δ' ἄρ' ἔπειτα κατὰ στίχας, αὐτίκα δ' ἔγνω
 τὸν μὲν ὄφρ' αἰνῶμενον κλυτὰ τεύχεα, τὸν δ' ἐπὶ γαίῃ 85
 κείμενον· ἔρρει δ' αἷμα κατ' οὐταμένην ὠτειλήν.
 βῆ δὲ διὰ προμάχων κεκορυθμένος αἰθοπι χαλκῷ,
 ὀξέα κεκληγῶς, φλογὶ εἰκελὸς Ἥφαιστοιο
 ἀσβέστω· οὐδ' υἷδ' ἰδὼν λάθην Ἀτρεὺς ὀξὺ βοήσας·
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς δὴν μεγαλήτορα θυμόν· 90
 „ὦ μοι ἐγὼν· εἰ μὲν κε λίπω κάτα τεύχεα καλὰ
 Πάτροκλόν θ', ὃς κεῖται ἐμῆς ἔνεκ' ἐνθάδε τιμῆς,
 μὴ τίς μοι Δαναῶν νεμεσῇσεται, ὃς κεν ἰδῇται.
 εἰ δέ κεν Ἔκτορι μούνος ἐὼν καὶ Τρωσὶ μάχωμαι
 αἰδεσθεῖς, μὴ πῶς με περιστήωσ' ἕνα πολλοί· 95

Τρῶας δ' ἐνθάδε πάντας ἄγει κορυθαίολος Ἔκτωρ.
 ἀλλὰ τί ἦ μοι ταῦτα φίλος διελέξατο θυμός;
 ὅππότε' ἀνὴρ ἐθέλῃ πρὸς δαίμονα φωτὶ μάχεσθαι,
 ὃν κε θεὸς τιμᾷ, τάχα οἱ μέγα πῆμα κυλίσσῃ.
 τῷ μ' οὗ τις Δαναῶν νεμεσῆσεται, ὅς κεν ἰδῇται 100
 Ἑκτορι χωρήσαντ', ἐπεὶ ἐκ θεόφιν πολεμίζει.
 εἰ δέ που Αἰαντός γε βοὴν ἀγαθοῖο πυθοίμην·
 ἄμφω κ' αὐτίς ἰόντες ἐπιμνησαίμεθα χάρμης
 καὶ πρὸς δαίμονά περ, εἰ πως ἐρυσαιέμεθα νεκρὸν
 Πηλεΐδῃ Ἀχιλλῇ· κακῶν δέ κε φέρτατον εἴη.“ 105

εἶος ὁ ταῦθ' ὥρμαινε κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,
 τόφρα δ' ἐπὶ Τρώων στίχες ἤλυθον· ἦρχε δ' ἄρ' Ἔκτωρ.
 αὐτὰρ ὁ γ' ἐξοπίσω ἀνεχάζετο, λείπε δὲ νεκρὸν,
 ἐντροπαλιζόμενος ὥς τε λῆς ἡυγένειος,
 ὃν ῥα κύνες τε καὶ ἄνδρες ἀπὸ σταθμοῖο δίωνται 110
 ἔγχεσι καὶ φωνῇ· τοῦ δ' ἐν φρεσὶν ἄλκιμον ἦτορ
 παχνοῦται, ἀέκων δέ τ' ἔβη ἀπὸ μεσσαύλοιο·
 ὥς ἀπὸ Πατρόκλοιο κίε ξανθὸς Μενέλαος.
 στῇ δὲ μεταστρεφθεὶς, ἐπεὶ ἴκετο ἔθνος ἐταίρων,
 παπταίνων Αἰάντα μέγαν, Τελαμώνιον υἱόν. 115
 τὸν δὲ μάλ' αἰψ' ἐνόησε μάχης ἐπ' ἀριστερὰ πάσης
 θαρσύνονθ' ἐτάρους καὶ ἐποτρύνοντα μάχεσθαι·
 θεσπέσιον γάρ σφιν φόβον ἔμβαλε Φοῖβος Ἀπόλλων.
 βῆ δὲ θείειν, εἶθαρ δὲ παριστάμενος ἔπος ἤνθα·
 „Αἴαν, δεῦρο, πέπον, περὶ Πατρόκλοιο θανόντος 120
 σπεύσομεν, αἶ κε νέκυν περ Ἀχιλλῇ προφέρωμεν
 γυμνόν· ἀτὰρ τά γε τεύχε' ἔχει κορυθαίολος Ἔκτωρ.“

ὥς ἔφατ', Αἰάντι δὲ δαΐφρονι θυμὸν ὄρινεν.
 βῆ δὲ διὰ προμάχων, ἅμα δὲ ξανθὸς Μενέλαος. „
 Ἔκτωρ μὲν Πάτροκλον, ἐπεὶ κλυτὰ τεύχε' ἀπηύρα, 125
 ἔλχ', ἵν' ἀπ' ὤμοιιν κεφαλὴν τάμοι ὀξεί χαλκῷ,

τὸν δὲ νέκυν Τρῳήσιον ἐρυσσάμενος κυσὶ δοίῃ·
 Αἶας δ' ἐγγύθεν ἤλθε φέρων σάκος ἥντε πύργον.
 Ἐκτωρ δ' ἄψ ἔς ὄμιλον ἰὼν ἀνεχάζεθ' ἐταῖρων,
 ἔς δίφρον δ' ἀνόρουσε· δίδου δ' ὃ γε τεύχεα καλὰ 130
 Τρῳσὶ φέρειν προτὶ ἄστυ, μέγα κλέος ἔμμεναι αὐτῷ.
 Αἶας δ' ἀμφὶ Μενoitιάδῃ σάκος εὐρὺ καλύψας
 ἐστήκειν, ὥς τις τε λέων περὶ οἷσι τέκεσσιν,
 ᾧ ῥά τε νήπι' ἄγοντι συναντήσονται ἐν ὕλῃ
 ἄνδρες ἐπακτῆρες· ὁ δέ τε σθένει βλεμμαίνει, 135
 πᾶν δέ τ' ἐπισκύνιον κάτω ἔλκεται ὅσσε καλύπτων·
 ὥς Αἶας περὶ Πατρόκλῳ ἥρωι βεβήκειν.
 Ἀτρεΐδης δ' ἐτέρωθεν ἀρηίφιλος Μενέλαος
 ἐστήκει μέγα πένθος ἐνὶ στήθεσσιν ἀέξων.

Γλαῦκος δ' Ἰππολόχοιο πάϊς, Λυκίων ἀγὸς ἀνδρῶν,
 Ἐκτορ' ὑπόδρα ἰδὼν χαλεπῷ ἠνίπαπε μύθῳ· 141
 „Ἐκτορ εἶδος ἄριστε, μάχης ἄρα πολλὸν ἐδεύεο·
 ἦ σ' αὐτως κλέος ἐσθλὸν ἔχει φύξῃλιν ἐόντα.
 φράζεο νῦν, ὅπως κε πόλιν καὶ ἄστυ σαώσῃς
 οἶος σὺν λαοῖσι, τοὶ Ἴλῳ ἐγγεγάασιν· 145
 οὐ γάρ τις Λυκίων γε μαχησόμενος Δαναοῖσιν
 εἶσι περὶ πτόλιος, ἐπεὶ οὐκ ἄρα τις χάρις ἦεν
 μάρνασθαι δηλοῖσιν ἐπ' ἀνδράσι νωλεμὲς αἰεὶ.
 πῶς κε σὺ χεῖρονα φῶτα σαώσῃας μεθ' ὄμιλον,
 σχέτλι', ἐπεὶ Σαρπηδὸν' ἄμα ξεῖνον καὶ ἐταῖρον 150
 κάλλιπες Ἀργείοισιν ἔλωρ καὶ κύρμα γενέσθαι,
 ὅς τοι πόλλ' ὄφελος γένετο, πτόλει τε καὶ αὐτῷ,
 ζῶδς ἐὼν· νῦν δ' οὐ οἱ ἀλαλκόμεναι κύνας ἔτλης.
 τῷ νῦν, εἰ τις ἐμοὶ Λυκίων ἐπιπείσεται ἀνδρῶν,
 οἴκαδ' ἵμεν, Τροίῃ δὲ πεφήσεται αἰπὺς ὄλεθρος. 155
 εἰ γὰρ νῦν Τρῳέεσσι μένος πολυθαρσὲς ἐνείη,
 ἄτρομον, οἶόν τ' ἀνδρας ἐσέρχεται, οἷ περὶ πάτρης

ἀνδράσι δυσμενέεσσι πόνον καὶ δῆριν ἔθεντο,
αἰψά κε Πάτροκλον ἐρυσσαίμεθα Ἴλιον εἴσω.
εἰ δ' οὗτος προτὶ ἄστν μέγα Πριάμοιο ἄνακτος 160
ἔλθοι τεθνηὼς καὶ μιν ἐρυσσαίμεθα χάρμης,
αἰψά κεν Ἀργεῖοι Σαρπηδόνοσ ἐντεα καλὰ
λύσειαν, καὶ κ' αὐτὸν ἀγοίμεθα Ἴλιον εἴσω·
τοίου γὰρ θεράπων πέφατ' ἀνέρος, ὃς μὲγ' ἄριστος
Ἀργείων παρὰ νηυσὶ καὶ ἀγγέμαχοι θεράποντες. 165
ἀλλὰ σὺ γ' Αἴαντος μεγαλήτορος οὐκ ἐτάλασσας
στήμεναι ἄντα, κατ' ὅσσε ἰδὼν δηίων ἐν αὐτῇ,
οὐδ' ἰθὺς μαχέσασθαι, ἐπεὶ σέο φέρτερός ἐστιν.“

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη κορυθαίολος Ἔκτωρ·
„Γλαῦκε, τί ἦ δὲ σὺ τοῖος ἐὼν ὑπέροπλον ἔειπες; 170
ὦ πόποι, ἦ τ' ἐφάμην σε περὶ φρένας ἔμμεναι ἄλλων,
τῶν, ὅσσοι Λυκίην ἐριβόλακα ναιετάουσιν·
νῦν δέ σευ ὠνοσάμην πάγχυ φρένας, οἷον ἔειπες,
ὃς τέ με φῆς Αἴαντα πελώριον οὐχ ὑπομεῖναι.
οὗ τοι ἐγὼν ἔρριγα μάχην οὐδὲ κτύπον ἵππων· 175
ἀλλ' αἰεὶ τε Διὸς κρείσσων νόος αἰγιόχοιο,
ὃς τε καὶ ἄλκιμον ἄνδρα φοβεῖ καὶ ἀφείλετο νίκην
φηιδίως, ὅτε δ' αὐτὸς ἐποτρύνει μαχέσασθαι.
ἀλλ' ἄγε δεῦρο, πέπον, παρ' ἐμ' ἵστασο καὶ ἶδε ἔργον,
ἧε πανημέριος κακὸς ἔσσομαι, ὥς ἀγορεύεις, 180
ἦ τινὰ καὶ Δαναῶν, ἀλκῆς μάλα περ μεμαῶτα,
σχῆσω ἀμυνέμεναι περὶ Πατρόκλοιο θανόντος.“

ὧς εἰπὼν Τρώεσσιν ἐκέκλετο μακρὸν αὖσας·
„Τρῶες καὶ Λύκιοι καὶ Δάρδανοι ἀρχιμαχηταί,
ἄνδρες ἔστε, φίλοι, μνήσασθε δὲ θούριδος ἀλκῆς, 185
ὅφρ' ἂν ἐγὼν Ἀχιλλῆος ἀμύμονος ἐντεα δῶω
καλά, τὰ Πατρόκλοιο βίην ἐνάριξα κατακτάς.“

ὧς ἄρα φωνήσας ἀπέβη κορυθαίολος Ἔκτωρ

δηλίου ἐκ πολέμοιο, θέων δ' ἐκίχανεν ἑταίρους
 ὦκα μάλ', οὐ πω τῆλε, ποσὶ κραιπνοῖσι μετασπών, 190
 οἱ προτὶ ἄστν φέρον κλυτὰ τεύχεα Πηλεΐωνος.
 στας δ' ἀπάνευθε μάχης πολυδακρύου ἔντε' ἄμειβεν·
 ἦ τοι ὁ μὲν τὰ ἃ δῶκε φέρειν προτὶ Ἴλιον ἱρήν
 Τρωσὶ φιλοπτολέμοισιν, ὁ δ' ἄμβροτα τεύχεα δύνεν
 Πηλεΐδεω Ἀχιλῆος, ἃ οἱ θεοὶ Οὐρανίωνες 195
 πατρὶ φίλῳ ἔπορον· ὁ δ' ἄρα ᾧ παιδὶ ὄπασσεν
 γηράς· ἄλλ' οὐχ υἷος ἐν ἔντεσι πατρὸς ἐγήρα.

τὸν δ' ὥς οὖν ἀπάνευθεν ἶδεν νεφεληγερέτα Ζεὺς
 τεύχεσι Πηλεΐδαο κορυσσόμενον θείοιο,
 κινήσας ῥα κάρη προτὶ δν μυθήσατο θυμόν· 200
 „ἃ δαίλ', οὐδέ τί τοι θάνατος καταθύμιός ἐστιν,
 ὃς δὴ τοι σχεδὸν εἴσι, σὺ δ' ἄμβροτα τεύχεα δύνεις
 ἀνδρὸς ἀριστῆος, τὸν τε τρομέουσι καὶ ἄλλοι.
 τοῦ δὴ ἑταῖρον ἔπεφνες ἐνηέα τε κρατερόν τε,
 τεύχεα δ' οὐ κατὰ κόσμον ἀπὸ κρατός τε καὶ ὤμων 205
 εἴλεν· ἀτάρ τοι νῦν γε μέγα κράτος ἐγγυαλίξω
 τῶν ποινήν, ὃ τοι οὐ τι μάχης ἐκνοστήσαντι
 δέξεται Ἀνδρομάχη κλυτὰ τεύχεα Πηλεΐωνος.“

ἦ καὶ κυανέησιν ἐπ' ὀφρύσι νεῦσε Κρονίων,
 Ἐκτορι δ' ἤρμοσε τεύχε' ἐπὶ χροῖ, δὴ δέ μιν Ἄρης 210
 δεινὸς ἐννάλιος, πλῆσθεν δ' ἄρα οἱ μέλε' ἐντὸς
 ἀλκῆς καὶ σθένεος. μετὰ δὲ κλειτοῦς ἐπικούρους
 βῆ ῥα μέγα ἰάχων, ἰνδάλλετο δὲ σφισι πᾶσιν
 τεύχεσι λαμπόμενος μεγαθύμου Πηλεΐωνος.
 ὥτρυνεν δὲ ἕκαστον ἐποικόμενος ἐπέεσσιν, 215
 Μέσθλην τε Γλαῦκόν τε Μέδοντά τε Θερσίλοχόν τε,
 Ἀστεροπαῖόν τε Δεισήμερόν τε Ἰππόθοόν τε,
 Φόρκυν τε Χρομίον τε καὶ Ἐννομον οἰωνιστήν·
 τοὺς δ' γ' ἐποτρύνων ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„κέκλυτε, μυρία φῦλα περικτιόνων ἐπικούρων· 220
 οὐ γὰρ ἐγὼ πληθὺν διζήμενος οὐδὲ χατίζων
 ἐνθάδ' ἄφ' ὑμετέρων πολλίων ἤγριρα ἕκαστον,
 ἀλλ' ἵνα μοι Τρώων ἀλόχους καὶ νήπια τέκνα
 προφρονέως ῥύοισθε φιλοπτολέμων ὑπ' Ἀχαιῶν.
 τὰ φρονέων δῶροισι κατατρύχω καὶ ἐδωδῇ 225
 λαούς, ὑμέτερον δὲ ἕκαστον θυμὸν ἀέξω.
 τῷ τις νῦν ἰθὺς τετραμμένος ἢ ἀπολέσθω
 ἢ σαωθήτω· ἢ γὰρ πολέμου ὀαριστὺς.
 ὅς δέ κε Πάτροκλον καὶ τεθνηῶτά περ ἔμπης
 Τρῶας ἐς ἱπποδάμους ἐρύσῃ, εἴξῃ δέ οἱ Αἴας, 230
 ἥμισυ τῷ ἐνάρων ἀποδάσσομαι, ἥμισυ δ' αὐτὸς
 ἔξω ἐγὼ· τὸ δέ οἱ κλέος ἔσσεται, ὅσσον ἐμοί περ.“
 ὣς ἔφαθ', οἱ δ' ἰθὺς Δαναῶν βρῖσαντες ἔβησαν,
 δούρατ' ἀνασχόμενοι· μάλα δέ σφισιν ἔλπετο θυμὸς
 νεκρὸν ὑπ' Αἴαντος ἐρύειν Τελαμωνιάδαο· 235
 νήπιοι, ἣ τε πολέσσιν ἐπ' αὐτῷ θυμὸν ἀπηύρα.
 καὶ τότε ἄρ' Αἴας εἶπε βοῆν ἀγαθὸν Μενέλαον·
 „ὦ πέπον, ὦ Μενέλαε διοτρεφές, οὐκέτι νῶϊ
 ἔλπομαι αὐτῷ περ νοστησέμεν ἐκ πολέμοιο.
 οὗ τι τόσον νέκνος περιδείδια Πατρόκλοιο, 240
 ὅς κε τάχα Τρώων κορέει κύνας ἢ δ' οἰωνούς,
 ὅσσον ἐμῇ κεφαλῇ περιδείδια, μή τι πάθῃσιν,
 καὶ σῇ, ἐπεὶ πολέμοιο νέφος περὶ πάντα καλύπτει,
 Ἔκτωρ, ἡμῖν δ' αὖτ' ἀναφαίνεται αἰπὺς ὄλεθρος.
 ἀλλ' ἄγ' ἀριστῆας Δαναῶν κάλει, ἣν τις ἀκούσῃ.“ 245
 ὣς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε βοῆν ἀγαθὸς Μενέλαος,
 ἦυσεν δὲ διαπρύσιον Δαναοῖσι γεγωνώς·
 „ὦ φίλοι, Ἀργείων ἡγήτορες ἠδὲ μέδοντες,
 οἳ τε παρ' Ἀτρεΐδης Ἀγαμέμνονι καὶ Μενελάῳ
 δῆμια πίνουσιν καὶ σημαίνουσιν ἕκαστος 250

λαοῖς, ἐκ δὲ Διὸς τιμὴ καὶ κῦδος ὀπηδεῖ.
 ἀργαλέον δέ μοι ἔστι διασκοπιᾶσθαι ἕκαστον
 ἡγεμόνων· τόσση γὰρ ἔρις πολέμοιο δέδθεν.
 ἀλλὰ τις αὐτὸς ἴτω, νεμεσιζέσθω δ' ἐνὶ θυμῷ
 Πάτροκλον Τρῳῆσι κυσὶν μέλπηθρα γενέσθαι.“ 255

ὥς ἔφατ', ὃξὺ δ' ἄκουσεν Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας,
 πρῶτος δ' ἀντίος ἦλθε θεῶν ἀνὰ δημοτῆτα·
 τὸν δὲ μετ' Ἰδομενεὺς καὶ ὀπάων Ἰδομενῆος
 Μηριόνης, ἀτάλαντος ἐνυαλίῳ ἀνδρεῖφόντη.
 τῶν δ' ἄλλων τίς κεν ἦσι φρεσὶν οὐνόματ' εἵποι, 260
 ὅσσοι δὴ μετόπισθε μάχην ἡγείραν Ἀχαιῶν;

Τρῶες δὲ προύτυψαν ἀολλῆες, ἦρχε δ' ἄρ' Ἐκτωρ.
 ὥς δ' ὅτ' ἐπὶ προχοῇσι διυκετέος ποταμοῖο
 βέβρυχεν μέγα κύμα ποτὶ ῥόον, ἀμφὶ δέ τ' ἄκραι
 ἡιόνες βοόωσιν ἐρευγομένης ἀλδς ἔξω, 265
 τόσση ἄρα Τρῶες ἰαχῇ ἴσαν. αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
 ἔστασαν ἀμφὶ Μενoitιιάδῃ ἓνα θυμὸν ἔχοντες,
 φραχθέντες σάκεσιν χαλκήρεσιν. ἀμφὶ δ' ἄρα σφιν
 λαμπρῆσιν κορύθεσσι Κρονίων ἡέρα πολλήν
 χεῦ', ἐπεὶ οὐδὲ Μενoitιιάδην ἥχθαιρε πᾶρος γε, 270
 ὄφρα ζῶδς ἐὼν θεράπων ἦν Αἰακίδαο·

μίσησεν δ' ἄρα μιν δηίων κυσὶ κύρμα γενέσθαι
 Τρῳῆσιν· τῷ καὶ οἱ ἀμυνέμεν ὥρσεν ἐταίρους.
 ὣσαν δὲ πρότεροι Τρῶες ἐλίκωπας Ἀχαιοὺς·
 νεκρὸν δὲ προλιπόντες ὑπέτρεσαν, οὐδέ τιν' αὐτῶν 275
 Τρῶες ὑπέρθυμοι ἔλον ἐγχεσιν ἰέμενοί περ,
 ἀλλὰ νέκυν ἐρύοντο. μίνυνθα δὲ καὶ τοῦ Ἀχαιοὶ
 μέλλον ἀπέσσεσθαι· μάλα γάρ σφεας ὦκ' ἐλέλιξεν
 Αἴας, ὃς περὶ μὲν εἶδος, περὶ δ' ἔργα τέτυκτο
 τῶν ἄλλων Δαναῶν μετ' ἀμύμονα Πηλεῖωνα. 280
 ἰθύσεν δὲ διὰ προμάχων σὺτ' εἵκελος ἀλκήν

καπρίῳ, ὃς τ' ἐν ὄρεσσι κύνας θαλερούς τ' αἰζηοὺς
 ῥηιδίως ἐκέδασσεν ἐλιξάμενος διὰ βήσσας·
 ὣς υἱὸς Τελαμῶνος ἀγανοῦ, φαίδιμος Αἴας,
 ῥεῖα μετεισάμενος Τρώων ἐκέδασσε φάλαγγας, 285
 οἱ περὶ Πατρόκλῳ βέβασαν, φρόνεον δὲ μάλιστα
 ἄστυ πότι σφέτερον ἐρύειν καὶ κῦδος ἀρέσθαι.
 ἦ τοι τὸν Λήθιοι Πελασγοῦ φαίδιμος υἱὸς
 Ἴππόθοος ποδὸς ἔλκε κατὰ κρατερὴν ὑσμίνην,
 δησάμενος τελαμῶνι παρὰ σφυρὸν ἀμφὶ τένοντας, 290
 ἔκτορι καὶ Τρώεσσι χαριζόμενος· τάχα δ' αὐτῷ
 ἦλθε κακόν, τό οἱ οὐ τις ἐρύκακεν ἱεμένων περ.
 τὸν δ' υἱὸς Τελαμῶνος, ἐπαῖξας δι' ὁμίλου,
 πληῆξ' αὐτοσχεδίην κυνέης διὰ χαλκοπαρήου·
 ἤριξε δ' ἱπποδάσεια κόρυς περὶ δουρὸς ἀκωκῇ, 295
 πληγεῖς ἔγχεϊ τε μεγάλῳ καὶ χειρὶ παχείῃ,
 ἐγκέφαλος δὲ παρ' αὐλὸν ἀνέδραμεν ἐξ ὠτειλῆς
 αἱματόεις. τοῦ δ' αὖθι λύθη μένος, ἐκ δ' ἄρα χειρῶν
 Πατρόκλοιο πόδα μεγαλήτορος ἦκε χαμαῖζε
 κεῖσθαι· ὁ δ' ἔγχε' αὐτοῖο πέσσε πρηνῆς ἐπὶ νεκρῷ, 300
 τῇλ' ἀπὸ Λαρίσης ἐριβώλακος, οὐδὲ τοκεῦσιν
 θρέπτρα φίλοις ἀπέδωκε, μινυνθαδῖος δέ οἱ αἰῶν
 ἐπλεδ' ὑπ' Αἴαντος μεγαθύμου δουρὶ δαμέντι.
 ἔκτωρ δ' αὐτ' Αἴαντος ἀκόντισε δουρὶ φαιινῷ·
 ἀλλ' ὁ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος 305
 τυτθόν· ὁ δὲ Σχεδίον μεγαθύμου Ἴφίτου υἱόν,
 Φωκῆων ὄχ' ἄριστον, ὃς ἐν κλειτῷ Πανοπῇ
 οἰκία ναιετάασκε πολέσσ' ἀνδρεσσιν ἀνάσσων,
 τὸν βάλ' ὑπὸ κληῖδα μέσσην· διὰ δ' ἀμπερὲς ἄκρη
 αἰχμὴ χαλκείῃ παρὰ νείατον ὦμον ἀνέσχευ. 310
 δούπησεν δὲ πεσών, ἀράβησε δὲ τεύχε' ἐπ' αὐτῷ.
 Αἴας δ' αὖ Φόρκυνά δαΐφρονα, Φαίνοπος υἱόν,

Ἴποθόῳ περιβάντα μέσῃν κατὰ γαστέρα τύψεν,
 ῥῆξε δὲ θώρηκος γύαλον, διὰ δ' ἔντερα χαλκὸς
 ἦφυσ'· ὁ δ' ἐν κονίῃσι πεσὼν ἔλε γαῖαν ἀγοστῶ. 315
 χῶρησαν δ' ὑπὸ τε πρόμαχοι καὶ φαίδιμος Ἔκτωρ·
 Ἀργεῖοι δὲ μέγα ἱαχον, ἐρύσαντο δὲ νεκρούς,
 Φόρκυν θ' Ἴππόθοόν τε, λύνοντο δὲ τεύχε' ἀπ' ὧμων.

ἐνθα κεν αὐτε Τρῶες ἀρηιφίλων ὑπ' Ἀχαιῶν
 Ἴλιον εἰσανέβησαν ἀναλκείῃσι δαμέντες, 320
 Ἀργεῖοι δέ κε κῦδος ἔλον καὶ ὑπὲρ Διὸς αἴσαν
 κάρτει καὶ σθένει σφετέρῳ· ἀλλ' αὐτὸς Ἀπόλλων
 Αἰνείαν ὥτρυνε δέμας Περιφάντι ἐοικῶς
 κήρυκ' Ἡπυτίδῃ, ὅς οἱ παρὰ πατρὶ γέροντι
 κηρύσσων γήρασκε, φίλα φρεσὶ μῆδεα εἰδώς· 325
 τῷ μιν ἐισδάμενος προσέφη Διὸς υἱὸς Ἀπόλλων·
 „Αἰνεία, πῶς ἂν καὶ ὑπὲρ θεὸν εἰρύσσαισθε
 Ἴλιον αἰπεινήν; ὥς δὴ ἶδον ἀνέρας ἄλλους,
 κάρτει τε σθένει τε πεποιθότας ἠνορέῃ τε
 πλήθει τε σφετέρῳ, καὶ ὑπερδέα δῆμον ἔχοντας. 330
 ἡμῖν δὲ Ζεὺς μὲν πολὺ βούλεται ἢ Δαναοῖσιν
 νίκην· ἀλλ' αὐτοὶ τρεῖτ' ἄσπετον οὐδὲ μάχεσθε.“

ὥς ἔφατ', Αἰνείας δ' ἑκατηβόλον Ἀπόλλωνα
 ἔγνω ἐσάντα ἰδὼν, μέγα δ' Ἔκτορα εἶπε βοήσας·
 „Ἔκτορ τ' ἠδ' ἄλλοι Τρῶων ἀγοὶ ἠδ' ἐπικούρων, 335
 αἰδώς μὲν νῦν ἦδε γ', ἀρηιφίλων ὑπ' Ἀχαιῶν
 Ἴλιον εἰσαναβῆναι ἀναλκείῃσι δαμέντας.
 ἀλλ' ἔτι γάρ τίς φησι θεῶν, ἐμοὶ ἄγχι παραστάς,
 Ζῆν', ὕπατον μῆστωρα, μάχης ἐπιτάρροθον εἶναι·
 τῷ ῥ' ἰθὺς Δαναῶν ἴομεν, μηδ' οἷ γε ἔκηλοι 340
 Πάτροκλον νηυσὶν πελασαίατο τεθυῶτα.“

ὥς φάτο, καὶ ῥα πολὺ προμάχων ἐξάλλμενος ἔστη·
 οἱ δ' ἐλελίχθησαν καὶ ἐναντιοὶ ἔσταν Ἀχαιῶν.

ἐνθ' αὐτ' Αἰνείας Λειώκριτον οὔτασε δουρί,
 υἱὸν Ἀρίσβαντος, Λυκομήδεος ἐσθλὸν ἑταῖρον. 345
 τὸν δὲ πεσόντ' ἑλέησεν ἀρηίφιλος Λυκομήδης,
 στῇ δὲ μάλ' ἐγγὺς ἰὼν καὶ ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ,
 καὶ βάλεν Ἰππασίδην Ἀπισάονα ποιμένα λαῶν
 ἦπαρ ὑπὸ πρᾶπιδων, εἶθαρ δ' ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν,
 ὅς ῥ' ἐκ Παιονίης ἐριβόλακος εἰληλούθειν, 350
 καὶ δὲ μετ' Ἀστεροπαῖον ἀριστεύεσκε μάχεσθαι.
 τὸν δὲ πεσόντ' ἑλέησεν ἀρήιος Ἀστεροπαῖος,
 ἰδυσεν δὲ καὶ ὁ πρόφρων Δαναοῖσι μάχεσθαι·
 ἀλλ' οὐ πῶς ἔτι εἶχε· σάκεσσι γὰρ ἐρχατο πάντα
 ἑστέῳτες περὶ Πατρόκλῳ, πρὸ δὲ δούρατ' ἔχοντο. 355
 Αἴας γὰρ μάλα πάντας ἐπώχετο πολλὰ κελεύων·
 οὔτε τιν' ἐξοπίσω νεκροῦ χάζεσθαι ἀνώγειν
 οὔτε τινὰ προμάχεσθαι Ἀχαιῶν ἑξοχὸν ἄλλων,
 ἀλλὰ μάλ' ἄμφ' αὐτῷ βεβήμεν, σχεδόνθεν δὲ μάχεσθαι.
 ὣς Αἴας ἐπέτελλε πελώριος, αἶματι δὲ χθὼν 360
 δεύετο πορφυρέῳ, τοὶ δ' ἀγχιστῖνοι ἐπιπτον
 νεκροὶ ὁμοῦ Τρώων καὶ ὑπερμενέων ἐπικούρων,
 καὶ Δαναῶν· οὐδ' οἱ γὰρ ἀναιμωτί γε μάχοντο,
 παυρότεροι δὲ πολὺ φθίνυνθον· μέμνηντο γὰρ αἰεὶ
 ἀλλήλοις καθ' ὅμιλον ἀλεξέμεναι φόνον αἰπύν. 365
 ὣς οἱ μὲν μάρναντο δέμας πυρός, οὐδέ κε φαίης
 οὔτε ποτ' ἠέλιον σόον ἔμμεναι οὔτε σελήνην·
 ἥερι γὰρ κατέχοντο, μάχης ἐπὶ θ' ὅσσον ἄριστοι
 ἕστασαν ἀμφὶ Μενoitιάδῃ κατατεθνήῳτι.
 οἱ δ' ἄλλοι Τρῶες καὶ εὐκνήμιδες Ἀχαιοὶ 370
 εὐκνηλοὶ πολέμιζον ὑπ' αἰθέρι, πέπτατο δ' αὐγὴ
 ἠελίου ὀξεῖα, νέφος δ' οὐ φαίνεται πάσης
 γαίης οὐδ' ὁρέων· μεταπαυόμενοι δὲ μάχοντο,
 ἀλλήλων ἀλεείνουντες βέλεα στονόεντα,

πολλὸν ἀφεσταότες. τοὶ δ' ἐν μέσῳ ἄλγε' ἔπασχον 375
 ἥερι καὶ πολέμῳ, τείροντο δὲ νηλεῖ χαλκῷ,
 ὅσσοι ἄριστοι ἔσαν. δύο δ' οὐ πω φῶτε πεπύσθην,
 ἀνέρε κυδαλίμῳ, Θρασυμήδης Ἀντίλοχός τε,
 Πατρόκλοιο θανόντος ἀμύμονος, ἀλλ' ἔτ' ἔφαντο
 ζῶν ἐνὶ πρώτῳ ὁμάδῳ Τρώεσσι μάχεσθαι. 380
 τὼ δ' ἐπισσομένῳ θάνατον καὶ φύζαν ἑταίρων
 νόσφιν ἐμαρνάσθην, ἐπεὶ ὥς ἐπετέλλετο Νέστωρ
 ὀτρύνων πολεμόνδε μελαινάων ἀπὸ νηῶν.

τοῖς δὲ πανημερίοις ἔριδος μέγα νεῖκος ὀρώρειν
 ἀργαλέης· καμάτῳ δὲ καὶ ἰδρῷ νωλεμέες αἰεὶ 385
 γούνατά τε κνημαὶ τε πόδες θ' ὑπένερθεν ἐκάστου
 χεῖρές τ' ὀφθαλμοὶ τε παλάσσετο μαρναμένοιιν
 ἀμφ' ἀγαθὸν θεράποντα ποδώκεος Αἰακίδαο.
 ὥς δ' ὅτ' ἀνὴρ ταύροιο βοδὸς μέγαλοιο βοεῖην
 λαοῖσιν δῶη τανύειν, μεθύουσιν ἀλοιφῇ· 390
 δεξάμενοι δ' ἄρα τοί γε διαστάντες τανύουσιν
 κυκλόσ', ἄφαρ δέ τε ἰκμάς ἔβη, δύνει δέ τ' ἀλοιφῇ
 πολλῶν ἐλκόντων, τάννυται δέ τε πᾶσα διαπρό·
 ὥς οἱ γ' ἐνθα καὶ ἐνθα νέκυν ὀλίγη ἐνὶ χώρῃ
 ἔλκεον ἀμφοτέροι· μάλα δέ σφισιν ἔλπετο θυμός, 395
 Τρωσὶν μὲν ἐρύειν προτὶ Ἴλιον, αὐτὰρ Ἀχαιοῖς
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς· περὶ δ' αὐτοῦ μῶλος ὀρώρειν
 ἄγριος· οὐδέ κ' Ἄρης λαοσσόος οὐδέ κ' Ἀθήνη
 τὸν γε ἰδοῦσ' ὀνόσαιτ', οὐδ' εἰ μάλα μιν χόλος ἴκοι.

τοῖον Ζεὺς ἐπὶ Πατρόκλῳ ἀνδρῶν τε καὶ ἵππων 400
 ἤματι τῷ ἐτάνυσσε κακὸν πόνον. οὐδ' ἄρα πῶ τι
 ἦδε Πατρόκλον τεθνηότα διὸς Ἀχιλλεύς·
 πολλὸν γάρ ῥ' ἀπάνευθε νεῶν μάρναντο θοάων,
 τείχει ὑπο Τρώων. τό μιν οὐ ποτε ἔλπετο θυμῷ
 τεθνᾶμεν, ἀλλὰ ζῶν, ἐνιχριμφθέντα πύλῃσιν, 405

ἄψ ἀπονοστήσειν, ἐπεὶ οὐδὲ τὸ ἔλπετο πάμπαν,
ἐκπέρσειν πτολίεθρον ἄνευ ἔθην, οὐδὲ σὺν αὐτῷ·
πολλάκι γὰρ τό γε μητρὸς ἐπεύθετο νόσφιν ἀκούων,
ἦ οἱ ἀπαγγέλλεσκε Διὸς μέγαλοιο νόημα·

δὴ τότε γ' οὐ οἱ ἔειπε κακὸν τόσον, ὅσσον ἐτύχθη,
μήτηρ, ὅττι ῥά οἱ πολὺ φίλτατος ὦλεθ' ἑταῖρος. 411

οἱ δ' αἰεὶ περὶ νεκρὸν ἀκαχμένα δούρατ' ἔχοντες
νωλεμέες ἐγχρίμπτοντο καὶ ἀλλήλους ἐνάριζον.

ὥδε δέ τις εἶπεσκεν Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων·

„ὦ φίλοι, οὐ μὰν ἡμῖν ἐνκλεῆς ἀπονέεσθαι 415

νῆας ἐπὶ γλαφυράς, ἀλλ' αὐτοῦ γαῖα μέλαινα
πᾶσι χάνοι· τό κεν ἡμῖν ἄφαρ πολὺ κέρδιον εἴη,
εἰ τοῦτον Τρώεσσι μεθήσομεν ἱπποδάμοισιν
ἄστν πότι σφέτερον ἐρύσαι καὶ κῦδος ἀρέσθαι.“

ὥς δέ τις αὖ Τρώων μεγαθύμων αὐδήσασκεν· 420

„ὦ φίλοι, εἰ καὶ μοῖρα παρ' ἀνέρι τῷδε θαμῆναι
πάντας ὁμῶς, μή πῶ τις ἐρωεῖτω πολέμοιο.“

ὥς ἄρα τις εἶπεσκε, μένος δ' ὄρσασκεν ἐκάστου.

ὥς οἱ μὲν μάρναντο, σιδήρειος δ' ὄρουμαγδὸς
χάλκεον οὐρανὸν ἴκε δι' αἰθέρος ἀτρυγέτοιο· 425

ἵπποι δ' Αἰακίδαο μάχης ἀπάνευθεν ἰόντες
κλαῖον, ἐπεὶ δὴ πρῶτα πυθέσθην ἡνιόχοιο

ἐν κονίῃσι πεσόντος ὑφ' Ἑκτορος ἀνδροφόνιοιο.

ἦ μὰν Αὐτομέδων Διῶρεος ἄλκιμος υἱὸς
πολλὰ μὲν ἄρ μάστιγι θοῇ ἐπεμαίετο θείνων, 430

πολλὰ δὲ μελιχίοισι προσηύδα, πολλὰ δ' ἀρειῇ·
τῷ δ' οὐτ' ἄψ ἐπὶ νῆας ἐπὶ πλατὺν Ἑλλήσποντον

ἠθέλετ' ἐνταῦθα ἰέναι οὐτ' ἐς πόλεμον μετ' Ἀχαιοὺς,
ἀλλ' ὥς τε στήλη μένει ἔμπεδον, ἦ τ' ἐπὶ τύμβῳ

ἀνέρος ἐστήκη τεθνηὸς ἢ γυναικός, 435

ὥς μένον ἀσφαλέως περικαλλέα δῖφρον ἔχοντες,

οὐδὲ ἐνισκίμψαντε καρήατα· δάκρυα δέ σφιν
 θερμὰ κατὰ βλεφάρων χαμάδις ῥέε μυρομένοισιν
 ἡνιόχοιο πόθῳ, θαλερῇ δ' ἐμιαίνεται χαίτη
 ξεύγλης ἔξεριποῦσα παρὰ ζυγὸν ἀμφοτέρωθεν. 440
 μυρομένῳ δ' ἄρα τῷ γε ὧδ' ἐλέησε Κρονίων,
 κινήσας δὲ κάρη προτὶ ὃν μυθήσατο θυμόν·
 „ἄ δειλῷ, τί σφῶι δόμεν Πηλῆϊ ἄνακτι
 θνητῷ, ὑμεῖς δ' ἐστὸν ἀγῆρω τ' ἀθανάτῳ τε;
 ἦ ἵνα δυστήνοισι μετ' ἀνδράσιν ἄλγε' ἔχητον; 445
 οὐ μὲν γάρ τί πού ἐστιν διζυρώτερον ἀνδρὸς
 πάντων, ὅσσα τε γαῖαν ἐπι πνεῖει τε καὶ ἔρπει.
 ἀλλ' οὐ μὰν ὑμῖν γε καὶ ἄρμασι δαιδαλέοισιν
 Ἔκτωρ Πριαμίδης ἐποχήσεται· οὐ γὰρ ἐάσω.
 ἦ οὐχ ἄλλης, ὥς καὶ τεύχε' ἔχει καὶ ἐπεύχεται αὐτῶς;
 σφῶιν δ' ἐν γούνεσσι βαλῶ μένος ἡδ' ἐνὶ θυμῷ, 451
 ὄφρα καὶ Ἀὐτομέδοντα σαώσεται ἐκ πολέμοιο
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς· ἔτι γὰρ σφισι κῦδος ὀρέξω
 κτείνειν, εἰς ὃ κε νῆας ἐυσσέλμους ἀφίκωνται
 δύη τ' ἡέλιος καὶ ἐπὶ κνέφας ἱερὸν ἔλθῃ.“ 455

ὥς εἰπὼν ἵπποισιν ἐνέπνευσεν μένος ἧ·
 τῷ δ' ἀπὸ χαιτᾶν κονίην οὐδάσδε βαλόντε
 ῥίμφ' ἔφερον θοὸν ἄρμα μετὰ Τρῶας καὶ Ἀχαιοὺς.
 τοῖσι δ' ἐπ' Ἀὐτομέδων μάχετ', ἀχνύμενός περ ἑταῖρου,
 ἵπποις αἰσῶσιν, ὥς τ' αἰγυπιδὸς μετὰ χῆνας· 460
 ῥέα μὲν γὰρ φεύγεσκεν ὑπὲκ Τρώων ὀρυμαγδοῦ,
 ῥεῖα δ' ἐπαῖξασκε πολὺν καθ' ὁμίλον ὀπάζων.
 ἀλλ' οὐχ ἦρει φῶτας, ὅτε σεύαιτο διώκειν·
 οὐ γὰρ πως ἦν οἶον ἐόνθ' ἱερῷ ἐνὶ δίφρῳ
 ἔγχει ἐφορμᾶσθαι καὶ ἐπίσχειν ὠκέας ἵππους. 465
 ὁπὲ δὲ δῆ μιν ἑταῖρος ἀνὴρ ἶδεν ὀφθαλμοῖσιν
 Ἀλκιμέδων υἱὸς Λαέρκεος Αἰμονίδαο·

στῇ δ' ὀπιθεν δίφροιο, καὶ Ἀυτομέδοντα προσηύδα·
 „Αὐτόμεδον, τίς τοί νυ θεῶν νηκερδέα βουλὴν
 ἐν στήθεσιν ἔθηκε καὶ ἐξέλετο φρένας ἐσθλὰς; 470
 οἷον πρὸς Τρῶας μάχαι πρῶτῳ ἐν ὁμίῳ
 μῦνος· ἀτὰρ τοι ἑταῖρος ἀπέκτατο, τεύχεα δ' Ἔκτωρ
 αὐτὸς ἔχων ὥμοισιν ἀγάλλεται Αἰακίδαο.“

τὸν δ' αὖτ' Ἀυτομέδων προσέφη Διώρεος υἱός·
 „Ἀλκίμεδον, τίς γάρ τοι Ἀχαιῶν ἄλλος ὁμοῖος 475
 ἵππων ἀθανάτων ἔχμεν δμῆσιν τε μένος τε,
 εἰ μὴ Πάτροκλος, θεόφιν μῆστωρ ἀτάλαντος,
 ζωὸς ἐὼν· νῦν αὖ θάνατος καὶ μοῖρα κιχάνει.
 ἀλλὰ σὺ μὲν μάστιγα καὶ ἥνία σιγαλόεντα
 δέξαι, ἐγὼ δ' ἵππων ἀποβήσομαι, ὄφρα μάχωμαι.“ 480

ὥς ἔφατ', Ἀλκιμέδων δὲ βοηθόον ἄρμ' ἐπορούσας
 καρπαλίμως μάστιγα καὶ ἥνία λάξετο χερσίν,
 Ἀυτομέδων δ' ἀπόρουσε. νόησε δὲ φαίδιμος Ἔκτωρ,
 αὐτίκα δ' Αἰνεῖαν προσεφώνεεν ἐγγυὲς ἐόντα·

„Αἰνεῖα Τρῶων βουληφόρε χαλκοχιτώνων, 485
 ἵππω τῷδ' ἐνόησα ποδώκεος Αἰακίδαο
 ἐς πόλεμον προφανέντε σὺν ἡνιόχοισι κακοῖσιν·
 τῷ κεν ἐελποίμην αἰρησέμεν, εἰ σύ γε θυμῷ
 σῶ ἐθέλοις, ἐπεὶ οὐκ ἂν ἐφορμηθέντε γε νῶϊ
 τλαῖεν ἐναντίβιον στάντες μαχέσασθαι Ἄρηι.“ 490

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσεν εὖς πάϊς Ἀγχίσαο.
 τῷ δ' ἰθὺς βήτην βοέης εἰλυμένῳ ὦμους
 αὔησι στερεῇσι, πολὺς δ' ἐπελήλατο χαλκός.
 τοῖσι δ' ἄμα Χρομῖος τε καὶ Ἄρητος θεοειδῆς
 ἦσαν ἀμφοτέροι· μάλα δέ σφισιν ἔλπετο θυμὸς 495
 αὐτῷ τε κτενέειν ἐλάαν τ' ἐριαύχενας ἵππους·
 νῆπιοι, οὐδ' ἄρ' ἔμελλον ἀναιμωτί γε νέεσθαι
 αὐτίς ἀπ' Ἀυτομέδοντος. ὁ δ' εὐξάμενος Διὶ πατρὶ

ἀλκῆς καὶ σθένεος πλήτο φρένας ἀμφιμελαίνας.
 αὐτίκα δ' Ἀλκιμέδοντα προσηύδα, πιστὸν ἑταῖρον· 500
 „Ἀλκίμεδον, μὴ δὴ μοι ἀπόπροθεν ἰσχύμεν ἵππω,
 ἀλλὰ μάλ' ἐμπνεύοντε μεταφρένω· οὐ γὰρ ἐγὼ γε
 Ἑκτορα Πριαμίδην μένεος σχήσεσθαι οἶω,
 πρίν γ' ἐπ' Ἀχιλλῆος καλλίτριχε βήμεναι ἵππω
 νῶι κάτακτείναντα, φοβῆσαι τε στίχας ἀνδρῶν 505
 Ἀργείων, ἣ κ' αὐτὸς ἐνὶ πρώτοισιν ἀλοίη.“

ὥς εἰπὼν Αἴαντε καλέσσατο καὶ Μενέλαον·
 „Αἴαντ' Ἀργείων ἡγήτορε καὶ Μενέλαε,
 ἣ τοι μὲν τὸν νεκρὸν ἐπιτράπεθ', οἳ περ ἄριστοι,
 ἀμφ' αὐτῷ βεβήμεν καὶ ἀμύνεσθαι στίχας ἀνδρῶν, 510
 νῶιν δὲ ζωοῖσιν ἀμύνετε νηλεὲς ἤμαρ·
 τῇδε γὰρ ἔβρισαν πόλεμον κάτα δακρυόεντα
 Ἑκτωρ Αἰνείας θ', οἳ Τρώων εἰσὶν ἄριστοι.
 ἀλλ' ἣ τοι μὲν ταῦτα θεῶν ἐν γούνασι κεῖται·
 ἦσω γὰρ καὶ ἐγὼ, τὰ δέ κεν Διὶ πάντα μελήσει.“ 515

ἣ ῥα καὶ ἀμπεπαλὼν προῖει δολιχόσκιον ἔγχος,
 καὶ βάλεν Ἀρήτοιο κατ' ἀσπίδα πάντοσ' εἰσὴν·
 ἣ δ' οὐκ ἔγχος ἔρυτο, διαπρὸ δὲ εἷσατο χαλκός,
 νειαιόρῃ δ' ἐν γαστρὶ διὰ ζωστήηρος ἔλασσεν.
 ὥς δ' ὅτ' ἂν ὀξὺν ἔχων πέλεκυν αἰζήϊος ἀνὴρ 520
 κόψας ἐξόπιθεν κεράων βοδὸς ἀγραύλοιο
 ἵνα τάμῃ διὰ πᾶσαν, ὃ δὲ προθορῶν ἐρίπησιν,
 ὥς ἄρ' ὅ γε προθορῶν πέσεν ὕπτιος· ἐν δέ οἱ ἔγχος
 νηδυίοισι μάλ' ὀξὺ κραδαινόμενον λῦε γυῖα.
 Ἑκτωρ δ' Αὐτομέδοντος ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ· 525
 ἀλλ' ὃ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο χάλκεον ἔγχος·
 πρόσσω γὰρ κατέκνυψε, τὸ δ' ἐξόπιθεν δόρου μακρὸν
 οὔδεις ἐνισκίμφθη, ἐπὶ δ' οὐράχως πελεμίσχθη
 ἔγχος· ἐνθα δ' ἔπειτ' ἀφίει μένος ὄβριμος Ἄρης.

καὶ νύ κε δὴ ξιφέεσσ' αὐτοσχεδὸν ὀρμηθήτην, 530
εἰ μὴ σφω' Αἴαντες διέκριναν μεμαῶτε,
οἷ ῥ' ἦλθον καθ' Ὀμίλον ἑταίρου κικλήσκοντος.

τοὺς ὑποταρβήσαντες ἐχώρησαν πάλιν αὐτῖς
Ἔκτωρ Αἰνείας τε ἰδὲ Χρομίος θεοειδής,

Ἄρητον δὲ κατ' αὐτῷ λίπον δεδαγμένον ἦτορ 535
κείμενον. Αὐτομέδων δὲ θοῶ ἀτάλαντος Ἄρηι
τεύχεά τ' ἐξενάριξε καὶ εὐχόμενος ἔπος ηὔδα·
„ἦ δὴ μὰν ὀλίγον γε Μενoitιάδαο θανόντος
κῆρ ἄχεος μεθέηκα, χειρίονά περ καταπεφνών.“

ὣς εἰπὼν ἐς δόφρον ἑλὼν ἔναρα βροτόεντα 540
θῆκ', ἂν δ' αὐτὸς ἐβαινε πόδας καὶ χεῖρας ὑπερθεῖν
αἵματόεις, ὥς τις τε λῆων κατὰ ταῦρον ἐδηδῶς.

ἂψ δ' ἐπὶ Πατρόκλῳ τέτατο κρατερῇ ὑσμίνῃ
ἀργαλέῃ πολὺδακρυς, ἔγειρε δὲ νεῖκος Ἀθήνη
[οὐρανόθεν καταβᾶσα· προῆκε γὰρ εὐρύοπα Ζεὺς 545
ὀρνύμεναι Δαναούς· δὴ γὰρ νόος ἐτράπετ' αὐτοῦ.]

ἦντε πορφυρέην ἱρὴν θνητοῖσι τανύσση
Ζεὺς ἐξ οὐρανόθεν, τέρας ἔμμεναι ἢ πολέμοιο
ἢ καὶ χειμῶνος δυσθαλπέος, ὅς ῥά τε ἔργων
ἀνθρώπους ἀνέπαιυσεν ἐπὶ χθονί, μῆλα δὲ κῆδει, 550

ὥς ἢ πορφυρέῃ νεφέλῃ πυκάσασα δ' αὐτὴν
δύσσετ' Ἀχαιῶν ἔθνος, ἔγειρε δὲ φῶτα ἕκαστον.
πρῶτον δ' Ἀτρεΐος υἱὸν ἐποτρύνουσα προσήδα,
Ἰφθιμον Μενέλαον, ὃ γὰρ ῥά οἱ ἐγγύθεν ἦεν,
εἰσαμένη Φοῖνικι δέμας καὶ ἀτειρέα φωνήν· 555

„σοὶ μὲν δὴ, Μενέλαε, κατηφείῃ καὶ ὄνειδος
ἔσσεται, εἰ κ' Ἀχιλλῆος ἀγανοῦ πιστὸν ἑταῖρον
τείχει ὑπο Τρώων ταχέες κύνες ἐλκήσουσιν·
ἀλλ' ἔχεο κρατερῶς, ὄτρυνε δὲ λαὸν ἅπαντα.“

τὴν δ' αὖτε προσέειπε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος· 560

„Φοῖνιξ, ἅττα γεραῖε παλαιγενές, εἰ γὰρ Ἀθήνη
δοίῃ κάρτος ἐμοί, βελέων δ' ἀπερύνκοι ἐρωήν·
τῷ κεν ἐγὼ γ' ἐθέλοισι παρεστάμεναι καὶ ἀμύνειν
Πατρόκλῳ· μάλα γάρ με θανὼν ἐσεμάσσατο θυμόν.
ἀλλ' Ἐκτωρ πυρὸς αἶνδον ἔχει μένος, οὐδ' ἀπολήγει 565
χαλκῷ δηϊόων· τῷ γὰρ Ζεὺς κῦδος ὀπάξει.“

ὣς φάτο, γήθησεν δὲ θεά, γλανκῶπις Ἀθήνη,
ὅτι ῥά οἱ πάμπρωτα θεῶν ἠρήσατο πάντων.
ἐν δὲ βίην ὤμοισι καὶ ἐν γούνεσσιν ἔθηκεν,
καὶ οἱ μυῖης θάρσος ἐνὶ στήθεσσιν ἐνήκεν, 570
ἥ τε καὶ ἐργομένη μάλα περ χροὸς ἀνδρομέοιο
ἰσχανάα δακέειν, λαρὸν δέ οἱ αἶμ' ἀνθρώπου·
τοίου μιν θάρσευς πλῆσε φρένας ἀμφιμελαίνας.
βῆ δ' ἐπὶ Πατρόκλῳ, καὶ ἀκόντισε δουρὶ φαεινῷ.
ἔσκε δ' ἐνὶ Τρώεσσι Ποδῆς υἱὸς Ἡετίωνος, 575
ἄφνειός τ' ἀγαθός τε· μάλιστα δέ μιν τίεν Ἐκτωρ
δήμου, ἐπεὶ οἱ ἐταῖρος ἦν φίλος εἰλαπιναστής·
τόν ῥα κατὰ ζωστήρα βάλε ξανθοῦ Μενέλαος
αἶξαντα φόβονδε, διαπρὸ δὲ χαλκὸν ἔλασσεν·
δούπησεν δὲ πεσών. ἀτὰρ Ἀτρεΐδης Μενέλαος 580
νεκρὸν ὑπὲκ Τρώων ἔρυσεν μετὰ ἔθνος ἐταίρων.

Ἐκτορα δ' ἐγγύθεν ἰστάμενος ὤτρυνεν Ἀπόλλων
Φαίνοπι Ἀσιάδῃ ἐναλὶγκιος, ὃς οἱ ἀπάντων
ξείνων φίλτατος ἔσκεν, Ἀβυδόθι οἰκία ναίων·
[τῷ μιν ἐεισάμενος προσέφη ἐκάεργος Ἀπόλλων] 585
„Ἐκτορ, τίς κέ σ' ἔτ' ἄλλος Ἀχαιῶν ταρβήσειεν;
οἷον δὴ Μενέλαον ὑπέτρεσας, ὃς τὸ πάρος γε
μαλθακὸς αἰχμητής· νῦν δ' οἴχεται οἶος αἰείρας
νεκρὸν ὑπὲκ Τρώων, σὸν δ' ἔκτανε πιστὸν ἐταῖρον,
ἔσθλδν ἐνὶ προμάχοισι, Ποδῆν υἱὸν Ἡετίωνος.“ 590

ὣς φάτο, τὸν δ' ἄχεος νεφέλῃ ἐκάλυψε μέλαινα,

βῆ δὲ διὰ προμάχων κεκορυθμένος αἰδοπι χαλκῷ.
καὶ τότε ἄρα Κρονίδης ἔλετ' αἰγίδα θυσανόεσσαν
μαρμαρέην, Ἴδην δὲ κατὰ νεφέεσσι κάλυψεν,
ἀστράψας δὲ μάλα μεγάλ' ἔκτυπε, τὴν δὲ τίναξεν, 595
νίκην δὲ Τρώεσσι δίδου, ἐφοβήσῃς δ' Ἀχαιοὺς.

πρῶτος Πηνέλεως Βοιώτιος ἦρχε φόβοιο.

βλήτο γὰρ ὦμον δουρί, πρόσσω τετραμμένος αἰεί,
ἄκρον ἐπιλίγδην· γράψεν δὲ οἱ ὀστέον ἄχρῃς
αἰχμὴ Πουλυδάμαντος· ὁ γάρ ῥ' ἔβαλε σχεδὸν ἐλθὼν. 600
Ἀήτιον αὖθ' Ἐκτωρ σχεδὸν οὔτασε χεῖρ' ἐπὶ καρπῷ,
νὺν Ἀλεκτρυόνης μεγαθύμου, παῦσε δὲ χάρμης·
τρέσσει δὲ παπτήνας, ἐπεὶ οὐκέτι ἔλπετο θυμῷ
ἔργος ἔχων ἐν χειρὶ μαχήσεσθαι Τρώεσσιν.

Ἐκτορα δ' Ἰδομενεὺς μετὰ Ἀήτιον ὀρμηθέντα 605
βεβλήκει θώρηκα κατὰ στῆθος παρὰ μαζόν·
ἐν καυλῷ δ' ἐάγῃ δολιχὸν δόρυ, τοὶ δὲ βόησαν
Τρῶες. ὁ δ' Ἰδομενῆος ἀκόντισε Δευκαλίδας
δίφρω ἐφεσταότος· τοῦ μὲν ῥ' ἀπὸ τυτθὸν ἄμαρτεν,
αὐτὰρ ὁ Μηριόνας ὀπάονά θ' ἠνίοχόν τε, 610
Κοῖρανον, ὅς ῥ' ἐκ Λύκτου ἐνκτιμένης ἔπει' αὐτῷ —
πεξὸς γὰρ τὰ πρῶτα λιπὼν νέας ἀμφιελίσσας
ἦλυθε, καὶ κε Τρῶσιν μέγα κράτος ἐγγυάλιξεν,
εἰ μὴ Κοῖρανός ῥα ποδώκεας ἤλασεν ἵππους·
καὶ τῷ μὲν φάος ἦλθεν, ἄμυνε δὲ νηλεὲς ἥμαρ, 615
αὐτὸς δ' ὤλεσε θυμὸν ὑφ' Ἐκτορος ἀνδροφόνοιο —
τὸν βάλ' ὑπὸ γναθμοῖο καὶ οὔατος, ἐκ δ' ἄρ' ὀδόντας
ᾧσε δόρυ πρυμνόν, διὰ δὲ γλῶσσαν τάμε μέσσην.
ἤριπε δ' ἐξ ὀχέων, κατὰ δ' ἠνία χεῦεν ἔραξ.
καὶ τὰ γε Μηριόνης ἔλαβεν χεῖρεσσι φίλησιν 620
κύψας ἐκ πεδίοιο, καὶ Ἰδομενῆα προσηύδα·
„μάστιγε νῦν, εἰώσ κε θοὰς ἐπὶ νῆας ἵκηαι·

γιγνώσκεις δὲ καὶ αὐτός, ὃ τ' οὐκέτι κάρτος Ἀχαιῶν.“

ὥς ἔφατ', Ἰδομενεὺς δ' ἵμασεν καλλίτριχας ἵππους
νῆας ἐπὶ γλαφυράς· δὴ γὰρ δέος ἔμπεσε θυμῷ. 625

οὐδ' ἔλαθ' Αἴαντα μεγαλήτορα καὶ Μενέλαον
Ζεὺς, ὅτε δὴ Τρώεσσι δίδου ἑτεραλκέα νίκην.

τοῖσι δὲ μύθων ἤρχε μέγας Τελαμώνιος Αἴας·

„ὦ πόποι, ἦδη μὲν κε, καὶ ὃς μάλα νήπιός ἐστιν,
γνοίη, ὅτι Τρώεσσι πατὴρ Ζεὺς αὐτὸς ἀρήγει. 630

τῶν μὲν γὰρ πάντων βέλε' ἄπτεται, ὃς τις ἀφείη,
ἢ κακὸς ἢ ἀγαθός· Ζεὺς δ' ἔμπηγς πάντ' ἰδύνει·

ἡμῖν δ' αὐτῶς πᾶσιν ἐτώσια πίπτει ἔραζε.

ἀλλ' ἔγχετ', αὐτοὶ περ φραζώμεθα μῆτιν ἀρίστην,

ἡμὲν ὅπως τὸν νεκρὸν ἐρύσσομεν, ἡδὲ καὶ αὐτοὶ 635

χάρμα φίλοις ἐτάροισι γενώμεθα νοστήσαντες,

οἳ που δεῦρ' ὀρόωντες ἀκηχέδατ', οὐδ' ἔτι φασὶν

Ἐκτορος ἀνδροφόνουιο μένος καὶ χεῖρας ἀάπτους
σχῆσεσθ', ἀλλ' ἐν νηυσὶ μελαίνησιν πεσέεσθαι.

εἴη δ', ὃς τις ἐταῖρος ἀπαγγέλλειε τάχιστα 640

Πηλεΐδῃ, ἐπεὶ οὗ μιν ὀίομαι οὐδὲ πεπύσθαι

λυγρῆς ἀγγελίης, ὅτι οἱ φίλος ὦλεθ' ἐταῖρος.

ἀλλ' οὗ πῃ δύναμαι ἰδέειν τοιοῦτον Ἀχαιῶν·

ἥερι γὰρ κατέχονται ὁμῶς αὐτοὶ τε καὶ ἵπποι.

Ζεῦ πάτερ, ἀλλὰ σὺ θῦσαι ὑπ' ἡέρος νῆας Ἀχαιῶν, 645

ποίησον δ' αἶθρην, δὸς δ' ὀφθαλμοῖσιν ἰδέεσθαι·

ἐν δὲ φάει καὶ ὄλεσσον, ἐπεὶ νύ τοι εὖαδεν οὕτως.“

ὥς φάτο, τὸν δὲ πατὴρ ὀλοφύρατο δάκρυ χέοντα·

αὐτίκα δ' ἡέρα μὲν σκέδασεν καὶ ἀπῶσεν ὁμίχλην,

ἥελιος δ' ἐπέλαμψε, μάχη δ' ἐπὶ πᾶσα φαάνθη. 650

καὶ τότε ἄρ' Αἴας εἶπε βοὴν ἀγαθὸν Μενέλαον·

„σκέπτεο νῦν, Μενέλαε διοτρεφές, αἶ κεν ἰθθαί

ζῶν ἐτ' Ἀντίλοχον μεγαθύμου Νέστορος υἱόν,

δοτρύνον δ' Ἀχιλλῇ δαΐφρονι θαῖσσον ἰόντα
εἶπειν, ὅτι ῥά οἱ πολὺ φίλτατος ὤλεθ' ἑταῖρος.“ 655

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος,
βῆ δ' ἰέναι, ὥς τις τε λῆων ἀπὸ μεσσαύλοιο,
ὅς τ' ἐπεὶ ἄρ κε κάμησι κύνας τ' ἄνδρας τ' ἐρεθίζων,
οἷ τέ μιν οὐκ εἰῶσι βοῶν ἐκ πίναρ ἐλέσθαι
πάννυχοι ἐργήσσοντες· ὁ δὲ κρειῶν ἐρατίζων 660

ἰθύει, ἀλλ' οὐ τι πρήσσει· θαμέες γὰρ ἄκοντες
ἀντίον αἰσσοῦσι θρασειάων ἀπὸ χειρῶν,
καιόμεναί τε δεταί, τάς τε τρεῖ ἐσσύμενός περ·
ῥῶθεν δ' ἀπονόσφιν ἔβη τετιηότι θυμῷ·

ὥς ἀπὸ Πατρόκλοιο βοὴν ἀγαθὸς Μενέλαος 665
ἦιε πόλλ' ἀέκων· περὶ γὰρ δῖε, μῆ μιν Ἀχαιοὶ
ἀργαλέου πρὸ φόβοιο ἔλωρ δηλοῖσι λίποιεν.

πολλὰ δὲ Μηριόνη τε καὶ Αἰάντεσ' ἐπέτελλεν·
„Αἴαντ' Ἀργείων ἡγήτορε Μηριόνη τε,
νῦν τις ἐνγείης Πατροκλῆος δειλοῖο 670

μνησάσθω· πᾶσιν γὰρ ἐπίστατο μείλιχος εἶναι
ζωὸς ἑὼν· νῦν αὖ θάνατος καὶ μοῖρα κιχάνει.“

ὥς ἄρα φωνήσας ἀπέβη ξανθὸς Μενέλαος,
πάντοσε παπταίνων ὥς τ' αἰετός, ὃν ῥά τέ φασιν
ὀξύτατον δέρεσθαι ὑπουρανίων πετεηνῶν, 675

ὃν τε καὶ ὑψόθ' ἐόντα πόδας ταχὺς οὐκ ἔλαθε πτώξ
θάμνω ὑπ' ἀμφικόμῳ κατακείμενος, ἀλλὰ τ' ἐπ' αὐτῷ
ἔσσυτο καὶ τέ μιν ὦκα λαβὼν ἐξέειλετο θυμόν.

ὥς τότε σοί, Μενέλαε διοτρεφές, ὅσσε φαιινὸ
πάντοσε δινεῖσθην πολέων κατὰ ἔθνος ἑταίρων, 680
εἴ που Νέστορος νῖδον ἔτι ζῶοντα ἰδοίτο.

τὸν δὲ μάλ' αἰψ' ἐνόησε μάχης ἐπ' ἀριστερὰ πάσης
θαρσύνονθ' ἐτάρους καὶ ἐποτρύνοντα μάχεσθαι.
ἄγχοῦ δ' ἰστάμενος προσέφη ξανθὸς Μενέλαος·

„*Ἀντίλοχ'*, εἰ δ' ἄγε δεῦρο, διοτρεφές, ὄφρα πύθῃαι
λυγρῆς ἀγγελίης, ἣ μὴ ὤφελλε γενέσθαι. 686.

ἤδη μὲν σε καὶ αὐτὸν ὀλομαι εἰσορῶντα
γιννώσκειν, ὅτι πῆμα θεὸς Δαναοῖσι κυλίνδει,
νίκη δὲ Τρώων· πέφαται δ' ὠριστος Ἀχαιῶν
Πάτροκλος, μεγάλη δὲ ποθὴ Δαναοῖσι τέτυκται. 690
ἀλλὰ σύ γ' αἰψ' Ἀχιλῇ, θέων ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν,
εἰπεῖν, αἶ κε τάχιστα νέκυν ἐπὶ νῆα σαώσῃ
γυμνόν· ἀτὰρ τά γε τεύχε' ἔχει κορυθαίολος Ἔκτωρ.“

ὥς ἔφατ', Ἀντίλοχος δὲ κατέστυγε μῦθον ἀκούσας.
δὴν δέ μιν ἀμφασίῃ ἐπέων λάβε, τῷ δέ οἱ ὕσσε 695
δακρυόφι πλησθεν, θαλερῇ δέ οἱ ἔσχετο φωνή.
ἀλλ' οὐδ' ὥς Μενελάου ἐφημοσύνης ἀμέλησεν,
βῆ δὲ θείειν, τὰ δὲ τεύχε' ἀμύμονι ὤκκεν ἐταίρῳ
Λαοδόκῳ, ὅς οἱ σχεδὸν ἔστρεφε μώνυχας ἵππους.

τὸν μὲν δάκρυ χέοντα πόδες φέρον ἐκ πολέμοιο 700
Πηλεΐδῃ Ἀχιλῇ κακὸν ἔπος ἀγγελέοντα·

οὐδ' ἄρα σοί, Μενέλαε διοτρεφές, ἥθελε θυμὸς
τειρομένοις ἐτάροισιν ἀμυνέμεν, ἐνθεν ἀπῆλθεν
Ἀντίλοχος, μεγάλη δὲ ποθὴ Πυλίοισιν ἐτύχθη·
ἀλλ' ὃ γε τοῖσιν μὲν Θρασυμήδεα δῖον ἀνῆκεν, 705

αὐτὸς δ' αὐτ' ἐπὶ Πατρόκλῳ ἥρωι βεβήκειν,
στῇ δὲ παρ' Αἰάντεσσι θέων, εἶδαρ δὲ προσηύδα·

„*κεῖνον μὲν δὴ νηυσὶν ἐπιπροέηκα θοῇσιν,*
ἐλθεῖν εἰς Ἀχιλῆα πόδας ταχύν· οὐδέ μιν οἶω
νῦν ἵεναι, μάλα περ κεχολωμένον Ἔκτορι δῖῳ· 710
οὐ γάρ πως ἂν γυμνὸς ἔων Τρώεσσι μάχοιτο.
ἡμεῖς δ' αὐτοὶ περ φραζώμεθα μῆτιν ἀρίστην,
ἡμὲν ὅπως τὸν νεκρὸν ἐρύσσομεν, ἡδὲ καὶ αὐτοὶ
Τρώων ἐξ ἑνοπῆς θάνατον καὶ κῆρα φύγωμεν.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα μέγας Τελαμώνιος Αἴας· 715

„πάντα κατ' αἶσαν ἔειπες, ἀγκαλεῖς ὦ Μενέλαε·
 ἀλλὰ σὺ μὲν καὶ Μηριόνης ὑποδύντε μάλ' ὧκα
 νεκρὸν αἰείραντες φέρετ' ἐκ πόνου· αὐτὰρ ὅπισθεν
 νῶϊ μαχησόμεθα Τρῳσὶν τε καὶ Ἑκτορι δίῳ,
 ἴσον θυμὸν ἔχοντες ὁμώνυμοι, οἳ τὸ πάρος περ 720
 μίμνομεν ὄξυν Ἄρηα παρ' ἀλλήλοισι μένοντες.“

ὣς ἔφαθ', οἳ δ' ἄρα νεκρὸν ἀπὸ χθονὸς ἀγκάζοντο
 ὕψι μάλᾳ μεγάλως· ἐπὶ δ' ἴαχε λαὸς ὅπισθεν
 Τρῳαῖος, ὥς εἶδοντο νέκυν αἰρόντας Ἀχαιοὺς.
 ἴθυσαν δὲ κύνεσσιν ἑοικότες, οἳ τ' ἐπὶ κάρῳ 725
 βλημένῳ ἀΐξωσι πρὸ κούρων θηρητήρων·

ἔως μὲν γάρ τε θέουσι διαρραῖσαι μεμαῶτες,
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐν τοῖσιν ἐλίζεται ἀλκὴ πεποιδῶς,
 ἅψ τ' ἀνεχώρησαν διὰ τ' ἔτρεσαν ἄλλυδις ἄλλος.
 ὣς Τρῶες εἰως μὲν ὁμιλαδὸν αἶν ἐποντο 730
 νύσσοντες ξίφεσίν τε καὶ ἔγχεσιν ἀμφιγύοισιν·
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' Αἴαντε μεταστρεφθέντε κατ' αὐτοὺς
 σταίησαν, τῶν δὲ τράπετο χρῶς, οὐδέ τις ἔτλη
 πρόσσω ἀΐξας περὶ νεκροῦ δηριάσθαι.

ὣς οἳ γ' ἐμμεμαῶτε νέκυν φέρον ἐκ πολέμοιο 735
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς· ἐπὶ δὲ πτόλεμος τέτατό σφιν
 ἄγριος ἥντε πῦρ, τό τ' ἐπεσσύμενον πόλιν ἀνδρῶν
 ὄρμενον ἐξαίφνης φλεγέθει, μινύθουσι δὲ οἴκοι
 ἐν σέλαϊ μεγάλῳ· τὸ δ' ἐπιβρέμει ἰς ἀνέμοιο.
 ὣς μὲν τοῖς ἵππων τε καὶ ἀνδρῶν αἰχμητῶν 740
 ἀζηγῆς ὀρυμαγδὸς ἐπήϊεν ἐρχομένοισιν·

οἳ δ', ὥς θ' ἡμίονοι κρατερὸν μένος ἀμφιβαλόντες
 ἔλκωσ' ἐξ ὄρεος κατὰ παιπαλόεσσαν ἀταρπὸν
 ἥ δοκὸν ἥ δόρυ μέγα νήιον· ἐν δέ τε θυμὸς
 τείρεθ' ὁμοῦ καμάτῳ τε καὶ ἰδρῶ σπενδόντεσσιν· 745
 ὣς οἳ γ' ἐμμεμαῶτε νέκυν φέρον· αὐτὰρ ὅπισθεν

Αἶαντ' ἰσχανέτην, ὥς τε πρὸν ἰσχάνει ὕδωρ
 ὑλῆεις, πεδίοιο διαπρύσιον τετυχηκώς,
 ὅς τε καὶ ἰφθίμων ποταμῶν ἀλεγεινὰ ῥέεθρα
 ἰσχει, ἄφαρ δέ τε πᾶσι ῥόον πεδίονδε τίθησιν 750
 πλάζων· οὐδέ τί μιν σθένει ῥηγνῦσι ῥέοντες·
 ὥς αἰεὶ Αἶαντε μάχην ἀνέεργον ὀπίσσω
 Τρώων· οἳ δ' ἅμ' ἔποντο, δύω δ' ἐν τοῖσι μάλιστα,
 Αἰνείας τ' Ἀγχισιάδης καὶ παίδιμος Ἴκτωρ.
 τῶν δ', ὥς τε ψαρῶν νέφος ἔρχεται ἢ κολοιδῶν, 755
 οὐλον κεκλήγοντες, ὅτε προῖδωσιν ἰόντα
 κίρκον, ὃ τε σμικρῇσι φόνον φέρει ὀρνίθεσσιν,
 ὥς ἄρ' ὑπ' Αἰνεία τε καὶ Ἴκτορι κοῦροι Ἀχαιῶν
 οὐλον κεκλήγοντες ἴσαν, λήθοντο δὲ χάρμης.
 πολλὰ δὲ τεύχεα καλὰ πέσον περὶ τ' ἅμφι τε τάφρον
 φευγόντων Δαναῶν, πολέμου δ' οὐ γίγνεται ἔρωή. 761

ΙΛΙΑΔΟΣ Σ.

ὁπλοποιία.

ὥς οἳ μὲν μάρναντο δέμας πυρὸς αἰθομένοιο,
 Ἀντίλοχος δ' Ἀχιλῆι πόδας ταχὺς ἄγγελος ἦλθεν.
 τὸν δ' εὔρε προπάρουθε νεῶν ὀρθοκραιράων,
 τὰ φρονέοντ' ἀνὰ θυμόν, ἃ δὴ τετελεσμένα ἦεν·
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς ὃν μεγαλήτορα θυμόν· 5
 „ὦ μοι ἐγώ, τί τ' ἄρ' αὐτε κάρη κομόωντες Ἀχαιοὶ
 νηυσὶν ἐπι κλονέονται ἀτυζόμενοι πεδίοιο;
 μὴ δὴ μοι τελέσωσι θεοὶ κακὰ κήδεα θυμῷ,
 ὥς ποτέ μοι μήτηρ διεπέφραδε καὶ μοι ἔειπεν

Μυρμιδόνων τὸν ἄριστον ἔτι ζώνοντος ἔμελλο
χερσὶν ὑπο Τρώων λείψειν φάος ἡελίοιο. 10

ἡ μάλα δὴ τέθνηκε Μενoitίου ἄλκιμος υἱός,
σχέτλιος· ἡ τ' ἐκέλευον ἀπώσάμενον δήιον πῦρ
ἄψ ἐπὶ νῆας ἱμεν, μηδ' Ἔκτορι ἴφι μάχεσθαι.“

εἶος δ' ταυτ' ὤρμαινε κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,
τόφρα οἱ ἐγγύθεν ἦλθεν ἀγανοῦ Νέστορος υἱός 16
δάκρυα θερμὰ χέων, φάτο δ' ἀγγελίην ἀλεγεινὴν·
„ὦ μοι, Πηλέος υἱὲ δαΐφρονος, ἡ μάλα λυγρῆς
πεύσεαι ἀγγελίης, ἡ μὴ ὤφελλε γενέσθαι.

κεῖται Πάτροκλος, νέκυσ δὲ δὴ ἀμφιμάχονται 20
γυμνοῦ· ἀτὰρ τά γε τεύχε' ἔχει κορυθαίολος Ἔκτωρ.“

ὥς φάτο, τὸν δ' ἄχεος νεφέλη ἐκάλυψε μέλαινα.
ἀμφοτέρωσι δὲ χερσὶν ἑλὼν κόνιν αἰθαλόεσσαν
χεύατο κακ κεφαλῆς, χαρίεν δ' ἦσχυνε πρόσωπον·
νεκταρέω δὲ χιτῶνι μέλαιν' ἀμφίζανε τέφρη. 25

αὐτὸς δ' ἐν κονίησι μέγας μεγαλωστί τανυσθεὶς
κεῖτο, φίλησι δὲ χερσὶ κόμην ἦσχυνε δαΐζων.
δμῳαὶ δ', ἃς Ἀχιλεὺς ληίσσατο Πάτροκλός τε,
θυμὸν ἀκηχέμεναι μεγάλ' ἱαχον, ἐκ δὲ θύραζε
ἔδραμον ἀμφ' Ἀχιλῆα δαΐφρονα, χερσὶ δὲ πᾶσαι 30
στήθεα πεπλήγοντο, λύθην δ' ὑπὸ γυῖα ἐκάστης.

Ἀντίλοχος δ' ἐτέρωθεν ὀδύρετο δάκρυα λείβων,
χείρας ἔχων Ἀχιλῆος· ὁ δ' ἔστεινε κυδάλιμον κῆρ·
δείδιδε γάρ, μὴ λαιμὸν ἀπαμήσειε σιδήρῳ.

σμερδαλέον δ' ὤμωξεν· ἄκουσε δὲ πότνια μήτηρ 35
ἡμένη ἐν βένθεσσιν ἄλδος παρὰ πατρὶ γέροντι
κώκυσέν τ' ἄρ' ἐπειτα· θεαὶ δέ μιν ἀμφαγέροντο,
πᾶσαι, ὅσαι κατὰ βένθος ἄλδος Νηρηίδες ἦσαν.

[ἐνθ' ἄρ' ἦν Γλαύκη τε Θάλειά τε Κυμοδόκη τε,
Νησαίη Σπειώ τε Θόη δ' Ἀλίη τε βοῶπις, 40

Κυμοδὸν τε καὶ Ἀκταίη καὶ Λιμνώρεια
 καὶ Μελίτη καὶ Ἰαίρα καὶ Ἀμφιθόη καὶ Ἀγανή,
 Δωτὼ τε Πρωτὼ τε Φέρουσά τε Δυναμένη τε,
 Δεξαμένη τε καὶ Ἀμφινόμη καὶ Καλλιάνειρα,
 Δωρὶς καὶ Πανόπη καὶ ἀγακλειτὴ Γαλάτεια, 45
 Νημερτὴς τε καὶ Ἀψευδὴς καὶ Καλλιάνασσα·
 ἔνθα δ' ἔην Κλυμένη Ἰάνειρά τε καὶ Ἰάνασσα,
 Μαίρα καὶ Ὠρεΐθυια ἐνπλόκαμός τ' Ἀμάθεια,
 ἄλλαι θ', αἱ κατὰ βένθος ἄλως Νηρηίδες ἦσαν.]
 τῶν δὲ καὶ ἀργύφειον πλῆτο σπέος· αἱ δ' ἅμα πᾶσαι 50
 στήθεα πεπλήγοντο, Θέτις δ' ἐξήρχε γόοιο·
 „κλῦτε, κασίγνηται Νηρηίδες, ὄφρ' ἐν πᾶσαι
 εἶδεν' ἀκούουσai, ὅσ' ἐμῷ ἐνὶ κήδεα θυμῷ.
 ὦ μοι ἐγὼ δειλὴ, ὦ μοι δυσαριστοτόκεια,
 ἣ τ' ἐπεὶ ἄρ τέκον υἱὸν ἀμύμονά τε κρατερόν τε, 55
 ἔξοχον ἡρώων· ὁ δ' ἀνέδραμεν ἔρνεϊ ἴσος·
 τὸν μὲν ἐγὼ θρέψασα, φυτὸν ὥς γουνῷ ἁλώης,
 νηυσὶν ἐπιπροέηκα κορωνίσιν Ἴλιον εἴσω
 Τρωσὶ μαχησόμενον, τὸν δ' οὐχ ὑποδέξομαι αὐτὶς
 οἴκαδε νοστήσαντα δόμον Πηλῆιον εἴσω. 60
 ὄφρα δέ μοι ζῶει καὶ ὄρᾳ φάος ἡελίοιο,
 ἄχνηται, οὐδέ τί οἱ δύναιμαι χραίσμῃσαι ἰοῦσα.
 ἀλλ' εἴμ', ὄφρα ἰδῶμι φίλον τέκος, ἡδ' ἐπακούσω,
 ὅττι μιν ἴκετο πένθος ἀπὸ πτολέμοιο μένοντα.“
 ὣς ἄρα φωνήσασα λίπε σπέος· αἱ δὲ σὺν αὐτῇ 65
 δακρυόεσσαι ἴσαν, περὶ δέ σφισι κῦμα θαλάσσης
 ῥήγνυτο. ταὶ δ' ὅτε δὴ Τροίην ἐρίβωλον ἴκοντο,
 ἀκτὴν εἰσανέβαινον ἐπισχερῶ, ἔνθα θαμειαὶ
 Μυρμιδόνων εἴρυντο νέες ταχὺν ἀμφ' Ἀχιλλῆα.
 τῷ δὲ βαρὺ στενάχοντι παρίστατο πότνια μήτηρ, 70
 ὃξὺν δὲ κωκύσασα κάρη λάβε παιδὸς ἑοῖο,

καί ῥ' ὀλοφυρομένη ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „τέκνον, τί κλαίεις; τί δέ σε φρένας ἵκετο πένθος;
 ἔξαυδα, μὴ κεῦθε. τὰ μὲν δὴ τοι τετέλεσται
 ἐκ Διός, ὥς ἔρα δὴ πρὶν γ' εὖχεο χειρας ἀνασχών, 75
 πάντας ἐπὶ πρύμνησιν ἀλήμεναι νῆας Ἀχαιῶν
 σεῦ ἐπιδευομένους παθέειν τ' ἀεκήλια ἔργα.“

τὴν δὲ βαρὺ στενάχων προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „μῆτερ ἐμή, τὰ μὲν ἄρ μοι Ὀλύμπιος ἐξετέλεσσεν·
 ἀλλὰ τί μοι τῶν ἡδός, ἐπεὶ φίλος ὤλεθ' ἐταῖρος 80
 Πάτροκλος, τὸν ἐγὼ περὶ πάντων τιὸν ἐταίρων,
 ἴσον ἐμῇ κεφαλῇ· τὸν ἀπώλεσα, τεύχεα δ' Ἐκτωρ
 θῆσας ἀπέδυσε πελώρια, θαῦμα ἰδέσθαι,
 καλὰ· τὰ μὲν Πηλῆι θεοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα
 ἥματι τῷ, ὅτε σε βροτοῦ ἀνέρος ἐμβαλον εὐνῇ. 85
 αἰθ' ὄφελες σὺ μὲν αὖθι μετ' ἀθανάτης ἀλίσῃσιν
 ναίειν, Πηλεὺς δὲ θνητὴν ἀγαγέσθαι ἄκοιτιν.
 νῦν δ', ἵνα καὶ σοὶ πένθος ἐνὶ φρεσὶ μυρρίον εἴη
 παιδὸς ἀποφθιμένοιο, τὸν οὐχ ὑποδέξεται αὖτις
 οἴκαδε νοστήσαντ', ἐπεὶ οὐδ' ἐμὲ θυμὸς ἄνωγεν 90
 ζῶειν οὐδ' ἄνδρεςσι μετέμμεναι, αἶ κε μὴ Ἐκτωρ
 πρῶτος ἐμῷ ὑπὸ δουρὶ τυπεὶς ἀπὸ θυμὸν ὀλέσση,
 Πατρόκλοιο δ' ἔλωρα Μενoitιάδεω ἀποτίσῃ.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε Θέτις κατὰ δάκρυ χέουσα·
 „ὠκύμορος δὴ μοι, τέκος, ἔσσει, οἷ' ἀγορεύεις· 95
 αὐτίκα γάρ τοι ἔπειτα μεθ' Ἐκτορα πότμος ἐτοῖμος.“

τὴν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „αὐτίκα τεθναίην, ἐπεὶ οὐκ ἔρ' ἐμελλον ἐταίρῳ
 κτεινομένῳ ἐπαμῦναι· ὁ μὲν μάλα τηλόθι πάτρης
 ἔφθιτ', ἐμεῖο δ' ἔδησεν ἀρῆς ἀλκτῆρα γενέσθαι. 100
 νῦν δ', ἐπεὶ οὐ νέομαι γε φίλην ἐς πατρίδα γαίαν,
 οὐδέ τι Πατρόκλῳ γενόμεν φάος οὐδ' ἐτάροισιν

τοῖς ἄλλοις, οἳ δὴ πολέες δάμεν Ἐκτορι δίῳ,
 ἀλλ' ἡμῖαι παρὰ νηυσὶν ἐτώσιον ἄχθος ἀρούρης,
 τοῖος ἑὼν, οἷος οὐ τις Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων, 105
 ἐν πολέμῳ, ἀγορῇ δέ τ' ἀμείνονές εἰσι καὶ ἄλλοι.
 ὥς ἔρις ἐκ τε θεῶν ἐκ τ' ἀνθρώπων ἀπόλοιτο,
 καὶ χόλος, ὅς τ' ἐφέηκε πολύφρονά περ χαλεπῆναι,
 ὅς τε πολὺ γλυκίων μέλιτος καταλειβομένοιο
 ἀνδρῶν ἐν στήθεσσιν ἀέξεται ἥντε καπνός· 110
 ὥς ἐμὲ νῦν ἐχόλωσεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων.
 ἀλλὰ τὰ μὲν προτετύχθαι ἐάσομεν ἀχνύμενοί περ,
 θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι φίλον δαμάσαντες ἀνάγκη·
 νῦν δ' εἴμ', ὄφρα φίλης κεφαλῆς ὀλετῆρα κυχείω
 Ἐκτορα· κῆρα δ' ἐγὼ τότε δέξομαι, ὅππότε κεν δῇ 115
 Ζεὺς ἐθέλῃ τελέσαι ἢδ' ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι.
 οὐδὲ γὰρ οὐδὲ βίῃ Ἡρακλῆος φύγε κῆρα,
 ὅς περ φίλτατος ἔσκε Διὶ Κρονίῳνι ἕνακτι,
 ἀλλὰ ἔ μοῖρ' ἐδάμασσε καὶ ἀργαλέος χόλος Ἥρης·
 ὥς καὶ ἐγὼν, εἰ δὴ μοι ὁμοίῃ μοῖρα τέτυκται, 120
 κείσομ', ἐπεὶ κε θάνω· νῦν δὲ κλέος ἐσθλὸν ἀροίμην
 καὶ τινα Τρωιάδων καὶ Δαρδανίδων βαθυκόλπων
 ἀμφοτέρησιν χερσὶ παρειάων ἀπαλάων
 δάκρυ' ὁμορξαμένην ἀδινδὸν στοναχῆσαι ἐφείην·
 γνοῖεν δ', ὥς δὴ δηρὸν ἐγὼ πολέμοιο πέπαυμαι. 125
 μηδὲ μ' ἔρυκε μάχης φιλέουσά περ· οὐδέ με πείσεις.“
 τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα θεά, Θέτις ἀργυρόπεζα·
 „ναὶ δὴ ταῦτά γε, τέκνον, ἐτήτυμα· οὐ κακὸν ἐστὶν
 τειρομένοις ἐτάροισιν ἀμυνέμεν αἰπὺν ὄλεθρον·
 ἀλλὰ τοι ἔντεα καλὰ μετὰ Τρώεσσιν ἔχονται, 130
 χάλκεα μαρμαίροντα· τὰ μὲν κορυθαίολος Ἐκτωρ
 αὐτὸς ἔχων ὤμοισιν ἀγάλλεται· οὐδέ ἔ φημι
 δηρὸν ἐπαγλατῆσθαι, ἐπεὶ φόνος ἐγγύθεν αὐτῷ.

καί νύ κεν εἰρυσσέν τε καὶ ἄσπετον ἦρατο κῦδος, 165
εἰ μὴ Πηλεΐωνι ποδῆνεμος ὤκεια Ἴρις
ἄγγελος ἦλθε θεοῦς' ἀπ' Ὀλύμπου θωρήσσεσθαι,
κρύβδα Διὸς ἄλλων τε θεῶν· πρὸ γὰρ ἦκέ μιν Ἥρη.
ἀγχοῦ δ' ἰσταμένη ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„ὄρσεο, Πηλεΐδη, πάντων ἐκπαγλότατ' ἀνδρῶν, 170
Πατρόκλῳ ἐπάμυνον, οὗ εἵνεκα φύλοπις αἰνῇ
ἔστηκε πρὸ νεῶν. οἱ δ' ἀλλήλους ὀλέκουσιν,
οἱ μὲν ἀμυνόμενοι νέκυσος πέρι τεθνηῶτος,
οἱ δὲ ἐρύσσασθαι ποτὶ Ἴλιον ἡνεμόεσσαν

Τρῶες ἐπιθύουσι· μάλιστα δὲ φαίδιμος Ἔκτωρ 175
ἐλκέμεναι μέμονεν· κεφαλὴν δέ εἰ θυμὸς ἀνώγει
πῆξαι ἀνὰ σκολόπεσσι ταμόνθ' ἀπαλῆς ἀπὸ δειρῆς.
ἀλλ' ἄνα, μῆδ' ἔτι κείσο· σέβας δέ σε θυμὸν ἰκέσθω
Πάτροκλον Τρῳῆσι κυσὶν μέλπηθρα γενέσθαι·
σοὶ λῶβη, αἶ κέν τι νέκυσ ἥσχυμμένος ἔλθῃ.“ 180

τὴν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·
„Ἴρι θεά, τίς γάρ σε θεῶν ἐμοὶ ἄγγελον ἦκεν;“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε ποδῆνεμος ὤκεια Ἴρις·
„Ἥρη με προέηκε, Διὸς κυδρὴ παράκοιτις·
οὐδ' οἶδε Κρονίδης ὑψίζυγος οὐδέ τις ἄλλος 185
ἄθανάτων, οἳ Ὀλυμπον ἀγάννιφον ἀμφινέμονται.“

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
„πῶς τ' ἄρ' ἴω μετὰ μῶλον; ἔχουσι δὲ τεύχε' ἐκείνοι·
μήτηρ δ' οὗ με φίλη πρίν γ' εἶα θωρήσσεσθαι,
πρίν γ' αὐτὴν ἐλθοῦσαν ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδωμαι· 190
στεῦτο γὰρ Ἡφαίστοιο πάρ' οἰσέμεν ἔντεα καλά.
ἄλλου δ' οὗ τευ οἶδα, τεῦ ἂν κλυτὰ τεύχεα δύω,
εἰ μὴ Αἰαντός γε σάκος Τελαμωνιάδαο. !

ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ὃ γ', ἔλπομ', ἐνὶ πρώτοισιν ὀμιλεῖ
ἔγχεϊ δηϊόων περὶ Πατρόκλοιо θανόντος.“ 195

τὸν δ' αὖτε προσέειπε ποδὴνεμος ὤκέα Ἴρις·
 „εὖ νυ καὶ ἡμεῖς ἰδμεν, ὅ τοι κλυτὰ τεύχε' ἔχονται·
 ἀλλ' αὐτως ἐπὶ τάφρον ἰὼν Τρώεσσι φάνηθι,
 αἶ κέ σ' ὑποδείσαντες ἀπόσχωνται πολέμοιο
 Τρῶες, ἀναπνεύσωσι δ' ἀρήιοι υἷες Ἀχαιῶν 200
 τειρόμενοι· ὀλίγη δέ τ' ἀνάπνευσις πολέμοιο.“

ἡ μὲν ἄρ' ὥς εἰποῦσ' ἀπέβη πόδας ὤκέα Ἴρις,
 αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς ὥρτο διίφιλος· ἀμφὶ δ' Ἀθήνη
 ὦμοις ἰφθίμοισι βάλ' αἰγίδα θυσανόεσσαν,
 ἀμφὶ δέ οἱ κεφαλῇ νέφος ἔστεφε δῖα θεάων 205
 χρύσειον, ἐκ δ' αὐτοῦ δαΐε φλόγα παμφανώωσαν.
 ὥς δ' ὅτε καπνὸς ἰὼν ἐξ ἄστεος αἰθέρ' ἵκηται,
 τηλόθεν ἐκ νήσου, τὴν δῆλοι ἀμφιμάχωνται·
 οἱ δὲ πανημέριοι στυγερῶ κρίνονται Ἄρηι
 ἄστεος ἐκ σφετέρου· ἅμα δ' ἠελίῳ καταδύντι 210
 πυρσοὶ τε φλεγέθουσιν ἐπήτριμοι, ὑψόσε δ' αὐγὴ
 γίγνεται αἰσσοῦσα, περικτιόνεσσιν ἰδέσθαι,
 αἶ κέν πως σὺν νηυσὶν ἀρῆς ἀλκτῆρες ἱκωνται·
 ὥς ἀπ' Ἀχιλλῆος κεφαλῆς σέλας αἰθέρ' ἱκανεν.
 στῆ δ' ἐπὶ τάφρον ἰὼν ἀπὸ τείχεος, οὐδ' ἐς Ἀχαιοὺς
 μίσγετο· μητρὸς γὰρ πυκινὴν ὠπίζει' ἐφετμήν. 216
 ἔνθα στάς ἦυσ', ἀπάτερθε δὲ Παλλὰς Ἀθήνη
 φθέγγεατ'· ἀτὰρ Τρώεσιν ἐν ἄσπετον ὥρσε κυδοιμόν.
 ὥς δ' ὅτ' ἀριζήλη φωνή, ὅτε τ' ἴαχε σάλπιγξ
 ἄστυ περιπλομένων δῆϊων ὑπο θυμοραϊστέων, 220
 ὥς τότε ἀριζήλη φωνὴ γέενετ' Αἰακίδαο.

οἱ δ' ὥς οὖν ἄιον ὅπα χάλκεον Αἰακίδαο,
 πᾶσιν ὀρίνθη θυμός· ἀτὰρ καλλίτριχες ἵπποι
 ἄψ ὄχεα τρόπεον· ὄσσοντο γὰρ ἄλγεα θυμῶ.
 ἡνίοχοι δ' ἐκπληγεν, ἐπεὶ ἰδον ἀνάματον πῦρ 225
 δεινὸν ὑπὲρ κεφαλῆς μεγαθύμου Πηλεΐωνος

δαιόμενον· τὸ δὲ δαΐε θεά, γλαυκῶπις Ἀθήνη.
 τρὶς μὲν ὑπὲρ τάφρου μεγάλ' ἰαχε δῖος Ἀχιλλεύς,
 τρὶς δὲ κυκλήθησαν Τρῶες κλειτοὶ τ' ἐπίκουροι.
 ἔνθα δὲ καὶ τότ' ὄλοντο δυνάδεκα φῶτες ἄριστοι 230
 ἄμφι σφοῖς ὀχέεσσι καὶ ἔργεσιν. αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
 ἀσπασίως Πάτροκλον ὑπὲκ βελέων ἐρύσαντες
 κάτθεσαν ἐν λεχέεσσι· φίλοι δ' ἄμφεσταν ἑταῖροι
 μυρόμενοι· μετὰ δέ σφι ποδώκης εἶπεν Ἀχιλλεύς
 δάκρυα θερμὰ χέων, ἐπεὶ εἰσίδε πιστὸν ἑταῖρον 235
 κείμενον ἐν φέρτρῳ δεδαλγμένον ὀξεί χαλκῷ.
 τὸν ῥ' ἦ τοι μὲν ἔπεμπε σὺν ἵπποισιν καὶ ὄχεσφιν
 εἰς πόλεμον, οὐδ' αὐτίς ἐδέξατο νοστήσαντα.
 Ἥελιον δ' ἀκάμαντα βοῶπις πότνια Ἥρη
 πέμψεν ἐπ' Ὠκεανοῖο ῥοᾶς ἄέκοντα νέεσθαι· 240
 Ἥελιος μὲν ἔδυν, παύσαντο δὲ δῖοι Ἀχαιοὶ
 φυλόπιδος κρατερῆς καὶ ὁμοίου πολέμοιο.

Τρῶες δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ἀπὸ κρατερῆς ὑσμίνης
 χωρήσαντες ἔλυσαν ὑφ' ἄρμασιν ὠκέας ἵππους,
 εἰς δ' ἀγορὴν ἀγέροντο πάρος δόρποιο μέδεσθαι. 245
 ὀρθῶν δ' ἐσταότων ἀγορὴ γένητ', οὐδέ τις ἔτλη
 ἔξεσθαι· πάντας γὰρ ἔχε τρόμος, οὐνεκ' Ἀχιλλεύς
 ἔξεφάνη, δηρὸν δὲ μάχης ἐπέκλυτ' ἀλεγεινῆς.
 τοῖσι δὲ Πουλυδάμας πεπνυμένος ἦρχ' ἀγορεύειν
 Πανθοῖδης· ὁ γὰρ οἶος ὄρα πρόσσω καὶ ὀπίσσω. 250
 Ἔκτορι δ' ἦεν ἑταῖρος, ἱῆ δ' ἐν νυκτὶ γέγοντο·
 ἀλλ' ὁ μὲν ἄρ' μύθοισιν, ὁ δ' ἔργχει πολλὸν ἐνίκαι.
 ὃ σφιν ἐν φρονέων ἀγορήσατο καὶ μετέειπεν·
 „ἄμφι μάλα φράζεσθε, φίλοι· κέλομαι γὰρ ἐγὼ γε
 ἄστυδε νῦν ἰέναι, μὴ μίμνειν ἡῶ δι' αὖν 255
 ἐν πεδίῳ παρὰ νηυσὶν· ἐκὰς δ' ἀπὸ τείχεός εἰμιν.
 ὄφρα μὲν οὗτος ἀνὴρ Ἀγαμέμνονι μῆνιε δίῳ,

τόφρα δὲ ῥηίτεροι πολεμίζειν ἦσαν Ἀχαιοί·
 χαίρεσκον γὰρ ἐγὼ γε θοῆς ἐπὶ νηυσὶν ἰάνων,
 ἐλπόμενος νῆας αἰρησέμεν ἀμφιελίσσας. 260
 νῦν δ' αἰνῶς δεῖδοικα ποδῶκεα Πηλεΐωνα·
 οἷος ἐκείνου θυμὸς ὑπέρβιος, οὐκ ἐθελήσει
 μίμνειν ἐν πεδίῳ, ὅθι περ Τρῶες καὶ Ἀχαιοὶ
 ἐν μέσῳ ἀμφοτέροι μένος Ἄρηος δατέονται,
 ἀλλὰ περὶ πτόλιός τε μαχήσεται ἡδὲ γυναικῶν. 265
 ἀλλ' ἴομεν προτὶ ἄστυ, πίθεςθέ μοι· ὧδε γὰρ ἔσται.
 νῦν μὲν νῦξ ἀπέκλυσε ποδῶκεα Πηλεΐωνα
 ἀμβροσίῃ· εἰ δ' ἄμμε κιχήσεται ἐνθάδ' ἐόντας
 αὔριον ὀρμηθεὶς σὺν τεύχεσιν, εὖ νύ τις αὐτὸν
 γνώσεται· ἀσπασίως γὰρ ἀφίξεται Ἴλιον ἱρήν, 270
 ὅς κε φύγη, πολλοὺς δὲ κύνες καὶ γῦπες ἔδονται
 Τρώων· αἶ γὰρ δὴ μοι ἀπ' οὐατος ὧδε γένοιτο.
 εἰ δ' ἂν ἐμοῖς ἐπέεσσι πιθώμεθα κηδόμενοι περ,
 νύκτα μὲν εἰν ἀγορῇ σθένος ἔχομεν, ἄστυ δὲ πύργοι
 ὑψηλαί τε πύλαι σανίδες τ' ἐπὶ τῆς ἀραρυῖαι 275
 μακρὰι ἐύξεστοι ἐξευγμέναι εἰρύσσονται·
 πρῶι δ' ὑπηοῖοι σὺν τεύχεσι θωρηχθέντες
 στησόμεθ' ἄμ πύργους. τῷ δ' ἄλγιον, αἶ κ' ἐθέλῃσιν
 ἔλθων ἐκ νηῶν περὶ τείχεος ἄμμι μάχεσθαι·
 ἄψ πάλιν εἰς ἐπὶ νῆας, ἐπεὶ κ' ἐριανύχενας ἵππους 280
 παντοίου δρόμου ἄσθῃ ὑπὸ πτόλιν ἡλασκάζων·
 εἴσω δ' οὐ μιν θυμὸς ἐφορμηθῆναι ἑάσει,
 οὐδέ ποτ' ἐκπέρσει· πρὶν μιν κύνες ἀργοὶ ἔδονται.“

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη κορυθαίολος Ἑκτωρ·
 „Πουλυδάμα, σὺ μὲν οὐκέτ' ἐμοὶ φίλα ταῦτ' ἀγορεύεις,
 ὅς κέλεαι κατὰ ἄστυ ἀλῆμεναι αὐτίς ἰόντας. 286
 ἢ οὐ πω κεκόρησθε ἐελμένοι ἐνδοθι πύργων;
 πρὶν μὲν γὰρ Πριάμοιο πόλιν μέροπες ἄνθρωποι

πάντες μυθέσκοντο πολύχρυσον πολύχαλκον·
 νῦν δὲ δὴ ἐξαπόλωλε δόμων κειμήλια καλά, 290
 πολλὰ δὲ δὴ Φρυγίην καὶ Μηονίην ἐρατεινὴν
 κτήματα περναμέν' ἵκει, ἐπεὶ μέγας ὠδύσατο Ζεὺς.
 νῦν δ', ὅτε πέρ μοι ἔδωκε Κρόνου πάϊς ἀγκυλομήτεω
 κῦδος ἀρέσθ' ἐπὶ νηυσί, θαλάσση τ' ἔλσαι Ἀχαιοὺς,
 νήπιε, μηκέτι ταῦτα νοήματα φαίν' ἐνὶ δήμῳ. 295
 οὐ γάρ τις Τρώων ἐπιπείσεται· οὐ γὰρ ἑάσω.
 ἀλλ' ἄγεθ', ὥς ἂν ἐγὼ εἶπω, πειθώμεθα πάντες.
 νῦν μὲν δόρπον ἔλεσθε κατὰ στρατὸν ἐν τελέεσσιν,
 καὶ φυλακῆς μνήσασθε καὶ ἐργήγορθε ἕκαστος·
 Τρώων δ' ὅς κτεάτεσσιν ὑπερφιάλως ἀνιάξει, 300
 συλλέξας λαοῖσι δότω καταδημοβορῆσαι·
 τῶν τινὰ βέλτερόν ἐστιν ἐπαυρέμεν ἢ περ Ἀχαιοὺς.
 πρῶι δ' ὑπηοῖοι σὺν τεύχεσι θωρηχθέντες
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐγείρομεν ὄξυν Ἄρηα.
 εἰ δ' ἔτεδον παρὰ ναῦφιν ἀνέστη δῖος Ἀχιλλεύς, 305
 ἄλγιον, αἶ κ' ἐθέλησι, τῷ ἔσσεται. οὐ μιν ἐγὼ γε
 φεύξομαι ἐκ πολέμοιο δυσσηχέος, ἀλλὰ μάλ' ἔντην
 στήσομαι, ἥ κε φέρησι μέγα κράτος, ἥ κε φερούμην.
 ξυνὸς ἐννύλιος, καὶ τε κτανέοντα κατέκτα.“

ὥς ἔκτωρ ἀγόρευ', ἐπὶ δὲ Τρῶες κελάδησαν 310
 νήπιοι· ἐκ γὰρ σφεων φρένας εἴλετο Παλλὰς Ἀθήνη·
 ἔκτορι μὲν γὰρ ἐπήνησαν κακὰ μητιόωντι,
 Πουλυδάμαντι δ' ἄρ' οὐ τις, ὅς ἐσθλὴν φράζετο βουλήν.
 δόρπον ἔπειθ' εἵλοντο κατὰ στρατόν· αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
 παννύχιοι Πάτροκλον ἀνεστενάχοντο γοῶντες. 315
 τοῖσι δὲ Πηλεΐδης ἀδινοῦ ἐξῆρχε γόοιο,
 χεῖρας ἐπ' ἀνδροφόνους θέμενος στήθεσσιν ἑταίρου,
 πυκνὰ μάλα στενάχων ὥς τε λῖς ἠυγένειος,
 ᾧ ῥά θ' ὑπὸ σκύμνους ἐλαφηβόλος ἀρπάσῃ ἀνὴρ

ὕλης ἐκ πυκινῆς· ὁ δέ τ' ἄχνηται ὕστερος ἐλθών, 320
 πολλὰ δέ τ' ἄγκε' ἐπῆλθε μετ' ἀνέρος ἰχνί' ἐρευνῶν,
 εἴ ποθεν ἐξεύροι· μάλα γὰρ θριμύς χόλος αἰρεῖ·
 ὥς ὁ βαρὺ στενάχων μετεφώνεε Μυρμιδόνεσσιν·
 „ὦ πόποι, ἦ ῥ' ἄλιον ἔπος ἐκβαλον ἡματι κείνῳ,
 Θαρσύνων ἦρωα Μενοίτιον ἐν μεγάροισιν· 325
 φῆν δέ οἱ εἰς Ὀπότεντα περικλυτὸν υἱὸν ἀπάξειν
 Ἴλιον ἐκπέρσαντα λαχόντα τε ληίδος αἶσαν.
 ἀλλ' οὐ Ζεὺς ἀνδρεσσι νοήματα πάντα τελευτᾷ·
 ἕμφω γὰρ πέπρωται ὁμοίην γαῖαν ἐρεῦσαι
 αὐτοῦ ἐνὶ Τροίῃ, ἐπεὶ οὐδ' ἐμὲ νοστήσαντα 330
 δέξεται ἐν μεγάροισι γέρον ἱππηλάτα Πηλεὺς
 οὐδὲ Θέτις μήτηρ, ἀλλ' αὐτοῦ γαῖα καθέξει.
 νῦν δ', ἐπεὶ οὖν, Πάτροκλε, σεῦ ὕστερος εἰμ' ὑπὸ γαῖαν,
 οὐ σε πρὶν κτεριῶ, πρὶν γ' Ἐκτορος ἐνθάδ' ἐνεῖκαι
 τεύχεα καὶ κεφαλὴν, μεγαθύμου σοῖο φονῆος· 335
 δῶδεκα δὲ προπάροιθε πυρῆς ἀποδειροτομήσω
 Τρώων ἀγλαὰ τέκνα, σέθεν καταμένοιο χολωθείς.
 τόφρα δέ μοι παρὰ νηυσὶ κορωνίσσι κείσεαι αὐτως,
 ἀμφὶ δὲ σὲ Τρῳαὶ καὶ Δαρδανίδες βαθυκόλποι
 κλαύουσιναι νύκτας τε καὶ ἡματὰ δάκρυ χέουσαι, 340
 τὰς αὐτοὶ καμόμεσθα βίῃφί τε δουρί τε μακρῷ,
 πειρίρας πέρθοντε πόλεις μερόπων ἀνθρώπων.“
 ὥς εἰπὼν ἐτάροισιν ἐκέκλετο δῖος Ἀχιλλεύς
 ἀμφὶ πυρὶ στήσαι τρίποδα μέγαν, ὄφρα τάχιστα
 Πάτροκλον λούσειαν ἄπο βρότον αἱματόεντα. 345
 οἱ δὲ λοετροχόον τρίποδ' ἴστασαν ἐν πυρὶ κηλέῳ,
 ἐν δ' ἄρ' ὕδωρ ἔχεαν, ὑπὸ δὲ ξύλα δαῖον ἐλόντες·
 γάστρην μὲν τρίποδος πῦρ ἄμφεπε, θέρμετο δ' ὕδωρ.
 αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ ζέσσειεν ὕδωρ ἐνὶ ἡνοπι χαλκῷ,
 καὶ τότε δὴ λουῶσάν τε καὶ ἡλειψαν λίπ' ἐλαίῳ, 350

ἐν δ' ὠτειλὰς πλήσαν ἀλείφατος ἐννεώροιο.
 ἐν λεχέεσσι δὲ θέντες ἑανῶ λιτὶ κάλυψαν
 ἐς πόδας ἐκ κεφαλῆς, καθύπερθε δὲ φάρεϊ λευκῶ.

παννύχιοι μὲν ἔπειτα πόδας ταχὺν ἄμφ' Ἀχιλλῆα
 Μυρμιδόνες Πάτροκλον ἀνεστενάχοντο γοῶντες· 355

[Ζεὺς δ' Ἥρην προσέειπε κασιγνήτην ἄλοχόν τε·
 „ἐπρηξας καὶ ἔπειτα, βοῶπις πότνια Ἥρην,
 ἀνστήσας Ἀχιλλῆα πόδας ταχύν· ἦ ῥά νυ σεῖο
 ἐξ αὐτῆς ἐγένοντο ἀρῇ κομόωντες Ἀχαιοί.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρην· 360
 „αἰνότατε Κρονίδη, ποῖον τὸν μῦθον ἔειπες.

καὶ μὲν δὴ πού τις μέλλει βροτὸς ἀνδρὶ τελέσσαι,
 ὅς περ θνητὸς τ' ἐστὶ καὶ οὐ τόσα μῆδεα οἶδεν·
 πῶς δὴ ἐγὼ γ', ἣ φημι θεάων ἔμμεν ἀρίστη,
 ἀμφοτέρον, γενεῇ τε καὶ οὐνεκα σὴ παράκοιτις 365
 κέκλημαι, σὺ δὲ πᾶσι μετ' ἀθανάτοισιν ἀνάσσεις,
 οὐκ ὄφελον Τρώεσσι κοτεσσαμένη κακὰ ῥάψαι;“

ὥς οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον·]
 Ἥφαιστος δ' ἵκανε δόμον Θέτις ἀργυρόπεζα
 ἄφθιτον ἀστερόεντα, μεταπρεπὲς ἀθανάτοισιν, 370
 χάλκεον, ὃν ῥ' αὐτὸς ποιήσατο κυλλοποδιῶν.

τὸν δ' εὖρ' ἰδρῶντα ἐλίσσόμενον περὶ φύσας,
 σπεύδοντα· τρίποδας γὰρ εἰκόσι πάντας ἔτευχεν
 ἐστάμεναι περὶ τοῖχον ἐυσταθὲος μεγάρου·
 χρύσεια δέ σφ' ὑπὸ κύκλα ἐκάστω πνυθμένι θῆκεν, 375
 ὄφρα οἱ αὐτόματοι θεῖον δυσαίαν ἀγῶνα

ἦδ' αὐτίς πρὸς δῶμα νεοίαιο, θαῦμα ἰδέσθαι.
 οἱ δ' ἦ τοι τόσσον μὲν ἔχον τέλος, οὐατα δ' οὐ πω
 δαιδάλεα προσέκειτο· τὰ ῥ' ἦρτυε, κόπτε δὲ δεσμούς.
 ὄφρ' ὃ γε ταῦτ' ἐπονείτο ἰδυίῃσι πραπίδεσσιν, 380
 τόφρα οἱ ἐγγύθεν ἦλθε θεά, Θέτις ἀργυρόπεζα.

τὴν δὲ ἶδε προμολοῦσα Χάρης λιπαροκρήδεμνος
καλή, τὴν ὤπυιε περικλυτὸς ἀμφιγυήεις·
ἔν τ' ἄρα οἱ φῦ χειρὶ, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαζεν·
„τίπτε, Θέτι ταυνύπεπλε, ἰκάνεις ἡμέτερον δῶ 385
αἰδοίῃ τε φίλῃ τε; πάρος γε μὲν οὐ τι θαμίζεις.
ἄλλ' ἔπεο προτέρω, ἵνα τοι παρ ξείνια θεῖω.“

ὣς ἄρα φωνήσασα πρόσω ἄγε δῖα θεάων.
τὴν μὲν ἔπειτα καθεῖσεν ἐπὶ θρόνου ἀργυροήλου
καλοῦ δαιδαλέον· ὑπὸ δὲ θρηῖνος ποσὶν ἦεν· 390
κέκλετο δ' Ἥφαιστον κλυτοτέχνην εἰπέ τε μῦθον·
„Ἥφαιστε, πρόμολ' ὦδε· Θέτις νύ τι σεῖο χατίζει.“
τὴν δ' ἡμεῖβετ' ἔπειτα περικλυτὸς ἀμφιγυήεις·
„ἦ ῥά νύ μοι δεινὴ τε καὶ αἰδοίῃ θεὸς ἔνδον,
ἦ μ' ἐσάωσ', ὅτε μ' ἄλγος ἀφίκετο τῆλε πεσόντα 395
μητρὸς ἐμῆς ἰότητι κυνώπιδος, ἦ μ' ἐθέλησεν
κρύψαι χολὸν ἔοντα· τότε ἂν πάθον ἄλγεα θυμῶ,
εἰ μὴ μ' Εὐρυνόμη τε Θέτις θ' ὑπεδέξατο κόλπῳ,
Εὐρυνόμη θυγάτηρ ἀπορροῦ Ὠκεανοῖο.

τῇσι παρ' εἰνάετες χάλκεον δαίδαλα πολλά, 400
πόρπας τε γναμπτάς θ' ἑλικας κάλυκας τε καὶ ὄρμους,
ἐν σπῆι γλαφυρῶ, περὶ δὲ ῥόος Ὠκεανοῖο
ἀφρῶ μορμύρων ῥέεν ἄσπετος· οὐδέ τις ἄλλος
ἦδεεν οὔτε θεῶν οὔτε θνητῶν ἀνθρώπων,
ἀλλὰ Θέτις τε καὶ Εὐρυνόμη ἴσαν, αἷ με σάωσαν. 405
ἦ νῦν ἡμέτερον δόμον ἵκει· τῷ με μάλα χρεῶ
πάντα Θέτι καλλιπλοκάμῳ ζωάγρια τίνειν.
ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν οἱ παράθες ξεινήια καλά,
ὄφρ' ἂν ἐγὼ φύσας ἀποθείομαι ὄπλα τε πάντα.“

ἦ καὶ ἀπ' ἀκμοθέτοιο πέλωρ αἶήτων ἀνέστη 410
χωλεύων· ὑπὸ δὲ κνήμαι ῥῶοντο ἄραιαί.
φύσας μὲν ῥ' ἀπάνευθε τίθει πυρός, ὄπλα τε πάντα

λάρνακ' ἐς ἀργυρέην συλλέξατο, τοῖς ἐπονείτο·
 σπόγγῳ δ' ἀμφὶ πρόσωπα καὶ ἄμφω χεῖρ' ἀπομόργνυ
 αὐχένα τε στιβαρὸν καὶ στήθεα λαχνήεντα· 415
 δὴ δὲ χιτῶν', ἔλε δὲ σκῆπτρον παχύ, βῆ δὲ θύραζε
 χωλεύων· ὑπὸ δ' ἀμφίπολοι ῥῶοντο ἄνακτι
 χρύσειαι, ζωῆσι νεήνισιν εἰοικυῖται.

τῆς ἐν μὲν νόος ἐστὶ μετὰ φρεσίν, ἐν δὲ καὶ αὐδὴ
 καὶ σθένος, ἀθανάτων δὲ θεῶν ἅπο ἔργα ἴσασιν. 420
 αἱ μὲν ὑπαιθρα ἄνακτος ἐποίπνυνον· αὐτὰρ ὁ ἔρρων
 πλησίον, ἐνθα Θέτις περ, ἐπὶ θρόνου ἴξε φαινοῦ,
 ἐν τ' ἄρα οἱ φῦ χεῖρ', ἔπος τ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαζεν·
 „τίπτε, Θέτι τανύπεπλε, ἱκάνεις ἡμέτερον δῶ
 αἰδοίη τε φίλῃ τε; πάρος γε μὲν οὐ τι θαμίζεις. 425
 αὐδα, ὃ τι φρονέεις· τελέσαι δέ με θυμὸς ἄνωγεν,
 εἰ δύνάμαι τελέσαι γε καὶ εἰ τετελεσμένον ἐστίν.“

τὸν δ' ἡμεῖβετ' ἐπειτα Θέτις κατὰ δάκρυ χέουσα·
 „Ἥφαιστ', ἥ ἄρα δὴ τις, ὅσαι θεαὶ εἰς' ἐν Ὀλύμπῳ,
 τοσσάδ' ἐνὶ φρεσίν ἦσιν ἀνέσχετο κήδεα λυγρὰ, 430
 ὅσσ' ἐμοὶ ἐκ πασέων Κρονίδης Ζεὺς ἄλγε' ἔδωκεν;
 ἐκ μὲν μ' ἀλλάων ἀλιάων ἀνδρὶ δάμασσεν,
 Αἰακίδῃ Πηλῇ, καὶ ἔτλην ἀνέρος εὐνήν
 πολλὰ μάλ' οὐκ ἐθέλουσα· ὁ μὲν δὴ γήραϊ λυγρῷ
 κεῖται ἐνὶ μεγάροις ἀρημένος· ἄλλα δέ μοι νῦν· 435
 νῖδον ἐπεὶ μοι δῶκε γενέσθαι τε τραφόμεν τε,
 ἔξοχον ἡρώων· ὁ δ' ἀνέδραμεν ἔρνεϊ ἴσος·
 τὸν μὲν ἐγὼ θρέψασα, φνυτὸν ὥς γουνῷ ἄλωῃς,
 νηυσὶν ἐπιπροέηκα κορωνίσιν Ἴλιον εἶσω
 Τρωσὶ μαχησόμενον, τὸν δ' οὐχ ὑποδέξομαι αὐτίς 440
 οἴκαδε νοστήσαντα, δόμον Πηλῆιον εἶσω.
 ὄφρα δέ μοι ζῶει καὶ ὄρᾳ φάος ἡελίοιο,
 ἄχνηται, οὐδέ τί οἱ δύνάμαι χροαῖσμήσαι ἰούσα.

κούρην, ἣν ἄρα οἱ γέρας ἔξελον νῆες Ἀχαιῶν,
 τὴν ἄψ ἐκ χειρῶν ἔλετο κρείων Ἀγαμέμνων. 445
 ἦ τοι ὁ τῆς ἀχέων φρένας ἐφθιεν· αὐτὰρ Ἀχαιοὺς
 Τρῶες ἐπὶ πρύμνησιν εἴλεον, οὐδὲ θύραζε
 εἴων ἐξιέναι. τὸν δὲ λίσσοντο γέροντες
 Ἀργείων, καὶ πολλὰ περικλυτὰ δῶρ' ὀνόμαζον·
 ἔνθ' αὐτὸς μὲν ἔπειτ' ἠναίνετο λοιγὸν ἀμῦναι, 450
 αὐτὰρ ὁ Πάτροκλον περὶ μὲν τὰ ἃ τεύχεα ἔσσειν,
 πέμπε δέ μιν πολεμόνδε, πολὺν δ' ἄμα λαὸν ὄπασσεν.
 πᾶν δ' ἤμαρ μάραντο περὶ Σκαιῆσι πύλῃσιν·
 καὶ νῦ κεν αὐτῆμαρ πόλιν ἐπραθον, εἰ μὴ Ἀπόλλων
 πολλὰ κακὰ ῥέξαντα Μενoitίου ἄλκιμον υἱὸν 455
 ἔκταν' ἐνὶ προμάχοισι καὶ Ἑκτορι κῦδος ἔδωκεν.
 τούνεκα νῦν τὰ σά γούναθ' ἰκάνομαι, αἶ κ' ἐθέλῃσθα
 νῆϊέ ἐμῷ ὤκυμόρῳ δόμεν ἄσπινδα καὶ τρυφάλειαν
 καὶ καλὰς κνημῖδας, ἐπισφυρίοις ἀραρνύας,
 καὶ θῶρηκ'· ὁ γὰρ ἦν οἱ, ἀπώλεσε πιστὸς ἑταῖρος 460
 Τρῶσι δαμείς. ὁ δὲ κεῖται ἐπὶ χθονὶ θυμὸν ἀχεύων·
 τὴν δ' ἡμεῖβετ' ἔπειτα περικλυτὸς ἀμφιγυήεις·
 „θάρσει· μὴ τοι ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῆσι μελόντων.
 αἶ γάρ μιν θανάτοιο δυσηγέος ὧδε δυναίμην
 νόσφιν ἀποκρύψαι, ὅτε μιν μόρος αἰνὸς ἰκάνοι, 465
 ὥς οἱ τεύχεα καλὰ παρέσσειται, οἷά τις αὐτε
 ἀνθρώπων πολέων θαυμάσσεται, ὅς κεν ἴδῃται.“
 ὥς εἰπὼν τὴν μὲν λίπεν αὐτοῦ, βῆ δ' ἐπὶ φύσας,
 τὰς δ' ἐς πῦρ ἔτρεψε κέλευσέ τε ἐργάζεσθαι.
 φύσαι δ' ἐν χοάνοισιν εἰέκοσι πᾶσαι ἐφύσων, 470
 παντοίην εὐπρηστον ἀντμήν ἐξανιεῖσαι,
 ἄλλοτε μὲν σπεύδοντι παρέμμεναι, ἄλλοτε δ' αὐτε,
 ὅπως Ἥφαιστός τ' ἐθέλοι καὶ ἔργον ἄνοιτο.
 χαλκὸν δ' ἐν πυρὶ βάλλεν ἀτειρέα κασσίτερόν τε

καὶ χρυσὸν τιμῆντα καὶ ἄργυρον· αὐτὰρ ἔπειτα 475
θῆκεν ἐν ἄκμοθέτῳ μέγαν ἄκμονα, γέντο δὲ χειρὶ
φαιστῆρα κρατερήν, ἐτέρηφι δὲ γέντο πυράγρην.

ποίει δὲ πρώτιστα σάκος μέγα τε στιβαρόν τε
πάντοσε δαιδάλλων, περὶ δ' ἄντυγα βάλλε φαινήν
τρίπλακα μαρμαρέην, ἐκ δ' ἀργύρεον τελαμῶνα. 480
πέντε δ' ἄρ' αὐτοῦ ἔσαν σάκεος πτύχες· αὐτὰρ ἐν αὐτῷ
ποίει δαίδαλα πολλὰ ἰδυίησι πραπίδεσσιν.

ἐν μὲν γαῖαν ἔτευξ', ἐν δ' οὐρανόν, ἐν δὲ θάλασσαν,
ἠελιόν τ' ἀκάμαντα σελήνην τε πλήθουσαν,
ἐν δὲ τὰ τείρεα πάντα, τὰ τ' οὐρανὸς ἑστεφάνωται,
Πηληιάδας θ' Ἰάδας τε τό τε σθένος Ὠρίωνος 486
ἄρκτον θ', ἣν καὶ ἄμαξαν ἐπὶ κλησὶν καλέουσιν,
ἣ τ' αὐτοῦ στρέφεται καὶ τ' Ὠρίωνα δοκεύει,
οἷη δ' ἄμμορός ἐστι λοετρῶν Ὠκεανοῖο.

ἐν δὲ δύω ποιήσε πόλεις μερόπων ἀνθρώπων 490
καλὰς. ἐν τῇ μὲν ῥα γάμοι τ' ἔσαν εἰλαπῖναι τε,
νύμφας δ' ἐκ θαλάμων δαῖδων ὑπο λαμπομενάων
ἠγίνεον ἀνὰ ἄστυ, πολὺς δ' ὑμέναιος ὀρώρειν,
κοῦροι δ' ὀρχηστῆρες ἐδίνεον, ἐν δ' ἄρα τοῖσιν
αὐλοὶ φόρμιγγές τε βοήν ἔχον· αἱ δὲ γυναῖκες 495
ἰστάμεναι θαύμαζον ἐπὶ προθύροισιν ἐκάστη.
λαοὶ δ' εἰν ἀγορῇ ἔσαν ἀθρόοι· ἐνθα δὲ νεῖκος
ὠρώρει, δύο δ' ἄνδρες ἐνείκεον εἵνεκα ποινῆς
ἀνδρὸς ἀποκταμένου· ὁ μὲν εὐχετο πάντ' ἀποδοῦναι,
δήμῳ πιφάνσκων, ὁ δ' ἀναίνετο μηδὲν ἐλέσθαι· 500
ἄμφω δ' ἐέσθην ἐπὶ ἱστορὶ πείραρ ἐλέσθαι.
λαοὶ δ' ἀμφοτέροισιν ἐπήπνον, ἀμφὶς ἀρωγοί·
κῆρυκες δ' ἄρα λαὸν ἐρήτουν· οἱ δὲ γέροντες
εἶατ' ἐπὶ ξεστοῖσι λίθοις ἱερῷ ἐνὶ κύκλῳ,
σκῆπτρα δὲ κηρύκων ἐν χερσ' ἔχον ἡεροφώνων· 505

τοῖσιν ἔπειτ' ἤισσον, ἀμοιβηδὺς δὲ δίκασον.

κεῖτο δ' ἄρ' ἐν μέσσοισι δύω χρυσοῖο τάλαντα,
τῷ δόμεν, ὃς μετὰ τοῖσι δίκην ἰθύντατα εἶποι.

τὴν δ' ἐτέρην πόλιν ἀμφὶ δύω στρατοὶ εἶατο λαῶν
τεύχεσι λαμπόμενοι. δίχα δέ σφισιν ἦνδανε βουλή,
ἥε διαπραθέειν ἢ ἄνδιχα πάντα δάσασθαι, 511

κτῆσιν ὅσῃν πτολίεθρον ἐπήρατον ἐντὸς ἔεργεν·
οἱ δ' οὐ πῶ πεύθοντο, λόχῳ δ' ὑπεθωρήσσοντο.

τεῖχος μὲν ῥ' ἄλοχοί τε φίλαι καὶ νήπια τέκνα
ῥύατ' ἐφεσταότες, μετὰ δ' ἄνδρες, οὓς ἔχε γῆρας· 515

οἱ δ' ἴσαν· ἦρχε δ' ἄρα σφιν Ἄρης καὶ Παλλὰς Ἀθήνη,
ἄμφω χρυσεῖω, χρύσεια δὲ εἵματα ἔσθην,

καλῶ καὶ μεγάλῳ, σὺν τεύχεσιν, ὥς τε θεῶ περ,
ἀμφὶς ἀριζήλῳ· λαοὶ δ' ὑπ' ὀλίζονες ἦσαν.

οἱ δ' ὅτε δὴ ῥ' ἴκανον, ὅθι σφίσι εἶκε λοχῆσαι, 520
ἐν ποταμῷ, ὅθι τ' ἀρδμὸς ἔην πάντεσσι βοτοῖσιν,

ἐνθ' ἄρα τοί γ' ἴζοντ' εἰλυμένοι αἰθιοπι χαλκῷ.

τοῖσι δ' ἔπειτ' ἀπάνευθε δύω σκοποὶ εἶατο λαῶν
δέγμενοι, ὁππότε μῆλα ἰδοῖατο καὶ ἔλικας βοῦς.

οἱ δὲ τάχα προγένοντο, δύω δ' ἅμ' ἔποντο νομῆες 525
τερπόμενοι σύριγξι· δόλον δ' οὐ τι προνόησαν.

οἱ μὲν τὰ προῖδόντες ἐπέδραμον, ὧκα δ' ἔπειτα
τάμνοντ' ἀμφὶ βοῶν ἀγέλας καὶ πάεα καλὰ
ἀργενῶν ὀίῳ, κτείνον δ' ἐπὶ μηλοβοτῆρας.

οἱ δ' ὥς οὖν ἐπύθοντο πολὺν κέλαδον παρὰ βουσὶν
εἰράων προπάροιθε καθήμενοι, ἀντίκ' ἐφ' ἵππων 531
βάντες ἀερσιπόδων μετεκλίσθον, αἶψα δ' ἴκοντο.

στησάμενοι δ' ἐμάχοντο μάχην ποταμοῖο παρ' ὄχθας,
βάλλον δ' ἀλλήλους χαλκήρεσιν ἐγχείησιν.

ἐν δ' Ἔρις, ἐν δὲ Κυδοιμὸς ὁμίλεον, ἐν δ' ὀλοή Κῆρ
ἄλλον ζῶν ἐχουσα νεοῦτατον, ἄλλον ἄουτον, 536

ἄλλον τεθνηῶτα κατὰ μόθον ἔλκε ποδοῖν·
 εἶμα δ' ἔχ' ἄμφ' ὤμοισι δαφοινεὸν αἵματι φωτῶν.
 ὠμίλευν δ' ὥς τε ζωοὶ βροτοὶ ἡδὲ μάχοντο,
 νεκρούς τ' ἀλλήλων ἔρουν κατατεθνηῶτας. 540

ἐν δ' ἐτίθει νειὸν μαλακὴν, πίειραν ἄρουραν,
 εὐρεῖαν τρίπολον· πολλοὶ δ' ἀροτῆρες ἐν αὐτῇ
 ζεύγεα δινεύοντες ἐλάστρεον ἔνθα καὶ ἔνθα.
 οἱ δ' ὅπότε στρέψαντες ἰκοίατο τέλσον ἀρούρης,
 τοῖσι δ' ἔπειτ' ἐν χειρὶ δέπας μελιηδέος οἴνου 545
 δόσκεν ἀνὴρ ἐπιῶν· τοὶ δὲ στρέψασκον ἀν' ὄγμους,
 ἴεμενοι νειοῖο βαθείης τέλσον ἰκέσθαι.
 ἡ δὲ μελαίνετ' ὀπισθεν, ἀρηρομένη δὲ ἐφάκειν
 χρυσεῖη περ εἰούσα· τὸ δὴ περὶ θαῦμα τέτυκτο.

ἐν δ' ἐτίθει τέμενος βαθυλήιον· ἔνθα δ' ἔριθοι 550
 ἥμων ὀξείας δρεπάνας ἐν χειρὶν ἔχοντες.
 δράγματα δ' ἄλλα μετ' ὄγμον ἐπήτριμα πίπτον ἔραζε,
 ἄλλα δ' ἀμαλλοδετῆρες ἐν ἔλλεδανοῖσι δέοντο.
 τρεῖς δ' ἄρ' ἀμαλλοδετῆρες ἐφέστασαν· αὐτὰρ ὀπισθεν
 παῖδες δραγμεύοντες, ἐν ἀγκαλίδεσσι φέροντες, 555
 ἄσπερχές πάρεχον. βασιλεὺς δ' ἐν τοῖσι σιωπῇ
 σκῆπτρον ἔχων ἐστήκει ἐπ' ὄγμου γηθόσυνος κῆρ.
 κήρυκες δ' ἀπάνευθεν ὑπὸ δρυὶ δαῖτα πένοντο,
 βοῦν δ' ἱερεύσαντες μέγαν ἄμφεπον· αἱ δὲ γυναικες
 δεῖπνον ἐρίθοισιν λευκ' ἄλφριτα πολλὰ πάλυννον. 560

ἐν δ' ἐτίθει σταφυλῆσι μέγα βρίθουσαν ἁλῶην
 καλὴν χρυσεῖην· μέλανεσ δ' ἀνὰ βότρυες ἦσαν,
 ἐστήκει δὲ κάμαξι διαμπερὲς ἀργυρέησιν.
 ἀμφὶ δὲ κυανέην κάπετον, περὶ δ' ἔρκος ἔλασσεν
 κασσιτέρου· μίᾳ δ' οἴῃ ἀταρπιτὸς ἦεν ἐπ' αὐτήν, 565
 τῇ νίσσοντο φορῆς, ὅτε τρυγώφεν ἁλῶην.
 παρθενικαὶ δὲ καὶ ἡλίδεοι ἀταλὰ φρονέοντες

πλεκτοῖς ἐν ταλάροισι φέρον μελιηδέα καρπόν.
τοῖσιν δ' ἐν μέσσοισι πάις φόρμιγγι λιγείῃ
ἱμερόεν κιθάριζε, λίνον δ' ὑπὸ καλὸν ᾄειδεν 570
λεπταλέῃ φωνῇ· τοὶ δὲ ῥήσσοντες ἄμαρτῇ
μολπῇ τ' ἰνυμῷ τε ποσὶ σκαίροντες ἔποντο.

ἐν δ' ἀγέλην ποίησε βοῶν ὀρθοκραϊράων·
αἱ δὲ βόες χρυσοῖο τετεύχατο κασσιτέρου τε,
μνηκθμῷ δ' ἀπὸ κόπρου ἐπεσσεύοντο νομόνδε 575
παρ ποταμὸν κελάδοντα, παρὰ ῥοδανὸν δονακῆα.
χρῦσειοι δὲ νομῆες ἅμ' ἐστιχόωντο βόεσσιν
τέσσαρες, ἐννέα δὲ σφι κύνες πόδας ἄργοι ἔποντο.
σμερδαλέω δὲ λέοντε δύ' ἐν πρώτῃσι βόεσσιν
ταῦρον ἐρύγμηλον ἐχέτην· ὁ δὲ μακρὰ μεμυκῶς 580
ἔλκετο· τὸν δὲ κύνες μετεκίαθον ἡδ' αἰζηοί.

τῷ μὲν ἀναρρήξαντε βοὸς μέγαλοιο βοεῖην
ἔγκατα καὶ μέλαν αἷμα λαφύσσειτον, οἱ δὲ νομῆες
αὐτῶς ἐνδίσσαν ταχέας κύνας ὀτρύνοντες·
οἱ δ' ἡ τοι δακέειν μὲν ἀπετρωπῶντο λεόντων, 585
ἰστάμενοι δὲ μάλ' ἐγγὺς ὑλάκτεον ἔκ τ' ἀλέοντο.

ἐν δὲ νομὸν ποίησε περικλυτὸς ἀμφιγυήεις,
ἐν καλῇ βήσση, μέγαν οἶῶν ἀργεννάων,
σταθμούς τε κλισίας τε κατηρεφέας ἰδὲ σηκούς.
[ἐν δὲ χορὸν ποίκιλλε περικλυτὸς ἀμφιγυήεις 590

τῷ ἔκελον, οἶόν ποτ' ἐνὶ Κνωσῷ εὐρείῃ
Δαίδαλος ἥσκησεν καλλιπλοκάμῳ Ἀφιάδνῃ.
ἐνθα μὲν ἡἷθεοι καὶ παρθένοι ἀλφεσίβοιαι
ῥορχεῦντ', ἀλλήλων ἐπὶ καρπῷ χειρας ἔχοντες.
τῶν δ' αἱ μὲν λεπτὰς ὀθόνας ἔχον, οἱ δὲ χιτῶνας 595
εἴατ' ἐνννήτους, ἦκα στίλβοντας ἐλαίῳ·
καὶ ῥ' αἱ μὲν καλὰς στεφάνας ἔχον, οἱ δὲ μαχαίρας
εἶχον χρυσείας ἐξ ἀργυρέων τελαμώνων.

οἱ δ' ὅτε μὲν θρῆξασκον ἐπισταμένοισι πόδεσσιν
 ῥεῖα μάλ', ὥς ὅτε τις τροχὸν ἄρμενον ἐν παλάμῃσιν
 ἐξόμενος κεραμεὺς πειρήσεται, αἷ κε θέησιν· 601

ἄλλοτε δ' αὖ θρῆξασκον ἐπὶ στίχας ἀλλήλοισιν.
 πολλὸς δ' ἱμερόεντα χορὸν περιस्ताθ' ὅμιλος
 τερπόμενοι· μετὰ δέ σφιν ἐμέλπετο θεῖος ἀοιδὸς
 φορμίζων· δοιῶ δὲ κυβιστητῆρε κατ' αὐτοὺς 605
 μολπῆς ἐξάρχοντος ἐδίνεον κατὰ μέσσους.]

ἐν δ' ἐτίθει ποταμοῖο μέγα σθένος Ὀκεανοῖο
 ἄντυγα πὰρ πυμάτην σάκεος πύκα ποιητοῖο.

αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ τεῦξε σάκος μέγα τε στιβαρόν τε,
 τεῦξ' ἄρα οἱ θώρηκα φαεινότερον πυρὸς ἀνγῆς, 610
 τεῦξε δέ οἱ κόρυθα βριαρὴν, κροτάφοις ἀράρυϊαν,
 καλὴν δαιδαλέην, ἐπὶ δὲ χρύσειον λόφον ἤκεν,
 τεῦξε δέ οἱ κνημίδας ἑανοῦ κασσιτέριοιο.

αὐτὰρ ἐπεὶ πάνθ' ὅπλα κάμε κλυτὸς ἀμφιγυήεις,
 μητρὸς Ἀχιλλῆος θῆκε προπάροιθεν αἰέρας. 615
 ἢ δ' ἱρήξ ὥς ἄλτο κατ' Οὐλύμπου νιφόεντος
 τεύχεα μαρμαίροντα παρ' Ἑφαίστοιο φέρουσα.

ΙΛΙΑΔΟΣ Τ.

Μήνιδος ἀπόρρησις.

Ἦώς μὲν κροκόπεπλος ἀπ' Ὀκεανοῖο ῥοάων
 ὦρνυθ', ἵν' ἀθανάτοισι φάως φέροι ἡδὲ βροτοῖσιν·
 ἢ δ' ἐς νῆας ἱκάνε θεοῦ πάρα δῶρα φέρουσα.
 εὗρε δὲ Πατρόκλῳ περικείμενον ὃν φίλον υἱὸν
 κλαίοντα λιγέως· πολέες δ' ἄμφ' αὐτὸν ἑταῖροι

μύρονθ'. ἡ δ' ἐν τοῖσι παρίστατο δια θεάων,
 ἐν τ' ἄρα οἱ φῦ χειρὶ, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν·
 „τέκνον ἐμόν, τοῦτον μὲν ἔασομεν ἀχνύμενοί περ
 κείσθαι, ἐπεὶ δὴ πρῶτα θεῶν λόγῳτι δαμάσθη·
 τὴν δ' Ἥφαιστοιο πάρα κλυτὰ τεύχεα δέξο 10
 καλὰ μάλ', οἷ' οὐ πά τις ἀνὴρ ὤμοισι φόρησεν.“

ὥς ἄρα φωνήσασα θεὰ κατὰ τεύχε' ἔθηκεν
 πρόσθεν Ἀχιλλῆος· τὰ δ' ἀνέβραχε δαίδαλα πάντα.
 Μυρμιδόνας δ' ἄρα πάντας ἔλε τρόμος, οὐδέ τις ἔτλη
 ἄντην εἰσιδέειν, ἀλλ' ἔτρεσαν. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς 15
 ὥς εἶδ', ὥς μιν μᾶλλον ἔδν χόλος, ἐν δέ οἱ ὕσσε
 δεινὸν ὑπὸ βλεφάρων ὥς εἰ σέλας ἐξεφάανθεν·
 τέρπετο δ' ἐν χεῖρεσσιν ἔχων θεοῦ ἀγλαὰ δῶρα.
 αὐτὰρ ἐπεὶ φρεσὶν ἦσι τετάρπετο δαίδαλα λεύσσω,
 αὐτίκα μητέρα ἦν ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 20
 „μήτερ ἐμή, τὰ μὲν ὄπλα θεὸς πόρεν, οἷ' ἐπιεικὲς
 ἔργ' ἔμεν ἀθανάτων, μηδὲ βροτὸν ἄνδρα τελέσσαι·
 νῦν δ' ἦ τοι μὲν ἐγὼ θωρήξομαι· ἀλλὰ μάλ' αἰνῶς
 δεῖδω, μή μοι τόφρα Μενoitίου ἄλκιμον υἱὸν
 μυῖαι καδδῦσαι κατὰ χαλκοτύπους ὠτειλὰς 25
 εὐλὰς ἐγγείνωνται, ἀεικίσσωσι δὲ νεκρόν —
 ἐκ δ' αἰὼν πέφαται — κατὰ δὲ χρόα πάντα σαπήνη.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα θεά, Θέτις ἀργυρόπεζα·
 „τέκνον, μή τοι ταῦτα μετὰ φρεσὶ σῆσι μελόντων.
 τῷ μὲν ἐγὼ πειρήσω ἀλαλκόμεν ἄγρια φύλα, 30
 μυῖας, αἷ δά τε φῶτας ἀρηιφάτους κατέδουσιν·
 ἦν περ γὰρ κῆται γε τελεσφόρον εἰς ἐνιαυτόν,
 αἰεὶ τῷδ' ἔσται χρός ἐμπεδος ἦ καὶ ἀρείων.
 ἀλλὰ σὺ γ' εἰς ἀγορὴν καλέσας ἦρωας Ἀχαιοὺς,
 μῆνιν ἀποειπὼν Ἀγαμέμνονι ποιμένι λαῶν 35
 αἴψα μάλ' ἐς πόλεμον θωρήσσεο, δύσσεο δ' ἀλκήν.“

ὥς ἄρα φωνήσασα μένος πολυθαρσές ἐνήκεν,
Πατρόκλῳ δ' αὖτ' ἀμβροσίην καὶ νέκταρ ἐρυθρὸν
στάξε κατὰ ρινῶν, ἵνα οἱ χρῶς ἐμπεδος εἴη.

αὐτὰρ ὁ βῆ παρὰ θῖνα θαλάσσης διὸς Ἀχιλλεύς 40
σμερδαλέα ἰάχων, ὥρσεν δ' ἥρωας Ἀχαιοὺς.
καί ϕ' οἷ περ τὸ πάρος γε νεῶν ἐν ἀγῶνι μένεσκον,
οἷ τε κυβερνῆται καὶ ἔχον οἰήια νηῶν

καὶ ταμίαι - ἀρὰ νηυσὶν ἔσαν, σίτοιο δοτῆρες,
καὶ μὴν οἱ τότε γ' εἰς ἀγορὴν ἴσαν, οὐνεκ' Ἀχιλλεύς 45
ἔξεφάνη, δηρὸν δὲ μάχης ἐπέπαυτ' ἀλεγεινῆς.

τῷ δὲ δύω σκάζοντε βάτην Ἄρεος θεράποντε,
Τυδεΐδης τε μενεπτόλεμος καὶ διὸς Ὀδυσσεύς,
ἐγχεῖ ἐρειδομένῳ· ἔτι γὰρ ἔχον ἔλκεα λυγρά·
κὰδ δὲ μετὰ πρώτῃ ἀγορῇ ἴζοντο κιόντες. 50

αὐτὰρ ὁ δεύτατος ἦλθεν ἔναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων,
ἔλκος ἔχων· καὶ γὰρ τὸν ἐνὶ κρατερῇ ὑσμίνῃ
οὔτα Κόων Ἀντηνορίδης χαλκήρεϊ δουρί.

αὐτὰρ ἐπεὶ δὴ πάντες ἀολλίσθησαν Ἀχαιοί,
τοῖσι δ' ἀνιστάμενος μετέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς· 55
„Ἀτρεΐδη, ἥ ἄρ' τι τόδ' ἀμφοτέροισιν ἄρειον

ἐπλετο, σοὶ καὶ ἐμοί, ὅτε νῶϊ περ ἀχνυμένῳ κῆρ
θυμοβόρῳ ἐριδι μενεήναμεν εἵνεκα κούρης;
τὴν ὄφελ' ἐν νήεσσι κατακτάμεν Ἄρτεμις ἰῶ
ἡματι τῷ, ὅτ' ἐγὼν ἐλόμην Λυρνησδὸν ὀλέσσας· 60
τῷ κ' οὐ τόσσοι Ἀχαιοὶ ὁδᾶξ ἔλον ἔσπετον οὔδας
δυσμενέων ὑπὸ χερσίν, ἐμεῦ ἀπομνησίσαντος.

Ἔκτορι μὲν καὶ Τρωσὶ τὸ κέρδιον· αὐτὰρ Ἀχαιοὺς
δηρὸν ἐμῆς καὶ σῆς ἐριδος μνήσεσθαι οἴω.

ἀλλὰ τὰ μὲν προτετύχθαι ἐάσομεν ἀχνύμενοί περ, 65
θυμὸν ἐνὶ στήθεσσι φίλον δαμάσαντες ἀνάγκη·
νῦν δ' ἥ τοι μὲν ἐγὼ παύω χόλον, οὐδέ τί με χροῖ

ἀσκελέως αἰεὶ μενεαινέμεν· ἀλλ' ἄγε θᾶσσον
 ὄτρυνον πολεμόνδε κάρη κομόωντας Ἀχαιοὺς,
 ὄφρ' ἔτι καὶ Τρώων πειρήσομαι ἀντίος ἔλθῶν, 70
 αἶ κ' ἐθέλωσ' ἐπὶ νηυσὶν ἰάυειν· ἀλλὰ τιν' οἶω
 ἀσπασίως αὐτῶν γόνυ κάμψειν; ὅς κε φύγῃσιν
 δηΐου ἐκ πολέμοιο ὑπ' ἔργεος ἡμετέροιο.“

ὣς ἔφαθ', οἳ δ' ἐχάρησαν ἐκνήμιδες Ἀχαιοὶ
 μῆνιν ἀπειπόντος μεγαθύμου Πηλεΐωνος. 75

τοῖσι δὲ καὶ μετέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων
 [αὐτόθεν ἐξ ἔδρης, οὐδ' ἐν μέσσοισιν ἀναστάς·]
 „ὦ φίλοι ἦρωες Δαναοί, θεράποντες Ἄρης,
 ἔστεῳτος μὲν καλὸν ἀκουέμεν, οὐδὲ ἔοικεν
 ὑββάλλειν· χαλεπὸν γὰρ ἐπισταμένῳ περ ἐόντι. 80

ἀνδρῶν δ' ἐν πολλῷ ὁμάδῳ πῶς κέν τις ἀκούσαι
 ἢ εἴποι; βλάβεται δὲ λιγύς περ ἑὼν ἀγορητής.
 Πηλεΐδῃ μὲν ἐγὼν ἐνδείξομαι· αὐτὰρ οἳ ἄλλοι
 σύνθεσθ' Ἀργεῖοι, μῦθόν τ' εὖ γνῶτε ἕκαστος.
 πολλάκι δὴ μοι τοῦτον Ἀχαιοὶ μῦθον ἔειπον, 85

καὶ τέ με νεικέεσκον· ἐγὼ δ' οὐκ αἰτιὸς εἰμι,
 ἀλλὰ Ζεὺς καὶ μοῖρα καὶ ἡεροφοῖτις ἐρινύς,
 οἳ τέ μοι εἰν ἀγορῇ φρεσὶν ἔμβαλον ἄγριον ἄτην
 ἤματι τῷ, ὅτ' Ἀχιλλῆος γέρας αὐτὸς ἀπηύρων.
 ἀλλὰ τί κεν ῥέξαιμι; θεὸς διὰ πάντα τελευτᾷ. 90

πρέσβα Διὸς θυγάτηρ Ἄτη, ἣ πάντας ᾄται,
 οὐλομένη· τῇ μὲν θ' ἀπαλοὶ πόδες· οὐ γὰρ ἐπ' οὔδει
 πίλνεται, ἀλλ' ἄρα ἢ γε κατ' ἀνδρῶν κράατα βαίνει
 βλάπτουσ' ἀνθρώπους· κατὰ δ' οὖν ἕτερόν γε πέδησεν.
 καὶ γὰρ δὴ νύ ποτε Ζῆν' ἄσατο, τὸν περ ἄριστον 95
 ἀνδρῶν ἠδὲ θεῶν φασ' ἔμμεναι· ἀλλ' ἄρα καὶ τὸν
 Ἥρῃ θῆλυς ἐοῦσα δολοφροσύνης ἀπάτησεν
 ἤματι τῷ, ὅτ' ἔμελλε βίην Ἑρακλείην

Ἀλκμήνη τέξεσθαι εὐστεφάνῳ ἐνὶ Θῆβῃ.
 ἦ τοι ὃ γ' εὐχόμενος μετέφη πάντεσσι θεοῖσιν· 100
 „κέκλυτέ μευ, πάντες τε θεοὶ πᾶσαι τε θείαιναι,
 ὄφρ' εἴπω, τὰ με θυμὸς ἐνὶ στήθεσσιν ἀνώγει.
 σήμερον ἄνδρα φώωσδε μογοστόκος ἔϊλειθυνα
 ἐκφανεῖ, ὃς πάντεσσι περικτιόνεσσιν ἀνάξει,
 τῶν ἀνδρῶν γενεῆς, οἳ θ' αἵματος ἐξ ἐμεῦ εἰσίν.“ 105
 τὸν δὲ δολοφρονέουσα προσηύδα πότνια Ἥρη·
 „ψευστήσεις, οὐδ' αὖτε τέλος μύθῳ ἐπιθήσεις.
 εἰ δ' ἄγε νῦν μοι ὅμοσον, Ὀλύμπιε, καρτερὸν ὄρκον,
 ἦ μὲν τὸν πάντεσσι περικτιόνεσσιν ἀνάξειν,
 ὃς κεν ἐπ' ἡματι τῷδε πέσῃ μετὰ ποσσὶ γυναικὸς 110
 τῶν ἀνδρῶν, οἳ σῆς ἐξ αἵματος εἰσι γενέθλης.“
 ὣς ἔφατο· Ζεὺς δ' οὗ τι δολοφροσύνην ἐνόησεν,
 ἀλλ' ὅμοσεν μέγαν ὄρκον, ἔπειτα δὲ πολλὸν ἀάσθη.
 Ἥρη δ' ἀίξασα λίπεν ῥίον Οὐλύμπιοι,
 καρπαλίμως δ' ἵκετ' Ἄργος Ἀχαικόν, ἐνθ' ἄρα ἦδη 115
 ἰφθίμην ἄλοχον Σθενέλου Περσηιάδαο.
 ἦ δ' ἐκῦει φίλον υἱόν, ὃ δ' ἔβδομος ἐστήκει μείς·
 ἐκ δ' ἄγαγε πρὸ φώωσδε καὶ ἡλιτόμηνον ἔοντα,
 Ἀλκμήνης δ' ἀπέπαυσε τόκον, σχέθε δ' ἔϊλειθυίας.
 αὐτὴ δ' ἀγγελέουσα Δία Κρονίωνα προσηύδα· 120
 „Ζεῦ πάτερ ἀργικέραυνε, ἔπος τί τοι ἐν φρεσὶ θήσω.
 ἦδη ἀνὴρ γέγον' ἐσθλός, ὃς Ἀργείοισιν ἀνάξει,
 Εὐρυσθεὺς Σθενέλοιο πάϊς Περσηιάδαο,
 σὸν γένος· οὗ οἱ ἀεικὲς ἀνασσέμεν Ἀργείοισιν.“
 ὣς φάτο, τὸν δ' ἄχος ὀξὺ κατὰ φρένα τύψε βαθεῖαν. 125
 αὐτίκα δ' εἶλ' Ἀθην κεφαλῆς λιπαροπλοκάμιοι
 χωόμενος φρεσὶν ἦσι, καὶ ὤμοσε καρτερὸν ὄρκον
 μή ποτ' ἐς Οὐλυμπόν τε καὶ οὐρανὸν ἀστερόεντα
 αὐτίς ἐλεύσεσθαι Ἀθην, ἣ πάντας αἶται.

ὥς εἰπὼν ἔρριψεν ἅπ' οὐρανοῦ ἄστερόεντος 130
 χειρὶ περιστρέψας, τάχα δ' ἔικετο ἔργ' ἀνθρώπων.
 τὴν αἰεὶ στενάχεσθ', ὅθ' ἐὼν φίλον υἷον ὀρώτω
 ἔργον ἀεικέες ἔχοντα ὑπ' Εὐρύσθηος ἀέθλων.
 ὥς καὶ ἐγὼν, ὅτε δὴ αὐτε μέγας κορυθαίολος Ἴκτωρ
 Ἀργείους ὀλέκεσκεν ἐπὶ πρυμνήσι νέεσσιν, 135
 οὐ δύναμην λελαθέσθ' ἄτης, ἣ πρῶτον ἀάσθην.
 ἀλλ' ἐπεὶ ἀσάμην καὶ μεν φρένας ἐξέλετο Ζεὺς,
 ἅψ ἐθέλω ἀρέσαι, δόμεναί τ' ἀπερείσι' ἄποινα·
 ἀλλ' ὄρσεν πολεμόνδε, καὶ ἄλλους ὀρυνυθι λαούς.
 δῶρα δ' ἐγὼν ὅδε πάντα παρασχέμεν, ὅσσα τοι ἐλθὼν 140
 χθιζὸς ἐνὶ κλισίῃσιν ὑπέσχετο δῖος Ὀδυσσεύς.
 εἰ δ' ἐθέλεις, ἐπίμεινον ἐπειγόμενός περ Ἄρῃος·
 δῶρα δέ τοι θεράποντες ἐμῆς παρὰ νηὸς ἐλόντες
 οἴσουσ', ὅφρα ἰδῇαι, ὅ τοι μενοεικέα δώσω.“

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „Ἄτρεϊδῃ κύδιστε, ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγάμεμνον, 146
 δῶρα μὲν, αἶ κ' ἐθέλησθα, παρασχέμεν, ὥς ἐπιεικές,
 ἣ τ' ἐχέμεν· πάρα σοί. νῦν δὲ μνησώμεθα χάρμης
 αἵψα μάλ'· οὐ γὰρ χρὴ κλοτοπεύειν ἐνθάδ' ἐόντας
 οὐδὲ διατρίβειν· ἔτι γὰρ μέγα ἔργον ἄρεκτον· 150
 [ὥς κέ τις αὐτ' Ἀχιλῆα μετὰ πρῶτοισιν ἰδῇται
 ἔγχει χαλκίῳ Τρώων ὀλέκοντα φάλαγγας,
 ὥδέ τις ὑμείων μεμνημένος ἀνδρὶ μαχέσθω.]“

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς·
 „μὴ δὴ οὕτως, ἀγαθός περ ἐὼν, θεοεικέλ' Ἀχιλλεῦ, 155
 νήστιας ὅτρυνε προτὶ Ἴλιον υἷας Ἀχαιῶν
 Τρωσὶ μαχησομένους, ἐπεὶ οὐκ ὀλίγον χρόνον ἔσται
 φύλοπις, εὗτ' ἂν πρῶτον ὁμιλήσωσι φάλαγγες
 ἀνδρῶν, ἐν δὲ θεὸς πνεύσῃ μένος ἀμφοτέροισιν·
 ἀλλὰ πάσασθαι ἔνωχθι θοῆς ἐπὶ νηυσὶν Ἀχαιοὺς 160

σίτου καὶ οἴνοιο· τὸ γὰρ μένος ἐστὶ καὶ ἀλκή.
 οὐ γὰρ ἀνὴρ πρόπαν ἡμαρ ἐς ἡέλιον καταδύντα
 ἔκμηνος σίτοιο δυνήσεται ἅντα μάχεσθαι·
 εἰ περ γὰρ θυμῷ γε μενοινάα πολεμίζειν,
 ἀλλὰ τε λάθρη γυῖα βαρύνεται, ἥδὲ κιχάνει 165
 δίψα τε καὶ λιμός, βλάβεται δέ τε γούνατ' ἰόντι.
 ὃς δέ κ' ἀνὴρ οἴνοιο κορρυσσάμενος καὶ ἐδωδῆς
 ἀνδράσι δυσμενέεσσι πανημέριος πολεμίζῃ,
 θαρσαλέον νύ οἱ ἦτορ ἐνὶ φρεσίν, οὐδέ τι γυῖα
 πρὶν κάμνει, πρὶν πάντας ἐρωῆσαι πολέμοιο. 170
 ἀλλ' ἔγε λαὸν μὲν σκέδασον καὶ δεῖπνον ἄνωχθι
 ὀπλεσθαι, τὰ δὲ δῶρα ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων
 οἰσέτω ἐς μέσσην ἀγορήν, ἵνα πάντες Ἀχαιοὶ
 ὀφθαλμοῖσιν ἴδωσι, σὺ δὲ φρεσὶ σῆσιν ἰανθῆς.
 ὁμνυέτω δέ τοι ὄρκον, ἐν Ἀργείοισιν ἀναστάς, 175
 μή ποτε τῆς εὐνῆς ἐπιβήμεναι ἥδὲ μιγῆναι,
 [ἢ θέμις ἐστίν, ἄναξ, ἢ τ' ἀνδρῶν ἢ τε γυναικῶν·]
 καὶ δὲ σοὶ αὐτῷ θυμὸς ἐνὶ φρεσὶν ἴλαος ἔστω.
 αὐτὰρ ἔπειτά σε δαιτὶ ἐνὶ κλισίῃς ἀρρυσάσθω
 πιείρῃ, ἵνα μή τι δίκης ἐπιδευλὲς ἔχῃσθα· 180
 Ἀτρεΐδῃ, σὺ δ' ἔπειτα δικαιότερος καὶ ἐπ' ἄλλῳ
 ἔσσειαι· οὐ μὲν γάρ τι νεμεσσητὸν βασιλῆα
 ἄνδρ' ἀπαρέσσασθαι, ὅτε τις πρότερος χαλεπήνῃ.“
 τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων·
 „χαίρω σεῦ, Λαερτιάδῃ, τὸν μῦθον ἀκούσας· 185
 ἐν μοίρῃ γὰρ πάντα δίκαιο καὶ κατέλεξας.
 ταῦτα δ' ἐγὼν ἐθέλω ὁμόσαι, κέλεται δέ με θυμός,
 οὐδ' ἐπιорκήσω πρὸς δαίμονος. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 μιμνέτω αὐτόθι τεῖλος ἐπειγόμενός περ Ἄρης,
 μίμνετε δ' ἄλλοι πάντες ἀολλέες, ὄφρα κε δῶρα 190
 ἐκ κλισίῃς ἔλθῃσι καὶ ὄρκια πιστὰ τάμωμεν.

σοι δ' αὐτῷ τόδ' ἐγὼν ἐπιτέλλομαι ἥδ' κελεύω·
 κρινάμενος κούρητας ἀριστήας Παναχαιῶν
 δῶρα ἐμῆς παρὰ νηὸς ἐνειαίμεν, ὅσσ' Ἀχιλλῆι
 χθιζὸν ὑπέστημεν δώσειν, ἀγέμεν τε γυναικάς. 195
 Ταλθύβιος δέ μοι ὦκα κατὰ στρατὸν εὐρὺν Ἀχαιῶν
 κάπρον ἐτοιμασάτω, ταμέειν Διί τ' Ἡελίῳ τε.“

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „Ἄτρεϊδῃ κύδιστε, ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγάμεμνον,
 ἄλλοτὲ περ καὶ μᾶλλον ὀφέλλετε ταῦτα πένεσθαι, 200
 ὅππότε τις μεταπαυσωλὴ πολέμοιο γένηται
 καὶ μένος οὐτόσον ἦσιν ἐνὶ στήθεσσιν ἐμοῖσιν.
 νῦν δ' οἱ μὲν κέεται δεδαλγμένοι, οὓς ἐδάμασσεν
 Ἐκτωρ Πριαμίδης, ὅτε οἱ Ζεὺς κῦδος ἔδωκεν,
 ὑμεῖς δ' ἐς βρωτῶν ὀτρύνετον. ἦ τ' ἂν ἐγὼ γε 205
 νῦν μὲν ἀνῶγοιμι πτολεμίζειν υἱας Ἀχαιῶν
 νήστιας ἀκμήνους, ἅμα δ' ἡελίῳ καταδύντι
 τεύξεσθαι μέγα δόρπον, ἐπὴν τισαίμεθα λῶβην.
 πρὶν δ' οὗ πως ἂν ἐμοί γε φίλον κατὰ λαιμὸν ἰεῖη
 οὐ πόσις οὐδὲ βρῶσις, ἐταίρου τεθνηῶτος, 210
 ὅς μοι ἐνὶ κλισίῃ δεδαλγμένος ὀξεί χαλκῷ
 κεῖται, ἀνὰ πρόθυρον τετραμμένος, ἀμφὶ δ' ἐταῖροι
 μύρονται· τό μοι οὗ τι μετὰ φρεσὶ ταῦτα μέμηλεν,
 ἀλλὰ φόνος τε καὶ αἷμα καὶ ἀργαλέος στόνος ἀνδρῶν.“

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πολύμητις Ὀδυσσεύς· 215
 „ὦ Ἀχιλεῦ Πηληϊὸς υἱέ, μέγα φέρτατ' Ἀχαιῶν,
 κρείσσων εἰς ἐμέθεν καὶ φέρτερος οὐκ ὀλίγον περ
 ἔγχει, ἐγὼ δέ κε σεῖο νοήματί γε προβαλοίμην
 πολλόν, ἐπεὶ πρότερος γενόμην καὶ πλείονα οἶδα.
 τῷ τοι ἐπιτλήτω κραδίη μύθοισιν ἐμοῖσιν. 220
 αἰψά τε φυλόπιδος πέλεται κόρος ἀνθρώποισιν,
 ἥς τε πλείστην μὲν καλὰμην χθονὶ χαλκὸς ἔχενεν,

ἄμητος δ' ὀλίγιστος, ἐπὴν κλίνῃσι τάλαντα
 Ζεὺς, ὅς τ' ἀνθρώπων ταμὴς πολέμοιο τέτυκται.
 γαστέρι δ' οὐ πως ἔστι νέκυν πενθῆσαι Ἀχαιοὺς· 225
 λῆν γὰρ πολλοὶ καὶ ἐπήτριμοι ἤματα πάντα
 πίπτουσιν· πότε κέν τις ἀναπνεύσειε πόνοιο;
 ἀλλὰ χρεὶ τὸν μὲν καταθάπτειν, ὅς κε θάνῃσιν,
 νηλέα θυμὸν ἔχοντας, ἐπ' ἤματι δακρύναντας·
 ὅσσοι δ' ἂν πολέμοιο περὶ στυγεροῖο λίπωνται, 230
 μεμνησθαι πόσιος καὶ ἐδητύος, ὅφρ' ἔτι μᾶλλον
 ἀνδράσι δυσμενέεσσι μαχώμεθα νωλεμέσσι αἰεὶ,
 ἐσσάμενοι χροὶ χαλκὸν ἀτειρέα. μηδὲ τις ἄλλην
 λαῶν ὀτρυντὸν ποτιδέγμενος ἰσχαναάσθω·
 ἦδε γὰρ ὀτρυντὸς κακὸν ἔσσειται, ὅς κε λίπηται 235
 νηυσὶν ἐπ' Ἀργείων· ἀλλ' ἄθροοι δρμηθέντες
 Τρωσὶν ἐφ' ἱπποδάμοισιν ἐγείρομεν ὄξυν Ἄρηα·
 ἧ καὶ Νέστορος νῆας ὀπάσσατο κυδαλίμοιο
 Φυλεῖδην τε Μέγητα Θόαντά τε Μηριόνην τε
 καὶ Κρειαυτιάδην Λυκομήδεα καὶ Μελάνιππον. 240
 βᾶν δ' ἴμεν ἐς κλισίην Ἀγαμέμνονος Ἀτρεΐδαο.
 αὐτίκ' ἐπειθ' ἅμα μῦθος ἦν τετέλεστό τε ἔργον·
 ἐπὶ μὲν ἐκ κλισίης τρίποδας φέρον, οὓς οἱ ὑπέστη,
 αἰθωνας δὲ λέβητας εἴκοσι, δῶδεκα δ' ἵππους·
 ἐκ δ' ἄγον αἶψα γυναικας ἀμύμονα ἔργα ἰδυίας 245
 ἔπτ', ἀτὰρ ὀγδοάτην Βρισηίδα καλλιπάρῃον.
 χρυσοῦ δὲ στήσας Ὀδυσσεὺς δέκα πάντα τάλαντα
 ἦρχ', ἅμα δ' ἄλλοι δῶρα φέρον κούρητες Ἀχαιῶν.
 καὶ τὰ μὲν ἐν μέσση ἀγορῇ θέσαν, ἃν δ' Ἀγαμέμνων
 ἵστατο· Ταλθύβιος δὲ θεῶ ἑναλγίχιος αὐδὴν 250
 κάπρον ἔχων ἐν χερσὶ παρίστατο ποιμένι λαῶν.
 Ἀτρεΐδης δὲ ἐρυσσάμενος χεῖρεσσι μάχαιραν,
 ἧ οἱ παρ' ξίφεος μέγα κουλεὸν αἶεν ἄωτο,

κάπρου ἀπὸ τρίχας ἀρξάμενος, Διὶ χεῖρας ἀνασχὼν
εὖχετο· τοὶ δ' ἄρα πάντες ἐπ' αὐτόφιν εἶατο σιγῇ 255
'Αργεῖοι κατὰ μοῖραν, ἀκούοντες βασιλῆος.

εὖξάμενος δ' ἄρα εἶπεν ἰδὼν εἰς οὐρανὸν εὐρύν·
„Ἰστω νῦν Ζεὺς πρῶτα, θεῶν ὑπατος καὶ ἄριστος,
γῇ τε καὶ ἡέλιος καὶ ἐρινύες, αἷ θ' ὑπὸ γαῖαν
ἄνθρωπους τίνυνται, ὅτις κ' ἐπίορκον ὁμόσση, 260
μὴ μὲν ἐγὼ κούρη Βρισηίδι χεῖρ' ἐπένεικα,
οὔτ' εὐνῆς πρόφασιν κεχρημένος οὔτε τευ ἔλλου·
ἀλλ' ἔμεν' ἀπροτίμαστος ἐνὶ κλισίῃσιν ἐμῇσιν.
εἰ δέ τι τῶνδ' ἐπίορκον, ἐμοὶ θεοὶ ἄλγεα δοῖεν
πολλὰ μάλ', ὅσσα διδοῦσιν, ὃ τέ σφ' ἀλίστηται ὁμόσσας.“

ἥ καὶ ἀπὸ στόμαχον κάπρου τάμε νηλεί χαλκῷ· 266
τὸν μὲν Ταλθύβιος πολιῆς ἄλδς ἐς μέγα λαῖτμα
ῤῥψ' ἐπιδινήσας, βόσιν ἰχθύσιν· αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
ἄνστας Ἀργείοισι φιλοπτολέμοισι μετηύδα·

„Ζεῦ πάτερ, ἥ μεγάλας ἄτας ἄνδρεςσι διδοῖσθα. 270
οὐκ ἂν δὴ ποτε θυμὸν ἐνὶ στήθεσσιν ἐμοῖσιν
'Ατρεΐδης ὥρине διαμπερές, οὐδέ κε κούρην
ἤγεν ἐμεῦ ἀέκοντος ἀμήχανος· ἀλλὰ ποθι Ζεὺς
ἤθελ' Ἀχαιοῖσιν θάνατον πολέεσσι γενέσθαι.

νῦν δ' ἐρχεσθ' ἐπὶ δαίπνον, ἵνα ξυνάγωμεν Ἄρηα.“ 275

ὥς ἄρ' ἐφώνησεν, λῦσεν δ' ἀγορὴν αἰψηρήν.
οἱ μὲν ἄρ' ἐσκίδναντο ἐὴν ἐπὶ νῆα ἕκαστος,
δῶρα δὲ Μυρμιδόνες μεγαλήτορες ἀμφεπένοντο,
βᾶν δ' ἐπὶ νῆα φέροντες Ἀχιλλῆος θεῖοιο·
καὶ τὰ μὲν ἐν κλισίῃσι θέσαν, κάθισαν δὲ γυναικας,
ἵππους δ' εἰς ἀγέλην ἔλασαν θεράποντες ἀγαυοί. 281

Βρισηῖς δ' ἄρ' ἐπειτ', ἰκέλη χροσέῃ Ἀφροδίτῃ,
ὥς ἶδε Πάτροκλον δεδαλγμένον ὀξεί χαλκῷ,
ἀμφ' αὐτῷ χυμένη λίγ' ἐκώκυε, χερσὶ δ' ἄμυσσεν

στήθεά τ' ἦδ' ἀπαλήν δειρὴν ἰδὲ καλὰ πρόσωπα. 285
εἶπε δ' ἄρα κλαίουσα γυνὴ ἔκλυα θεῆσιν·

„Πάτροκλέ μοι δειλὴ πλείστον κεχαρισμένε θυμῷ,
ζῶν μὲν σε ἔλειπον ἐγὼ κλισίῃθεν ἰοῦσα,
νῦν δέ σε τεθνηῶτα κιχάνομαι, ὄρχαμε λαῶν,
ἄψ ἀνιοῦσ'· ὧς μοι δέχεται κακὸν ἐκ κακοῦ αἰεί. 290
ἄνδρα μὲν, ᾧ ἔδοσάν με πατήρ καὶ πότνια μήτηρ,
εἶδον πρὸ πτόλιος δεδαλγμένον ὀξεί χαλκῷ,
τρεις τε κασιγνήτους, τοὺς μοι μία γέλνατο μήτηρ,
κηδείους, οἳ πάντες ὀλέθριον ἡμᾶρ ἐπέσπον.
οὐδὲ μὲν οὐδέ μ' ἔασκες, ὅτ' ἄνδρ' ἐμὸν ὠκὺς Ἀχιλλεύς
ἐκτείνειν, πέρσεν δὲ πόλιν θείοιο Μύνητος, 296
κλαίειν, ἀλλὰ μ' ἔφασκες Ἀχιλλῆος θείοιο
κουριδίην ἄλοχον θήσειν, ἄξειν δ' ἐνὶ νηυσὶν
εἰς Φθίην, δαίσειν δὲ γάμον μετὰ Μυρμιδόνεσσιν.
τῷ σ' ἄμοτον κλαίω τεθνηῶτα, μείλιχον αἰεί.“ 300

ὧς ἔφατο κλαίουσ', ἐπὶ δὲ στενάχοντο γυναῖκες,
Πάτροκλον πρόφασιν, σφῶν δ' αὐτῶν κήδε' ἐκάστη.
αὐτὸν δ' ἀμφὶ γέροντες Ἀχαιῶν ἠγερέθοντο
λίσσόμενοι δειπνῆσαι· ὁ δ' ἠρνεῖτο στεναχίζων·
„λίσσομαι, εἴ τις ἐμοί γε φίλων ἐπιπείθεθ' ἐταίρων, 306
μὴ με πρὶν σίτοιο κελεύετε μηδὲ ποτῆτος
ἄσασθαι φίλον ἦτορ, ἐπεὶ μ' ἄχος αἰνὸν ἰκάνει.
δύντα δ' ἐς ἥελιον μενέω καὶ τλήσομαι ἔμπης.“

ὧς εἰπὼν ἄλλους μὲν ἀπεσκέδασεν βασιλῆας,
δοιῶ δ' Ἀτρεΐδα μενέτην καὶ δῖος Ὀδυσσεύς, 310
Νέστωρ Ἰδομενεύς τε γέρων θ' ἱππηλάτα Φοῖνιξ,
τέρποντες πυκινῶς ἀκαχήμενον· οὐδέ τι θυμῷ
τέρπετο πρὶν πολέμου στόμα δύμεναι αἱματόεντος.
μνησάμενος δ' ἀδινῶς ἀνενείκατο φώνησέν τε·

„ἦ ῥά νύ μοί ποτε καὶ σύ, δυσάμμορε, φίλταθ' ἐταίρων,

αὐτὸς ἐνὶ κλισίῃ λαρὸν παρὰ δειπνον ἔθηκας 316
 αἶψα καὶ ὀτραλέως, ὁπότε σπερχοῖαι' Ἀχαιοὶ
 Τρωσὶν ἐφ' ἱπποδάμοισι φέρειν πολύδακρον Ἄρηα.
 νῦν δὲ σὺ μὲν κεῖσαι δεδαλγμένος, αὐτὰρ ἐμὸν κῆρ
 ἄκμηνον πόσιος καὶ ἔδητύος, ἔνδον ἐόντων, 320
 σῆ ποθῆ. οὐ μὲν γάρ τι κακώτερον ἄλλο πάθοιμι,
 οὐδ' εἰ κεν τοῦ πατρὸς ἀποφθιμένοιο πνυθόιμην,
 ὅς που νῦν Φθίῃφι τέρεν κατὰ δάκρυον εἶβει
 χήτει τοιοῦδ' υἱός· ὁ δ' ἄλλοδαπῷ ἐνὶ δῆμῳ
 εἵνεκα ριγεθανῆς Ἑλένης Τρωσὶν πολεμίζω· 325
 ἥε τόν, ὅς Σκύρῳ μοι ἐνὶ τρέφεται φίλος υἱός,
 [εἰ που ἐτι ζῶει γε Νεοπτόλεμος θεοειδής.]
 πρὶν μὲν γάρ μοι θυμὸς ἐνὶ στήθεσσιν ἐώλπειν
 οἶον ἐμὲ φθίσεσθαι ἀπ' Ἄργεος ἱπποβότοιο
 αὐτοῦ ἐνὶ Τροίῃ, σὲ δέ τε Φθίῃνδε νέεσθαι, 330
 ὥς ἄν μοι τὸν παῖδα θοῇ ἐνὶ νηὶ μελαίνῃ
 Σκυρόθεν ἐξαγάγοις καὶ οἱ δειξείας ἕκαστα,
 κτήσιν ἐμὴν, δμῳάς τε καὶ ὑπερφεῖς μέγα δῶμα.
 ἦδη γὰρ Πηλῆϊά γ' ὀλομαι ἢ κατὰ πάμπαν
 τεθνάμεν, ἢ που τυτθὸν ἐτι ζῶοντ' ἀνάχρησθαι 335
 γήραϊ τε στυγερῷ καὶ ἐμὴν ποτιδέγμενον αἰεὶ
 λυγρὴν ἀγγελίην, ὅτ' ἀποφθιμένοιο πύθηται.

ὥς ἔφατο κλαίων, ἐπὶ δὲ στενάχοντο γέροντες,
 μνησάμενοι, τὰ ἕκαστος ἐνὶ μεγάροισιν ἔλειπον.
 μυρομένους δ' ἄρα τοὺς γε ἰδὼν ἐλέησε Κρονίων, 340
 αἶψα δ' Ἀθηναίην ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „τέκνον ἐμόν, δὴ πάμπαν ἀποίχεται ἀνδρὸς ἧτος.
 ἦ νῦ τοι οὐκέτι πάγχυ μετὰ φρεσὶ μέμβλετ' Ἀχιλλεύς;
 κείνος δ' γε προπάρειθε νεῶν ὀρθοκραιράων
 ἦσται ὀδυρόμενος ἕταρον φίλον· οἱ δὲ δὴ ἄλλοι 345
 οἴχονται μετὰ δειπνον, ὁ δ' ἄκμηνος καὶ ἄπαστος.

ἀλλ' ἴθι οἱ νέκταρ τε καὶ ἀμβροσίην ἐρατεινὴν
στάξον ἐνὶ στήθεσσ', ἵνα μὴ μιν λιμὸς ἴκηται.“

ὥς εἰπὼν ὥτρυνε πάρος μεμαυῖαν Ἀθήνην·
ἣ δ' ἄρπη ἐκυῖα τανυπτέρυγι λιγυφώνῳ 350
οὐρανοῦ ἐκκατέπαλτο δι' αἰθέρος. αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
αὐτίκα θωρήσσοντο κατὰ στρατόν· ἣ δ' Ἀχιλλῆι
νέκταρ ἐνὶ στήθεσσι καὶ ἀμβροσίην ἐρατεινὴν
στάξ', ἵνα μὴ μιν λιμὸς ἀτερπῆς γούναθ' ἴκηται,
αὐτὴ δὲ πρὸς πατρός ἐρισθενέος πυνκινὸν δῶ 355
ᾤχετο. τοὶ δ' ἀπάνευθε νεῶν ἐχέοντο θοάων.
ὥς δ' ὅτε ταρφειαὶ νιφάδες Διὸς ἐκποτέονται
ψυχραί, ὑπὸ φίπῃς αἰθρηγενέος Βορέας,
ὥς τότε ταρφειαὶ κόρυθες λαμπρὸν γανώσσαι
νηῶν ἐκφορέοντο καὶ ἀσπίδες ὀμφαλόεσσαι 360
θώρηκές τε κραταιογύαλοι καὶ μέλινα δοῦρα.
αἰγλή δ' οὐρανὸν ἵκε, γέλασσε δὲ πᾶσα περὶ χθῶν
χαλκοῦ ὑπὸ στεροπῆς· ὑπὸ δὲ κτύπος ὥρνυτο ποσσὶν
ἀνδρῶν· ἐν δὲ μέσοισι κορύσσετο δῖος Ἀχιλλεύς.
[τοῦ καὶ ὀδόντων μὲν καναχῇ πέλε, τῷ δὲ οἱ ὄσσε 365
λαμπέσθην ὥς εἴ τε πυρὸς σέλας, ἐν δὲ οἱ ἦτορ
δύν' ἄχος ἄτλητον· ὁ δ' ἄρα Τρωσὶν μενεαίνων
δύσετο δῶρα θεοῦ, τὰ οἱ Ἥφαιστος κάμε τεύχων.]
κνημίδας μὲν πρῶτα περὶ κνήμησιν ἔθηκεν
καλὰς, ἀργυρέοισιν ἐπισφυρίοις ἀραρυίας· 370
δεύτερον αὖ θώρηκα περὶ στήθεσσιν ἔδυνεν.
ἀμφὶ δ' ἄρ' ὥμοισιν βάλετο ξίφος ἀργυρόηλον
χάλκεον· αὐτὰρ ἔπειτα σάκος μέγα τε στιβαρόν τε
εἵλετο, τοῦ δ' ἀπάνευθε σέλας γένετ' ἥυτε μήνης.
ὥς δ' ὅτ' ἂν ἐκ πόντοιο σέλας ναύτησι φανήῃ 375
καιομένοιο πυρός· τὸ δὲ καλεῖται ὑψόθ' ὄρεσφιν
σταθμῷ ἐν οἰοπόλῳ· τοὺς δ' οὐκ ἐθέλοντας ἄλλαι

πόντον ἐπ' ἰχθυόεντα φίλων ἀπάνευθε φέρουσιν·
 ὥς ἀπ' Ἀχιλλῆος σάκεος σέλας αἰθέρ' ἴκανεν
 καλοῦ δαιδαλέου. περὶ δὲ τρυφάλειαν αἰέρας 380
 κρατὶ θέτο βριαρὴν· ἥ δ' ἀστήρ ὥς ἀπέλαμπεν
 ἵππουρις τρυφάλεια, περισσεύοντο δ' ἐθιραι
 χρύσειαι, ἃς Ἥφαιστος ἵει λόφον ἀμφὶ θαμειάς.
 πειρήθη δ' ἔο αὐτοῦ ἐν ἔντεσι διος Ἀχιλλεύς,
 εἰ οἱ ἐφαρμόσσειε καὶ ἐντρέχοι ἀγλαὰ γυῖα· 385
 τῷ δ' εὖτε πτερὰ γίγνεται, ἄειρε δὲ ποιμένα λαῶν.
 ἐκ δ' ἄρα σύριγγος πατρώιον ἐσπάσατ' ἔγχος
 βριθὺν μέγα στιβαρόν· τὸ μὲν οὐ δύνατ' ἄλλος Ἀχαιῶν
 πάλλειν, ἀλλὰ μιν οἷος ἐπίστατο πῆλαι Ἀχιλλεύς,
 Πηλιάδα μελίην, τὴν πατρὶ φίλῳ πόρε Χείρων 390
 Πηλίου ἐκ κορυφῆς, φόνον ἔμμεναι ἠρώεσσιν.
 ἵππους δ' Αὐτομέδων τε καὶ Ἀλκιμος ἀμφιέποντες
 ζεύγνυνον· ἀμφὶ δὲ καλὰ λέπαδν' ἔσαν, ἐν δὲ χαλινούς
 γαμφηλῆς ἔβαλον, κατὰ δ' ἠγία τείναν ὀπίσσω
 κολλητὸν ποτὶ δίφρον. ὁ δὲ μάλιστα φαινήν 395
 χειρὶ λαβὼν ἀραρυῖαν ἐφ' ἵπποιιν ἀνόρουσεν
 Αὐτομέδων· ὀπιθεν δὲ κορυσσάμενος βῆ Ἀχιλλεύς
 τεύχεσι καμφαίνων ὥς τ' ἠλέκτωρ Ὑπερίων.
 σμερδαλέον δ' ἵπποισιν ἐκέκλετο πατρὸς ἑοῖο·
 „Ξάνθε τε καὶ Βαλῖε, τηλεκλυτὰ τέκνα Ποδάργης, 400
 ἄλλως δὴ φράζεσθε σαωσέμεν ἡνιοχῆα
 ἄψ Δαναῶν ἐς δμίλον, ἐπεὶ χ' ἐῷμεν πολέμοιο,
 μηδ' ὥς Πάτροκλον λίπει· αὐτόθι τεθνηῶτα.“
 τὸν δ' ἄρ' ὑπὸ ζυγόφῃ προσέφη πόδας αἰόλος ἵππος
 Ξάνθος, ἄφαρ δ' ἤμυσσε καρήατι, πᾶσα δὲ χαίτη 405
 ζεύγλης ἔξεριποῦσα παρὰ ζυγὸν οὐδας ἴκανεν·
 αὐδήεντα δ' ἔθηκε θεά, λευκώλενος Ἥρη·
 „καὶ λίην σ' ἔτι νῦν γε σαώσομεν, ὄβριμ' Ἀχιλλεῦ·

ἀλλὰ τοι ἐγγύθεν ἤμαρ ὀλέθριον· οὐδέ τοι ἡμεῖς
 αἵτιοι, ἀλλὰ θεός τε μέγας καὶ μοῖρα κραταίη. 410
 οὐδὲ γὰρ ἡμετέρῃ βραδυτῇτι τε νωχελίῃ τε
 Τρῶες ἀπ' ὧμοιιν Πατρόκλου τεύχε' ἔλοντο·
 ἀλλὰ θεῶν ὄριστος, δν ἠύκομος τέκε Λητώ,
 ἔκταν' ἐνὶ προμάχοισι καὶ Ἑκτορι κῦδος ἔδωκεν.
 νῶϊ δὲ καὶ κεν ἄμα πνοιῇ Ζεφύροιο θέοιμεν, 415
 ἦν περ ἐλαφροτάτην φάσ' ἔμμεναι· ἀλλὰ σοὶ αὐτῷ
 μόρσιμόν ἐστι θεῶ τε καὶ ἀνέρι ἴφι δαμῆναι.“

ὥς ἄρα φωνήσαντος ἐρινύες ἔσχεθον αὐδὴν.
 τὸν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „Ἐάνθε, τί μοι θάνατον μαντεύεαι; οὐδέ τί σε χρὴ. 420
 εὖ νύ τοι οἶδα καὶ αὐτός, ὃ μοι μόρος ἐνθάδ' ὀλέσθαι,
 νόσφι φίλου πατρὸς καὶ μητέρος· ἀλλὰ καὶ ἔμψης
 οὐ λήξω πρὶν Τρῶας ἄδην ἐλάσαι πολέμοιο.“
 ἦ ῥα καὶ ἐν πρώτοις ἰάχων ἔχε μώνυχας ἵππους.

ΙΛΙΑΔΟΣ Τ.

Θεομαχία.

ὥς οἱ μὲν παρὰ νηυσὶ κορωνίσι θωρήσσοντο
 ἀμφὶ σέ, Πηλέος υἱέ, μάχης ἀκόρητον Ἀχαιοί,
 Τρῶες δ' αὐτ' ἐτέρωθεν ἐπὶ θρωσμῷ πεδίοιο·
 Ζεὺς δὲ Θέμιστα κέλευσε θεοὺς ἀγορήνδε καλέσσαι
 κρατὸς ἀπ' Οὐλύμποιο πολυπτύχου· ἦ δ' ἄρα πάντῃ ὅ
 φοιτήσασα κέλευσε Διὸς πρὸς δῶμα νέεσθαι.
 οὔτε τις οὖν ποταμῶν ἀπέην, νόσφ' Ὠκεανοῖο,
 οὔτ' ἄρα νυμφῶν, αἳ τ' ἄλσεα καλὰ νέμονται
 καὶ πηγὰς ποταμῶν καὶ πίσσα ποιήεντα.

ἐλθόντες δ' ἐς δῶμα Διὸς νεφεληγερέταο 10
 ξεστῆς αἰθούσῃσιν ἐνίζανον, ἃς Διὶ πατρὶ
 Ἥφαιστος ποίησεν ἰδυίῃσι κραπίδεςσιν.

ὥς οἱ μὲν Διὸς ἐνδον ἀγγέρατ'· οὐδ' ἐνοσίχθων
 νηκούστησε θεᾶς, ἀλλ' ἐξ ἁλὸς ἦλθε μετ' αὐτούς,
 Ἴξε δ' ἄρ' ἐν μέσσοισι, Διὸς δ' ἐξείρετο βουλὴν· 15
 „τίπτ' αὐτ', ἀργικέραυνε, θεοὺς ἀγορήνδε κάλεσσας;
 ἥ τι περὶ Τρώων καὶ Ἀχαιῶν μερμηρίζεις;
 τῶν γὰρ νῦν ἄγχιστα μάχη πόλεμός τε δέδηεν.“

τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·
 „ἔγνως, ἐννοσίγαιε, ἐμὴν ἐν στήθεσι βουλὴν, 20
 ὧν ἔνεκα ξυνάγειρα· μέλουσί μοι ὀλλύμενοί περ.
 ἀλλ' ἦ τοι μὲν ἐγὼ μενέω πτυχὶ Οὐλύμποιο
 ἥμενος, ἐνθ' ὀρόων φρένα τέρψομαι· οἱ δὲ δὴ ἄλλοι
 ἐρχεσθ', ὄφρ' ἂν ἴκησθε μετὰ Τρῶας καὶ Ἀχαιοὺς,
 ἀμφοτέροισι δ' ἀρήγεθ', ὅπῃ νόος ἐστὶν ἐκάστων. 25
 εἰ γὰρ Ἀχιλλεὺς οἶος ἐπὶ Τρώεσσι μαχεῖται,
 οὐδὲ μίνυνθ' ἔξουσι ποδώκεα Πηλεΐωνα.

καὶ δέ τέ μιν καὶ πρόσθεν ὑποτρομέεσκον ὀρῶντες·
 νῦν δ', ὅτε δὴ καὶ θυμὸν ἐταίρου χῶεται αἰνῶς,
 δεῖδω, μὴ καὶ τείχος ὑπὲρ μόρον ἐξάλαπάξῃ.“ 30

ὥς ἔφατο Κρονίδης, πόλεμον δ' ἄλλαστον ἐγείρεν.
 βὰν δ' ἵμεναι πολεμόνδε θεοί, δίχα θυμὸν ἔχοντες·
 Ἥρη μὲν μετ' ἀγῶνα νεῶν καὶ Παλλὰς Ἀθήνη
 ἠδὲ Ποσειδάων γαιήοχος ἠδ' ἐριούνης
 Ἑρμείας, ὃς ἐπὶ φρεσὶ πευκαλίμῃσι κέκασται· 35
 Ἥφαιστος δ' ἅμα τοῖσι κίε σθένει βλεμεαῖνων
 χωλεύων, ὑπὸ δὲ κνήμαι ῥῶοντο ἀραιαί·
 ἐς δὲ Τρῶας Ἄρης κορυθαίολος, αὐτὰρ ἅμ' αὐτῷ
 Φοῖβος ἀκερσεκόμης ἠδ' Ἄρτεμις ἰοχέαιρα
 Αἰγυῖα τε Ξάνθος τε φιλομμειδῆς τ' Ἀφροδίτη. 40

εἴως μὲν ῥ' ἀπάνευθε θεοὶ θνητῶν ἔσαν ἀνδρῶν,
 τέλος Ἀχαιοὶ μὲν μέγ' ἐκύδανον, οὔνεκ' Ἀχιλλεύς
 ἐξεφάνη, δηρὸν δὲ μάχης ἐπέπαντ' ἀλεγεινῆς·
 Τρῶας δὲ τρόμος αἰνὸς ὑπήλυθε γυῖα ἕκαστον,
 δειδιότας, ὅθ' ὀρῶντο ποδώκεα Πηλεΐωνα 45
 τεύχεσι λαμπόμενον, βροτολογιῶ ἴσον Ἄρηι.
 αὐτὰρ ἐπεὶ μεθ' ὁμίλον Ὀλύμπιοι ἤλυθον ἀνδρῶν,
 ὦρτο δ' Ἔρις κρατερὴ λαοσσόος, αὖτε δ' Ἀθήνη,
 σταῖς' ὅτε μὲν παρὰ τάφρον ὀρυκτὴν τεύχεος ἐκτός,
 ἄλλοτ' ἐπ' ἀκτῶν ἐριδούπων μακρὸν αὐτεῖ· 50
 αὖτε δ' Ἄρης ἐτέρωθεν, ἐρεμνῇ λαίλαπι ἴσος,
 ὅξυ κατ' ἀκροτάτης πόλιος Τρώεσσι κελεύων,
 ἄλλοτε παρ Σιμόντι θέων ἐπὶ Καλλικολώνη.

ὧς τοὺς ἀμφοτέρους μάκαρες θεοὶ ὀτρύνοντες
 σύμβalon, ἐν δ' αὐτοῖς ἐριδα ῥήγγυντο βαρεῖαν. 55
 δεινὸν δὲ βρόντησε πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε
 ὑψόθεν· αὐτὰρ ἐνερθε Ποσειδάων ἐτίναξεν
 γαῖαν ἀπειρεσίην ὀρέων τ' αἰκεινὰ κάρηνα·
 πάντες δ' ἐσσεύοντο πόδες πολυπίδακος Ἴδης
 καὶ κορυφαί, Τρώων τε πόλις καὶ νῆες Ἀχαιῶν. 60
 ἔδεισεν δ' ὑπένερθεν ἄναξ ἐνέρον Ἀιδωνεύς,
 δείσας δ' ἐκ θρόνου ἄλτο καὶ ἱαχε, μὴ οἱ ὑπερθεν
 γαῖαν ἀναρρήξειε Ποσειδάων ἐνοσίχθων,
 οἰκία δὲ θνητοῖσι καὶ ἀθανάτοισι φανεῖη
 σμερδαλέ' εὐρώεντα, τά τε στρυγέουσι θεοὶ περ. 65
 τόσσος ἄρα κτύπος ὦρτο θεῶν ἐριδι ξυνιόντων.
 ἦ τοι μὲν γὰρ ἐναντα Ποσειδάωνος ἄνακτος
 ἵστατ' Ἀπόλλων Φοῖβος ἔχων ἰὰ πτερόεντα,
 ἄντα δ' ἐνναλίοιο θεά, γλανκῶπις Ἀθήνη·
 Ἥρη δ' ἀντέστη χρυσηλάκατος κελαδεινὴ 70
 Ἄρτεμις ἰοχέαιρα, κασιγνήτη ἐκάτοιο·

Ἀητοὶ δ' ἀντέστη σῶκος ἐριούνιος Ἑρμῆς,
ἅντα δ' ἄρ' Ἑφαιστοιο μέγας ποταμὸς βαθυδίνης,
ὃν Ξάνθον καλέουσι θεοί, ἄνδρες δὲ Σκάμανδρον.

ὥς οἱ μὲν θεοὶ ἅντα θεῶν ἴσαν· αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς τῷ
Ἕκτορος ἅντα μάλιστα λιλαίετο δύναι δμῖλον

Πριαμίδεω· τοῦ γάρ ῥα μάλιστά ἐ θυμὸς ἀνώγειν
αἵματος ἄσαι Ἄρην ταλαύρινον πολεμιστήν.

Αἰνείαν δ' ἰθὺς λαοσσόος ὥρσεν Ἀπόλλων
ἀντία Πηλεΐωνος, ἐνῆκε δέ οἱ μένος ἦν· 80

υἱέι δὲ Πριάμοιο Λυκάονι εἶσατο φωνήν·
τῷ μιν εἰσάμενος προσέφη Διὸς υἱὸς Ἀπόλλων·

„Αἰνεία Τρώων βουληφόρε, ποῦ τοι ἀπειλαί,
ἃς Τρώων βασιλεῦσιν ὑπίσχεο οἶνοποτάζων,
Πηλεΐδεω Ἀχιλλῆος ἐναντίβιον πολεμίζειν;“ 85

τὸν δ' αὖτ' Αἰνείας ἀπαμειβόμενος προσέειπεν·
„Πριαμίδη, τί με ταῦτα καὶ οὐκ ἐθέλοντα κελεύεις
ἀντία Πηλεΐωνος ὑπερθύμοιο μάχεσθαι;

οὐ μὲν γὰρ νῦν πρῶτα ποδώκεος ἄντ' Ἀχιλλῆος
στήσομαι, ἀλλ' ἤδη με καὶ ἄλλοτε δουρὶ φόβησεν 90
ἐξ Ἰδης, ὅτε βουσὶν ἐπήλυθεν ἡμετέρησιν,

πέρσσε δὲ Λυρνησσὸν καὶ Πήδασον· αὐτὰρ ἐμὲ Ζεὺς
εἰρύσαθ', ὃς μοι ἐπῶρσε μένος λαιψηρά τε γούνα.

ἦ κ' ἐδάμην ὑπὸ χερσὶν Ἀχιλλῆος καὶ Ἀθήνης,
ἦ οἱ πρόσθεν ἰούσα τίθει φάος ἠδὲ κέλευεν 95
ἔγγει χαλκαίῳ Λέλεγας καὶ Τρῶας ἐναΐρειν.

τῷ οὐκ ἔστ' Ἀχιλλῆος ἐναντίον ἄνδρα μάχεσθαι·
αἰεὶ γὰρ πάρα εἰς γε θεῶν, ὃς λοιγὸν ἀμύνει.

καὶ δ' ἄλλως τοῦ γ' ἰθὺ βέλος πέτετ', οὐδ' ἀπολήγει
πρὶν χροὸς ἀνδρομέοιο διελθέμεν. εἰ δὲ θεός περ 100
ἴσον τείνειεν πολέμον τέλος, οὗ με μάλα ῥέα
νικήσει, οὐδ' εἰ παγχάλκεος εὖχεται εἶναι.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ Διὸς υἱὸς Ἀπόλλων·
 „ἦρως, ἀλλ' ἄγε καὶ σὺ θεοῖς αἰειγενέτησιν
 εὖχεο· καὶ δὲ σέ φασι Διὸς κούρης Ἀφροδίτης 105
 ἐκγεγάμεν, κείνος δὲ χειρίονος ἐκ θεοῦ ἐστίν·
 ἡ μὲν γὰρ Διὸς ἐσθ', ἡ δ' ἐξ ἄλλοιο γέροντος.
 ἀλλ' ἰθὺς φέρε χαλκὸν ἀτειρέα, μηδὲ σε πάμπαν
 λευγαλέοις ἐπέεσσιν ἀποτρεπέτω καὶ ἄρειῃ.“

ὧς εἰπὼν ἐμπνευσε μένος μέγα ποιμένι λαῶν, 110
 βῆ δὲ διὰ προμάχων κεκορυθμένος αἶθοπι χαλκῷ.
 οὐδ' ἔλαθ' Ἀγχίσαιο πάϊς λευκώλενον Ἥρην
 ἀντία Πηλεΐωνος ἰὼν ἀνὰ οὐλαμὸν ἀνδρῶν·
 ἡ δ' ἄμυδις στήσασα θεοὺς μετὰ μῦθον ἔειπεν·
 „φράζεσθον δὴ σφῶι, Ποσειδάων καὶ Ἀθήνη, 115
 ἐν φρεσὶν ὑμετέρησιν, ὅπως ἔσται τάδε ἔργα.
 Αἰνείας ὃδ' ἔβη κεκορυθμένος αἶθοπι χαλκῷ
 ἀντία Πηλεΐωνος, ἀνῆκε δὲ Φοῖβος Ἀπόλλων·
 ἀλλ' ἄγεθ' ἡμεῖς πέρ μιν ἀποτροπῶμεν ὀπίσσω
 αὐτόθεν· ἢ τις ἔπειτα καὶ ἡμείων Ἀχιλῆι 120
 παρσταιή, δοίῃ δὲ κράτος μέγα, μηδὲ τι θυμῷ
 δευέσθω, ἵνα εἰδῇ, ὃ μιν φιλέουσιν ἄριστοι
 ἀθανάτων, οἳ δ' αὖτ' ἀνεμώλιοι, οἳ τὸ πάρος περ
 Τρῶσιν ἀμύνουσιν πόλεμον καὶ δημοτῆτα.

πάντες δ' Οὐλύμποιο κατήλθομεν ἀντιόωντες 125
 τῆσδε μάχης, ἵνα μὴ τι μετὰ Τρῶεσσι πάθῃσιν
 σήμερον· ὅστερον αὖτε τὰ πείσεται, ἅσσα οἳ αἶσα
 γεινομένῳ ἐπένησε λίνῳ, ὅτε μιν τέκε μήτηρ.
 εἰ δ' Ἀχιλεὺς οὐ ταῦτα θεῶν ἐκ πεύσεται ὁμφῆς,
 δεῖσεν· ἔπειθ' ὅτε κέν τις ἐναντίβιον θεὸς ἔλθῃ 130
 ἐν πολέμῳ· χαλεποὶ δὲ θεοὶ φαίνεσθαι ἐναργεῖς.“

τὴν δ' ἡμεῖβεν ἔπειτα Ποσειδάων ἐνοσίχθων·
 „Ἥρη, μὴ χαλέπαινε παρὲκ νόον· οὐδέ τί σε χρή.

οὐκ ἂν ἐγὼ γ' ἐθέλοιμι θεοὺς ἐριδι ξυνελάσσαι
 [ἡμέας τοὺς ἄλλους, ἐπεὶ ἡ πολὺ φέρτεροί εἰμεν·] 135
 ἀλλ' ἡμεῖς μὲν ἔπειτα καθεζώμεσθα κιόντες
 ἐκ πάτου ἐς σκοπιήν, πόλεμος δ' ἄνδρεςσι μελήσει.
 εἰ δέ κ' Ἄρης ἄρχωσι μάχης ἢ Φοῖβος Ἀπόλλων,
 ἢ Ἀχιλῆ' ἰσχωσι καὶ οὐκ εἰδῶσι μάχεσθαι,
 αὐτίκ' ἔπειτα καὶ ἄμμι παρ' αὐτόφιν νεῖκος ὀρεῖται 140
 φυλόπιδος· μάλα δ' ὦκα διακρινθέντας ὁῶ
 ἄψ ἔμεν Οὐλύμπόνδε, θεῶν μεθ' ὀμήγηυριν ἄλλων,
 ἡμετέρης ὑπὸ χερσὶν ἀναγκαίῃφι δαμέντας.“

ὥς ἄρα φωνήσας ἡγήσατο κυανοχαίτης
 τεῖχος ἐς ἀμφίχυτον Ἡρακλῆος θειοιο, 145
 ὑψηλόν, τό ῥά οἱ Τρῶες καὶ Παλλὰς Ἀθήνη
 ποῖον, ὄφρα τὸ κῆτος ὑπεκπροφυγῶν ἀλέαιτο,
 ὅππότε μιν σεύαιτο ἀπ' ἡϊόνος πεδίονδε.
 ἔνθα Ποσειδάων κατ' ἄρ' ἔξετο καὶ θεοὶ ἄλλοι,
 ἀμφὶ δ' ἄρ' ἄρρηκτον νεφέλην ὤμοισιν ἔσαντο· 150
 οἱ δ' ἐτέρωσε καθίζον ἐπ' ὀφρύσι Καλλικολώνης
 ἀμφὶ σέ, ἦιε Φοῖβε, καὶ Ἄρηα· πτολίπορθον.

ὥς οἱ μὲν ῥ' ἐκότερθε καθεῖατο μητιόωντες
 βουλὰς· ἀρχέμεναι δὲ δυσηλεγέος πολέμοιο
 ὦκνεον ἀμφοτέρω, Ζεὺς δ' ἡμενος ὕψι κέλευεν. 155
 τῶν δ' ἅπαν ἐπλήσθη πεδίον, καὶ λάμπετο χαλκῷ,
 ἀνδρῶν ἡδ' ἵππων· ἀρχαίρε δὲ γαῖα πόδεσσιν
 ὀρνυμένων ἄμυδις. δύο δ' ἄνδρες ἔξοχ' ἄριστοι
 ἐς μέσον ἀμφοτέρων συνίτην μεμαῶτε μάχεσθαι,
 Αἰνείας τ' Ἀγχισιδάδης καὶ δῖος Ἀχιλλεύς. 160
 Αἰνείας δὲ πρῶτος ἀπειλήσας ἐβεβήκειν
 νευστάζων κόρυθι βριαρῇ· ἀτὰρ Ἀσπίδα θοῦρον
 πρόσθεν ἔχε στέρνοιο, τίνασσε δὲ χάλκεον ἔγχος.
 Πηλεΐδης δ' ἐτέρωθεν ἐναντίον ὤρτο, λέων ὧς

σίντης, ὅν τε καὶ ἄνδρες ἀποκτάμεναι μεμύασιν 165
 ἀγρόμενοι, πᾶς δῆμος· ὁ δὲ πρῶτον μὲν ἀτίξων
 ἔρχεται, ἀλλ' ὅτε κέν τις ἀρηιδόων αἰξήων
 δουρὶ βάλλῃ, ἐάλη τε χανών, περὶ τ' ἀφρὸς ὀδόντας
 γίγνεται, ἐν δέ τέ οἱ κραδίη στένει ἄλκιμον ἦτορ,
 οὐρῇ δὲ πλευράς τε καὶ ἰσχία ἀμφοτέρωθεν 170
 μαστίζεται, ἐξ δ' αὐτὸν ἐποτρύνει μαχέσασθαι,
 γλαυκιόων δ' ἰθὺς φέρεται μένει, ἦν τινα πέφνη
 ἀνδρῶν ἢ αὐτὸς φθίεται πρώτῳ ἐν ὁμίλῳ·
 ὥς Ἀχιλῆ' ὥτρυνε μένος καὶ θυμὸς ἀγῆνωρ
 ἀντίον ἐλθέμεναι μεγαλήτορος Αἰνείαο. 175
 οἱ δ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 τὸν πρότερος προσέειπε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·
 „Αἰνεΐα, τί σὺ τόσσον ὁμίλου πολλὸν ἐπελθὼν
 ἔσσης; ἢ σέ γε θυμὸς ἐμοὶ μαχέσασθαι ἀνώγει
 ἐλπόμενον Τρῶεσσιν ἀνᾶξειν ἱπποδάμοισιν 180
 τιμῆς τῆς Πριάμου; ἀτὰρ εἰ κεν ἐμ' ἐξεναρξῆς,
 οὗ τοι τούνεκά γε Πρίαμος γέρας ἐν χειρὶ θήσει·
 εἰσὶν γάρ οἱ παῖδες, ὁ δ' ἐμπεδος οὐδ' ἀεσίφρων.
 ἢ νῦ τί τοι Τρῶες τέμενος τάμον ἔξοχον ἄλλων,
 καλὸν φυταλιῆς καὶ ἀρούρης, ὄφρα νέμῃαι, 185
 αἰ κεν ἐμὲ κτείνης; χαλεπῶς δέ σ' ἔολπα τὸ ῥέξειν.
 ἤδη μὲν σέ γέ φημι καὶ ἄλλοτε δουρὶ φοβῆσαι·
 ἢ οὐ μέμνη, ὅτε πέρ σε βοῶν ἄπο, μοῦνον ἐόντα,
 σεῦα κατ' Ἰδαίων ὀρέων ταχέεσσι πόδεσσιν
 καρπαλίμως; τότε δ' οὗ τι μετατροπαλίζεο φεύγων. 190
 ἐνθεν δ' ἐς Λυρνησσὸν ὑπέκφυγες· αὐτὰρ ἐγὼ τὴν
 πέρσα μεθορμηθεὶς σὺν Ἀθήνῃ καὶ Διὶ πατρί,
 ληιάδας δὲ γυναικας, ἐλεύθερον ἡμαρ ἀπούρας,
 ἦγον· ἀτὰρ σὲ Ζεὺς ἐρρύσατο καὶ θεοὶ ἄλλοι.
 ἀλλ' οὐ νῦν σε ῥύεσθαι ὀίομαι, ὥς ἐνὶ θυμῷ 195

βάλλεαι· ἀλλὰ σ' ἐγὼ γ' ἀναχωρήσαντα κελεύω
 ἐς πληθὺν ἰέναι, μῆδ' ἀντίος ἵστασ' ἐμείω,
 πρὶν τι κακὸν παθεῖν· ῥεχθὲν δέ τε νῆπιος ἔγνω.“

τὸν δ' αὖτ' Αἰνείας ἀπαμείβετο φώνησέν τε·

„Πηλεΐδη, μὴ δὴ μ' ἐπέεσσί γε νηπύτιον ὥς 200
 ἔλπεο δειδίξεσθαι, ἐπεὶ σάφα οἶδα καὶ αὐτὸς
 ἡμὲν κερτομίας ἡδ' αἰσὺλα μυθήσασθαι.

ἰδμεν δ' ἀλλήλων γενεήν, ἰδμεν δὲ τοκῆας,
 πρύκλυτ' ἀκούοντες ἔπεα θνητῶν ἀνθρώπων,
 ὄψει δ' οὖτ' ἄρ' πω σὺ ἐμὸν ἰδες οὖτ' ἄρ' ἐγὼ σούς. 205

φασὶ σὲ μὲν Πηλῆος ἀμύμονος ἔκγονον εἶναι,
 μητρὸς δ' ἐκ Θέτιδος καλλιπλοκάμου ἁλοσύδνης·
 αὐτὰρ ἐγὼν υἱὸς μεγαλήτορος Ἀγχίσειο

εὖχομαι ἐκγεγάμεν, μήτηρ δέ μοι ἔστ' Ἀφροδίτη·
 τῶν δὴ νῦν ἕτεροί γε φίλον παῖδα κλαύδονται 210
 σήμερον· οὐ γάρ φημ' ἐπέεσσί γε νηπυτίοισιν
 ὦδε διακρινθέντε μάχης ἔξαπονέεσθαι.

εἰ δ' ἐθέλεις καὶ ταῦτα θαήμεναι, ὄφρ' ἐν εἰδῆς
 ἡμετέρην γενεήν, πολλοὶ δέ μιν ἄνδρες ἴσασιν·
 Δάρδανον αὖ πρῶτον τέκετο νεφεληγερέτα Ζεὺς, 215

κτίσσε δὲ Δαρδανίην, ἐπεὶ οὗ πω Ἴλιος ἱρὴ
 ἐν πεδίῳ πεπόλιστο πόλις μερόπων ἀνθρώπων,
 ἀλλ' ἔθ' ὑπωρείας ᾤκεον πολυπίδακος Ἴδης.

Δάρδανος αὖ τέκεθ' υἱὸν Ἐριχθόνιον βασιλῆα,
 ὃς δὴ ἀφνειότατος γένετο θνητῶν ἀνθρώπων· 220
 τοῦ τρισχίλαιο ἵπποι ἔλος κάτα βουκολέοντο
 θήλειαι, πῶλοισιν ἀγαλλόμεναι ἀταλῆσιν.

τάων καὶ Βορέης ἡράσσατο βοσκομενῶν,
 ἵππῳ δ' εἰσάμενος παρελέξατο κυανοχαίτη·
 αἰ δ' ὑποκυσάμεναι ἔτεκον δυοκαίδεκα πῶλους. 225

αἰ δ' ὅτε μὲν σκιρτῶεν ἐπὶ ζεῖδωρον ἄρουραν,

ἄκρον ἐπ' ἀνθερίκων καρπὸν θεὸν οὐδὲ κατέκλων·
 ἀλλ' ὅτε δὴ σκιρτῶεν ἐπ' εὐρέα νῶτα θαλάσσης,
 ἄκρον ἐπὶ ῥηγμῖνα ἄλος πολιοῖο θέεσκον.

Τρῶα δ' Ἐριχθόνιος τέκετο Τρώεσσιν ἄνακτα· 230

Τρωὸς δ' αὖ τρεῖς παῖδες ἀμύμονες ἐξεγένοντο,
 Ἴλος τ' Ἀσσάρακος τε καὶ ἀντίθεος Γανυμήδης,
 δς δὴ κάλλιστος γένετο θνητῶν ἀνθρώπων·
 τὸν καὶ ἀνηρεῖψαντο θεοὶ Διὶ οἶνοχοεῦειν
 κάλλεος εἵνεκα οἷο, ἵν' ἀθανάτοισι μετείη. 235

Ἴλος δ' αὖ τέκεθ' υἱὸν ἀμύμονα Λαομέδοντα,
 Λαομέδων δ' ἄρα Τυθωνὸν τέκετο Πριάμὸν τε
 Λάμπον τε Κλυτίον θ' Ἰκετάονά τ' ὄξον Ἄρηος.
 Ἀσσάρακος δὲ Κάπυν, ὁ δ' ἄρ' Ἀγχίσην τέκε παῖδα·
 αὐτὰρ ἔμ' Ἀγχίσης, Πριάμος δ' ἔτεχ' Ἐκτορα δῖον. 240
 ταύτης τοι γενεῆς τε καὶ αἵματος εὐχομαι εἶναι.

Ζεὺς δ' ἀρετὴν ἀνδρεσσιν ὀφείλλει τε μινύθει τε,
 δππως κεν ἐθέλῃσιν· ὁ γὰρ κάρτιστος ἀπάντων.
 ἀλλ' ἄγε μηκέτι ταῦτα λεγώμεθα νηπύτιοι ὥς,
 ἔστεῶτ' ἐν μέσση ὑσμίνῃ δηιοτήτος. 245

ἔστι γὰρ ἀμφοτέροισιν ὀνειδέα μυνθήσασθαι
 πολλὰ μάλ'· οὐδ' ἂν νηῦς ἐκατόξυγος ἄχθος ἄροιτο·
 στρεπτή δὲ γλῶσσο' ἐστὶ βροτῶν, πολέες δ' ἐνὶ μῦθοι
 παντοῖοι, ἐπέων δὲ πολὺς νομὸς ἐνθα καὶ ἐνθα.
 ὅππολόν κ' εἴπησθα ἔπος, τοῖόν κ' ἐπακούσαιο. 250

ἀλλὰ τί ἡ ἐριδας καὶ νείκεα νῶιν ἀνάγκη
 νεικεῖν ἀλλήλοισιν ἐναντίον, ὥς τε γυναῖκας,
 αἷ τε χολωσάμεναι ἐριδος πέρι θυμοβόροιο
 νεικεῦσ' ἀλλήλησι μέσσην ἐς ἄγνιαν ἰοῦσαι,
 πολλὰ τ' ἐόντα καὶ οὐκί· χόλος δέ τε καὶ τὰ κελεύει. 255
 ἀλκῆς δ' οὐ μ' ἐπέεσσιν ἀποτρέψεις μεμαῶτα
 πρὶν χαλκῷ μαχέσασθαι ἐναντίον· ἀλλ' ἄγε θᾶσσον

γευσόμεθ' ἀλλήλων χαλκήρεσιν ἐγχείησιν.“

ἥ ῥα καὶ ἐν δεινῷ σάκει ἤλασεν ὄβριμον ἐγχος,
 σμερδαλέῳ· μέγα δ' ἀμφὶ σάκος μύκε δουρὸς ἀκωκῆ. 260
 Πηλεΐδης δὲ σάκος μὲν ἀπὸ ἔο χειρὶ παχείῃ
 ἔσχετο ταρβήσας· φάτο γὰρ δολιχόσκιον ἐγχος
 ῥέα διελεύσεσθαι μεγαλήτορος Αἰνείαιο,
 νήπιος, οὐδ' ἐνόησε κατὰ φρένα καὶ κατὰ θυμόν,
 ὥς οὐ ῥηίδι' ἐστὶ θεῶν ἐρικυδέα δῶρα 265
 ἀνδράσι γε θνητοῖσι δαμήμεναι οὐδ' ὑποείκειν.
 οὐδὲ τότε' Αἰνείαιο δαΐφρονος ὄβριμον ἐγχος
 ῥῆξε σάκος· χρυσὸς γὰρ ἐρύκακε, δῶρα θεοῖο·
 [ἀλλὰ δῶμα μὲν ἔλασσε διὰ πτύχας, αἱ δ' ἄρ' ἔτι τρεῖς
 ἦσαν, ἐπεὶ πέντε πτύχας ἤλασε κυλλοποδίων, 270
 τὰς δύο χαλκείας, δύο δ' ἐνδοθι κασσιτέροιο,
 τὴν δὲ μίαν χρυσέην, τῇ ῥ' ἔσχετο μείλινον ἐγχος.]

δεύτερος αὖτ' Ἀχιλεὺς προτεῖ δολιχόσκιον ἐγχος,
 καὶ βάλεν Αἰνείαιο κατ' ἀσπίδα πάντοσ' εἴσῃν,
 ἄντυγ' ὑπο πρῶτην, ἣ λεπτότατος θίε χαλκός, 275
 λεπτοτάτη δ' ἐπέην φινὸς βοός· ἡ δὲ διαπρὸ
 Πηλιδὸς ἤϊξεν μελίῃ, λάκε δ' ἀσπίς ὑπ' αὐτῆς.
 Αἰνείας δ' ἐάλη καὶ ἀπὸ ἔθεν ἀσπὶδ' ἀνέσχευ
 δείσας· ἐγχείῃ δ' ἄρ' ὑπὲρ νώτου ἐνὶ γαίῃ
 ἔστη λεμένη, διὰ δ' ἀμφοτέρους ἔλε κύκλους 280
 ἀσπίδος ἀμφιβρότης· ὁ δ' ἀλευάμενος δόρυ μακρὸν
 ἔστη, καδ' δ' ἄχος οἱ χύτο μυρίον ὀφθαλμοῖσιν,
 ταρβήσας, ὃ οἱ ἄγχι πάγῃ βέλος. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 ἐμμεμῶως ἐπόρουσεν, ἐρυσσάμενος ξίφος ὀξύ,
 σμερδαλέα ἰάχων· ὁ δὲ χερμάδιον λάβε χειρὶ 285
 Αἰνείας, μέγα ἔργον, ὃ οὐ δύο γ' ἄνδρες φέροιεν,
 οἷοι νῦν βροτοὶ εἰς· ὁ δέ μιν ῥέα πάλλε καὶ οἶος.
 ἐνθα κεν Αἰνείας μὲν ἐπεσσύμενον βάλε πέτρον

ἢ κόρυθ' ἢ ἐσάκος, τό οἱ ἤρκεσε λυγρὸν ὄλεθρον,
τὸν δέ κε Πηλεΐδης σχεδὸν ἄορι θυμὸν ἀπηύρα, 290
εἰ μὴ ἄρ' ὀξὺ νόησε Ποσειδάων ἐνοσίχθων.

αὐτίκα δ' ἀθανάτοισι θεοῖς μετὰ μῦθον ἔειπεν·
„ὦ πόποι, ἦ μοι ἄχος μεγαλήτορος Αἰνείαο,
ὃς τάχα Πηλεΐωνι δαμείς Ἀιδόσδε κάτεισιν,
πειθόμενος μῦθοισιν Ἀπόλλωνος ἐκάτοιο, 295

νήπιος, οὐδέ τί οἱ χροισμήσει λυγρὸν ὄλεθρον.
ἀλλὰ τί ἦ νῦν οὗτος ἀναίτιος ἔλγεα πάσχει,
μὰ ψ ἔνεκ' ἀλλοτριῶν ἀχέων, κεχαρισμένα δ' αἰεὶ
δῶρα θεοῖσι δίδωσι, τοὶ οὐρανὸν εὐρὺν ἔχουσιν;
ἀλλ' ἄγεθ' ἡμεῖς πέρ μιν ὑπὲρ θανάτου ἀγάγωμεν, 300
μή πως καὶ Κρονίδης κεχολώσεται, αἶ κεν Ἀχιλλεὺς
τόνδε κατακτείνει· μόριμον δέ οἱ ἔστ' ἀλέασθαι,
ὄφρα μὴ ἄσπερμος γενεὴ καὶ ἄφαντος ὄληται
Δαρδάνου, δν Κρονίδης περὶ πάντων φίλατο παίδων,
οἳ ἔθεν ἐξεγένοντο γυναικῶν τε θνητῶν. 305

ἦδη γάρ Πριάμου γενεὴν ἥχθηρε Κρονίων·
νῦν δὲ δὴ Αἰνείαο βίη Τρώεσσιν ἀνάξει
καὶ παίδων παῖδες, τοὶ κεν μετόπισθε γένωνται.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα βοῶπις πότνια Ἥρη·
„ἐννοσίγαι', αὐτὸς σὺ μετὰ φρεσὶ σῇσι νόησον 310
Αἰνείαν, ἥ κέν μιν ἐρύσσειαι ἢ κεν ἐάσεις
[Πηλεΐδῃ Ἀχιλῆϊ δαμήμεναι ἐσθλὸν ἐόντα.]

ἦ τοι μὲν γὰρ νῶϊ πολέας ὠμόσσαμεν ὄρκους
πᾶσι μετ' ἀθανάτοισιν, ἐγὼ καὶ Παλλὰς Ἀθήνη,
μή ποτ' ἐπὶ Τρώεσσιν ἀλεξήσειν κακὸν ἡμᾶρ, 315
μηδ' ὁπότ' ἂν Τροίῃ μαλερῷ πυρὶ πᾶσα δάηται
δαιομένη, δαίωσι δ' ἀρήιοι νῆες Ἀχαιῶν.“

αὐτὰρ ἐπεὶ τό γ' ἄκουσε Ποσειδάων ἐνοσίχθων,
βῆ δ' ἴμεν ἔν τε μάχην καὶ ἀνὰ κλόνον ἐρχομένην,

ἔξε δ', ὅθ' Αἰνείας ἦδ' ὁ κλυτὸς ἦεν Ἀχιλλεύς. 820
 αὐτίκα τῷ μὲν ἔπειτα κατ' ὀφθαλμῶν χέεν ἄχλυν
 Πηλεΐδῃ Ἀχιλῆϊ· ὁ δὲ μελίην ἐϋχαλκον
 ἀσπίδος ἐξέρυσεν μεγαλήτορος Αἰνείας·
 καὶ τὴν μὲν προπάρειθε ποδῶν Ἀχιλῆος ἔθηκεν,
 Αἰνείαν δ' ἔσσευεν ἀπὸ χθονὸς ὑψόσ' αἰέρας. 825
 πολλὰς δὲ στίχας ἡρώων, πολλὰς δὲ καὶ ἵππων
 Αἰνείας ὑπερᾶλτο θεοῦ ἀπὸ χειρὸς ὀρούσας,
 ἔξε δ' ἐπ' ἐσχατιὴν πολυάικος πολέμοιο,
 ἐνθα τε Κανύκωνες πόλεμον μέτα θωρήσσαντο.
 τῷ δὲ μάλ' ἐγγύθεν ἦλθε Ποσειδάων ἐνοσίχθων, 830
 καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Αἰνεία, τίς σ' ὧδε θεῶν ἀτέοντα κελεύει
 ἀντία Πηλεΐωνος ὑπερθύμοιο μάχεσθαι,
 ὃς σεῦ ἅμα κρείστων καὶ φίλτερος ἀθανάτοισιν;
 ἀλλ' ἀναχωρῆσαι, ὅτε κεν συμβλήεαι αὐτῷ, 835
 μὴ καὶ ὑπὲρ μοῖραν δόμον Ἄιδος εἰσαφίκηαι.
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' Ἀχιλεὺς θάνατον καὶ πότμον ἐπίσπῃ,
 θαρσύνσας δὴ ἔπειτα μετὰ πρῶτοισι μάχεσθαι·
 οὐ μὲν γάρ τίς σ' ἄλλος Ἀχαιῶν ἐξεναρξίει.“

ὧς εἰπὼν λίπεν αὐτόθι, ἐπεὶ διεπέφραδε πάντα. 840
 αἶψα δ' ἔπειτ' Ἀχιλῆος ἀπ' ὀφθαλμῶν σκέδασ' ἄχλυν
 θεσπεσίην· ὁ δ' ἔπειτα μέγ' ἐξιδεν ὀφθαλμοῖσιν,
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς ὃν μεγαλήτορα θυμόν·
 „ὦ πόποι, ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὀρῶμαι·
 ἔγχος μὲν τόδε κεῖται ἐπὶ χθονός, οὐδέ τι φῶτα 845
 λεύσσω, τῷ ἐφέηκα κατακτάμεναι μενεαίνων.
 ἦ ῥα καὶ Αἰνείας φίλος ἀθανάτοισι θεοῖσιν
 ἦεν· ἀτὰρ μιν ἔφην μὰψ αὕτως εὐχετάσθαι.
 ἐρρέτω· οὐ οἱ θυμὸς ἐμεῦ ἔτι πειρηθῆναι
 ἔσσεται, ὃς καὶ νῦν φύγεν ἄσμενος ἐκ θανάτοιο. 850

ἀλλ' ἄγε δὴ Δαναοῖσι φιλοπολέμοισι κελεύσας
τῶν ἄλλων Τρώων πειρήσομαι ἀντίος ἔλθῶν.“

ἦ καὶ ἐπὶ στίχας ἄλτο, κέλευε δὲ φωτὶ ἐκάστω·
„μηκέτι νῦν Τρώων ἐκὰς ἔστατε, δῖοι Ἀχαιοί,
ἀλλ' ἄγ' ἀνὴρ ἄντ' ἀνδρὸς ἵτω, μεμάτω δὲ μάχεσθαι. 355
ἀργαλέον δέ μοι ἐστί, καὶ ἰφθίμῳ περ ἐόντι,
τοσσούσδ' ἀνθρώπους ἐφέπειν καὶ πᾶσι μάχεσθαι·
οὐδέ κ' Ἄρης, ὅς περ θεὸς ἄμβροτος, οὐδέ κ' Ἀθήνη
τοσσῆσδ' ὑσμίνης ἐφέποι στόμα καὶ πονέοιτο·
ἀλλ' ὅσσον μὲν ἐγὼ δύναμαι χερσὶν τε ποσὶν τε 360
καὶ σθένει, οὗ μὲ τί φημι μεθησέμεν, οὐδ' ἡβαιόν,
ἀλλὰ μάλα στιχὸς εἰμι διαμπερές, οὐδέ τιν' οἶω
Τρώων χαιρήσειν, ὅς τις σχεδὸν ἔγχεος ἔλθῃ.“

ὣς φάτ' ἐποτρύνων· Τρώεσσι δὲ φαίδιμος Ἴκτωρ
κέκλεθ' ὁμοκλήσας, φάτο δ' ἱμμεναι ἄντ' Ἀχιλλῆος· 365
„Τρῶες ὑπέρθυμοι, μὴ δείδιτε Πηλεΐωνα.
καὶ κεν ἐγὼν ἐπέεσσι καὶ ἀθανάτοισι μαχοίμην·
ἔγχει δ' ἀργαλέον, ἐπεὶ ἦ πολὺ φέρτεροί εἰσιν.
οὐδ' Ἀχιλεὺς πάντεσσι τέλος μύθοις ἐπιθήσει,
ἀλλὰ τὸ μὲν τελέει, τὸ δὲ καὶ μεσσηγὺν κολούει. 370
τῷ δ' ἐγὼ ἀντίος εἰμι, καὶ εἰ πυρὶ χεῖρας ἔοικεν,
εἰ πυρὶ χεῖρας ἔοικε, μένος δ' αἰθῶνι σιδήρῳ.“

ὣς φάτ' ἐποτρύνων, οἱ δ' ἀντίοι ἔγχε' ἄειραν
Τρῶες· τῶν δ' ἄμυδις μίχθη μένος, ὥρτο δ' ἀντή.
καὶ τότε ἄρ' Ἴκτωρ εἶπε παραστὰς Φοῖβος Ἀπόλλων· 375
„Ἴκτωρ, μηκέτι πάμπαν Ἀχιλλῆϊ προμάχιζε,
ἀλλὰ κατὰ πληθύν τε καὶ ἐκ φλοίσβοιο δέδεξο,
μὴ πῶς σ' ἡὲ βάλῃ ἡὲ σχεδὸν ἄορι τύψῃ.“

ὣς ἔφαθ', Ἴκτωρ δ' αὖτις ἐδύσετο οὐλαμὸν ἀνδρῶν
ταρβήσας, ὅτ' ἄκουσε θεοῦ ὅπα φωνήσαντος. 380
ἐν δ' Ἀχιλεὺς Τρώεσσι θόρε, φρεσὶν εἰμένος ἀλκήν,

σμερδαλέα ἰάχων· πρῶτον δ' ἔλεν Ἰφιτίωνα
 ἐσθλὸν Ὀτρυντεῖδην, πολέων ἡγήτορα λαῶν,
 ὃν νύμφη τέκε νηὶς Ὀτρυντῆι πτολιπόρῳ
 Τρωῶν ὑπο νιφόεντι, Ἰδῆς ἐν πτόνι δῆμῳ. 385
 τὸν δ' ἰδὺς μεμαῶτα βάλ' ἔγχεϊ δῖος Ἀχιλλεύς
 μέσσην καὶ κεφαλὴν· ἥ δ' ἄνδιχα πᾶσα κεῖσθη.
 δοῦπησεν δὲ πεσών, ὃ δ' ἐπέυξατο δῖος Ἀχιλλεύς·
 „κείσαι, Ὀτρυντεῖδη, πάντων ἐκπαγλότατ' ἀνδρῶν·
 ἐνθάδε τοι θάνατος, γενεὴ δέ τοι ἐστ' ἐπὶ λίμνῃ 390
 Γυγαίῃ, ὅθι τοι τέμενος πατρῷόν ἐστιν,
 ἄλλῳ ἐπ' ἰχθυόεντι καὶ Ἑρμῷ δινήεντι.“

ὥς ἔφατ' εὐχόμενος, τὸν δὲ σκότος ὄσσε κάλυψεν.
 τὸν μὲν Ἀχαιῶν ἵπποι ἐπισσώτροις दाτέοντο
 πρῶτῃ ἐν ὑσμίνῃ· ὃ δ' ἐπ' αὐτῷ Δημολέοντα, 395
 ἐσθλὸν ἀλεξιτήρα μάχης, Ἀντήνορος υἱόν,
 νύξε κατὰ κρόταφον, κυνέης διὰ χαλκοπαρήν.
 οὐδ' ἄρα χαλκείῃ κόρυς ἔσχεθεν, ἀλλὰ δι' αὐτῆς
 αἰχμὴ ἰεμένη ῥῆξ' ὀστέον, ἐγκέφαλος δὲ
 ἐνδον ἄπας πεπάλακτο· δάμασσε δέ μιν μεμαῶτα. 400
 Ἴπποδάμαντα δ' ἔπειτα καθ' ἵππων ἀΐξαντα
 πρόσθεν ἔθεν φεύγοντα μετάφρενον οὔτασε δουρὶ·
 αὐτὰρ ὃ θυμὸν αἰσθε καὶ ἥρηνεν, ὥς ὅτε ταῦρος
 ἥρηνεν ἐλκόμενος Ἐλικώνιον ἀμφὶ ἄνακτα,
 κούρων ἐλκόντων· γάννυται δέ τε τοῖς ἐνοσίχθων· 405
 ὥς ἄρα τὸν γ' ἐρυγόντα λίπ' ὀστέα θυμὸς ἀγῆνωρ·
 αὐτὰρ ὃ βῆ σὺν δουρὶ μετ' ἀντίθεον Πολύδωρον
 Πριαμίδην. τὸν δ' οὐ τι πατὴρ εἶασκε μάχεσθαι,
 οὐνεκά οἱ μετὰ παισὶ νεώτατος ἔσκε γόνιοι,
 καὶ οἱ φίλτατος ἔσκε, πόδεσσι δὲ πάντας ἐνικά· 410
 δὴ τότε νηπιέησι, ποδῶν ἀρετὴν ἀναφαίνων,
 θῦνε διὰ προμάχων, εἴως φίλον ὦλεσε θυμόν.

τὸν βάλε μέσσον ἄκοντι ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,
 νῶτα παραίσσοντος, ὅθι ζωστήρος ὀχῆες
 χρύσειοι σύνεχον καὶ διπλόος ἦντετο θώρηξ· 415
 ἀντικρὺς δὲ διέσχε παρ' ὀμφαλὸν ἔγχεος αἰχμῇ,
 γυνὴ δ' ἔρπ' οἰμῶξας, νεφέλη δέ μιν ἀμφοεκάλυψεν
 κυανέη, προτὶ οἷ δ' ἔλαβ' ἔντερα χερσὶ λιασθεῖς.

Ἔκτωρ δ' ὥς ἐνόησε κασίγνητον Πολύδωρον
 ἔντερα χερσὶν ἔχοντα λιαζόμενον προτὶ γαίῃ, 420
 κάρ ῥά οἱ ὀφθαλμῶν κέχυτ' ἀχλὺς· οὐδ' ἄρ' ἔτ' ἔτλη
 δηρὸν ἐκὰς στρωφᾶσθ', ἀλλ' ἀντίος ἦλθ' Ἀχιλλῆι
 ὄξυν δόρυ κραδάων, φλογὶ εἵκελος. αὐτὰρ Ἀχιλλεύς
 ὥς εἶδ', ὥς ἀνέπαλτο, καὶ εὐχόμενος ἔπος ηὔδα·
 „ἔγγυς ἀνὴρ, ὃς ἐμὸν γε μάλιστ' ἐσεμάσσατο θυμόν,
 ὃς μοι ἔταίρον ἔπεφνε τετιμένον· οὐδ' ἂν ἔτι δὴν 426
 ἀλλήλους πτώσσοιμεν ἀνὰ πτολέμοιο γεφύρας.“

ἦ καὶ ὑπόδρα ἰδὼν προσεφώνεεν Ἐκτορα δῖον·
 „ἄσσον ἴθ', ὥς κεν θᾶσσον ὀλέθρου πείραθ' ἵκηαι.“
 τὸν δ' οὐ ταρβήσας προσέφη κορυθαίολος Ἐκτωρ· 430
 „Πηλεΐδη, μὴ δὴ μ' ἐπέεσσὶ γε νηπύτιον ὥς
 ἔλπεο δειδίξεσθαι, ἐπεὶ σάφα οἶδα καὶ αὐτὸς
 ἡμὲν κερτομίας ἡδ' αἴσυλα μυθήσασθαι.
 οἶδα δ', ὅτι σὺ μὲν ἐσθλός, ἐγὼ δὲ σέθεν πολὺν χείρων·
 ἀλλ' ἦ τοι μὲν ταῦτα θεῶν ἐν γούνασι κεῖται, 435
 αἶ κέ σε χειρότερός περ ἔων ἀπὸ θυμὸν ἔλωμαι
 δουρὶ βαλὼν, ἐπεὶ ἦ καὶ ἐμὸν βέλος ὄξυν πάροιθεν.“

ἦ ῥα καὶ ἀμπεπαλὼν προῖει δόρυ· καὶ τό γ' Ἀθήνη
 πνοιῇ Ἀχιλλῆος πάλιν ἔτραπε κυδαλίμοιο,
 ἦκα μάλα ψύξασα· τὸ δ' ἄψ ἵκεθ' Ἐκτορα δῖον, 440
 αὐτοῦ δὲ προπάροιθε ποδῶν πέσεν. αὐτὰρ Ἀχιλλεύς
 ἐμμεμαῶς ἐπόρουσε, κατακτάμεναι μενεαίνων,
 σμερδαλέα ἰάχων· τὸν δ' ἐξήρπαξεν Ἀπόλλων

ρεῖα μάλ' ὥς τε θεός, ἐκάλυψε δ' ἄρ' ἡέρι πολλῇ.
 τρὶς μὲν ἔπειτ' ἐπόρουσε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς 445
 ἔγχεϊ χαλκείῳ, τρὶς δ' ἡέρα τύψε βαθεΐαν.
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὸ τέταρτον ἐπέσσυτο δαίμονι ἴσος,
 δεινὰ δ' ὁμοκλήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „ἔξ αὖ νῦν ἔφηνες θάνατον, κύν· ἥ τέ τοι ἄγχι
 ἦλθε κακόν· νῦν αὐτέ σ' ἐρύσατο Φοῖβος Ἀπόλλων, 450
 ᾧ μέλλεις εὐχεσθαι ἰὼν ἐς δοῦπον ἀκόντων.
 ἥ θήν σ' ἐξανύω γε καὶ ὕστερον ἀντιβολήσας,
 εἰ πού τις καὶ ἐμοί γε θεῶν ἐπιτάρροθός ἐστιν.
 νῦν αὖ τοὺς ἄλλους ἐπιείσομαι, ὅν κε κιχέω.“

ὥς εἰπὼν Δρύοπ' οὔτα κατ' αὐχένα μέσσον ἄκοντι· 455
 ἤριπε δὲ προπάρουθε ποδῶν. ὁ δὲ τὸν μὲν ἔασεν,
 Δημοῦχον δὲ Φιλητορίδην ἡὺν τε μέγαν τε
 καὶ γόνυ δουρὶ βαλὼν ἠρύκακε. τὸν μὲν ἔπειτα
 οὐτάζων ξίφει μέγαλῳ ἐξάινυτο θυμόν·
 αὐτὰρ ὁ Λαόγονον καὶ Δάρδανον, νῆε Βίαντος, 460
 ἄμφω ἐφορμηθεὶς ἐξ ἵππων ὥσε χαμᾶζε,
 τὸν μὲν δουρὶ βαλὼν, τὸν δὲ σχεδὸν ἄορι τύψας.
 Τρῶα δ' Ἀλαστορίδην — ὁ μὲν ἀντίος ἦλυθε γούνων,
 εἰ πῶς εὐ πεφίδοιτο λαβὼν καὶ ζῶν ἀφείη
 μηδὲ κατακτείνειεν ὁμηλικίην ἐλεήσας, 465
 νῆπιος, οὐδὲ τὸ ἥδη, ὃ οὐ πείσεσθαι ἔμελλεν·
 οὐ γάρ τι γλυκύθυμος ἀνὴρ ἦν οὐδ' ἀγανόφρων,
 ἀλλὰ μάλ' ἐμμεμαῶς. ὁ μὲν ἤπτετο χεῖρεσι γούνων
 ἰέμενος λίσσεσθ', ὁ δὲ φασγάνῳ οὔτα καθ' ἥπαρ·
 ἐκ δὲ οἱ ἥπαρ ὄλισθεν, ἀτὰρ μέλαν αἷμα κατ' αὐτοῦ 470
 κόλπον ἐνέπλησεν· τὸν δὲ σκότος ὕσσε κάλυπεν
 θυμοῦ δευόμενον. ὁ δὲ Μούλιον οὔτα παραστάς
 δουρὶ κατ' οὖς· εἶθαρ δὲ δι' οὔατος ἦλθ' ἐτέροιο
 αἰχμῇ χαλκείῃ. ὁ δ' Ἀγήνορος υἱὸν Ἐχεκλον

μέσσην καὶ κεφαλὴν ξίφει ἤλασε κωπήεντι, 475
 πᾶν δ' ὑπεθερμάνθη ξίφος αἵματι· τὸν δὲ κατ' ὄσσε
 ἔλλαβε πορφύρεος θάνατος καὶ μοῖρα κραταιή.
 Δευκαλίωνα δ' ἔπειθ', ἵνα τε ξυνέχουσιν τένοντες
 ἄγκωνος, τῇ τὸν γε φίλης διὰ χειρὸς ἐπειρεν
 αἰχμῇ χαλκείῃ· ὁ δέ μιν μένε χεῖρα βαρυνθεὶς, 480
 πρόσθ' ὀρόων θάνατον. ὁ δὲ φασγάνῳ ἀνχένα θείνας
 τῇλ' αὐτῇ πῆληκι κάρη βάλε· μυελὸς αὐτε
 σφονδυλίῳ ἐκπαλθ', ὁ δ' ἐπὶ χθονὶ κεῖτο τανυσθεὶς.
 αὐτὰρ ὁ βῆ ῥ' ἰέναι μετ' ἀμύμονα Πείρῳ υἱὸν
 Ῥίγμον, ὃς ἐκ Θωρήκης ἐριβώλακος εἰληλούθειν· 485
 τὸν βάλε μέσσον ἄκοντι, πάγη δ' ἐν νηδύϊ χαλκός,
 ἥριπε δ' ἐξ ὀχέων. ὁ δ' Ἀρηίδοον θεράποντα,
 ἃς ἵππους στρέψαντα, μετάφρενον ὀξεί δουρὶ
 νύξ', ἀπὸ δ' ἄρματος ὥσε· κνκήθησαν δέ οἱ ἵπποι.
 ὥς δ' ἀναμαιμάει βαθεῖ ἄγκεια θεσπιδαῆς πῦρ 490
 οὔρεος ἀξαλέοιο, βαθεῖα δὲ καίεται ὕλη,
 πάντῃ τε κλονέων ἄνεμος φλόγα εἰλυφάξει,
 ὥς ὃ γε πάντῃ θῦνε σὺν ἐργεῖ δαίμονι ἴσος
 κτεινομένους ἐφέπων· ῥέε δ' αἵματι γαῖα μέλαινα.
 ὥς δ' ὅτε τις ζεύξῃ βόας ἄρσενας εὐρυμετώπους 495
 τριβέμεναι κρεῖ λευκὸν ἐνκτιμένην ἐν ἁλώῃ,
 ῥίμφα τε λέπτ' ἐγένοντο βοῶν ὑπὸ πόσσ' ἐριμύκων,
 ὥς ὑπ' Ἀχιλλῆος μεγαθύμου μώνυχες ἵπποι
 στεῖβρον ὁμοῦ νέκυάς τε καὶ ἀσπίδας· αἵματι δ' ἄξων
 νέρθεν ἅπας πεπάλακτο καὶ ἄντυγες αἱ περὶ δίφρον, 500
 ἃς ἄρ' ἀφ' ἱππέων ὀπλέων ῥαθάμιγγες ἐβαλλον
 αἷ τ' ἀπ' ἐπισσώτρων. ὁ δὲ ἵετο κῦδος ἀρέσθαι
 Πηλεΐδης, λύθρῳ δὲ παλάσσετο χεῖρας ἀάπτους.

ΙΛΙΑΔΟΣ Φ.

Μάχη παραποτάμιος.

ἀλλ' ὅτε δὴ πόρον ἱξον ἐυρρεῖος ποταμοῖο,
 Ξάνθου δινήεντος, δν ἀθάνατος τέκετο Ζεὺς,
 ἔνθα διατμήξας τοὺς μὲν πεδίωνδε δίωκεν
 πρὸς πόλιν, ἣ περ' Ἀχαιοὶ ἀτυζόμενοι φοβέοντο
 ἡματι τῷ προτέρῳ, ὅτ' ἐμαίνετο φαίδιμος Ἑκτωρ· 5
 τῇ δ' οἷ γε προχέοντο πεφυζότες, ἡέρα δ' Ἥρη
 πίτνα πρόσθε βαθεῖαν ἐρυκέμεν· ἡμίσεες δὲ
 εἰς ποταμὸν εἰλεῦντο βαθύροον ἀργυροδίην.
 ἐν δ' ἔπεσον μεγάλῳ πατάγῳ, βράχε δ' αἰπὰ ῥέεθρα,
 ὄχθαι δ' ἀμφὶ περὶ μεγάλ' ἱαχον· οἱ δ' ἀλαλητῷ 10
 ἔννεον ἔνθα καὶ ἔνθα, ἐλίσσόμενοι περὶ δίνας.
 ὥς δ' ὄθ' ὑπὸ ῥιπῆς πυρὸς ἀκρίδες ἠερέθονται
 φευγέμεναι ποταμόνδε· τὸ δὲ φλέγει ἀκάματον πῦρ
 ὄρμενον ἐξαίφνης, ταὶ δὲ πτώσσουσι καθ' ὕδωρ·
 ὥς ὑπ' Ἀχιλλῆος Ξάνθου βαθυδινήεντος 15
 πλῆτο ῥόος κελάδων ἐπιμῖξ ἵππων τε καὶ ἀνδρῶν.
 αὐτὰρ ὁ διογενῆς δόρυ μὲν λίπεν αὐτοῦ ἐπ' ὄχθῃ
 κεκλιμένον μυρικήσιν, ὁ δ' ἔσθορε δαίμονι ἴσος
 φάσγανον οἶον ἔχων, κακὰ δὲ φρεσὶ μῆδετο ἔργα,
 τύπτε δ' ἐπιστροφάδην· τῶν δὲ στόνος ὄρνυτ' αἰεκῆς
 ἄορι θεινομένων, ἐρυθαίνετο δ' αἷματι ὕδωρ. 21
 ὥς δ' ὑπὸ δελφῖνος μεγακῆτεος ἰχθύες ἄλλοι
 φεύγοντες πιμπλάσι μυχοὺς λιμένος ἐυόρμου,
 δειδιότες· μάλα γάρ τε κατεσθίει, δν κε λάβησιν·
 ὥς Τρῶες ποταμοῖο κατὰ δεινοῖο ῥέεθρα 25
 πτώσσουν ὑπὸ κρημνούς. ὁ δ' ἐπεὶ κάμε χεῖρας ἐναίρων,
 ζωνὸς ἐκ ποταμοῖο δυνώδεκα λέξατο κούρους

ποινήν Πατρόκλοιο Μενoitιάδαο θανόντος.
 τοὺς ἐξῆγε θύραζε τεθηπότας ἤυτε νεβρούς,
 δῆσε δ' ὀπίσσω χεῖρας ἐντμήτοισιν ἱμάσιν, 30
 τοὺς αὐτοὶ φορέεσκον ἐπὶ στρεπτοῖσι χιτῶσιν,
 δῶκε δ' ἑταίροισιν κατάγειν κόλπας ἐπὶ νῆας.
 αὐτὰρ ὁ ἄψ' ἐπόρουσε δαϊζέμεναι μενεαίνων.

ἔνθ' υἱεὶ Πριάμοιο συνήντετο Δαρδανίδαο
 ἐκ ποταμοῦ φεύγοντι Λυκάονι, τὸν ῥά ποτ' αὐτὸς 35
 ἦγε λαβὼν ἐκ πατρὸς ἁλώης οὐκ ἐθέλοντα,
 ἐννύχιος προμολῶν· ὁ δ' ἐρινεὸν ὀξεί χαλκῷ
 τάμνε νέους ὄρηκας, ἴν' ἄρματος ἄντυγες εἴεν·
 τῷ δ' ἄρ' ἀνώιστον κακὸν ἤλυθε δῖος Ἀχιλλεύς.
 καὶ τότε μὲν μιν Αἴημον ἐνκτιμένην ἐπέρασσεν 40
 νηυσὶν ἄγων, ἀτὰρ υἱὸς Ἰήσονος ὦνον ἔδωκεν·
 κείθεν δὲ ξεινὸς μιν ἐλύσατο, πολλὰ δ' ἔδωκεν,
 Ἰμβριος Ἡετίων, πέμψεν δ' ἐς δῖαν Ἀρίσβην·
 ἐνθεν ὑπεκπροφυγὼν πατρώιον ἵκετο δῶμα.
 ἔνδεκα δ' ἡματα θυμὸν ἐτέρπετο οἷσι φίλοισιν 45
 ἐλθὼν ἐκ Αἴημοιο· δυωδεκάτῃ δέ μιν αὐτίς
 χερσὶν Ἀχιλλῆος θεὸς ἔμβαλεν, ὅς μιν ἔμελλεν
 πέμψειν εἰς Αἶδαο καὶ οὐκ ἐθέλοντα νέεσθαι.
 τὸν δ' ὥς οὖν ἐνόησε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεὺς
 γυμνόν, ἄτερ κόρυθὸς τε καὶ ἄσπίδος, οὐδ' ἔχεν ἔγχος, 50
 ἀλλὰ τὰ μὲν ῥ' ἀπὸ πάντα χαμαὶ βάλε· τεῖρε γὰρ ἰδρῶς
 φεύγοντ' ἐκ ποταμοῦ, κάματος δ' ὑπὸ γούνατ' ἐδάμνα·
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς δν μεγαλήτορα θυμόν·
 „ὦ πόποι, ἦ μέγα θαῦμα τόδ' ὀφθαλμοῖσιν ὀρῶμαι·
 ἦ μάλα δὴ Τρῶες μεγαλήτορες, οὓς περ ἐπεφνον, 55
 αὐτίς ἀναστήσονται ὑπὸ ζόφου ἡερόεντος,
 οἶον δὴ καὶ ὄδ' ἤλυθε φυγὼν ὑπο νηλεὲς ἥμαρ,
 Αἴημον ἐς ἡγαθέην πεπερημένος· οὐδέ μιν ἔσχεν

πόντος ἄλδς πολιῆς, ὃ πολέας ἀέκοντας ἐρύκει.
 ἀλλ' ἄγε δὴ καὶ δουρὸς ἀκωκῆς ἡμετέροιο 60
 γεύσεται, ὄφρα ἰδωμαι ἐνὶ φρεσὶν ἡδὲ θαεῖω,
 ἣ ἄρ' ὁμῶς καὶ κεῖθεν ἐλεύσεται, ἣ μιν ἐρύξει
 γῇ φυσίζουτος, ἣ τε κατὰ κρατερόν περ ἐρύκει.“

ὣς ὠρμαινε μένων, ὃ δέ οἱ σχεδὸν ἤλθε τεθηπῶς,
 γούνων ἄψασθαι μεμαῶς, περὶ δ' ἤθελε θυμῷ 65
 ἐκφυγέειν θάνατόν τε κακὸν καὶ κῆρα μέλαιναν.
 ἦ τοι ὃ μὲν δόρυ μακρὸν ἀνέσχετο δῖος Ἀχιλλεὺς
 οὐτάμεναι μεμαῶς, ὃ δ' ὑπέδραμε καὶ λάβε γούνων
 κύψας· ἐγχείη δ' ἄρ' ὑπὲρ νώτου ἐνὶ γαίῃ
 ἔστη, ἰεμένη χροὸς ἄμεναι ἀνδρομέοιο. 70

αὐτὰρ ὃ τῇ ἐτέρῃ μὲν ἐλὼν ἐλλίσσεται γούνων,
 τῇ δ' ἐτέρῃ ἔχεν ἔγχος ἀκαχμένον οὐδὲ μεθίει·
 [καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·]
 „γουννοῦμαί σ', Ἀχιλεῦ, σὺ δέ μ' αἶδεο καὶ μ' ἐλέησον·
 ἀντί τοί εἰμ' ἱκέτιο, διοτρεφές, αἰδοίοιο· 75

πάρ γάρ σοι πρῶτῳ πασάμην Διμήτερος ἀκτὴν
 ἤματι τῷ, ὅτε μ' εἶλες ἐνκτιμένη ἐν ἁλώῃ,
 καὶ μ' ἐπέρασσας ἀνευθεν ἄγων πατρός τε φίλων τε
 Αἴημον ἐς ἡγαθέην, ἐκατόμβοιον δέ τοι ἤλφον.
 νῦν δὲ λύμην τρις τόσσα πορών· ἡὗς δέ μοί ἐστιν 80
 ἡδε δυωδεκάτη, ὅτ' ἐς Ἴλιον εἰλήλουθα
 πολλὰ παθὼν· νῦν αὖ με τεῆς ἐν χερσὶν ἔθηκεν
 μοῖρ' ὀλοή· μέλλω που ἀπέχθεσθαι Διὶ πατρί,
 ὅς με σοι αὐτίς ἔδωκε· μινυνθάδιον δέ με μήτηρ
 γείνατο Λαοδόη, θυγάτηρ Ἄλταο γέροντος, 85
 Ἄλτεω, ὅς Δελέγεσσι φιλοπτολέμοισιν ἀνάσσει,
 Πήδασον αἰπήεσσαν ἔχων ἐπὶ Σατνιόεντι.

τοῦ δ' ἔχε θυγατέρα Πριάμος, πολλὰς δὲ καὶ ἄλλας·
 τῆς δὲ δύω γενόμεσθα, σὺ δ' ἄμφω δειροτομήσεις.

ἦ τοι τὸν πρῶτοισι μετὰ πρυλέεσσι δάμασσας, 90
 ἀντίθεον Πολύδωρον, ἐπεὶ βάλες ὀξεί δουρί·
 νῦν δὲ δὴ ἐνθάδ' ἐμοὶ κακὸν ἔσσεται· οὐ γὰρ οἶω
 σὰς χεῖρας φεύξεσθαι, ἐπεὶ ῥ' ἐπέλασσέ γε δαίμων.
 ἄλλο δέ τοι ἐρέω, σὺ δ' ἐνὶ φρεσὶ βάλλεο σῆσιν·
 μὴ με κτεῖν', ἐπεὶ οὐχ ὁμογάστριος Ἑκτορός εἰμι, 95
 ὅς τοι ἑταῖρον ἐπεφνεν ἐνηέα τε κρατερόν τε.“

ὥς ἄρα μιν Πριάμοιο προσηύδα παῖδιμος υἱὸς
 λισσόμενος ἐπέεσσιν, ἀμείλικτον δ' ὅπ' ἄκουσεν·
 „νήπιε, μὴ μοι ἄποινα πιφάνσκειο μηδ' ἀγόρευε·
 πρὶν μὲν γὰρ Πάτροκλον ἐπισπεῖν αἰσιμον ἡμᾶρ, 100
 τόφρα τί μοι πεφιδέσθαι ἐνὶ φρεσὶ φίλτερον ἦεν
 Τρώων, καὶ πολλοὺς ζωοὺς ἔλον ἡδὲ πέρασσα·
 νῦν δ' οὐκ ἔσθ', ὅς τις θάνατον φύγῃ, ὅν κε θεὸς γε
 Ἴλίου προπάρειθεν ἐμῆς ἐν χερσὶ βάλλῃσιν,
 καὶ πάντων Τρώων, πέρι δ' αὖ Πριάμοιό γε παίδων. 105
 ἀλλὰ, φίλος, θάνε καὶ σὺ· τί ἦ ὀλοφύρεαι οὕτως;
 κάτθανε καὶ Πάτροκλος, ὃ περ σέο πολλὸν ἀμείνων.
 οὐχ ὀράας, οἷος καὶ ἐγὼ καλὸς τε μέγας τε;
 πατρὸς δ' εἴμ' ἀγαθοῖο, θεὰ δέ με γείνατο μήτηρ·
 ἀλλ' ἐπι τοι καὶ ἐμοὶ θάνατος καὶ μοῖρα κραταιή. 110
 ἔσσεται ἢ ἡὼς ἢ δαίτη ἢ μέσον ἡμᾶρ,
 ὁππότε τις καὶ ἐμεῖο Ἄρει ἐκ θυμὸν ἔληται,
 ἢ ὃ γε δουρὶ βαλὼν ἢ ἀπὸ νευρῆφιν ὀιστῶ.“

ὥς φάτο, τοῦ δ' αὐτοῦ λύτο γούνατα καὶ φίλον ἦτορ·
 ἔγχος μὲν ῥ' ἀφέηκεν, ὃ δ' ἔξετο χεῖρε πετάσσας 115
 ἀμφοτέρως. Ἀχιλεὺς δὲ ἐρυσσάμενος ξίφος ὀξὺ
 τύψε κατὰ κληῖδα παρ' αὐχένα, πᾶν δέ οἱ εἴσω
 δῦ ξίφος ἄμφηκες· ὃ δ' ἄρα πρηνῆς ἐπὶ γαίῃ
 κείτο ταθείς, ἐκ δ' αἶμα μέλαν ῥέε, δεῦθε δὲ γαῖαν.
 τὸν δ' Ἀχιλεὺς ποταμόνδε λαβὼν ποδὸς ἦκε φέρεσθαι,

καὶ οἱ ἐπενχόμενος ἔπεα πτερόεντ' ἀγόρευεν· 121
 „ένταυθοὶ νῦν κείσο μετ' ἰχθύσιν, οἳ σ' ὠτειλῇν
 αἶμ' ἀπολιχμήσονται ἀκηδέες· οὐδέ σε μήτηρ
 ένθιμέμνη λεχέεσσι γοήσεται, ἀλλὰ Σκάμανδρος
 οἴσει δινῆεις εἴσω ἄλὸς εὐρέα κόλπον. 125

θρώσκων τις κατὰ κῦμα μέλαιναν φρεῖχ' ὑπαῖξει
 ἰχθύς, ὃς κε φάγησι Λυκάονος ἀργέτα δημόν.
 φθείρεσθ', εἰς ὃ κεν ἄστυ κιχείομεν Ἴλιον ἱρῆς,
 ὑμεῖς μὲν φεύγοντες, ἐγὼ δ' ὀπιθεν κερατίζων.
 οὐδ' ὑμῖν ποταμός περ ἑύροος ἀργυροδίνης 130
 ἀρκέσει, ᾧ δὴ δητὰ πολέας ἱερεύετε τάυρους,
 ζωοὺς δ' έν δίνησι καθίετε μώνυχας ἱππους.
 ἀλλὰ καὶ ὥς ὀλέεσθε κακὸν μόρον, εἰς ὃ κε πάντες
 τίσετε Πατρόκλοιο φόνον καὶ λοιγὸν Ἀχαιῶν,
 οὓς ἐπὶ νηυσὶ θοῇσιν ἐπέφνετε νόσφιν ἐμείο.“ 135

ὥς ἄρ' ἔφη, ποταμὸς δὲ χολώσατο κηρόθι μᾶλλον,
 ὥρμηεν δ' ἀνὰ θυμόν, ὅπως παύσειε πόνοιο
 διον Ἀχιλλῆα, Τρώεσσι δὲ λοιγὸν ἀλάλκοι.
 τόφρα δὲ Πηλέος νῆος ἔχων δολιχόσκιον ἔγχος
 Ἀστεροπαῖφ' ἐπᾶλτο κατακτάμεναι μενεαίνων, 140
 νηῒ Πηλεγονός· τὸν δ' Ἀξιδὸς εὐρυρέεθρος
 γείνατο καὶ Περίβοια, Ἀκессαμενοιο θυγατρῶν
 πρεσβυτάτη· τῇ γάρ ῥα μίγῃ ποταμὸς βαθυδίνης.
 τᾷ ῥ' Ἀχιλεὺς ἐπόρουσεν, ὃ δ' ἀντίος ἐκ ποταμοῖο
 ἔστη ἔχων δύο δοῦρε· μένος δὲ οἱ έν φρεσὶ θῆκεν 145
 Ξάνθος, ἐπεὶ κεχόλωτο δαίκταμένων αἰξήων,
 τοὺς Ἀχιλεὺς ἐδάϊξε κατὰ ῥόον οὐδ' ἐλέαιρεν.
 οἱ δ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 τὸν πρότερος προσέειπε ποδάρκης ὀτος Ἀχιλλεύς·
 „τίς, πόθεν εἰς ἀνδρῶν, ὃ μευ ἔτλης ἀντίος ἐλθεῖν; 150
 δυστήνων δέ τε παῖδες ἐμῷ μένει ἀντιόωσιν.“

τὸν δ' αὖ Πηλεγόνος προσεφώνεε παίδιμος υἱός·
 „Πηλεΐδῃ μεγάθυμῃ, τί ἦ γενεῇν ἐρεείνεις;
 εἴμ' ἐκ Παιονίης ἐριβώλῳ, τηλόθ' ἐούσης,
 Παίονας ἄνδρας ἄγων δολιχεγχείας· ἦδε δέ μοι νῦν 155
 ἡὼς ἐνδεκάτῃ, ὅτ' ἐς Ἴλιον εἰλήλουθα.

αὐτὰρ ἐμοὶ γενεὴ ἐξ Ἀξιοῦ εὐρὺν ῥέοντος,
 [Ἀξιοῦ, ὃς κάλλιστον ὕδωρ ἐπὶ γαίαν ἵησιν,]
 ὃς τέκε Πηλεγόνα κλυτὸν ἔργεϊ· τὸν δ' ἐμέ φασιν
 γείνασθαι. νῦν αὖτε μαχώμεθα, παίδιμ' Ἀχιλλεῦ.“ 160

ὣς φάτ' ἀπειλήσας, ὃ δ' ἀνέσχετο δῖος Ἀχιλλεὺς
 Πηλιάδα μελίην· ὃ δ' ἄμαρτῇ δούρασιν ἀμφὶς
 ἦρως Ἀστεροπαῖος, ἐπεὶ περιδέξιος ἦεν·
 καὶ ῥ' ἐτέρῳ μὲν δουρὶ σάκος βάλεν, οὐδὲ διαπρὸ
 ῥῆξε σάκος· χρυσὸς γὰρ ἐρύκακε, δῶρα θεοῖο· 165
 τῷ δ' ἐτέρῳ μιν πῆχυν ἐπιγράβδην βάλε χειρὸς
 δεξιτερῆς, σῦτο δ' αἶμα κελαινεφές· ἡ δ' ὑπὲρ αὐτοῦ
 γαίῃ ἐνεστήρικτο, λιλαιομένη χρὸς ἄσαι.

δεύτερος αὖτ' Ἀχιλλεὺς μελίην ἰδυπτίωνα
 Ἀστεροπαῖῳ ἐφῆκε κατακτάμεναι μενεαίνων· 170
 καὶ τοῦ μὲν ῥ' ἀφάμαρτεν, ὃ δ' ὑψηλὴν βάλεν ὄχθην,
 μεσσοπαγὲς δ' ἄρ' ἔθηκε κατ' ὄχθης μέλινον ἔγχος.
 Πηλεΐδης δ' ἄορ ὅξυ ἐρυσσάμενος παρὰ μηροῦ
 ἄλτ' ἐπὶ οἱ μεμαῶς· ὃ δ' ἄρα μελίην Ἀχιλῆος
 οὐ δύνατ' ἐκ κρημνοῖο ἐρύσσαι χειρὶ παχείῃ. 175

τρὶς μὲν μιν πελέμιξεν ἐρύσσεσθαι μενεαίνων,
 τρὶς δὲ μεθῆκε βίης· τὸ δὲ τέτρατον ἠθέλε θυμῷ
 ἄξαι ἐπιγνάμψας δόρυ μέλινον Αἰακίδαο,
 ἀλλὰ πρὶν Ἀχιλλεὺς σχεδὸν ἄορι θυμὸν ἀπηύρα.
 γαστέρα γάρ μιν τύψε παρ' ὀμφαλόν, ἐκ δ' ἄρα πᾶσαι 180
 χύντο χαμαὶ χολάδες· τὸν δὲ σκότος ὄσσε κάλυπεν
 ἀσθμαίνοντ'. Ἀχιλλεὺς δ' ἄρ' ἐνὶ στήθεσσιν ὀρούσας

τεύχεά τ' ἐξενάριξε καὶ εὐχόμενος ἔπος ἤυδα·
 „κεῖσ' οὕτως· χαλεπὸν τοι ἐρισθενέος Κρονίωνος
 παισὶν ἐριζέμεναι, ποταμοῖό περ ἐκγεγαῶτι. 185
 φῆσθα σὺ μὲν ποταμοῦ γένος ἔμμεναι εὐρὺν θέοντος,
 αὐτὰρ ἐγὼ γενεὴν μεγάλου Διὸς εὐχομαι εἶναι.
 τίκτε μ' ἀνὴρ πολλοῖσιν ἀνάσσω· Μυρμιδόνεσσιν
 Πηλεὺς Αἰακίδης· ὁ δ' ἄρ' Αἰακὸς ἐκ Διὸς ἦεν.
 τῷ κρείσσω μὲν Ζεὺς ποταμῶν ἀλιμυρηνέων, 190
 κρείσσω αὐτὲ Διὸς γενεὴ ποταμοῖο τέτυκται.
 καὶ γὰρ σοὶ ποταμός γε πάρα μέγας, εἰ δύνатаί τι
 χραισμεῖν· ἄλλ' οὐκ ἔστι Διὶ Κρονίῳνι μάχεσθαι,
 τῷ οὐδὲ κρείων Ἀχελώϊος ἰσοφαρίζει,
 οὐδὲ βαθυρρεῖται μέγα σθένος Ὠκεανοῖο, 195
 ἐξ οὗ περ πάντες ποταμοὶ καὶ πᾶσα θάλασσα
 καὶ πᾶσαι κρῆναι καὶ φρεῖατα μακρὰ νάουσιν·
 ἀλλὰ καὶ ὃς δαίδοικε Διὸς μέγαλοιο κεραυνὸν
 δεινὴν τε βροντὴν, ὅτ' ἀπ' οὐρανόθεν σμαραγγίσῃ.“

ἣ ῥα καὶ ἐκ κρημνοῖο ἐρύσσατο χάλκεον ἔγχος, 200
 τὸν δὲ κατ' αὐτόθι λείπεν, ἐπεὶ φίλον ἦτορ ἀπηύρα,
 κείμενον ἐν ψαμάθοισι, δῖαινε δέ μιν μέλαν ὕδωρ.
 τὸν μὲν ἄρ' ἐγγέλυσέ τε καὶ ἰχθύες ἀμφεπένοντο,
 δημὸν ἐρεπτόμενοι ἐπινεφρίδιον κείροντες·
 αὐτὰρ ὁ βῆ ῥ' ἵεναι μετὰ Παίονας ἱπποκορυστάς, 205
 οἳ ῥ' ἔτι παρ ποταμὸν πεφοβήατο δινήεντα,
 ὥς εἶδον τὸν ἄριστον ἐνὶ κρατερῇ ὕσμινῃ
 χέρσ' ὑπο Πηλεΐδαο καὶ ἄορι ἴφι δαμέντα.
 ἐνθ' ἔλε Θερσίλοχόν τε Μύδωνά τε Ἀστυπυλὸν τε
 Μνησὸν τε Θρασίον τε καὶ Αἰνιον ἠδ' Ὀφελέστην· 210
 καὶ νῦ κ' ἔτι πλέονας κτάνε Παίονας ὥκυνς Ἀχιλλεύς,
 εἰ μὴ χωσάμενος προσέφη ποταμὸς βαθυδίνης,
 ἀνέρι εἰσάμενος, βαθέης δ' ἐκφθέγγατο δίνης·

„ὦ Ἀχιλεῦ, περὶ μὲν κρατεῖς, περὶ δ' αἴσυλα ῥέξεις
ἀνδρῶν· αἰεὶ γάρ τοι ἀμύνουσιν θεοὶ αὐτοί. 215

εἰ τοι Τρῶας ἔδωκε Κρόνου παῖς πάντας ὀλέσσαι,
ἔξ ἐμέθεν γ' ἐλάσας πεδίον κάτω μέγμερα ῥέξε·
πλήθει γάρ δῃ μοι νεκύων ἔρατεινὰ ῥέεθρα,
οὐδὲ τί πη δύναιμι προχέειν ῥόον εἰς ἄλλα δῖαν
στεινόμενος νεκύεσσι, σὺ δὲ κτείνεις αἰδήλως. 220

ἀλλ' ἄγε δῇ καὶ ἔασον· ἄγῃ μ' ἔχει, ὄρχαμε λαῶν.“
τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
„ἔσται ταῦτα, Σκάμανδρε διοτρεφές, ὥς σὺ κελεύεις.
Τρῶας δ' οὐ πρὶν λήξω ὑπερφιάλους ἐναρλίζων,
πρὶν ἔλσαι κατὰ ἄστυ καὶ Ἑκτορι πειρηθῆναι 225
ἀντιβίην, ἥ κέν με δαμάσσεται ἥ κεν ἐγὼ τόν.“

ὥς εἰπὼν Τρώεσσιν ἐπέσσυτο δαίμονι ἴσος.
καὶ τότε Ἀπόλλωνα προσέφη ποταμὸς βαθυδίνης·
„ὦ πόποι, ἄργυρότοξε, Διὸς τέκος, οὐ σύ γε βουλὰς
εἰρύσαιο Κρονίωνος, ὃ τοι μάλα πόλλ' ἐπέτελλεν 230
Τρῶσι παρεστάμεναι καὶ ἀμύνειν, εἰς ὃ κεν ἔλθῃ
δείελος ὀψὲ δύων, σκιάσῃ δ' ἐρίβωλον ἄρουραν.“

ἦ, καὶ Ἀχιλλεύς μὲν δουρικλυτὸς ἐνδορε μέσσω
κρημνοῦ ἀπαῖξας, ὁ δ' ἐπέσσυτο οἴδματι θύων,
πάντα δ' ὄρινε ῥέεθρα κνκώμενος, ὥς δὲ νεκρούς 235
πολλούς, οἳ ῥά κατ' αὐτὸν ἄλις ἔσαν, οὓς κτάν' Ἀχιλλεύς·
τοὺς ἐκβαλλε θύραζε, μεμυκὼς ἥντε ταῦρος,
χέρσονδε· ζωοὺς δὲ σάω κατὰ καλὰ ῥέεθρα,
κρύπτων ἐν δίνῃσι βαθείῃσιν μεγάλῃσιν.

δεινὸν δ' ἄμφ' Ἀχιλλῆα κνκώμενον ἴστατο κῦμα, 240
ᾧθαι δ' ἐν σάκει πίπτων ῥόος· οὐδὲ πόδεςσιν
εἶχε στηριξασθαι. ὁ δὲ πετέλην ἔλε χερσὶν
εὐφυνέα μεγάλην· ἥ δ' ἐκ ῥιζέων ἐριποῦσα
κρημνὸν ἄπαντα διῶσεν, ἐπέσχε δὲ καλὰ ῥέεθρα

ὄξοισιν πνικνοῖσι, γεφύρωσεν δέ μιν αὐτὸν 245
 εἶσω πᾶσ' ἐριποῦσ'· ὁ δ' ἄρ' ἐκ δίνης ἀνορούσας
 ἤρξεν πεδίοιο ποσὶ κραιπνοῖσι πέτεσθαι,
 δεισας. οὐδέ τ' ἔληγε θεὸς μέγας, ὥρτο δ' ἐπ' αὐτῷ
 ἀκροκελαινιῶν, ἵνα μιν παύσειε πόνοιο
 δῖον Ἀχιλλῆα, Τρώεσσι δὲ λοιγὸν ἀλάλκοι. 250
 Πηλεΐδης δ' ἀπόρουσεν, ὅσον τ' ἐπὶ δουρὸς ἐρωή,
 αἰετοῦ οἴματ' ἔχων μέλανος τοῦ θηρητῆρος,
 ὅς θ' ἄμα κάρτιστός τε καὶ ᾠκιστος πετεηνῶν·
 τῷ εἰκὼς ἤρξεν, ἐπὶ στήθεσσι δὲ χαλκὸς
 σμερδαλέον κονάβιζεν· ὕπαιθα δὲ τοιο λιασθεῖς 255
 φεῦγ', ὁ δ' ὀπισθε ῥέων ἔπετο μέγῳ δρυμαγδῷ.
 ὥς δ' ὅτ' ἀνῆρ ὀχετηγὸς ἀπὸ κρήνης μελανύδρου
 ἄμ φντά καὶ κήπους ὕδατι ῥόον ἡγεμονεύη,
 χειρὶ μάκελλαν ἔχων ἀμάρης ἐξ ἔχματα βάλλων·
 τοῦ μὲν τε προρέοντος ὑπὸ ψηφίδες ἄπασαι 260
 ὀχλεῦνται· τὸ δέ τ' ὥκα κατειβόμενον κελαρύζει
 χώρῳ ἐνὶ προαλεῖ, φθάνει δέ τε καὶ τὸν ἔγοντα·
 ὥς αἰεὶ Ἀχιλλῆα κιχήσατο κῦμα ῥόοιο
 καὶ λαιψηρὸν ἐόντα· θεοὶ δέ τε φέρτεροι ἀνδρῶν.
 ὁσσάκι δ' ὀρμήσειε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς 265
 στῆναι ἐναντίβιον καὶ γνῶμεναι, εἰ μιν ἅπαντες
 ἀθάνατοι φοβέουσι, τοὶ οὐρανὸν εὐρὺν ἔχουσιν,
 τοσσάκι μιν μέγα κῦμα διυπετέος ποταμοῖο
 πλάξ' ὤμους καθύπερθεν· ὁ δ' ὑψόσε ποσσὶν ἐπήδα
 θυμῷ ἀνιάζων· ποταμὸς δ' ὑπὸ γούνατ' ἐδάμνα 270
 λάβρος ὕπαιθα ῥέων, κονίην δ' ὑπέρεπτε ποδοῖν.
 Πηλεΐδης δ' ὥμωξεν ἰδὼν εἰς οὐρανὸν εὐρύν·
 „Ζεῦ πάτερ, ὥς οὗ τίς με θεῶν ἐλεεινὸν ὑπέστη
 ἐκ ποταμοῖο σαῶσαι· ἔπειτα δὲ καὶ τι πάθοιμι.
 ἄλλος δ' οὗ τίς μοι τόσον αἴτιος Οὐραניῶνων, 275

ἀλλὰ φίλη μήτηρ, ἥ με ψεύδεσσιν ἔθελγεν,
 ἥ μ' ἔφατο Τρώων ὑπὸ τείχει θωρηκτάων
 λαιψηροῖς ὀλέεσθαι Ἀπόλλωνος βελέεσσιν.
 ὣς μ' ὄφελ' ἔκτωρ κτείνειν, ὃς ἐνθάδε γ' ἔτραφ' ἄριστος·
 τῷ κ' ἀγαθὸς μὲν ἔπεφν', ἀγαθὸν δέ κεν ἔξενάριξεν. 280
 νῦν δέ με λευγαλέῳ θανάτῳ εἴμαρτο ἄλδωναι
 ἐρχθέντ' ἐν μεγάλῳ ποταμῷ, ὡς παῖδα συφορβόν,
 ὃν ῥά τ' ἔναυλος ἀποέρση χειμῶνι περῶντα.“

ὣς φάτο, τῷ δὲ μάλ' ὤκα Ποσειδάων καὶ Ἀθήνη
 στήτην ἐγγὺς ἰόντε, δέμας δ' ἀνδρεσσιν ἐίκτην, 285
 χειρὶ δὲ χεῖρα λαβόντες ἐπιστώσαντ' ἐπέεσσιν.
 τοῖσι δὲ μύθων ἦρχε Ποσειδάων ἐνοσίχθων·
 „Πηλεΐδη, μήτ' ἄρ τι λήν τρέε μήτε τι τάρβει·
 τοίῳ γάρ τοι νῶϊ θεῶν ἐπιταρρόθῳ εἶμην
 Ζηνὸς ἐπαινήσαντος, ἐγὼ καὶ Παλλὰς Ἀθήνη· 290
 ὥς οὗ τοι ποταμῷ γε δαμήμεναι αἰσιμὸν ἔστιν,
 ἀλλ' ὅδε μὲν τάχα λωφήσει, σὺ δὲ εἴσεαι αὐτός·
 αὐτὰρ τοι πυκινῶς ὑποθησόμεθ', αἶ κε πύθῃαι·
 μὴ πρὶν παύειν χεῖρας ὁμοίου πολέμοιο,
 πρὶν κατὰ Ἰλίοφι κλυτὰ τεύχεα λαὸν ἐέλσαι 295
 Τρωικόν, ὃς κε φύγησι· σὺ δ' ἔκτορι θυμὸν ἀπούρας
 ἄψ ἐπὶ νῆας ἴμεν· δίδομεν δέ τοι εὖχος ἀρέσθαι.“

τὼ μὲν ἄρ' ὥς εἰπόντε μετ' ἀθανάτους ἀπεβήτην,
 αὐτὰρ ὁ βῆ, μέγα γάρ ῥα θεῶν ὤτρυνεν ἔφετμή,
 ἐς πεδῖον· τὸ δὲ πᾶν πληθ' ὕδατος ἐκχυμένοιο, 300
 πολλὰ δὲ τεύχεα καλὰ δαίκταμένων αἰζήδων
 πλῶον καὶ νέκυες. τοῦ δ' ὑψόσε γούνατ' ἐπήδα
 πρὸς ῥόον αἰσσοντος ἀν' ἰδύν, οὐδέ μιν ἴσχευ
 εὐρὺ ῥέων ποταμός· μέγα γὰρ σθένος ἔμβαλ' Ἀθήνη.
 οὐδὲ Σκάμανδρος ἔληγε τὸ δν μένος, ἀλλ' ἔτι μᾶλλον 305
 χώετο Πηλεΐωνι, κόρουσσε δὲ κῦμα ῥόοιο

ὑψόσ' ἀειρόμενος, Σιμόεντι δὲ κέκλειτ' ἀύσας·
 „φίλε κασίγνητε, σθένος ἀνέρος ἀμφοτέροί περ
 σχῶμεν, ἐπεὶ τάχα ἄστν μέγα Πριάμοιο ἄνακτος
 ἐκπέρσει, Τρῶες δὲ κατὰ μόθον οὐ μενέουσιν. 310
 ἀλλ' ἐπάμυνε τάχιστα, καὶ ἐμπύμπληθι ῥέεθρα
 ὕδατος ἐκ πηγέων, πάντας δ' ὀρόθυνον ἐναύλους,
 ἴστη δὲ μέγα κῦμα, πολλὸν δ' ὀρυμαγδὸν ὄρινε
 φιτρῶν καὶ λάων, ἵνα παύσομεν ἄγριον ἄνδρα,
 ὃς δὴ νῦν κρατέει, μέμονεν δ' ὃ γε ἴσα θεοῖσιν. 315
 φημὶ γὰρ οὔτε βίην χραισμῆσέμεν οὔτε τι εἶδος
 οὔτε τὰ τεύχεα καλά, τὰ που μάλα νειόθι λίμνης
 κείσεθ' ὑπ' ἰλῦος κεκαλυμμένα· καὶ δέ μιν αὐτὸν
 εἰλύσω ψαμάθοισιν, ἄλῃς χέραδος περιχεύας
 μυρίον, οὐδέ οἱ ὅστέ' ἐπιστήσονται Ἀχαιοὶ 320
 ἀλλέξαι· τόσσην οἱ ἄσιν καθύπερθε καλύψω.
 αὐτοῦ οἱ καὶ σῆμα τετεύχεται, οὐδέ τί μιν χρεὼ
 ἔσται τυμβοχοῆς, ὅτε μιν θάπτωσιν Ἀχαιοί.“
 ἧ καὶ ἐπῶρτ' Ἀχιλλῇ κυκώμενος ὑπόσε θύων,
 μορμύρων ἀφρῶ τε καὶ αἵματι καὶ νεκύεσσιν. 325
 πορφύρεον δ' ἄρα κῦμα διυπετέος ποταμοῖο
 ἵστατ' ἀειρόμενον, κατὰ δ' ἦρεε Πηλεΐωνα.
 Ἥρη δὲ μέγ' ἄνσε περιδείσασ' Ἀχιλλῇ,
 μή μιν ἀποέρσειε μέγας ποταμὸς βαθυδίνης.
 αὐτίκα δ' Ἥφαιστον προσεφώνεεν ὃν φίλον υἱόν· 330
 „ὄρσεο, κυλλοπόδιον, ἐμὸν τέκος· ἄντα σέθεν γὰρ
 Ξάνθον δινήεντα μάχῃ ἡίσκομεν εἶναι·
 ἀλλ' ἐπάμυνε τάχιστα, πιφαύσκεο δὲ φλόγα πολλήν.
 αὐτὰρ ἐγὼ Ζεφύροιο καὶ ἀργεστᾶο Νότοιο 335
 εἶσομαι ἐξ ἀλόθεν χαλεπὴν ὄρουσα θύελλαν,
 ἧ κεν ἀπὸ Τρώων κεφαλὰς καὶ τεύχεα κῆαι
 φλέγμα κακὸν φορέουσα. σὺ δὲ Ξάνθοιο παρ' ὄχθας

δένδρεα κατ', ἐν δ' αὐτὸν ἵει πυρὶ· μηδὲ σε πάμπαν
μειλιχίοις ἐπέεσσιν ἀποτρεπέτω καὶ ἀρειῇ·

μηδὲ πρὶν ἀπόπανε τεὸν μένος, ἀλλ' ὅπου' ἂν δὴ 340
φθιέγξομ' ἐγὼν ἰάχουσα, τότε σχεῖν ἀκάματον πῦρ·“

ὣς ἔφαθ', Ἥφαιστος δὲ τιτύσκετο θεσπιδαῆς πῦρ.
πρῶτα μὲν ἐν πεδίῳ πῦρ δαίετο, καίτε δὲ νεκροὺς
[πολλοὺς, οἳ ῥα κατ' αὐτὸν ἄλλις ἔσαν, οὓς κτάν' Ἀχιλλεύς.]
πᾶν δ' ἐξηράνθη πεδίον, σχέτο δ' ἀγλαὸν ὕδωρ. 345
ὥς δ' ὅτ' ὀπωρινὸς Βορέης νεοαρδὲ' ἁλώην
αἰψ' ἀγξηράνῃ· χαίρει δέ μιν ὅς τις ἐθείρῃ·
ὣς ἐξηράνθη πεδίον πᾶν, καὶ δ' ἄρα νεκροὺς
κῆεν· ὁ δ' ἐς ποταμὸν τρέψε φλόγα παμφανώσαν.
καίοντο πετέλαι τε καὶ ἰτέαι ἡδὲ μυρῖκαι, 350
καίετο δὲ λωτός τε ἰδὲ θρύον ἡδὲ κύπειρον,
τὰ περὶ καλὰ ῥέεθρα ἄλλις ποταμοῖο πεφύκειν·
τείροντ' ἐγγέλυές τε καὶ ἰχθύες οἱ κατὰ δίνας,
οἱ κατὰ καλὰ ῥέεθρα κυβίστων ἐνθα καὶ ἐνθα
πνοιῇ τειρόμενοι πολυμήτιος Ἥφαιστοιο. 355

καίετο δ' ἵς ποταμοῖο, ἔπος τ' ἔφατ' ἐκ τ' ὀνόμαζεν·
„Ἥφαιστ', οὗ τις σοί γε θεῶν δύνατ' ἀντιφερίζειν,
οὐδ' ἂν ἐγὼ σοί γ' ὧδε πυρὶ φλεγέθοντι μαχοίμην.
λῆγ' ἐριδος, Τρῶας δὲ καὶ ἀντίκα δῖος Ἀχιλλεύς
ἄστεος ἐξελάσει· τί μοι ἐριδος καὶ ἀρωγῆς;“ 360

φῆ πυρὶ καιόμενος, ἀνὰ δ' ἔφλυε καλὰ ῥέεθρα.
ὥς δὲ λέβης ζεῖ ἐνδον, ἐπειγόμενος πυρὶ πολλῷ,
κνίσην μελδόμενος ἀπαλοτρεφῆος σιάλοιο,
πάντοθεν ἀμβολάδην, ὑπὸ δὲ ξύλα κάγκανα κείται,
ὣς τοῦ καλὰ ῥέεθρα πυρὶ φλέγετο, ζέε δ' ὕδωρ. 365
οὐδ' ἐθελε προρέειν, ἀλλ' ἴσχετο· τείρε δ' ἀντμῇ
Ἥφαιστοιο βίῃφι πολύφρονος. αὐτὰρ ὁ γ' Ἥρην
πολλὰ λισσόμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·

„Ἥρη, τίπτε σὸς υἱὸς ἐμὸν ῥόον ἔχραε κήδειν
 ἐξ ἄλλων; οὐ μὲν τοι ἐγὼ τόσον αἰτίος εἰμι, 370
 ὅσσον οἱ ἄλλοι πάντες, ὅσοι Τρώεσσιν ἄρωγοί.
 ἀλλ' ἦ τοι μὲν ἐγὼν ἀποπαύσομαι, εἰ σὺ κελεύεις,
 παυέσθω δὲ καὶ οὗτος. ἐγὼ δ' ἐπὶ καὶ τόδ' ὁμοῦμαι,
 μὴ ποτ' ἐπὶ Τρώεσσιν ἀλεξήσῃεν κακὸν ἡμαρ,
 μηδ' ὀπότ' ἂν Τροίῃ μαλερῷ πυρὶ πᾶσα δάηται 375
 καιομένη, καίωσι δ' ἀρήιοι νῆες Ἀχαιῶν.“

αὐτὰρ ἐπεὶ τό γ' ἄκουσε θεά, λευκώλενος Ἥρη,
 αὐτίκ' ἄρ' Ἥφαιστον προσεφώνεεν δν φίλον υἱόν·
 „Ἥφαιστε, σχέο, τέκνον ἀγακλές· οὐ γὰρ ἔοικεν
 ἀθάνατον θεὸν ὧδε βροτῶν ἔνεκα στυφείλῃεν.“ 380

ὣς ἔφαθ', Ἥφαιστος δὲ κατέσβεσε θεσπιδαῆς πῦρ,
 ἄφορρον δ' ἄρα κῦμα κατέσσυτο καλὰ ῥέεθρα.

αὐτὰρ ἐπεὶ Ξάνθοιο δάμη μένος, οἱ μὲν ἔπειτα
 πανσάσθη· Ἥρη γὰρ ἐρύκακε χωομένη περ·
 ἐν δ' ἄλλοισι θεοῖσιν ἔρις πέσε βεβριθυῖα 385
 ἀργαλέη, δίχα δὲ σφιν ἐνὶ φρεσὶ θυμὸς ἄητο.
 σὺν δ' ἔπεσον μέγαλῳ πατάγῳ, βράχε δ' εὐρεῖα χθών,
 ἀμφὶ δὲ σάλπιγξεν μέγας οὐρανός. αἶε δὲ Ζεὺς
 ἤμενος Οὐλύμπῳ· ἐγέλασσε δὲ οἱ φίλον ἦτορ
 γηθοσύνη, ὅθ' ὀρᾷτο θεοὺς ἐριδι ξυνιόντας. 390
 ἔνθ' οἷ γ' οὐκέτι δηρὸν ἀφέστασαν· ἦρχε γὰρ Ἄρης
 ῥινοτόρος, καὶ πρῶτος Ἀθηναίῃ ἐπόρουσεν
 χάλκεον ἔγχος ἔχων, καὶ ὀνείδειον φάτο μῦθον·
 „τίπτ' αὐτ', ὦ κυνᾶμνια, θεοὺς ἐριδι ξυνελαύνεις
 θάρσος ἄητον ἔχουσα, μέγας δὲ σε θυμὸς ἀνῆκεν; 395
 ἦ οὐ μέμνη, ὅτε Τυδεΐδην Διομήδε' ἀνῆκας
 οὐτάμεναι, αὐτῇ δὲ πανόψιον ἔγχος ἐλοῦσα
 ἰθὺς ἐμεῦ ὤσας, διὰ δὲ χροάα καλὸν ἔδαψας;
 τῷ σ' αὖ νῦν ὀίω ἀποτισέμεν, ὅσσα μ' ἔοργας.“

ὥς εἰπὼν οὕτησε κατ' αἰγίδα θυσανδέεσσαν 400
 σμερδαλέην, ἣν οὐδὲ Διὸς δάμνησι κεραυνός·
 τῇ μιν Ἄρης οὕτησε μαιφόνος ἔγχεϊ μακρῷ.
 ἥ δ' ἀναχασσαμένη λίθον εἴλετο χειρὶ παχείῃ
 κείμενον ἐν πεδίῳ, μέλανα, τρηχύν τε μέγαν τε,
 τὸν ῥ' ἄνδρες πρότεροι θέσαν ἔμμεναι οὔρον ἀρούρης·
 τῷ βάλε θυῶρον Ἄρηα κατ' αὐχένα, λῦσε δὲ γυῖα. 406
 ἑπτὰ δ' ἐπέσχε πέλεθρα πεσών, ἐκόνισε δὲ χαίτας.
 τεύχεα δ' ἀμφοράβησε· γέλασσε δὲ Παλλὰς Ἀθήνη,
 καὶ οἱ ἐπενχομένη ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „νηπύτι, οὐδέ νύ πώ περ ἐπεφράσω, ὅσσον ἀρείων 410
 εὖχομ' ἐγὼν ἔμμεναι, ὅτι μοι μένος ἰσοφαρίζεις.
 οὕτω κεν τῆς μητρὸς ἐρινύας ἐξαποτίνῃς,
 ἥ τοι χωομένη κακὰ μῆδεται, οὐνεκ' Ἀχαιοὺς
 κάλλιπες, αὐτὰρ Τρωσὶν ὑπερφιάλοισιν ἀμύνεις.“

ὥς ἄρα φωνήσασα πάλιν τρέπεν ὅσσε φαεινῶ. 415
 τὸν δ' ἄγε χειρὸς ἐλοῦσα Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη
 πυκνὰ μάλα στενάχοντα, μόγισ δ' ἐσαγείρετο θυμόν.
 τὴν δ' ὥς οὖν ἐνόησε θεά, λευκώλενος Ἥρη,
 αὐτίκ' Ἀθηναίην ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „ὦ πόποι, αἰγιδόχοιο Διὸς τέκος, ἀτρυτώνη, 420
 καὶ δὴ αὖθ' ἡ κυνάμυια ἄγει βροτολοιγὸν Ἄρηα
 δηίου ἐκ πολέμοιο κατὰ κλόνον· ἀλλὰ μέτελθε.“

ὥς φάτ', Ἀθηναίη δὲ μετέσσντο, χεῖρε δὲ θυμῷ,
 καὶ ῥ' ἐπιεισαμένη πρὸς στήθεα χειρὶ παχείῃ
 ἤλασε· τῆς δ' αὐτοῦ λύτο γούνατα καὶ φίλον ἦτορ. 425
 τὼ μὲν ἄρ' ἄμφω κείντο ἐπὶ χθονὶ πουλυβοτείρῃ,
 ἥ δ' ἄρ' ἐπενχομένη ἔπεα πτερόεντ' ἀγόρευεν·
 „τοιοῦτοι νῦν πάντες, ὅσοι Τρώεσσιν ἀρωγοί,
 εἶεν, ὅτ' Ἀργείοισι μαχοίατο θωρηκτῆσιν,
 ὧδέ τε θαρσαλέοι καὶ τλήμονες, ὥς Ἀφροδίτη 430

ἦλθεν Ἄρει ἐπίκουρος, ἐμῷ μένει ἀντιώωσα·
τῷ κεν δὴ πάλαι ἄμμες ἐπαυσάμεθα πτολέμοιο,
Ἴλιον ἐκπέρσαντες, ἐνκτίμενον πτολίεθρον.“

[ὥς φάτο, μείδησεν δὲ θεά, λευκώλενος Ἥρη.]
αὐτὰρ Ἀπόλλωνα προσέφη κρείων ἐνοσίχθων· 435

„Φοῖβε, τί ἦ δὴ νῶι διέσταμεν; οὐδὲ ἔοικεν
ἄρξάντων ἑτέρων· τὸ μὲν αἵσχιον, αἶ κ' ἀμαχητὶ
ἴομεν Οὐλύμπονδε, Διὸς ποτὶ χαλκοβατὲς δῶ.

ἄρχε· σὺ γὰρ γενεῇφι νεώτερος· σὺ γὰρ ἐμοί γε
καλόν, ἐπεὶ πρότερος γενόμην καὶ πλείονα οἶδα. 440

νηπύτι', ὥς ἄνοον κραδίην ἔχες· οὐδέ νυ τῶν περ
μέμνηται, ὅσα δὴ πάθομεν κακὰ Ἴλιον ἀμφὶς
μοῦνοι νῶι θεῶν, ὅτ' ἀγήνορι. Λαομέδοντι

παρ Διὸς ἐλθόντες θητεύσαμεν εἰς ἐνιαυτὸν
μισθῷ ἐπὶ ῥητῷ, ὃ δὲ σημαίνων ἐπέτελλεν. 445

ἦ τοι ἐγὼ Τρώεσσι πόλιν πέρι τείχος ἔδειμα
εὐρύ τε καὶ μάλα καλόν, ἴν' ἄρρηκτος πόλις εἴη·
Φοῖβε, σὺ δ' εἰλίποδας ἔλικας βοῦς βουκολέεσκες
Ἴδης ἐν κνημοῖσι πολυπτύχου ὕλησσης.

ἀλλ' ὅτε δὴ μισθοῖο τέλος πολυγηθῆες ὥραι 450
ἐξέφερον, τότε νῶι βιήσατο μισθὸν ἅπαντα

Λαομέδων ἐκπαγλος, ἀπειλήσας δ' ἀπέπεμπεν.

σὺν μὲν δ γ' ἠπειλήσας πόδας καὶ χεῖρας ὑπερθεῖν
δήσειν, καὶ περάαν νήσων ἐπὶ τηλεθαπάρων·

στεῦτο δ' ὃ γ' ἀμφοτέρων ἀπολεψέμεν οὕατα χαλκῷ. 455

νῶι δέ τ' ἄπορροι κίομεν κεκοτηότι θυμῷ,
μισθοῦ χωόμενοι, τὸν ὑποστὰς οὐκ ἐτέλεσσεν.

τοῦ δὴ νῦν λαοῖσι φέρεις χάριν, οὐδὲ μεθ' ἡμέων
πειρᾶ, ὥς κε Τρῶες ὑπερφίαλοι ἀπόλωνται

πρόχην κακῶς σὺν παισὶ καὶ αἰδοίης ἀλόχοισιν.“ 460

τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἄναξ ἐκάεργος Ἀπόλλων·

„έννοσίγαι’, οὐκ ἄν με σαόφρονα μυθήσαιο
 ἔμμεναι, εἰ δὴ σοί γε βροτῶν ἔνεκα πτολεμῖξω
 δειλῶν, οἳ φύλλοισιν ἐοικότες ἄλλοτε μὲν τε
 ξαφλεγέες τελέθουσιν, ἀρούρης καρπὸν ἔδουντες, 465
 ἄλλοτε δὲ φθινύθουσιν ἀκήριοι. ἀλλὰ τάχιστα
 παυσώμεσθα μάχης· οἳ δ’ αὐτοὶ θηριαάσθων.“

ὥς ἄρα φωνήσας πάλιν ἐτράπετ’· αἶδετο γάρ ῥα
 πατροκασιγνήτοιο μιγήμεναι ἐν παλάμῃσιν.
 τὸν δὲ κασιγνήτη μάλα νείκεσε, πότνια θηρῶν, 470
 [Ἄρτεμις ἀγροτέρη, καὶ ὀνειδέειον φάτο μῦθον·]
 „φρεύεις δὴ, ἐκάεργε, Ποσειδάωνι δὲ νίκην
 πᾶσαν ἐπέτρεψας, μέλεον δέ οἱ εὖχος ἔδωκας·
 νηπύτιε, τί νυ τόξον ἔχεις ἀνεμώλιον αὐτῶς;
 [μὴ σευ νῦν ἔτι πατρὸς ἐνὶ μεγάροισιν ἀκούσω 475
 εὖχομένου, ὥς τὸ πρὶν, ἐν ἀθανάτοισι θεοῖσιν,
 ἅντα Ποσειδάωνος ἐναντίβιον πολεμίζειν.]“

ὥς φάτο, τὴν δ’ οὗ τι προσέφη ἐκάεργος Ἀπόλλων,
 ἀλλὰ χολωσαμένη Διὸς αἰδοίῃ παράκοιτις
 [νείκεσεν ἰοχέαιραν ὀνειδέοις ἐπέεσσιν·] 480
 „πῶς δὲ σὺ νῦν μέμονας, κύον ἀδεές, ἀντί’ ἐμεῖο
 στήσεσθαι; χαλεπή τοι ἐγὼ μένος ἀντιφέρεσθαι
 τοξοφόρῳ περ ἐούσῃ, ἐπεὶ σε λέοντα γυναιξὶν
 Ζεὺς θῆκεν, καὶ ἔδωκε κατακτάμεν, ἦν κ’ ἐθέλῃσθα.
 ἦ τοι βέλτερόν ἐστι κατ’ οὐρεα θῆρας ἐναίρειν 485
 ἀγροτέρας τ’ ἐλάφους ἢ κρείσσοσιν ἴφι μάχεσθαι.
 εἰ δ’ ἐθέλεις πολέμοιο δαήμεναι, ὄφρ’ ἐν εἰδῇς,
 ὅσσον φερτέρη εἴμ’, ὅτι μοι μένος ἀντιφερίζεις.“

ἦ ῥα καὶ ἀμφοτέρας ἐπὶ καρπῷ χεῖρας ἔμαρπτεν
 σκαιῇ, δεξιτερῇ δ’ ἄρ’ ἀπ’ ὤμων αἰνυτο τόξα, 490
 αὐτοῖσιν δ’ ἄρ’ ἔθεινε παρ’ οὐατα μειδιώσα
 ἐντροπαλιζομένην· ταχέες δ’ ἐκπιπτον οἰστοί.

θακρυόεσσα δ' ὑπαιθα θεὰ φύγεν ὥς τε πέλεια,
 ἥ ῥά θ' ὑπ' ἱρηκος κοίλῃν εἰσέπτατο πέτρην,
 χηραμόν· οὐδ' ἄρα τῇ γε ἀλώμεναι αἰσιμον ἦεν· 495
 ὥς ἡ θακρυόεσσα φύγεν, λίπε δ' αὐτόθι τόξα.

Λητώ δὲ προσέειπε διάκτορος ἀργεῖφόντης·
 „Λητοῖ, ἐγὼ δέ τοι οὗ τι μαχήσομαι· ἀργαλέον δὲ
 πληκτίζεσθ' ἀλόχοισι Διὸς νεφεληγερέταο·
 ἀλλὰ μάλα πρόφρασσα μετ' ἀθανάτοισι θεοῖσιν 500
 εὖχεσθαι ἐμὲ νικῆσαι κρατερῶφι βίῃφιν.“

ὥς ἄρ' ἔφη, Λητώ δὲ συναίνυντο καμπύλα τόξα
 πεπτεῶτ' ἄλλυδις ἄλλα μετὰ στροφάλιγγι κονίης.
 ἡ μὲν τόξα λαβοῦσα πάλιν κίε θυγατέρος ἧς·
 ἡ δ' ἄρ' Ὀλυμπον ἴκανε, Διὸς ποτὶ χαλκοβατὲς δῶ, 505
 θακρυόεσσα δὲ πατὴρ ἐφέξετο γούνασι κούρη,
 ἄμφι δ' ἄρ' ἄμβρόσιος ἑάνδς τρέμε· τὴν δὲ προτὶ οἷ
 εἶλε πατὴρ Κρονίδης, καὶ ἀνείρετο ἡδὺ γελάσσας·
 „τίς νύ σε τοιάδ' ἔρεξε, φίλον τέκος, Οὐραניῶνων
 [μαψιδίως, ὥς εἰ τι κακὸν ῥέξουσιν ἐνωπῇ;]“ 510
 τὸν δ' αὖτε προσέειπεν ἐνστέφανος κελαδεινῇ·
 „σὴ μ' ἄλοχος στυφέλιξε, πάτερ, λευκώλενος Ἥρη,
 ἐξ ἧς ἀθανάτοισιν ἔρις καὶ νεῖκος ἐφῆπται.“

ὥς οἱ μὲν τοιαῦτα πρὸς ἀλλήλους ἀγόρευον,
 αὐτὰρ Ἀπόλλων Φοῖβος ἐδύσετο Ἴλιον ἱρήν· 515
 μέμβλετο γάρ οἱ τείχος ἐνδμητόιο πόλης,
 μὴ Δαναοὶ πέρσειαν ὑπὲρ μόρον ἡματι κείνῳ.
 οἱ δ' ἄλλοι πρὸς Ὀλυμπον ἴσαν θεοὶ αἰὲν ἐόντες,
 οἱ μὲν χωόμενοι, οἱ δὲ μέγα κυδιόωντες,
 καδ' ὃ ἶξον παρὰ πατρὶ κελαινεφεῖ. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς 520
 Τρῶας ὁμῶς αὐτοὺς τ' ὄλεκεν καὶ μῶνυχας ἵππους.
 ὥς δ' ὅτε καπνὸς ἰὼν εἰς οὐρανὸν εὐρὺν ἵκηται
 ἄστεος αἰθομένοιο, θεῶν δέ ἐ μῆνις ἀνῆκεν,

πᾶσι δ' ἔθηκε πόνον, πολλοῖσι δὲ κήδε' ἔφῃκεν,
ὥς Ἀχιλεὺς Τρώεσσι πόνον καὶ κήδε' ἔθηκεν. 525

ἔστήκει δ' ὁ γέρον Πρίαμος θείου ἐπὶ πύργου,
ἔς δ' ἐνόησ' Ἀχιλλῆα πελώριον· αὐτὰρ ὑπ' αὐτοῦ
Τρῶες ἄφαρ κλονέοντο πεφυζότες, οὐδέ τις ἀλκή
γίγνεθ'· ὁ δ' οἰμῶξας ἀπὸ πύργου βαῖνε χαμᾶζε
ὀτρύνων παρὰ τείχος ἀγακλειτοὺς πυλαωρούς· 530

„πεπταμένας ἐν χερσὶ πύλας ἔχετ', εἰς ὃ κε λαοὶ
ἔλθωσι προτὶ ἔστυ πεφυζότες· ἦ γὰρ Ἀχιλλεὺς
ἐγγὺς ὄδε κλονέων· νῦν οἶω λοίγι' ἔσεσθαι.
αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ἔς τείχος ἀναπνεύσωσιν ἀλέντες,
αὐτίς ἐπανθήμεναι σανίδας πυκινῶς ἀραρυίας· 535
θεΐδια γάρ, μὴ οὗλος ἀνὴρ ἔς τείχος ἄλῃται.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἄνεσάν τε πύλας καὶ ἀπῶσαν ὀχῆας·
αἱ δὲ πετασθεῖσαι τεῦξαν φάος. αὐτὰρ Ἀπόλλων
ἀντίος ἐξέθορε, Τρώων ἵνα λοιγὸν ἀλάλκοι.

οἱ δ' ἰθὺς πόλιος καὶ τείχεος ὑψηλοῖο, 540

δίψῃ καρχαλέοι, κεκουιμένοι ἐκ πεδίοιο
φεῦγον· ὁ δὲ σφεδανὸν ἔφεπ' ἔγχεϊ, λύσσα δὲ οἱ κῆρ
αἶν ἐχε κρατερή, μενέαινε δὲ κῦδος ἀρέσθαι.

ἔνθα κεν ὑψίπυλον Τροίην ἔλον νῆες Ἀχαιῶν,
εἰ μὴ Ἀπόλλων Φοῖβος Ἀγήνορα δῖον ἀνῆκεν, 545

φῶτ' Ἀντήνορος νῆδον ἀμύμονά τε κρατερόν τε.

ἐν μὲν οἱ κραδίη θάρσος βάλε, παρ δὲ οἱ αὐτὸς
ἔστη, ὅπως θανάτοιο βαρείας κῆρας ἀλάλκοι,
φηγῶ κεκλιμένος· κεκάλυπτο δ' ἄρ' ἥερι πολλῇ.

αὐτὰρ ὁ γ' ὥς ἐνόησεν Ἀχιλλῆα πτολίπορθον, 550

ἔστη, πολλὰ δὲ οἱ κραδίη πόρφυρε μένοντι·
ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς δν μεγαλήτορα θυμόν·
„ὦ μοι ἐγών· εἰ μὲν κεν ὑπὸ κρατεροῦ Ἀχιλλῆος
φεύγω, τῇ περ οἱ ἄλλοι ἀτυζόμενοι κλονέονται,

αἰρήσει με καὶ ὧς καὶ ἀνάλκιδα δειροτομήσει. 555
 εἰ δ' ἂν ἐγὼ τούτους μὲν ὑποκλονέεσθαι ἐάσω
 Πηλεΐδῃ Ἀχιλῆϊ, ποσὶν δ' ἀπὸ τείχεος ἄλλη
 φεύγω πρὸς πεδῖον Ἰλῆιον, ὅφρ' ἂν ἴκωμαι
 Ἰδῆς τε κνημοὺς κατὰ τε ῥωπήια δύω·
 ἐσπέριος δ' ἂν ἔπειτα λοεσσάμενος ποταμοῖο 560
 ἰδρῶ ἀποψυχθῶς προτὶ Ἴλιον ἀπονειόμην.
 ἀλλὰ τί ἦ μοι ταῦτα φίλος διελέξατο θυμός;
 μή μ' ἀπαιρόμενον πόλιος πεδίουδ' ἐνοήσῃ
 καὶ με μεταίξας μάρψῃ ταχέεσσι πόδεσσιν·
 οὐκ ἐτ' ἔπειτ' ἔσται θάνατον καὶ κῆρας ἀλύξαι. 565
 λίην γὰρ κρατερός περὶ πάντων ἔστ' ἀνθρώπων.
 εἰ δέ κέν οἱ προπάρουιθε πόλιος κατεναντίον ἔλθω·
 καὶ γὰρ θῆν τούτῳ τρωτὸς χροῶς ὀξεί χαλκῷ,
 ἐν δὲ ἰα ψυχῇ, θνητὸν δέ ἑ φασ' ἀνθρώποι
 [ἔμμεναι· αὐτὰρ οἱ Κρονίδης Ζεὺς κῦδος ὀπάξει.“] 570
 ὧς εἰπὼν Ἀχιλῆα ἀλεις μένεν, ἐν δέ οἱ ἦτορ
 ἄλκιμον ὥρματο πτολεμίζειν ἠδὲ μάχεσθαι.
 ἦνυτε πάροδαλις εἴσι βαθείης ἐκ ξυλόχοιο
 ἀνδρὸς θηροτήρος ἐναντίον, οὐδέ τι θυμῷ
 ταρβεῖ οὐδὲ φοβεῖται, ἐπεὶ κεν ὑλαγμὸν ἀκούσῃ. 575
 εἰ περ γὰρ φθάμενός μιν ἦ οὐτάσῃ ἠὲ βάλῃσιν,
 ἀλλὰ τε καὶ περὶ δουρὶ πεπαρμένη οὐκ ἀπολήγει
 ἀλκῆς, πρὶν γ' ἠὲ ξυμβλήμεναι ἠὲ δαμῆναι·
 ὧς Ἀντήνορος υἱὸς ἀγανοῦ, δῖος Ἀγήνωρ,
 οὐκ ἔθελεν φεύγειν, πρὶν πειρήσαιτ' Ἀχιλλῆος, 580
 ἀλλ' ὃ γ' ἄρ' ἀσπίδα μὲν πρόσθ' ἔσχετο πάντοσ' εἴσῃν,
 ἐγχείῃ δ' αὐτοῖο τιτύσκετο, καὶ μέγ' αὐτεῖ·
 „ἦ δὴ πού μάλ' ἐολπας ἐνὶ φρεσὶ, φαίδιμ' Ἀχιλλεῦ,
 ἥματι τῷδε πόλιν πέρσειν Τρώων ἀγερώχων,
 νηπύτι, ἦ τ' ἔτι πολλὰ τετεύξεται ἄλγε' ἐπ' αὐτῇ. 585

ἐν γάρ οἱ πολέες τε καὶ ἄλκιμοι ἄνδρες εἰμέν,
οἷ καὶ πρόσθε φίλων τοκέων ἀλόχων τε καὶ νύδων
Ἴλιον εἰρυνόμεσθαι· σὺ δ' ἐνθάδε πότμον ἐφέψεις,
ὣδ' ἔκπαγλος ἐὼν καὶ θαρσαλέος πολεμιστής.

ἧ ῥα καὶ ὄξυν ἄκοντα βαρείης χειρὸς ἀφῆκεν, 590
καὶ ῥ' ἔβαλε κνήμην ὑπὸ γούνατος οὐδ' ἀφάμαρτεν·

ἀμφὶ δέ οἱ κνημὶς νεοτεύκτου κασσιτέροιο
σμερδαλέον κονάβησε· πάλιν δ' ἀπὸ χαλκὸς ὄρουσεν
βλημένον, οὐδ' ἐπέρησε, θεοῦ δ' ἠρύκακε δῶρα.

Πηλεΐδης δ' ὠρμήσατ' Ἀγήνορος ἀντιθέοιο 595

δεύτερος· οὐδέ τ' ἔασεν Ἀπόλλων κῦδος ἀρέσθαι,
ἀλλὰ μιν ἐξήρπαξε, κάλυψε δ' ἄρ' ἤερι πολλῇ,
ἠσύχιον δ' ἄρα μιν πολέμου ἔκπεμπε νέεσθαι.

αὐτὰρ ὁ Πηλεΐωνα δόλῳ ἀποέργαθε λαοῦ·

αὐτῷ γὰρ ἐκάεργος Ἀγήνορι πάντα ἐοικῶς 600

ἔσθη πρόσθε ποδῶν, ὁ δ' ἐπέσσυτο ποσσὶ διώκειν.

εἶος ὁ τὸν πεδίοιο διώκετο πυροφόροιο,

τρέψας παρ ποταμὸν βαθυδινήεντα Σκάμανδρον,

τυτθὸν ὑπεκπροθέοντα· δόλῳ δ' ἄρ' ἔθελγεν Ἀπόλλων,

ὥς αἰεὶ ἔλποιτο κιχήσεσθαι ποσσὶν οἷσιν· 605

τόφρ' ἄλλοι Τρῶες πεφοβημένοι ἦλθον ὁμίλῳ

ἀσπασίοι προτὶ ἄστυ, πόλις δ' ἔμπλητο ἀλέντων·

οὐδ' ἄρα τοί γ' ἔτλαν πόλιος καὶ τείχεος ἐκτὸς

μεῖναι ἔτ' ἀλλήλους, καὶ γινώμεναι, ὅς τε πεφεύγειν

ὅς τ' ἔθαν' ἐν πολέμῳ· ἀλλ' ἀσπασίως ἐσέχυντο 610

ἐς πόλιν, ὅν τινα τῶν γε πόδες καὶ γοῦνα σαώσαι.

ΙΛΙΑΔΟΣ X.

Ἕκτορος ἀναίρεσις.

ὥς οἱ μὲν κατὰ ἄστυ, πεφυζότες ἤντε νεβροί,
 ἰδρῶ ἀπεψύχοντο πῖον τ' ἀκέοντό τε δίψαν
 κεκλιμένοι καλῆσιν ἐπάλξεσιν· αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
 τείχεος ἄσσον ἴσαν σάκε' ὦμοισι κλίναντες.
 Ἕκτορα δ' αὐτοῦ μῆναι ὁλοῖη μοῖρα πέδησεν, 5
 Ἰλίου προπάροιθε πυλάων τε Σκαιάων.
 αὐτὰρ Πηλεΐωνα προσηύδα Φοῖβος Ἀπόλλων·
 „τίπτε με, Πηλέος υἱέ, ποσὶν ταχέεσσι διώκεις,
 αὐτὸς θνητὸς ἔων θεὸν ἄμβροτον; οὐδέ νύ πώ με
 ἔγνωσ, ὥς θεός εἰμι, σὺ δ' ἀσπερχές μενεαίνεις. 10
 ἦ νύ τοι οὗ τι μέλει Τρώων πόνος, οὗς ἐφόβησας,
 οἷ δὴ τοι εἰς ἄστυ ἄλεν, σὺ δὲ δεῦρο λιάσθης.
 οὐ μὲν με κτενέεις, ἐπεὶ οὗ τοι μόρσιμός εἰμι.“

τὸν δὲ μέγ' ὀχθήσας προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „ἔβλαψάς μ', ἐκάεργε, θεῶν ὁλοώτατε πάντων, 15
 ἐνθάδε νῦν τρέψας ἀπὸ τείχεος· ἦ κ' ἔτι πολλοὶ
 γαῖαν ὁδᾶξ εἶλον πρὶν Ἴλιον εἰσαφικέσθαι.
 νῦν δ' ἐμὲ μὲν μέγα κῦδος ἀφείλεο, τοὺς δὲ σάωσας
 φηιδίως, ἐπεὶ οὗ τι τίσιν γ' ἔδεισας ὀπίσσω·
 ἦ σ' ἂν τισαίμην, εἴ μοι δύναμις γε παρείη.“ 20

ὥς εἰπὼν προτὶ ἄστυ μέγα φρονέων ἐβεβήκειν,
 σευάμενος ὥς θ' ἵππος ἀεθλοφόρος σὺν ὄχεσφιν,
 ὅς ῥά τε ρεῖα θήῃσι τιταινόμενος πεδίοιο·
 ὥς Ἀχιλεὺς λαιψηρὰ πόδας καὶ γούνατ' ἐνώμα.

τὸν δ' ὁ γέρον Πριάμος πρῶτος ἶδεν ὀφθαλμοῖσιν 25
 καμφαίνονθ' ὥς τ' ἀστέρ' ἐπεσσύμενον πεδίοιο,
 ὅς ῥά τ' ὀπώρης εἰσιν, ἀρίζηλοι δέ οἱ ἀνγὰι

φαίνονται πολλοῖσι μετ' ἀστράσι νυκτὸς ἀμολγῶ,
 ὃν τε κύν' Ὀδρίωνος ἐπὶ κλησὶν καλέουσιν·
 λαμπρότατος μὲν ὃ γ' ἐστί, κακὸν δέ τε σῆμα τέτυκται,
 καὶ τε φέρει πολλὸν πυρετὸν δειλοῖσι βροτοῖσιν· 31
 ὥς τοῦ χαλκὸς ἔλαμπε περὶ στήθεσσι θείοντος.
 ὦμωξεν δ' ὁ γέρων, κεφαλὴν δ' ὁ γε κόψατο χερσὶν
 ὑψόσ' ἀνασχόμενος, μέγα δ' οἰμῶξας ἐγεγώνευν
 λισσόμενος φίλον υἱόν· ὁ δὲ προπάροιθε πυλάων 35
 ἐστήκειν, ἄμοτον μεμαῶς Ἀχιλῆϊ μάχεσθαι·
 τὸν δ' ὁ γέρων ἐλεεινὰ προσηύδα χεῖρας ὀρεγνύς·
 „Ἔκτορ, μή μοι μίμνε, φίλον τέκος, ἀνέρα τοῦτον
 οἶος ἄνευθ' ἄλλων, ἵνα μὴ τάχα πότμον ἐπίσπης
 Πηλεΐωνι δαμείς, ἐπεὶ ἡ πολὺ φέρτερός ἐστιν, 40
 σχέτλιος· αἶθε θεοῖσι φίλος τοσσόνδε γένοιτο,
 ὅσσον ἐμοί· τάχα κέν ἐ κύνες καὶ γῦπες ἔδοιεν
 κείμενον· ἡ κέ μοι αἰνὸν ἀπὸ πραπίδων ἄχος ἔλθοι·
 ὅς μ' υἱῶν πολλῶν τε καὶ ἐσθλῶν εὖνιν ἔθηκεν,
 κτείνων καὶ περναὺς νήσων ἐπὶ τηλεδαπάων. 45
 καὶ γὰρ νῦν δύο παῖδε, Λυκάονα καὶ Πολύδωρον,
 οὐ δύναμαι ἰδέειν Τρώων εἰς ἄστν ἀλέντων,
 τοὺς μοι Λαοδόη τέκετο, κρείουσα γυναικῶν.
 ἀλλ' εἰ μὲν ζῶουσι μετὰ στρατῷ, ἡ τ' ἂν ἔπειτα
 χαλκοῦ τε χρυσοῦ τ' ἀπολυσόμεθ'· ἐστὶ γὰρ ἔνδον· 50
 πολλὰ γὰρ ὥπασε παιδὶ γέρων ὀνομάκλυτος Ἄλτης.
 εἰ δ' ἤδη τεθνᾶσι καὶ εἰν Ἀΐδαο δόμοισιν,
 ἄλγος ἐμῷ θυμῷ καὶ μητέρι, τοὶ τεκόμεσθα·
 λαοῖσιν δ' ἄλλοισι μιν νυνθαδιώτερον ἄλγος
 ἔσσεται, ἣν μὴ καὶ σὺ θάνης Ἀχιλῆϊ δαμασθείς. 55
 ἀλλ' εἰσέρχεο τεῖχος, ἐμὸν τέκος, ὄφρα σαώσης
 Τρῶας καὶ Τρωάς, μηδὲ μέγα κῦδος ὀρέξης
 Πηλεΐδῃ, αὐτὸς δὲ φίλης αἰῶνος ἀμερῆης.

πρὸς δ' ἐμὲ τὸν δύστηνον ἔτι φρονέοντ' ἐλέησον,
 δύσμορον, ὃν ῥα πατήρ Κρονίδης ἐπὶ γήραος οὐδῶ 60
 αἴσῃ ἐν ἀργαλέῃ φθίσει, κακὰ πόλλ' ἐπιδόντα,
 νῆας τ' ὀλλυμένους ἐλκηθείσας τε θύγατρας,
 καὶ θαλάμους κεραλζομένους, καὶ νήπια τέκνα
 βαλλόμενα προτὶ γαίῃ ἐν αἰνῇ δημοτῇτι,
 ἐλκομένας τε νυοὺς ὀλοῆς ὑπὸ χειρσὶν Ἀχαιῶν. 65
 αὐτὸν δ' ἂν πύματόν με κύνες πρῶτῃσι θύρῃσιν
 ὤμῃσται ἐρύουσιν, ἐπεὶ κέ τις ὀξεί χαλκῷ
 τύψας ἢ βαλὼν ρεθέων ἐκ θυμὸν ἔληται·
 οὓς τρέφον ἐν μεγάροισι τραπεζῆας θυραωρούς,
 οἳ κ' ἐμὸν αἶμα πίνοντες ἀλύσσοντες περὶ θυμῷ 70
 κείδοντ' ἐν προθύροισι. νῆφ δέ τε πάντ' ἐπέοικεν,
 ἄρηικταμένῳ, δεδαγμένῳ ὀξεί χαλκῷ
 κείσθαι· πάντα δὲ καλὰ θανόντι περ, ὅττι φανήῃ·
 ἄλλ' ὅτε δὴ πολὺν τε κάρη πολὺν τε γένειον
 αἰδῶ τ' αἰσχύνωσι κύνες κταμένοιο γέροντος, 75
 τοῦτο δὴ οἴκτιστον πέλεται δειλοῖσι βροτοῖσιν.“

ἦ ῥ' ὁ γέρων, πολιὰς δ' ἄρ' ἀνὰ τρίχας ἔλκετο χειρσὶν
 τίλλων ἐκ κεφαλῆς· οὐδ' Ἔκτορι θυμὸν ἐπειθεν.
 μήτηρ δ' αὖθ' ἐτέρωθεν ὀδύρετο δάκρυ χέουσα,
 κόλπον ἀνιεμένη, ἐτέρωφι δὲ μαζὸν ἀνέσχευ· 80
 καὶ μιν δάκρυ χέουσ' ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Ἔκτορ, τέκνον ἐμόν, τάδε τ' αἰδέο καὶ μ' ἐλέησον
 αὐτήν, εἰ ποτέ τοι λαθικηδέα μαζὸν ἐπέσχον,
 τῶν μνηῆσαι, φίλε τέκνον, ἄμυνε δὲ δήιον ἄνδρα
 τείχεος ἐντὸς ἑών, μηδὲ πρόμος ἵστασο τούτῳ· 85
 σχέτλιος· εἰ περ γάρ σε κατακτάνῃ, οὗ σ' ἔτ' ἐγὼ γε
 κλαύσομαι ἐν λεχέεσσι, φίλον θάλος, ὃν τέκον αὐτή,
 οὐδ' ἄλοχος πολύδωρος· ἄνευθε δέ σε μέγα νῶιν
 Ἀργείων παρὰ νηυσὶ κύνες ταχέες κατέδονται.“

ὥς τῷ γε κλαίοντε προσαυδήτην φίλον υἱὸν 90
 πολλὰ λισσομένῳ· οὐδ' Ἴκτορι θυμὸν ἐπειθον,
 ἀλλ' ὃ γε μῖμν' Ἀχιλλῆα πελώριον ἄσσον ἰόντα.
 ὥς δὲ δράκων ἐπὶ χειρὶ ὀρέστερος ἄνδρα μένησιν,
 βεβρωκῶς κακὰ φάρμακ'· ἔδν δέ τέ μιν χόλος αἰνός,
 σμερδαλέον δὲ δέδορκεν ἐλίσσόμενος περὶ χειρὶ· 95
 ὥς Ἴκτωρ ἄσβεστον ἔχων μένος οὐχ ὑπεχώρει,
 πύργῳ ἐπι προύχοντι φαεινὴν ἀσπίδ' ἐρείδας.
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπε πρὸς δν μεγαλήτορα θυμὸν·
 „ὦ μοι ἐγών· εἰ μὲν κε πύλας καὶ τείχεα δύω,
 Πουλυδάμας μοι πρῶτος ἐλεγχείην ἀναθήσει, 100
 ὅς μ' ἐκέλευε Τρῳσὶ ποτὶ πτόλιν ἡγήσασθαι
 νύχθ' ὑπο τήνδ' ὀλοήν, ὅτε τ' ὤρετο δῖος Ἀχιλλεύς.
 ἀλλ' ἐγὼ οὐ πιθόμην· ἦ τ' ἂν πολὺ κέρδιον ἦεν.
 νῦν δ', ἐπεὶ ὤλεσα λαὸν ἀτασθαλίῃσιν ἐμῇσιν,
 αἰδέομαι Τρῶας καὶ Τρωάδας ἐλκεσιπέπλους, 105
 μὴ ποτέ τις εἴπησι κακώτερος ἄλλος ἐμεῖο·
 “Ἴκτωρ ἦφι βίῃφι πιθήσας ὤλεσε λαόν.”
 ὥς ἐρέουσιν· ἐμοὶ δὲ τότε' ἂν πολὺ κέρδιον εἴη
 ἄντην ἢ Ἀχιλλῆα κατακτείναντι νέεσθαι
 ἢ ἐκεν αὐτῷ ὀλέσθαι ἐνκλειῶς πρὸ πόλης. 110
 εἰ δέ κε ἀσπίδα μὲν καταθείομαι ὀμφαλόεσσαν
 καὶ κόρυθα βριαρήν, δόρυ δὲ πρὸς τεῖχος ἐρείδας
 αὐτὸς ἰὼν Ἀχιλλῆος ἀμύμονος ἀντίος ἔλθω
 καὶ οἱ ὑπόσχωμαι Ἑλένην καὶ κτήμαθ' ἅμ' αὐτῇ
 πάντα μάλ', ὅσσα τ' Ἀλέξανδρος κοίλῃς ἐνὶ νηυσὶν 115
 ἡγάγετο Τροίηνδ', ἦ τ' ἐπλετο νείκεος ἀρχή,
 δωσέμεν Ἀτρεΐδῃσιν ἄγειν, ἅμα δ' ἀμφὶς Ἀχαιοῖς
 ἄλλ' ἀποδάσσεσθαι, ὅσα τε πτόλιν ἦδε κέκευθεν·
 Τρῳσιν δ' αὖ μετόπισθε γερούσιον ὄρκον ἔλωμαι
 μὴ τι κατακρύψειν, ἀλλ' ἄνδιχα πάντα δάσασθαι, 120

[κτῆσιν, ὅσῃν πολλίεθρον ἐπήρατον ἐντὸς ἐέργει·]
 ἀλλὰ τί ἡ μοι ταῦτα φίλος διελέξατο θυμός;
 μή μιν ἐγὼ μὲν ἴκωμαι ἰών, ὁ δέ μ' οὐκ ἐλεήσει
 οὐδέ τί μ' αἰδέσεται, κτενέει δέ με γυμνὸν ἔοντα
 αὐτῶς ὥς τε γυναικα, ἐπεὶ κ' ἀπὸ τεύχεα δύω. 125
 οὐ μὲν πως νῦν ἔστιν ἀπὸ δρυὸς οὐδ' ἀπὸ πέτρης
 τῷ ὀαριζέμεναι, ἃ τε παρθένος ἡϊθέος' τε,
 παρθένος ἡϊθέος τ' ὀαρίζετον ἀλλήλοιν.
 βέλτερον αὐτ' ἐριδι ξυνελαννέμεν ὅττι τάχιστα·
 εἶδομεν, ὅπποτέρῳ κεν Ὀλύμπιος εὐχος ὀρέξῃ.“ 130
 ὥς ὠρμαινε μένων, ὁ δέ οἱ σχεδὸν ἤλθεν Ἀχιλλεύς
 ἴσος ἐνναλίῳ, κορυθαίκι πτολεμιστῇ,
 σείων Πηλιάδα μελίην κατὰ δεξιὸν ὦμον
 δεινὴν· ἀμφὶ δὲ χαλκὸς ἐλάμπετο εἰκελος αὐγῇ
 ἢ πυρὸς αἰθομένου ἢ ἡελίου ἀνιόντος. 135
 Ἔκτορα δ', ὥς ἐνόησεν, ἔλε τρόμος· οὐδ' ἄρ' ἔτ' ἔτλη
 αὐθι μένειν, ὀπίσω δὲ πύλας λίπε, βῆ δὲ φοβηθεῖς.
 Πηλεΐδης δ' ἐπόρουσε ποσὶ κραιπνοῖσι πεποιθώς.
 ἥύτε κίρκος ὄρεσφιν, ἐλαφρότατος πετεηνῶν,
 ῥηιδίως οἴμησε μετὰ τρήρωνα πέλειαν· 140
 ἢ δέ θ' ὑπαιθα φοβεῖται, ὁ δ' ἐγγύθεν ὀξὺ λεληκὼς
 ταρσέ' ἐπαῖσσει, ἐλέειν τέ εἰ θυμὸς ἀνώγει·
 ὥς ἄρ' ὁ γ' ἐμμεμαῶς ἰθὺς πέτετο, τρέσε δ' Ἔκτωρ
 τεῖχος ὑπὸ Τρώων, λαιψήρᾳ δὲ γούνατ' ἐνώμα.
 οἱ δὲ παρὰ σκοπιῇν καὶ ἐρινεὸν ἠνεμόεντα 145
 τείχεος αἶεν ὑπὲκ κατ' ἀμαξιτὸν ἐσσεύοντο,
 κροουνὼ δ' ἴκανον καλλιρρόω, ἔνθα τε πηγαὶ
 δοιαὶ ἀναΐσσουσιν Σκαμάνδρου δινήμεντος·
 ἢ μὲν γάρ θ' ὕδατι λιαρῷ ῥέει, ἀμφὶ δὲ καπνὸς
 γίγνεται ἐξ αὐτῆς ὥς εἰ πυρὸς αἰθομένοιο· 150
 ἢ δ' ἐτέρῃ θέρει προρέει ἑκυῖα χαλάξῃ

ἢ χιόνι ψυχρῇ ἢ ἐξ ὕδατος κρυστάλλῳ.
 ἔνθα δ' ἐπ' αὐτῶν πλυνοὶ εὐρέες ἐγγὺς ἔασιν
 καλοὶ λαῖνεοι, ὅθι εἵματα σιγαλόεντα
 πλύνεσκον Τρώων ἄλοχοι καλαὶ τε θύγατρες 155
 τὸ πρὶν ἐπ' εἰρήνης, πρὶν ἐλθεῖν νῆας Ἀχαιῶν.
 τῇ ῥα παραδραμέτην, φεύγων, ὁ δ' ὀπισθε διώκων·
 πρόσθε μὲν ἐσθλὸς ἔφευγε, δίωκε δέ μιν μέγ' ἀμείνων,
 καρπαλίμως, ἐπεὶ οὐχ ἱερήιον οὐδὲ βοεῖην
 ἀρνύσθην, ἃ τε ποσσὶν ἀέθλια γίγνεται ἀνδρῶν, 160
 ἀλλὰ περὶ ψυχῆς θέον Ἑκτορος ἵπποδάμοιο.
 ὥς δ' ὅτ' ἀεθλοφόροι περὶ τέρματα μώνυχες ἵπποι
 ῥίμψα μάλα τρωχῶσι· τὸ δὲ μέγα κεῖται ἄεθλον,
 ἢ τρίπος ἢ γυνή, ἀνδρὸς κατατεθνηῶτος·
 ὥς τῷ τρις Πριάμοιο πόλιν περιδινηθήτην 165
 καρπαλίμοισι πόδεσσι· θεοὶ δέ τε πάντες ὁρῶντο.
 τοῖσι δὲ μύθων ἦρχε πατήρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε·
 „ὦ πόποι, ἦ φίλον ἄνδρα διωκόμενον περὶ τεῖχος
 ὀφθαλμοῖσιν ὁρῶμαι· ἐμὸν δ' ὀλοφύρεται ἦτορ
 Ἑκτορος, ὅς μοι πολλὰ βοῶν ἐπὶ μηρί' ἔκηεν 170
 Ἴδης ἐν κορυφῇσι πολυπτύχου, ἄλλοτε δ' αὐτὲς
 ἐν πόλει ἀκροτάτῃ· νῦν αὐτὲς ἐ δῖος Ἀχιλλεύς
 ἄστυ πέρι Πριάμοιο ποσσὶν ταχέεσσι διώκει.
 ἀλλ' ἄγετε φράζεσθε, θεοί, καὶ μητιάσθε,
 ἦέ μιν ἐκ θανάτοιο σάωσομεν ἦέ μιν ἤδη 175
 Πηλεΐδῃ Ἀχιλῆϊ δαμάσσομεν ἐσθλὸν ἐόντα.“
 τὸν δ' αὐτὲς προσέειπε θεά, γλαυκῶπις Ἀθήνη·
 „ὦ πάτερ ἀργικέραυνε κελαινεφές, οἷον εἶπες·
 ἄνδρα θνητὸν ἐόντα, πάλαι πεπρωμένον αἵσῃ,
 ἄψ ἐθέλεις θανάτοιο δυσηχέος ἕξαναλῦσαι; 180
 ἔρδ'· ἀτὰρ οὗ τοι πάντες ἐπαινέομεν θεοὶ ἅλλοι.“
 τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·

„θάρσει, τριτογένεια, φίλον τέκος· οὐ νύ τι θυμῷ
 πρόφρονι μυθέομαι, ἐθέλω δέ τοι ἥπιος εἶναι·
 ἔρξον, ὅπῃ δὴ τοι νόος ἐπλετο, μηδὲ τ' ἐρώει.“ 185

ὣς εἰπὼν ὥτρυνε πάρος μεμαυῖαν Ἀθήνην·
 βῆ δὲ κατ' Οὐλύμποιο καρῆνων ἀΐξασα.

Ἔκτορα δ' ἀσπερχὲς κλονέων ἔφεπ' ὦκὺς Ἀχιλλεύς.
 ὥς δ' ὅτε νεβρὸν ὄρεσφι κύων ἐλάφοιο δίηται,
 ὄρεσας ἔξ εὐνῆς, διὰ τ' ἄγκεα καὶ διὰ βήσσας· 190
 τὸν δ' εἰ πέρ τε λάθῃσι καταπτήξας ὑπὸ θάμνῳ,
 ἀλλὰ τ' ἀνιχνεύων θέει ἔμπεδον, ὄφρα κεν εὖρη·
 ὥς Ἔκτωρ οὐ λῆθε ποδώκεα Πηλεΐωνα.

ὁσσάκι δ' ὀρμήσειε πυλάων Δαρδανιάων
 αντίον ἀΐξασθαι, ἐυδμήτους ὑπὸ πύργους, 195
 εἰ πῶς οἱ καθύπερθεν ἀλάλκοιεν βελέεσσιν,
 τοσσάκι μιν προπάροιθεν ἀποστρέψασκε παραφθὰς
 πρὸς πεδίον, αὐτὸς δὲ ποτὶ πτόλιος πέτετ' αἰεὶ.

ὥς δ' ἐν ὀνείρῳ οὐ δύναται φεύγοντα διώκειν·
 οὔτ' ἄρ' ὁ τὸν δύναται ὑποφεύγειν οὔθ' ὁ διώκειν· 200
 ὥς ὁ τὸν οὐ δύνατο μάρψαι ποσὶν οὔδ' ὃς ἀλύξαι.
 πῶς δέ κεν Ἔκτωρ κῆρας ὑπεξέφυγεν θανάτοιο,
 εἰ μὴ οἱ πύματόν τε καὶ ὕστατον ἦντετ' Ἀπόλλων
 ἐγγύθεν, ὃς οἱ ἐπῶρσε μένος λαιψηρά τε γοῦνα·

λαοῖσιν δ' ἀνένευε καρῆατι δίος Ἀχιλλεύς, 205
 οὔδ' ἔα ἰέμεναι ἐπὶ Ἔκτορι πικρὰ βέλεμνα,
 μὴ τις κῦδος ἄροιτο βαλὼν, ὁ δὲ δεύτερος ἔλθοι.
 ἀλλ' ὅτε δὴ τὸ τέταρτον ἐπὶ κρουνοὺς ἀφίκοντο,
 καὶ τότε δὴ χρύσεια πατὴρ ἐτίταινε τάλαντα,
 ἐν δ' ἐτίθει δύο κῆρε τανηλεγέος θανάτοιο, 210

τὴν μὲν Ἀχιλλῆος, τὴν δ' Ἔκτορος ἱπποδάμοιο,
 ἔλκε δὲ μέσσα λαβῶν· ῥέπε δ' Ἔκτορος αἵσιμον ἥμαρ,
 ᾧχετο δ' εἰς Αἶδαο, λίπεν δὲ ἑ Φοῖβος Ἀπόλλων.

Πηλεΐωνα δ' ἵκανε θεά, γλανκῶπις Ἀθήνη,
 ἄγχοῦ δ' ἵσταμένη ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 216

„νῦν δὴ νῶϊ γ' ἔολπα, δίφιλε φαίδιμ' Ἀχιλλεῦ,
 οἴσεσθαι μέγα κῦδος Ἀχαιοῖσι προτὶ νῆας,
 Ἔκτορα δηῶσαντε μάχης ἄτον περ ἔοντα.
 οὐ οἱ νῦν ἔτι γ' ἔστι πεφνυμένον ἄμμε γενέσθαι,
 οὐδ' εἰ κεν μάλα πολλὰ πάθοι ἐκάεργος Ἀπόλλων 220
 προπροκυλινδόμενος πατρὸς Διὸς αἰγιόχοιο.

ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν στῆθι καὶ ἄμπνυε, τόνδε δ' ἐγώ τοι
 οἴχομένη πεπιθήσω ἐναντίβιον μαχέσασθαι.“

ὣς φάτ' Ἀθηναίη, ὃ δ' ἐπείθετο, χεῖρε δὲ θυμῷ,
 στήθ' ἄφ' ἐπὶ μελήης χαλκογλῶχινος ἐφεισθείς. 225
 ἢ δ' ἄρα τὸν μὲν ἔλειπε, κιχήσατο δ' Ἔκτορα δῖον
 Διηφόβῳ ἐικυῖα δέμας καὶ ἀτειρέα φωνήν·

ἄγχοῦ δ' ἵσταμένη ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „ἦθεῖ, ἦ μάλα δὴ σε βιάζεται ὠκύς Ἀχιλλεύς,
 ἄστυ πέρι Πριάμοιο ποσὶν ταχέεσσι διώκων· 230
 ἀλλ' ἄγε δὴ στέωμεν καὶ ἀλεξώμεσθα μένοντες.“

τὴν δ' αὖτε προσέειπε μέγας κορυθαίολος Ἔκτωρ·
 „Διήφοβ', ἦ μὲν μοι τὸ πάρος πολὺ φίλτατος ἦσθα
 γνωτῶν, οὗς Ἐκάβη ἠδὲ Πριάμος τέκε παῖδας·
 νῦν δ' ἔτι καὶ μᾶλλον νοέω φρεσὶ τιμήσασθαι, 235
 ὃς ἔτλης ἑμεῦ εἵνεκ', ἐπεὶ ἴδες ὀφθαλμοῖσιν,
 τείχεος ἐξελθεῖν, ἄλλοι δ' ἔντοσθε μένουσιν.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε θεά, γλανκῶπις Ἀθήνη·
 „ἦθεῖ, ἦ μὲν πολλὰ πατήρ καὶ πότνια μήτηρ
 λίσσονθ' ἐξείης γουνούμενοι, ἀμφὶ δ' ἑταῖροι, 240
 αὐθι μένειν· τοῖον γὰρ ὑποτρομέουσιν ἅπαντες·
 ἀλλ' ἐμὸς ἐνδοθι θυμὸς ἐτείρετο πένθει λυγρῷ.
 νῦν δ' ἰθὺς μεμαῶτε μαχώμεθα, μηδέ τι δοῦρων
 ἔστω φειδωλή, ἵνα εἰδομεν, ἦ κεν Ἀχιλλεύς

νῶι κατακτείνας ἔναρα βροτόεντα φέρεται 245
 νῆας ἐπὶ γλαφυράς, ἣ κεν σῶ δουρὶ δαμήῃ.“

ὥς φαμένῃ καὶ κερδοσύνῃ ἡγήσατ' Ἀθήνη.
 οἱ δ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 τὸν πρότερος προσέειπε μέγας κορυθαίολος Ἔκτωρ·
 „οὐ σ' ἔτι, Πηλέος υἱέ, φοβήσομαι, ὥς τὸ πάρος περ 250
 τρὶς περὶ ἄστυ μέγα Πριάμου δῖον οὐδέ ποτ' ἔτλην
 μείναι ἐπερχόμενον· νῦν αὐτέ με θυμὸς ἀνῆκεν
 στήμεναι ἀντία σεῖο· ἔλοιμί κεν ἢ κεν ἀλοίην.
 ἀλλ' ἄγε δεῦρο θεοὺς ἐπιδώμεθα· τοὶ γὰρ ἄριστοι
 μάρτυροι ἔσσονται καὶ ἐπίσκοποι ἁρμονιάων. 255
 οὐ γὰρ ἐγὼ σ' ἐκπαγλὸν ἀεικίω, αἶ κεν ἐμοὶ Ζεὺς
 δῶῃ καμμονίην, σὴν δὲ ψυχὴν ἀφέλωμαι·
 ἀλλ' ἐπεὶ ἄρ κέ σε συλήσω κλυτὰ τεύχε', Ἀχιλλεῦ,
 νεκρὸν Ἀχαιοῖσιν δώσω πάλιν· ὥς δὲ σὺ ῥέζειν.“

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „Ἔκτορ, μὴ μοι, ἄλλαστε, σννημοσύνας ἀγόρευε. 261
 ὥς οὐκ ἔστι λέουσι καὶ ἀνδράσιν ὄρκια πιστά,
 οὐδὲ λύκοι τε καὶ ἄρνες ὁμόφρονα θυμὸν ἔχουσιν,
 ἀλλὰ κακὰ φρονέουσι διαμπερεῖς ἀλλήλοισιν,
 ὥς οὐκ ἔστ' ἐμὲ καὶ σὲ φιλήμεναι, οὔτε τι νῶιν 265
 ὄρκια ἔσσονται πρὶν γ' ἢ ἕτερόν γε πεσόντα
 αἵματος ἄσαι Ἄρηα ταλαύρινον πολεμιστήν.
 παντοίης ἀρετῆς μιμνήσκεο· νῦν σε μάλα χρὴ
 αἰχμητήν τ' ἔμεναι καὶ θαρσαλέον πολεμιστήν.
 οὐ τοι ἔτ' ἔσθ' ὑπάλυξις, ἄφαρ δέ σε Παλλὰς Ἀθήνη
 ἔγχει ἐμῷ δαμάξ· νῦν δ' ἀθρόα πάντ' ἀποτίσεις, 271
 κήδε' ἐμῶν ἐτάρων, οὓς ἔκτανες ἔγχει θύων.“

ἣ ῥα καὶ ἀμπεπαλὼν προῖτι δολιχόσκιον ἔγχος·
 καὶ τὸ μὲν ἄντα ἰδὼν ἠλεύατο φαίδιμος Ἔκτωρ·
 ἔξετο γὰρ προῖδῶν, τὸ δ' ὑπέρπατο χάλκεον ἔγχος, 275

ἐν γαίῃ δ' ἐπάγῃ· ἀνὰ δ' ἤρπασε Παλλὰς Ἀθήνη,
 ἅψ δ' Ἀχιλλῇ διίδου, λάθῃ δ' Ἔκτορα ποιμένα λαῶν.
 Ἔκτωρ δὲ προσέειπεν ἀμύμονα Πηλεΐωνα·

„ἤμβροτες, οὐδ' ἄρα πῶ τι, θεοῖς ἐπιείκελ' Ἀχιλλεῦ,
 ἐκ Διὸς ἡεΐδης τὸν ἐμὸν μόνον· ἦ τοι ἔφησ γέ· 280
 ἀλλὰ τις ἀρτιεπῆς καὶ ἐπὶ κλοπος ἐπλεο μύθων,
 ὄφρα σ' ὑποδείσας μένεος ἀλκῆς τε λάθωμαι.
 οὐ μὲν μοι φεύγοντι μεταφρένῃ ἐν δόρῳ πῆξις,
 ἀλλ' ἰθὺς μεμαῶτι διὰ στήθεσφιν ἔλασσον,
 εἰ τοι ἔδωκε θεός· νῦν αὖτ' ἐμὸν ἔγχος ἄλφει 285
 χάλκεον· ὥς δὴ μιν σῶ ἐν χροῖ πᾶν κομίσαιο·
 καὶ κεν ἐλαφρότερος πόλεμος Τρώεσσι γένοιτο
 σείο καταφθιμένοιο· σὺ γάρ σφισι πῆμα μέγιστον.“

ἦ ῥα καὶ ἀμπεπαλὼν προΐει δολιχόσκιον ἔγχος,
 καὶ βάλε Πηλεΐδαο μέσον σάκος οὐδ' ἀφάμαρτεν· 290
 τῆλε δ' ἀπεπλάγχθη σάκος δόρυ. χῶσατο δ' Ἔκτωρ,
 ὅττι ῥά οἱ βέλος ὠκὺ ἐτώσιον ἔκφυγε χειρός,
 στῆ δὲ κατηγήσας, οὐδ' ἄλλ' ἔχε μείλινον ἔγχος.
 Διήφοβον δ' ἐκάλει λευκάσπιδα μακρὸν αὔσας·
 ἦτεέ μιν δόρυ μακρόν· ὁ δ' οὐ τί οἱ ἐγγύθεν ἦεν. 295

Ἔκτωρ δ' ἔγνω ἧσιν ἐνὶ φρεσὶ φώνησέν τε·
 „ὦ πόποι, ἦ μάλα δὴ με θεοὶ θανατόνδε κάλεσσαν·
 Διήφοβον γὰρ ἐγὼ γ' ἐφάμην ἤρωα παρεῖναι·
 ἀλλ' ὁ μὲν ἐν τείχει, ἐμὲ δ' ἐξαπάτησεν Ἀθήνη.
 νῦν δὲ δὴ ἐγγύθι μοι θάνατος κακὸς οὐδέ τ' ἀνευθεν,
 οὐδ' ἀλέῃ· ἦ γάρ ῥα πάλαι τό γε φίλτερον ἦεν 301
 Ζηνὶ τε καὶ Διὸς νῆϊ ἐκηβόλῳ, οἷ με πάρος γε
 πρόφρονες εἰρύατο· νῦν αὖτέ με μοῖρα κιχάνει.
 μὴ μὰν ἀσπουδί γε καὶ ἀκλειῶς ἀπολοίμην,
 ἀλλὰ μέγα ῥέξας τι καὶ ἐσσομένοισι πυθέσθαι.“ 305

ὥς ἄρα φωνήσας εἰρύσσατο φάσγανον ὀξύ,

τό οἱ ὑπὸ λαπάρην τέτατο μέγα τε στιβαρόν τε,
 οἴμησεν δὲ ἄλεις ὥς τ' αἰετὸς ὑψιπετής,
 ὅς τ' εἰσιν πεδίουνδε διὰ νεφέων ἐρεβεννῶν
 ἀρπάξων ἢ ἄρ' ἀμαλήν ἢ πτώκα λαγών· 810
 ὥς Ἐκτωρ οἴμησε τινάσσων φάσγανον δξύ.
 ὥρμήθη δ' Ἀχιλεὺς, μένεος δ' ἐμπλήσατο θυμὸν
 ἀργίου, πρόσθεν δὲ σάκος στέρνοιο κάλυψεν
 καλὸν δαιδάλεον, κόρυδι δ' ἐπένευε φαινή
 τετραφάλφ· καλαὶ δὲ περισσεύοντο ἔθειραι 815
 χρύσειαι, ἃς Ἥφαιστος ἴει λόφον ἀμφὶ θαμειάς.
 οἶος δ' ἀστήρ εἰσι μετ' ἀστράσι νυκτὸς ἀμολγῶ
 ἔσπερος, ὃς κάλλιστος ἐν οὐρανῷ ἴσταται ἀστήρ,
 ὥς αἰχμῆς ἀπέλαμπ' ἐνήμεος, ἣν ἄρ' Ἀχιλλεὺς
 πάλLEN δεξιτερῇ φρονέων κακὸν Ἐκτορι δίφ, 820
 εἰσορόων χροά καλόν, ὅπη εἴξεις μάλιστα.
 τοῦ δὲ καὶ ἄλλο τόσον μὲν ἔχε χροά χάλκεα τεύχεα,
 καλὰ, τὰ Πατρόκλοιο βίην ἐνάρριξε κατακτάς,
 φαίνεται δ', ἣ κληῖδες ἀπ' ὤμων αὐχέν' ἔχουσιν,
 λαυκανίνην, ἵνα τε ψυχῆς ὤκιστος ὀλεθρὸς· 825
 τῇ ρ' ἐπὶ οἱ μεμαῶτ' ἔλασ' ἔγχει δῖος Ἀχιλλεὺς,
 ἀντικρὺς δ' ἀπαλοτο δι' αὐχένος ἦλυθ' ἀκωκή.
 οὐδ' ἄρ' ἀπ' ἀσφάραγον μελίη τάμε χαλκοβάρεια,
 ὅφρα τί μιν προτιεῖποι ἀμειβόμενος ἐπέεσσιν.
 ἤριπε δ' ἐν κονίῃς· ὃ δ' ἐπεύξατο δῖος Ἀχιλλεὺς· 830
 „Ἐκτορ, ἀτάρ που ἔφης Πατροκλῆ' ἐξαναρίζων
 σῶς ἔσσεσθ', ἐμὲ δ' οὐδὲν ὀπίζεο νόσφιν ἐόντα,
 νῆπις· τοιο δ' ἄνευθεν ἀοσσητῆρ μέγ' ἀμείνων
 νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσιν ἐγὼ μετόπισθε λελείμην,
 ὃς τοι γούνατ' ἔλυσα. σὲ μὲν κύνες ἡδ' οἴωνοι 835
 ἐλκήσουσ' αἰκῶς, τὸν δὲ κτεριοῦσιν Ἀχαιοί.“
 τὸν δ' ὀλιγοδρανέων προσέφη κορυθαίολος Ἐκτωρ·

„λίσσομ' ὑπὲρ ψυχῆς καὶ γούνων σῶν τε τοκῆων,
 μὴ με ἔα παρὰ νηυσὶ κύνας καταδάσαι Ἀχαιῶν,
 ἀλλὰ σὺ μὲν χαλκὸν τε ἄλῃς χρυσὸν τε δέδεξο 340
 δῶρα, τὰ τοι δώσουσι πατήρ καὶ πότνια μήτηρ,
 σῶμα δὲ οἴκαδ' ἐμὸν δόμεναι πάλιν, ὄφρα πυρὸς με
 Τρῶες καὶ Τρώων ἄλοχοι λελάχωσι θανόντα.“

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „μὴ με, κύον, γούνων γουναῖζεο μηδὲ τοκῆων· 345
 αἶ γάρ πως αὐτόν με μένος καὶ θυμὸς ἀνείη
 ὥμ' ἀποταμνόμενον κρέα ἐδμεναι, οἷά μ' ἔοργας,
 ὥς οὐκ ἔσθ', ὃς σῆς γε κύνας κεφαλῆς ἀπαλάλκοι,
 οὐδ' εἰ κεν δεκάκις τε καὶ (εἴκοσι νήριτ') ἄποινα *invenit. fidei*
 στήσωσ' ἐνθάδ' ἄγοντες, ὑπόσχονται δὲ καὶ ἄλλα· 350
 οὐδ' εἰ κεν σ' αὐτόν χρυσῷ ἐρύσασθαι ἄνωγοι
 Δαρδανίδης Πριάμος, οὐδ' ὥς σέ γε πότνια μήτηρ
 ἐνθεμένη λεχέεσσι γοήσεται, ὃν τέκεν αὐτή,
 ἀλλὰ κύνες τε καὶ οἴωνοι κατὰ πάντα δάσσονται.“

τὸν δὲ καταθνήσκων προσέφη κορυθαίολος Ἔκτωρ· 355
 „ἦ σ' ἐν γιγνώσκων προτιόσσομαι, οὐδ' ἄρ' ἔμελλον
 πείσειν· ἦ γὰρ σοί γε σιδήρεος ἐν φρεσὶ θυμὸς.
 φράζεο νῦν, μὴ τοί τι θεῶν μήνιμα γένωμαι
 ἥματι τῷ, ὅτε κέν σε Πάρις καὶ Φοῖβος Ἀπόλλων
 ἐσθλὸν ἔοντ' ὀλέσωσιν ἐνὶ Σχαιῆσι πύλῃσιν.“ 360

ὥς ἄρα μιν εἰπόντα τέλος θανάτοιο κάλυψεν,
 ψυχὴ δ' ἐκ ῥεθέων παμμένη Ἀιδόσδε βεβήκειν
 ὃν πότμον γούσασα, λιποῦσ' ἀνδροτῆτα καὶ ἥβην.
 τὸν καὶ τεθνηῶτα προσηύδα δῖος Ἀχιλλεύς·
 „τέθναθι· κῆρα δ' ἐγὼ τότε δέξομαι, ὅππότε κεν δῇ 365
 Ζεὺς ἐθέλῃ τελέσαι ἡδ' ἀθάνατοι θεοὶ ἄλλοι.“

ἦ ῥα καὶ ἐκ νεκροῦ ἐρύσσατο χάλκεον ἔγχος,
 καὶ τό γ' ἀνενυθεν ἔσθηχ', ὃ δ' ἀπ' ὤμων τεύχε' ἐσύλα

αἱματόεντ'· ἄλλοι δὲ περὶ δραμον νῆες Ἀχαιῶν,
οἷ καὶ θηήσαντο φυὴν καὶ εἶδος ἀγῆτον 370
Ἔκτορος· οὐδ' ἄρα οἷ τις ἀνουτητὶ γε παρέστη.
ὧδε δέ τις εἶπεςκεν ἰδὼν ἐς πλησίον ἕλλον·
,,ὦ πόποι, ἦ μάλα δὴ μαλακώτερος ἀμφοφάασθαι
Ἔκτωρ ἦ ὅτε νῆας ἐνέπρησεν πυρὶ κηλέω.“

ὧς ἄρα τις εἶπεςκε καὶ οὐτήσασκε παραστάς. 375
τόν δ' ἐπεὶ ἐξενάριξε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,
στάς ἐν Ἀχαιοῖσιν ἔπεα πτερόεντ' ἀγόρευεν·
,,ὦ φίλοι, Ἀργείων ἡγήτορες ἡδὲ μέδοντες,
ἐπεὶ δὴ τόνδ' ἄνδρα θεοὶ δαμάσασθαι ἔδωκαν,
ὅς κακὰ πόλλ' ἔρρεξεν, ὅς οὐ σύμπαντες οἱ ἄλλοι, 380
εἰ δ' ἄγερ' ἀμφὶ πόλιν σὺν τεύχεσι πειρηθῶμεν,
ῥωρα κ' ἔτι γινώμεν Τρώων νόον, ὃν τιν' ἔχουσιν,
ἢ καταλείψουσιν πόλιν ἔκρην τοῦδε πεσόντος,
ἦε μένειν μεμάσσι καὶ Ἔκτορος οὐκέτ' ἐόντος.
ἀλλὰ τί ἦ μοι ταῦτα φίλος διελέξατο θυμός;
385
κεῖται παρ νῆεσσι νέκυς ἄκλαντος ἄθραπτος
Πάτροκλος· τοῦ δ' οὐκ ἐπιλήσομαι, ῥωρ' ἂν ἐγὼ γε
ζωοῖσιν μετέω καὶ μοι φίλα γούνατ' ὀρώρη.
εἰ δὲ θανόντων περ καταλήθοντ' εἰν Αἰίδαο,
αὐτὰρ ἐγὼ καὶ κείθι φίλου μεμνήσομ' ἐταίρου. 390
νῦν δ' ἄγ' ἀειδοντες παιήονα, κοῦροι Ἀχαιῶν,
νηυσὶν ἐπὶ γλαφυρῇσι νεώμεθα, τόνδε δ' ἄγωμεν.
ἡράμεθα μέγα κῦδος· ἐπέφνομεν Ἔκτορα δῖον,
ὃ Τρῶες κατὰ ἄστνυ θεῶ ὧς εὐχετόωντο.“

ἦ ῥα καὶ Ἔκτορα δῖον ἀεικέα μῆδετο ἔργα. 395
ἀμφοτέρων μετόπισθε ποδῶν τέτρηνε τένοντε
ἐς σφυρὸν ἐκ πτέρυγης, βοέους δ' ἐξῆπτεν ἱμάντας,
ἐκ δίφροιο δ' ἔδησε, κάρη δ' ἔλκεσθαι ἔασεν·
ἐς δίφρον δ' ἀναβὰς ἀνά τε κλιτὰ τεύχε' ἀείρας

μάστιξέν ῥ' ἐλάαν, τὼ δ' οὐκ ἀέκοντε πετέσθην. 400
 τοῦ δ' ἦν ἐλκομένοιο κονίσσαλος, ἄμφι δὲ χαῖται
 κυάνεαι πίπταντο, κάρη δ' ἄπαν ἐν κονίησιν
 κεῖτο πάρος χαρίεν· τότε δὲ Ζεὺς δυσμενέεσσιν
 δῶκεν ἀεικίσσασθαι ἔη ἐν πατρίδι γαίῃ.

ὥς τοῦ μὲν κεκόνιτο κάρη ἄπαν· ἡ δὲ νυ μήτηρ 405
 τίλλε κόμην, ἀπὸ δὲ λιπαρὴν ἔρριψε καλύπτρην
 τηλόσε, κῶκυσεν δὲ μάλα μέγα παιδ' ἐσιδοῦσα.
 ὦμωξεν δ' ἐλεεινὰ πατὴρ φίλος, ἄμφι δὲ λαοὶ
 κωκυτῷ τ' εἶχοντο καὶ οἴμωγῇ κατὰ ἕστν.

τῷ δὲ μάλιστ' ἄρ' ἔην ἐναλίγκιον, ὥς εἰ ἅπασα 410
 Ἴλιος ὄφρυόεσσα πυρὶ σμύχοιτο κατ' ἄκρης.

λαοὶ μὲν ῥα γέροντα μόγισ ἔχον ἀσχαλῶντα
 ἐξελθεῖν μεμαῶτα πυλάων Δαρδανιάων.
 πάντας δὲ λιτάνευε κυλινδόμενος κατὰ κόπρον,
 ἐξονομακλήδην ὀνομάζων ἄνδρα ἕκαστον· 415

„σχέσθε, φίλοι, καὶ μ' οἶον ἐάσατε, κηδόμενοί περ,
 ἐξελθόντα πόλῃος ἰκέσθ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν·
 λίσσωμ' ἀνέρα τοῦτον ἀτάσθαλον ὀβριμοεργόν,
 ἦν πως ἡλικίην αἰδέσσεται ἡδ' ἐλεήσει
 γῆρας. καὶ δέ νυ τῷ γε πατὴρ τοιόσδε τέτυκται, 420·

Πηλεὺς, ὃς μιν ἔτικτε καὶ ἔτρεφε πῆμα γενέσθαι
 Τρωσί· μάλιστα δ' ἐμοὶ περὶ πάντων ἄλγε' ἔθηκεν·
 τόσσους γάρ μοι παῖδας ἀπέκτανε τηλεθάοντας.

τῶν πάντων οὐ τόσσον ὀδύρομαι ἀχνύμενός περ,
 ὥς ἐνός, οὗ μ' ἄχος ὅξυ κατόισεται Ἴδιος εἴσω, 425
 Ἐκτορος· ὥς ὄφελεν θανέειν ἐν χερσὶν ἐμῇσιν·

τῷ κε κορεσσάμεθα κλαίοντέ τε μυρομένω τε,
 μήτηρ θ', ἥ μιν ἔτικτε δυσάμμορος, ἡδ' ἐγὼ αὐτός.“

ὥς ἔφατο κλαίων, ἐπὶ δὲ στενάχοντο πολῖται.
 Τρωῆσιν δ' Ἐκάβη ἀδινοῦ ἐξήρχε γόοιο· 430

„τέκνον, ἐγὼ δειλή· τί νυ βείομαι, αἰνὰ παθοῦσα,
σεῦ ἀποτεθνηῶτος; ὃ μοι νύκτας τε καὶ ἡμαρ
εὐχολῇ κατὰ ἔστυ πελέσκειο, πᾶσί τ' ὄνειαρ
Τρωσί τε καὶ Τρωῆσι κατὰ πτόλιν, οἷ σε θεὸν ὥς
διδέχατ'· ἥ γὰρ καὶ σφι μάλα μέγα κῦδος ἔησθα 435
ζῶος ἐών· νῦν αὖ θάνατος καὶ μοῖρα κιχάνει.“

ὣς ἔφατο κλαίουσ'. ἄλοχος δ' οὐ πώ τι πέπυστο
Ἔκτορος· οὐ γάρ οἱ τις ἐτήτυμος ἄγγελος ἐλθὼν
ἠγγεῖλ', ὅττι ῥά οἱ πόσις ἔκτοθι μίμνε πυλάων,
ἀλλ' ἥ γ' ἰστὸν ὑφαίνει μυχῶ δόμου ὑψηλοῖο 440
δίπλακα πορφυρέην, ἐν δὲ θρόνα ποικίλ' ἐπασσεν.
κέκλετο δ' ἀμφιπόλοισιν ἐνπλοκάμοις κατὰ δῶμα
ἀμφὶ πυρὶ στήσαι τρίποδα μέγαν, ὄφρα πέλοιτο
Ἔκτορι θερμὰ λοετρὰ μάχης ἐκνοστήσαντι,
νηπίη, οὐδ' ἐνόησεν, ὃ μιν μάλα τῆλε λοετρῶν 445
χερσὶν Ἀχιλλῆος δάμασε γλαυκῶπις Ἀθήνη.
κωκυτοῦ δ' ἤκουσε καὶ οἰωγῆς ἀπὸ πύργου·
τῆς δ' ἐλελίχθη γυῖα, χαμαὶ δέ οἱ ἔκπεσε κεφαλῆς.
ἥ δ' αὖτις δμῶῃσιν ἐνπλοκάμοισι μετηύδα·
„δεῦτε, δῶμα μοι ἔπεσθον· ἰδωμ', ὅτιν' ἔργα τέτυκται. 450
αἰδοίης ἐκυρῆς ὁπὸς ἔκλυον, ἐν δέ μοι αὐτῇ
στήθεσι πάλλεται ἥτορ ἀνὰ στόμα, νέρθε δὲ γούνα
πήγνυται· ἐγγὺς δὴ τι κακὸν Πριάμοιο τέκεσσιν.
αἶ γὰρ ἀπ' οὐατος εἶη ἐμεῦ ἔπος· ἀλλὰ μάλ' αἰνῶς
δεῖδω, μὴ δὴ μοι θρασὺν Ἔκτορα δῖος Ἀχιλλεὺς 455
μοῦνον ἀποτμήξας πόλιος πεδίονδε δίηται,
καὶ δὴ μιν καταπαύσῃ ἀγνοορίας ἀλεγεινῆς,
ἥ μιν ἔχεσθ', ἐπεὶ οὐ ποτ' ἐνὶ πληθυὶ μένεν ἀνδρῶν,
ἀλλὰ πολὺν προθέεσκε, τὸ δὲ μένος οὐδενὶ εἶκων.“

ὣς φραμένη μεγάροιο διέσσυτο μαινάδι ἴση, 460
παλλομένη κραδίην· ἅμα δ' ἀμφίπολοι κίον αὐτῇ.

αὐτὰρ ἐπεὶ πύργον τε καὶ ἀνδρῶν ἵξεν ὄμιλον,
 ἔσθη παπτήνυσ' ἐπὶ τείχει, τὸν δὲ νόησεν
 ἑλκόμενον πρόσθεν πόλιος· ταχέες δέ μιν ἵπποι
 ἔλκον ἀκηδέστως κοίλας ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν. 465
 τὴν δὲ κατ' ὀφθαλμῶν ἐρεβεννὴ νύξ ἐκάλυπεν.
 ἦριπε δ' ἐξοπίσω, ἀπὸ δὲ ψυχὴν ἐκάπυσσεν.
 τῆλε δ' ἀπὸ κρατὸς βάλε δέσματα σιγαλόεντα,
 ἄμπυκα κεκρύφαλόν τε ἰδὲ πλεκτὴν ἀναδέσμην
 κρήδεμνόν θ', ὃ ῥά οἱ δῶκε χρυσέῃ Ἀφροδίτῃ 470
 ἡματι τῷ, ὅτε μιν κορυθαίολος ἠγάγεθ' Ἑκτωρ
 ἐκ δόμου Ἡετίωνος, ἐπεὶ πόρε μυρία ἔδνα.
 ἀμφὶ δέ μιν γαλῶν τε καὶ εἰνατέρες ἄλλης ἔσταν,
 αἳ ἔμετὰ σφίσιν εἶχον ἀνυξομένην ἀπολέσθαι.
 ἦ δ' ἐπεὶ οὖν ἄμπνυτο καὶ ἐς φρένα θυμὸς ἀγέρθη, 475
 ἀμβλήθην γοῶσα μετὰ Τρωῆσιν ἔειπεν·
 „Ἑκτορ, ἐγὼ δύστηνος· ἰὴ ἄρα γεινόμεθ' αἴσῃ
 ἀμφοτέρω, σὺ μὲν ἐν Τροίῃ Πριάμου κατὰ δῶμα,
 αὐτὰρ ἐγὼ Θήβησιν ὑπὸ Πλάκῳ ὑληέσῃ
 ἐν δόμῳ Ἡετίωνος, ὃ·μ' ἔτρεφε τυτθὸν ἐοῦσαν, 480
 δύσμορος αἰνόμορον· ὥς μὴ ὤφελλε τεκέσθαι.
 νῦν δὲ σὺ μὲν Ἀίδαο δόμους ὑπὸ κεύθεσι γαίης
 ἔρχεαι, αὐτὰρ ἐμὲ στυγερῷ ἐνὶ πένθει λείπεις
 χήρην ἐν μεγάροισι· πάϊς δ' ἔτι νήπιος αὐτῶς,
 ὃν τέκομεν σύ τ' ἐγὼ τε δυσάμμοροι· οὔτε σὺ τούτῳ 485
 ἔσσειαι, Ἑκτορ, ὄνειαρ, ἐπεὶ θάνες, οὔτε σοὶ οὔτος.
 ἦν περ γὰρ πόλεμόν γε φύγῃ πολὺδακρυν Ἀχαιῶν,
 αἰεὶ τοι τούτῳ γε πόνος καὶ κήδε' ὀπίσσω
 ἔσσοντ'· ἄλλοι γάρ οἱ ἀπουρήσουσιν ἀρούρας.
 ἡμαρ δ' ὀρφανικὸν παναφήλικα παῖδα τίθησιν· 490
 πάντα δ' ὑπεμνήμυκε, δεδάκρυνται δὲ παρειαί.
 δευόμενος δέ τ' ἄνεισι πάϊς ἐς πατρὸς ἐταίρους,

ἄλλον μὲν χλαίνης ἐρύων, ἄλλον δὲ χιτῶνος·
 τῶν δ' ἐλεησάντων κοτύλην τις τυτθὸν ἐπέσχευ·
 χεῖλα μὲν τ' ἐδίην', ὑπερώην δ' οὐκ ἐδίηνεν. 495
 τὸν δὲ καὶ ἀμφιθαλῆς ἐκ δαιτύος ἐστυφείλιξεν,
 χερσὶν πεπληγῶς καὶ ὄνειδείοισιν ἐνίσσων·
 'ἔρρ' οὕτως· οὐ σὸς γε πατήρ μεταδαινυται ἡμῖν·
 δακρυόεις δέ τ' ἄνεισι πάις ἐς μητέρα χήρην,
 Ἀστυάναξ, ὃς πρὶν μὲν ἐοῦ ἐπὶ γούνασι πατρὸς 500
 μυελὸν οἶον ἔδεσκε καὶ οἶῶν πίονα δημόν·
 αὐτὰρ ὅθ' ὕπνος ἔλοι παύσαιτό τε νηπιαχεύων,
 εὔδεσκ' ἐν λέκτροισιν, ἐν ἀγκαλίδεσσι τιθήνης,
 εὐνῇ ἐνι μαλακῇ, θαλέων ἐμπλησάμενος κῆρ.
 νῦν δ' ἂν πολλὰ πάθῃσι, φίλου ἀπὸ πατρὸς ἀμαρτῶν, 505
 Ἀστυάναξ, ὃν Τρῶες ἐπὶ κλησὶν καλέουσιν·
 οἶος γάρ σφιν ἔρυσσος πύλας καὶ τείχεα μακρά.
 νῦν δὲ σὲ μὲν παρὰ νηυσὶ κορωνίσιν, νόσφι τοκήων,
 αἰόλαι εὐλαὶ ἔδονται, ἐπεὶ κε κύνες κορέσσονται,
 γυμνόν· ἀτὰρ τοι εἴματ' ἐνὶ μεγάροισι κέονται 510
 λεπτά τε καὶ χαρίεντα, τετυγμένα χερσὶ γυναικῶν.
 ἀλλ' ἦ τοι τάδε πάντα καταφλέξω πυρὶ κηλέῳ,
 οὐδὲν σοὶ γ' ὄφελος, ἐπεὶ οὐκ ἐγκείσει αὐτοῖς,
 ἀλλὰ πρὸς Τρώων καὶ Τρῳιάδων κλέος εἶναι·
 ὥς ἔφατο κλαίουσ', ἐπὶ δὲ στενάχοντο γυναῖκες. 515

ΙΛΙΑΔΟΣ Ψ.

ἄθλα ἐπὶ Πατρόκλῳ.

ὥς οἱ μὲν στενάχοντο κατὰ πτόλιν· αὐτὰρ Ἀχαιοὶ
 ἐπεὶ δὴ νῆάς τε καὶ Ἑλλήσποντον ἵκοντο,
 οἱ μὲν ἄρ' ἐσκίδναντο ἐὴν ἐπὶ νῆα ἕκαστος,

Μυρμιδόνας δ' οὐκ εἶα ἀποσκίδνασθαι Ἀχιλλεύς,
 ἀλλ' ὃ γε οἷς ἐτάροισι φιλοπτολέμοισι μετηγύδα· 5
 „Μυρμιδόνες ταχύπωλοι, ἔμοι ἐρήφρες ἐταῖροι,
 μὴ δὴ πω ὑπ' ὄχεσφι λυώμεθα μώνυχας ἵππους,
 ἀλλ' αὐτοῖς ἵπποισι καὶ ἄρμασιν ἄσσον ἰόντες
 Πάτροκλον κλαίωμεν· ὃ γὰρ γέρας ἐστὶ θανόντων.
 αὐτὰρ ἐπεὶ κ' ὀλοοῖτο τεταρπώμεσθαι γόοιο, 10
 ἵππους λυσάμενοι δορπήσομεν ἐνθάδε πάντες.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ὤμωξαν ἀολλέες, ἦρχε δ' Ἀχιλλεύς.
 οἱ δὲ τρεῖς περὶ νεκρὸν ἐύτριχας ἥλασαν ἵππους
 μυρόμενοι· μετὰ δέ σφι Θέτις γόου ἡμερον ὤρσεν.
 δεύοντο ψάμαθοι, δεύοντο δὲ τεύχεα φωτῶν 15
 δάκρυσι· τοῖον γὰρ πόθον μήστωρα φόβοιο,
 τοῖσι δὲ Πηλεΐδης ἀδινοῦ ἐξῆρχε γόοιο,
 χεῖρας ἐπ' ἀνδροφόνους θήμενος στήθεσιν ἐταίρου·
 „χαῖρέ μοι, ὦ Πάτροκλε, καὶ εἰν Αἰίδαο δόμοισιν·
 πάντα γὰρ ἤδη τοι τελέω, τὰ πάροιθεν ὑπέδστην, 20
 Ἔκτορα δεῦρ' ἐρύσας δώσειν κυσὶν ὦμα δάσασθαι,
 δώδεκα δὲ προπάροιθε πυρῆς ἀποδειροτομήσειν
 Τρώων ἀγλαὰ τέκνα, σέθεν κταμένοιο χολωθεῖς.“

ἦ ῥα καὶ Ἔκτορα ὄλον ἀεικέα μῆδετο ἔργα,
 πρηγέα παρ λεχέεσσι Μενoitιάδαο τανύσσας 25
 ἐν κονίῃς. οἱ δ' ἔντε' ἀφωπλίζοντο ἕκαστος
 χάλκεα μαρμαίροντα, λύνον δ' ὑψηλέας ἵππους,
 καδ δ' ἴξον παρὰ νηὶ ποδώκεος Αἰακίδαο
 μυρίοι· αὐτὰρ ὁ τοῖσι τάφον μενοεικέα δαίνυ.
 πολλοὶ μὲν βόες ἀργοὶ ὀρέχθουν ἀμφὶ σιδήρῳ 30
 σφαζόμενοι, πολλοὶ δ' ὄιες καὶ μηκάδες αἶγες·
 πολλοὶ δ' ἀργιόδοντες ὕες, θαλέθοντες ἀλοιφῇ,
 εὐόμενοι τανύοντο διὰ φλογὸς Ἡφαίστοιο·
 πάντῃ δ' ἀμφὶ νέκυν κοτυλήρουντο ἔρρεεν αἶμα.

αὐτὰρ τόν γε ἄνακτα ποδώκεα Πηλεΐωνα 35
 εἰς Ἀγαμέμνονα δῖον ἄγον βασιλῆες Ἀχαιῶν,
 σπουδῇ παρπεπιδόντες, ἐταίρου χωόμενον κῆρ.
 οἱ δ' ὅτε δὴ κλισίην Ἀγαμέμνονος ἴξον ἰόντες,
 αὐτίκα κηρύκεσσι λιγυφθόγγοισι κέλευσαν
 ἄμφι πύρρῳ στῆσαι τρίποδα μέγαν, εἰ πεπύθοιεν 40
 Πηλεΐδην λούσασθαι ἔπο βρότον αἱματόεντα.
 αὐτὰρ ὃ γ' ἤρνετο στερεῶς, ἐπὶ δ' ὄρκον ὁμοσσεν·
 „οὐ μὰ Ζῆν', ὅς τίς τε θεῶν ὕπατος καὶ ἄριστος,
 οὐ θέμις ἐστὶ λοετρὰ καρήατος ἄσσον ἰκέσθαι,
 πρὶν γ' ἐνὶ Πάτροκλον θέμεναι πύρρῳ σῆμά τε χεῦναι 45
 κείρασθαί τε κόμην, ἐπεὶ οὐ μ' ἔτι δεύτερον ᾧδε
 ἴξεν ἄχος κραδίην, ὄφρα ζωοῖσι μετείω.
 ἀλλ' ἢ τοι νῦν μὲν στυγερῇ πειθώμεθα δαιτί·
 ἧῶθεν δ' ὄτρυνον, ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγάμεμνον,
 ὕλην τ' ἀξέμεναι παρὰ τε σχεῖν, ὅσσ' ἐπιεικὲς 50
 νεκρὸν ἔχοντα νέεσθαι ὑπὸ ζόφον ἡερδέντα,
 ὄφρ' ἢ τοι τοῦτον μὲν ἐπιφλέγῃ ἀκάματον πῦρ
 θαῖσσον ἀπ' ὀφθαλμῶν, λαοὶ δ' ἐπὶ ἔργα τράπωνται.“
 ὧς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα τοῦ μάλα μὲν κλύον ἠδὲ πίθοντο.
 ἐσσυμένως δ' ἄρα δόρπον ἐφοπλίσσαντες ἕκαστοι 55
 δαίνυντ', οὐδέ τι θυμὸς ἐδεύετο δαιτὸς εἰσῆς.
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιος καὶ ἐδητύος ἐξ ἔρον ἔντο,
 οἱ μὲν κακκεῖοντες ἔβαν κλισίηνδε ἕκαστος,
 Πηλεΐδης δ' ἐπὶ θινὶ πολυφλοίσβοιο θαλάσσης
 κεῖτο βαρὺ στενάχων πολέσιν μετὰ Μυρμιδόνεσσιν 60
 ἐν καθαρῷ, ὅθι κύματ' ἐπ' ἡιόνος κλύζεσκον.
 εὔτε τὸν ὕπνος ἔμαρπτε, λύων μελεδήματα θυμοῦ,
 νῆδυμος ἀμφιχυθεὶς· μάλα γὰρ κάμε φαιδίμα γυῖα
 Ἔκτορ' ἐπαῖσσαν προτὶ Ἴλιον ἠνεμόεσσαν·
 ἦλθε δ' ἐπὶ ψυχῇ Πατροκλῆος δειλοῖο 65

πάντ' αὐτῷ μέγεθος τε καὶ ὄμματα κάλ' εἰκνυτα
 καὶ φωνήν, καὶ τοῖα περὶ χροῖ εἴματα ἔστο·
 στῇ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς καὶ μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν·
 „εὐδεις, αὐτὰρ ἐμεῖο λελασμένος ἐπλευ, Ἀχιλλεῦ.
 οὐ μὲν μεν ζῶοντος ἀκήδεις, ἀλλὰ θανόντος· 70
 θάπτε με ὅτι τάχιστα· πύλας Ἀΐδαο περήσω.
 τῆλέ μ' ἐέργουσι ψυχαί, εἰδωλα καμόντων.
 οὐδέ μέ πω μίσγεσθαι ὑπὲρ ποταμοῖο ἔωσιν,
 ἀλλ' αὐτως ἀλάλημαι ἄν' εὐρυπυλὲς Ἄϊδος δῶ.
 καὶ μοι δὸς τὴν χεῖρ', ὀλοφύρομαι· οὐ γὰρ ἔτ' αὐτίς 75
 νίσομαι ἐξ Ἀΐδαο, ἐπὴν με πυρὸς λελάχητε.
 οὐ μὲν γὰρ ζωοί γε φίλων ἀπάνευθεν ἐταίρων
 βουλὰς ἐξόμενοι βουλευόμεν, ἀλλ' ἐμὲ μὲν κῆρ
 ἀμφέχανε στυγερή, ἣ περ λάχε γεινόμενόν περ·
 καὶ δὲ σοὶ αὐτῷ μοῖρα, θεοῖς ἐπιείκελ' Ἀχιλλεῦ, 80
 τείχει ὑπο Τρώων ἐνηγενέων ἀπολέσθαι.
 ἄλλο δέ τοι ἐρέω καὶ ἐφήσομαι, αἶ κε πίθηαι·
 μὴ ἐμὰ σὼν ἀπάνευθε τιθήμεναι ὅστέ', Ἀχιλλεῦ,
 ἀλλ' ὁμοῦ, ὥς τράφομέν περ ἐν ὑμετέροισι δόμοισιν,
 εὐτέ με τυτθὸν ἰόντα Μενοίτιος ἐξ Ὀπόεντος 85
 ἦγαγεν ὑμετερόνδ' ἀνδροκτασίης ὑπο λυγρῆς
 ἡματι τῷ, ὅτε παῖδα κατέκτανον Ἀμφιδάμαντος
 νήπιος, οὐκ ἐθέλων, ἄμφ' ἀστραγάλοισι χολωθείς·
 ἐνθα με δεξάμενος ἐν δώμασιν ἱππότα Πηλεὺς
 ἔτραφέ τ' ἐνδυκέως καὶ σὸν θεράποντ' ὀνόμηνεν· 90
 ὥς δὲ καὶ ὅστέα νῶιν ὁμῇ σορὸς ἀμφικαλύπτει
 [χρύσεος ἀμφιφορέως, τὸν τοι πόρε πότνια μήτηρ].“
 τὸν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „τίπτε μοι, ἡθιῇ κεφαλῇ, δεῦρ' εἰλήλουθας
 καὶ μοι ταῦτα ἕκαστ' ἐπιτέλλεαι; αὐτὰρ ἐγὼ τοι 95
 πάντα μάλ' ἐκτελέω καὶ πείσομαι, ὥς σὺ κελεύεις.

ἀλλὰ μοι ἄσσουν στῆθι· μίνυνθά περ ἀμφιβαλόντε
ἀλλήλους ὀλοοῖο τεταρπώμεσθα γόοιο.“

ὥς ἄρα φωνήσας ὠρέξατο χερσὶ φίλησιν,
οὐδ' ἔλαβε· ψυχὴ δὲ κατὰ χθονὸς ἤυτε καπνὸς 100
ᾧχετο τετριγυῖα. ταφῶν δ' ἀνόρουσεν Ἀχιλλεὺς
χερσὶ τε συμπλατάγησεν, ἔπος δ' ὀλοφυνδὸν ἔειπεν·
„ὦ πόποι, ἣ ῥά τις ἔστι καὶ εἰν Ἀίδαο δόμοισιν
ψυχὴ καὶ εἰδωλον, ἀτὰρ φρένες οὐκ ἐνὶ πάμπαν·
παννυχίη γάρ μοι Πατροκλῆος δειλοῖο 105

ψυχὴ ἐφεστήκει γοώσά τε μυρομένη τε,
καὶ μοι ἕκαστ' ἐπέτελλεν, ἔικτο δὲ θέσκελον αὐτῷ.“

ὥς φάτο, τοῖσι δὲ πᾶσιν ὕφ' ἱμερον ὥρσε γόοιο·
μυρομένοισι δὲ τοῖσι φάνη ῥοδοδάκτυλος ἠὼς
ἀμφὶ νέκυν ἐλεεινόν. ἀτὰρ κρείων Ἀγαμέμνων 110
οὐρῆας τ' ὤτρυνε καὶ ἀνέρας ἀξέμεν ὕλην
πάντοθεν ἐκ κλισιῶν· ἐπὶ δ' ἀνὴρ ἐσθλὸς ὀρώρειν
Μηριόνης θεράπων ἀγαπήνορος Ἰδομενῆος.
οἱ δ' ἴσαν ὕλοτόμους πελέκεας ἐν χερσὶν ἔχοντες
σειράς τ' εὐπλέκτους· πρὸ δ' ἄρ' οὐρῆες κίον αὐτῶν· 115
πολλὰ δ' ἄναντα κάταντα πάραντά τε δόχημά τ' ἤλθον.
ἀλλ' ὅτε δὴ κνήμους προσέβαν πολυπίδακος Ἴδης,
αὐτίκ' ἄρα δρυὺς ὑψικόμους ταναήκει χαλκῷ
τάμνον ἐπειγόμενοι· τὰ δὲ μεγάλα κτυπέουσαι
πίπτον. τὰς μὲν ἔπειτα διαπλήσσοντες Ἀχαιοὶ 120
ἔκδεον ἡμιόνων· τὰ δὲ χθόνα ποσσὶ δατεῦντο
ἐλδόμεναι πεδίοιο διὰ ῥωπήια πυκνά.

πάντες δ' ὕλοτόμοι φιτροὺς φέρον· ὥς γὰρ ἀνώγειν
Μηριόνης θεράπων ἀγαπήνορος Ἰδομενῆος.
καὶ δ' ἄρ' ἐπ' ἀκτῆς βάλλον ἐπισχερώ, ἐνθ' ἄρ' Ἀχιλλεὺς
φράσσατο Πατρόκλῳ μέγα ἡρίον ἠδὲ οἱ αὐτῷ. 126
αὐτὰρ ἐπεὶ πάντη παρακάμβαλον ἄσπετον ὕλην,

εἶατ' ἄρ' αὐθι μένοντες ἀολλέες. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 ἀντίκα Μυρμιδόνεσσι φιλοπολέμοισι κέλευσεν
 χαλκὸν ζώννυσθαι, ζευξαι δ' ὑπ' ὄχεσφιν ἕκαστον 130
 ἵππους· οἳ δ' ὤρουντο καὶ ἐν τεύχεσσι ἐδυνον,
 ἃν δ' ἔβαν ἐν δίφροισι παραιβάται ἡνίοχοί τε.
 πρόσθε μὲν ἱππῆες, μετὰ δὲ νέφος εἶπετο πεζῶν,
 μυριοί· ἐν δὲ μέσοισι φέρον Πάτροκλον ἑταῖροι.
 θριξὶ δὲ πάντα νέκυν καταείνυσαν, ἃς ἐπέβαλλον 135
 κειρόμενοι· ὀπιθεν δὲ κάρη ἔχε δῖος Ἀχιλλεὺς
 ἀχνύμενος· ἔταρον γὰρ ἀμύμονα πέμπ' Αἰδόςδε.

οἳ δ' ὅτε χῶρον ἵκανον, ὅθι σφίσι πέφραδ' Ἀχιλλεύς,
 κἀνθεσαν, αἶψα δὲ οἱ μενοεικέα νήεον ὕλην.
 ἐνθ' αὐτ' ἄλλ' ἐνόησε ποδάρχης δῖος Ἀχιλλεύς· 140
 σταῖς ἀπάνευθε πυρῆς ξανθὴν ἀπεκείρατο χαίτην,
 τὴν ῥα Σπερχεῖ ποταμῷ τρέφε τηλεθώσαν·
 ὀχθήσας δ' ἄρα εἶπεν ἰδὼν ἐπὶ οἶνοπα πόντον·
 „Σπερχεῖ, ἄλλως σοὶ γε πατὴρ ἠρήσατο Πηλεὺς
 κεισέ με νοστήσαντα φίλην ἐς πατρίδα γαῖαν 145
 σοὶ τε κόμην κερῆειν ῥέξειν θ' ἱερὴν ἑκατόμβην,
 πεντήκοντα δ' ἔνορχα παρ' αὐτόθι μῆλ' ἱερεύσειν
 ἐς πηγάς, ὅθι τοι τέμενος βωμός τε θυήεις.
 ὣς ἠρᾷδ' ὁ γέρων, σὺ δέ οἱ νόον οὐκ ἐτέλεσσας.
 νῦν δ', ἐπεὶ οὐ νέομαι γε φίλην ἐς πατρίδα γαῖαν, 150
 Πατρόκλῳ ἥρωι κόμην ὀπάσαιμι φέρεσθαι.“

ὣς εἰπὼν ἐν χερσὶ κόμην ἐτάροιο φίλοιο
 θῆκεν, τοῖσι δὲ πᾶσιν ὕφ' ἥμερον ὥρσε γόοιο.
 καὶ νῦ κ' ὀδυρομένοισιν ἔδν φάος ἡελίοιο,
 εἰ μὴ Ἀχιλλεὺς αἰψ' Ἀγαμέμνονι εἶπε παραστάς· 155
 „Ἀτρεΐδῃ, σοὶ γάρ τε μάλιστά γε λαὸς Ἀχαιῶν
 πείσσονται μῦθοισι· γόοιο μὲν ἔστι καὶ ἄσαι,
 νῦν δ' ἀπὸ πυρκαϊῆς σκέδασον καὶ δειπνον ἄνωχθι

ὄπλεσθαι· τάδε δ' ἄμφι πονησόμεθ', οἷσι μάλιστα
κῆδεός ἐστι νέκυς· παρὰ δ' οἷ τ' ἄγοι ἄμμι μενόντων.“ 160

αὐτὰρ ἐπεὶ τό γ' ἄκουσεν ἄναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων,
αὐτίκα λαὸν μὲν σκέδασεν κατὰ νῆας ἕϊσας,
κῆδεμόνες δὲ παρ' αὐθι μένον καὶ νῆεον ὕλην,
ποίησαν δὲ πυρὴν ἐκατόμπεδον ἐνθα καὶ ἐνθα,
ἐν δὲ πυρῇ ὑπάτῃ νεκρὸν θέσαν ἀχνύμενοι κῆρ. 165

πολλὰ δὲ ἴφια μῆλα καὶ εἰλίποδας ἔλικας βοῦς
πρόσθε πυρῆς ἔδερόν τε καὶ ἄμφεπον· ἐκ δ' ἄρα πάντων
δημὸν ἔλων ἐκάλυψε νέκυν μεγάρθυμος Ἀχιλλεύς
ἔς πόδας ἐκ κεφαλῆς, περὶ δὲ δρατὰ σώματα νῆει.

ἐν δ' ἐτίθει μέλιτος καὶ ἀλείφατος ἀμφιφορῆας, 170
πρὸς λέχεα κλίνων· πίσυρας δ' ἐριαύχενας ἵππους
ἔσσυμένως ἐνέβαλλε πυρῇ μεγάλα στεναχίζων.

ἐννέα τῷ γε ἄνακτι τραπεζῆες κύνες ἦσαν·
καὶ μὲν τῶν ἐνέβαλλε πυρῇ δύο δειροτομήσας,
δώδεκα δὲ Τρώων μεγαθύμων νείας ἐσθλοὺς 175
χαλκῷ δηϊόων· κακὰ δὲ φρεσὶ μῆδετο ἔργα.

ἐν δὲ πυρὸς μένος ἦκε σιδήρεον, ὄφρα νέμοιτο·
ᾧ μωξέν τ' ἄρ' ἐπειτα φίλον τ' ὀνόμηνεν ἑταῖρον·
„χαῖρέ μοι, ὦ Πάτροκλε, καὶ εἰν Ἀίδαο δόμοισιν·
πάντα γὰρ ἤδη τοι τελέω, τὰ πάροιθεν ὑπέστην. 180

δώδεκα μὲν Τρώων μεγαθύμων νείας ἐσθλοὺς
τοὺς ἅμα σοὶ πάντας πῦρ ἐσθίει· Ἐκτορα δ' οὐ τι
δώσω Πριαμίδην πυρὶ δαπτέμεν, ἀλλὰ κύνεσσιν.“

ὥς φάτ' ἀπειλήσας· τὸν δ' οὐ κύνες ἀμφεπένοντο,
ἀλλὰ κύνας μὲν ἄλαλκε Διὸς θυγάτηρ Ἀφροδίτη 185
ἤματα καὶ νύκτας, ῥοδόεντι δὲ χρῖεν ἐλαίῳ
ἀμβροσίῳ, ἵνα μὴ μιν ἀποδρῦφοι ἐλκυστάζων.

τῷ δ' ἐπὶ κυάνεον νέφος ἤγαγε Φοῖβος Ἀπόλλων
οὐρανόθεν πεδίονδε, κάλυψε δὲ χῶρον ἅπαντα,

ὅσσον ἐπείχε νέκυς, μὴ πρὶν μένος ἡελίοιο 190
σκήλει' ἀμφὶ περὶ χροά ἴνεσιν ἠδὲ μέλεσσιν.

οὐδὲ πυρῇ Πατρόκλου ἐκάλετο τεθνηῶτος·
ἐνθ' αὐτ' ἄλλ' ἐνόησε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·
στὰς ἀπάνευθε πυρῆς δοιοῖς ἠρᾶτ' ἀνέμοισιν,
Βορρῇ καὶ Ζεφύρῳ, καὶ ὑπέσχετο ἱερὰ καλὰ· 195

πολλὰ δὲ καὶ σπένδων χρυσέῳ δέπαϊ λιτάνευεν
ἐλθέμεν, ὄφρα τάχιστα πυρὶ φλεγεθόιατο νεκροὶ
ὕλη τε σενύαιτο καήμεναι. ὣκέα δ' Ἴρις
ἀράων αἰούσα μετὰγγελος ἦλθ' ἀνέμοισιν.

οἱ μὲν ἄρα Ζεφύριοι δυσαέος ἀθρόοι ἐνδον 200
εἰλαπίνην δαίνυντο· θέουσα δὲ Ἴρις ἐπέστη
βηλῷ ἐπι λιθέῳ. τοὶ δ' ὥς ἶδον ὀφθαλμοῖσιν,
πάντες ἀνήξαν κάλεόν τέ μιν εἰς ἕκαστος·
ἢ δ' αὖθ' ἕξεσθαι μὲν ἀνήγατο, εἶπε δὲ μῦθον·

„οὐχ ἔδος· εἴμι γὰρ αὐτίς ἐπ' Ὀκεανοῖο ῥέεθρα, 205
Αἰδιόπων ἐς γαῖαν, ὅθι ῥέξουσ' ἑκατόμβας
ἀθανάτοις, ἵνα δὴ καὶ ἐγὼ μεταδαίσομαι ἱρῶν.

ἄλλ' Ἀχιλεὺς Βορέην ἠδὲ Ζέφυρον κελαδεινὸν
ἐλθέμεν ἀρᾶται, καὶ ὑπίσχεται ἱερὰ καλὰ,
ὄφρα πυρὴν ὄρσητε καήμεναι, ἣ ἔνι κεῖται 210
Πάτροκλος, τὸν πάντες ἀναστενάχουσιν Ἀχαιοί.“

ἢ μὲν ἄρ' ὥς εἰποῦσ' ἀπεβήσετο, τοὶ δ' ὀρέοντο
ἠχῇ θεσπεσίῃ, νέφεα κλονέοντε πάροιθεν.
αἶψα δὲ πόντον ἵκανον ἀήμεναι, ὥρτο δὲ κῦμα
πνοιῇ ὑπο λιγυρῇ· Τροίην δ' ἐρίβωλον ἰκέσθην, 215
ἐν δὲ πυρῇ πεσέτην, μέγα δ' ἴαχε θεσπιδαῆς πῦρ.
παννύχιοι δ' ἄρα τοὶ γε πυρῆς ἄμυνδῖς φλόγ' ἐβαλλον
φυσῶντες λιγέως· ὁ δὲ πάννυχος ὥκυνς Ἀχιλλεύς
χρυσέου ἐκ κρητῆρος, ἐλὼν δέπας ἀμφικύπελλον,
οἶνον ἀφυσσόμενος χαμάδις χέε, δεῦε δὲ γαῖαν, 220

ψυχὴν κικλήσκων Πατροκλῆος δειλοῖο.

ὥς δὲ πατήρ οὗ παιδὸς ὁδύρεται ὅστέα καίων,
 νυμφίου, ὃς τε θανὼν δειλοὺς ἀνάχῃσε τοκῆας,
 ὥς Ἀχιλεὺς ἐτάροιο ὁδύρετο ὅστέα καίων,
 ἐρπύζων παρὰ πυρκαϊὴν ἀδινὰ στεναχίζων. 225

ἦμος δ' Ἐωσφόρος εἰσι φόως ἐρέων ἐπὶ γαίαν,
 ὃν τε μέτα κροκόπεπλος ὑπεῖρ ἄλλα κίδναται Ἡώς,
 τῆμος πυρκαϊὴ ἐμαφαίνεται, παύσατο δὲ φλόξ.
 οἱ δ' ἄνεμοι πάλιν αὐτίς ἔβαν οἰκόνδε νέεσθαι
 Θρηίκιον κατὰ πόντον· ὁ δ' ἔστενεν οἴδματι θύων. 230
 Πηλεΐδης δ' ἀπὸ πυρκαϊῆς ἐτέρωσε λιασθεις
 κλίνθη κεκμηώς, ἐπὶ δὲ γλυκὺς ὕπνος ὄρουσεν.

οἱ δ' ἄμφ' Ἀτρεΐωνα ἀολλέες ἠγερέθοντο·
 τῶν μιν ἐπερχομένων ὄμαδος καὶ δοῦπος ἐγείρεν.
 ἔξετο δ' ὀρθωθεις καὶ σφραγς πρὸς μῦθον ἔειπεν· 235

„Ἀτρεΐδη τε καὶ ἄλλοι ἀριστῆες Παναχαιῶν,
 πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊὴν σβέσατ' αἰθοπι οἴνῳ
 πᾶσαν, ὀπόσσον ἐπέσχε πυρὸς μένος· αὐτὰρ ἔπειτα
 ὅστέα Πατρόκλοιο Μενoitιιάδαο λέγωμεν
 εὖ διαγιννώσκοντες· ἀριφραδέα δὲ τέτυκται· 240

ἐν μέσση γὰρ ἔκειτο πυρῇ, τοὶ δ' ἄλλοι ἄνευσθεν·
 ἐσχατιῇ καίοντ' ἐπιμίξ, ἵπποι τε καὶ ἄνδρες.
 καὶ τὰ μὲν ἐν χρυσῇ φιάλῃ καὶ δίπλακι δημῷ
 θείομεν, εἰς ὃ κεν αὐτὸς ἐγὼν Ἄϊδι κεῦθωμαι·
 τύμβον δ' οὐ μάλα πολλὸν ἐγὼ πονέεσθαι ἄνωγα, 245
 ἀλλ' ἐπιεικέα τοῖον· ἔπειτα δὲ καὶ τὸν Ἀχαιοὶ
 εὐρύνθ' ὑψηλὸν τε τιθήμεναι, οἳ κεν ἐμεῖο
 δεύτεροι ἐν νῆεσσι πολυκλήισι λίπησθε.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἐπύθοντο ποδῶκεϊ Πηλεΐωνι.
 πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊὴν σβέσαν αἰθοπι οἴνῳ, 250
 ὅσσον ἐπὶ φλόξ ἦλθε, βαθεῖα δὲ κάππεσε τέφρῃ·

κλαίοντες δ' ἐτάροιο ἐννέος ὅστέα λευκὰ
 ἄλλεγον ἐς χρυσέην φιάλην καὶ δίπλακα δημόν,
 ἐν κλισίῃσι δὲ θέντες ἑανθ' λιτὴ κάλυψαν.
 τορνώσαντο δὲ σῆμα θεμείλια τέ προβάλλοντο 255
 ἀμφὶ πυρῆν· εἶθαρ δὲ χυτὴν ἐπὶ γαῖαν ἔχευαν.
 χεύαντες δὲ τὸ σῆμα πάλιν κίον. αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 αὐτοῦ λαὸν ἔρκε καὶ ἵζανεν εὐρὺν ἀγῶνα,
 νηῶν δ' ἔκφερ' ἄεθλα, λέβητάς τε τρίποδάς τε
 ἵππους θ' ἡμιόνους τε βοῶν τ' ἱφθίμα κάρηνα 260
 ἢ δὲ γυναικάς ἐυζώνους πολιόν τε σίδηρον.

Ἰππεῦσιν μὲν πρῶτα ποδώκεσιν ἀγλὰ ἄεθλα
 θῆκε γυναικὰ ἄγεσθαι ἀμύμονα ἔργα ἰδυῖαν
 καὶ τρίποδ' ὠτώεντα δυωκαϊικοσήμετρον
 τῷ πρῶτῳ· ἀτὰρ αὖ τῷ δευτέρῳ ἵππον ἔθηκεν 265
 ἔξετε' ἀδμήτην, βρέφος ἡμίονον κυεύουσιν·
 αὐτὰρ τῷ τριτάτῳ ἄπυρον κατέθηκε λέβητα
 καλόν, τέσσαρα μέτρα κεχανδότα, λευκὸν ἔτ' αὐτῶς·
 τῷ δὲ τετάρτῳ θῆκε δύω χρυσοῖο τάλαντα,
 πέμπτῳ δ' ἀμφίθετον φιάλην ἀπύρωτον ἔθηκεν. 270
 στῇ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·
 „Ἀτρεΐδῃ τε καὶ ἄλλοι ἐνκνήμιδες Ἀχαιοί,
 ἱππῆας τάδ' ἄεθλα δεδεγμένα κεῖτ' ἐν ἀγῶνι.
 εἰ μὲν νῦν ἐπὶ ἄλλῳ ἀεθλεύοιμεν Ἀχαιοί,
 ἦ τ' ἂν ἐγὼ τὰ πρῶτα λαβὼν κλισίηνδε φερομένην· 275
 ἴστε γάρ, ὅσσον ἔμοι ἀρετῇ περιβάλλετον ἵπποι·
 ἀθάνατοί τε γάρ εἰσι, Ποσειδάων δὲ πόρ' αὐτοὺς
 πατρὶ ἔμφ' Πηλῆι, ὃ δ' αὖτ' ἔμοι ἐγγυάλιξεν.
 ἀλλ' ἦ τοι μὲν ἐγὼ μενέω καὶ μώνυχες ἵπποι·
 τοίου γὰρ κλέος ἐσθλὸν ἀπώλεσαν ἡνιόχοιο, 280
 ἠπίου, ὃ σφωιν μάλα πολλάκις ὑγρὸν ἔλαιον
 χαιτάων κατέχευε, λοέσσας ὕδατι λευκῷ.

τὸν τῷ γ' ἑσταότες πενθείετον, οὐδεὶ δέ σφιν
 χαῖται ἐρηρέδεται, τῷ δ' ἑστατον ἀχνυμένω κῆρ.
 ἄλλοι δὲ στέλλεσθε κατὰ στρατόν, ὃς τις Ἀχαιῶν 285
 ἵπποισιν τε πέποιθε καὶ ἄρμασι κολλητοῖσιν.“

ὣς φάτο Πηλεΐδης, ταχέες δ' ἱππῆες ἔγερθεν.
 ὦρτο πολὺν πρῶτος μὲν ἄναξ ἀνδρῶν Εὐμήλος,
 Ἀδμήτου φίλος υἱός, ὃς ἱπποσύνη ἐκέκαστο·
 τῷ δ' ἐπὶ Τυδεΐδης ὦρτο κρατερός Διομήδης, 290
 ἵππους δὲ Τρῶους ὑπαγε ζυγόν, οὓς ποτ' ἀπηύρα
 Αἰνείαν, ἀτὰρ αὐτὸν ὑπεξεσάωσεν Ἀπόλλων.
 τῷ δ' ἄρ' ἐπ' Ἀτρεΐδης ὦρτο ξανθὸς Μενέλαος
 διογενής, ὑπὸ δὲ ζυγὸν ἤγαγεν ὠκέας ἵππους,
 Αἶθην τὴν Ἀγαμεμνονέην τὸν ἑόν τε Πόδαργον· 295
 τὴν Ἀγαμέμνονι δῶκ' Ἀγχισιιάδης Ἐχέπωλος
 δῶρ', ἵνα μὴ οἱ ἔποιθ' ὑπὸ Ἴλιον ἡνεμόεσσαν,
 ἀλλ' αὐτοῦ τέρποιτο μένων· μέγα γάρ οἱ ἔδωκεν
 Ζεὺς ἄφενος, ναῖεν δ' ὃ γ' ἐν εὐρυχόρῳ Σικυῶνι·
 τὴν δ' ὃ γ' ὑπὸ ζυγὸν ἤγε μέγα δρόμου ἰσχανόωσαν. 300
 Ἀντίλοχος δὲ τέταρτος ἐύτριχας ὠπλίσαθ' ἵππους,
 Νέστορος ἀγλαὸς υἱὸς ὑπερθύμοιο ἄνακτος
 τοῦ Νηληιάδαο· πυλοιγενέες δὲ οἱ ἵπποι
 ὠκύποδες φέρον ἄρμα. πατήρ δέ οἱ ἄγχι παραστάς
 μυθεῖτ' εἰς ἀγαθὰ φρονέων νοέοντι καὶ αὐτῷ· 305
 „Ἀντίλοχ', ἦ τοι μὲν σε νέον περ ἑόντα φίλησαν
 Ζεὺς τε Ποσειδάων τε, καὶ ἱπποσύνας ἐδίδαξαν
 παντοίας· τῷ καὶ σε διδασκόμεν οὐ τι μάλα χρεώ·
 οἴσθα γὰρ εὖ περὶ τέρμαθ' ἐλίσσέμεν· ἀλλὰ τοι ἵπποι
 βάρδιστοι θείειν· τῷ τ' οἶω λοίγι' ἔσεσθαι. 310
 τῶν δ' ἵπποι μὲν ἔασιν ἀφάρτεροι, οὐδὲ μὲν αὐτοὶ
 πλείονα ἴσασιν σέθεν αὐτοῦ μητίσασθαι.
 ἀλλ' ἄγε δὴ σύ, φίλος, μῆτιν ἐμβάλλεο θυμῷ

παντοίην, ἵνα μή σε παρεκπροφύγῃσιν ἄεθλα.
 μήτι τοι δρυτόμος μέγ' ἀμείνων ἢ βίηφιν· 315
 μήτι δ' αὐτε κυβερνήτης ἐνὶ οἴνοπι πόντῳ
 νῆα θοὴν ἰθύνει ἐρεχθομένην ἀνέμοισιν·
 μήτι δ' ἡνίοχος περιγίγνεται ἡνιόχοιο.
 ἀλλ' ὅς μὲν θ' ἵπποισι καὶ ἄρμασιν οἷσι πεποιθὼς
 ἀφραδέως ἐπὶ πολλὸν ἐλίσσεται ἐνθα καὶ ἐνθα, 320
 ἵπποι δὲ πλανόωνται ἀνὰ δρόμον, οὐδὲ κατίσχει·
 ὅς δέ κε κέρδεα εἰδῇ ἐλαύνων ἥσσονας ἵππους,
 αἰεὶ τέρμ' ὁρόων στρέφει ἐγγύθεν, οὐδέ ἐ λήθει,
 ὅπως τὸ πρῶτον τανύσῃ βοέοισιν ἱμᾶσιν,
 ἀλλ' ἔχει ἀσφαλέως καὶ τὸν προύχοντα δοκεύει. 325
 σῆμα δέ τοι ἐρέω μάλ' ἀριφραδές, οὐδέ σε λήσει.
 ἔστηκε ξύλον αὖον, ὅσον τ' ὄργυι', ὑπὲρ αἰῆς,
 ἣ δρυὸς ἣ πεύκης· τὸ μὲν οὐ καταπύθεται ὕμβρω·
 λᾶε δὲ τοῦ ἐκάτερθεν ἐρηρέδαται δύο λευκὰ
 ἐν ξυνοχῆσιν ὁδοῦ, λεῖος δ' ἱππόδρομος ἀμφίς· 330
 ἣ τευ σῆμα βροτοῖο πάλαι κατατεθνηῶτος,
 ἣ τό γε νύσσα τέτυκτο ἐπὶ προτέρων ἀνθρώπων·
 καὶ νῦν τέρματ' ἔθηκε ποδάρεης δῖος Ἀχιλλεύς.
 τῷ σὺ μάλ' ἐγχρίμψας ἐλάαν σχεδὸν ἄρμα καὶ ἵππους,
 αὐτὸς δὲ κλινθήναι ἐυπλέκτῳ ἐνὶ δίφρῳ 335
 ἦκ' ἐπ' ἀριστερὰ τοῖν· ἀτὰρ τὸν δεξιὸν ἵππον
 κένσαι ὁμοκλήσας, εἷξαι τέ οἱ ἡνία χερσίν.
 ἐν νύσῃ δέ τοι ἵππος ἀριστερὸς ἐγχριμψθήτω,
 ὥς ἂν τοι πλήμνη γε δοάσσεται ἄκρον ἰκέσθαι
 κύκλου ποιητοῖο· λίθον δ' ἀλέασθαι ἐπαυρεῖν, 340
 μή πως ἵππους τε τρώσῃς κατὰ θ' ἄρματα ἄξης·
 χάρμα δὲ τοῖς ἄλλοισιν, ἐλεγχείῃ δὲ σοὶ αὐτῷ
 ἔσσεται· ἀλλὰ, φίλος, φρονέων πεφυλαγμένος εἶναι.
 εἰ γάρ κ' ἐν νύσῃ γε παρεξέλασθησθα διώκων,

οὐκ ἔσθ', ὅς κέ σ' ἔλῃσι μετάλμενος οὐδὲ παρέλθῃ, 345
οὐδ' εἰ κεν μετόπισθεν Ἀρείονα δῖον ἐλαύνῃ,
Ἀδρήστου ταχὺν ἵππον, ὅς ἐκ θεόφιν γένος ἦεν,
ἣ τοὺς Λαομέδοντος, οὐ ἐνθάδε γ' ἔτραφεν ἐσθλοί·"

ὣς εἰπὼν Νέστωρ Νηλῆϊος ἄψ ἐνὶ χώρῃ
ἔξετ', ἐπεὶ ᾧ παιδὶ ἐκάστου πείρατ' ἔειπεν. 350

Μηριόνης δ' ἄρα πέμπτος εὐτρίχας ὠπλίσαθ' ἵππους.
ἂν δ' ἔβαν ἐς δίφρους, ἐν δὲ κλῆρους ἐβάλλοντο·
πάλλ' Ἀχιλεὺς, ἐκ δὲ κλῆρος θόρε Νεστορίδαο
Ἀντιλόχου· μετὰ τὸν δὲ λάχε κρείων Εὐμήλος,
τῷ δ' ἄρ' ἐπ' Ἀτρεΐδης δουρικλειτὸς Μενέλαος, 355
τῷ δ' ἐπὶ Μηριόνης λάχ' ἐλαννέμεν· ὕστατος αὐτὲ
Τυδεΐδης, ὃχ' ἄριστος ἐών, λάχ' ἐλαννέμεν ἵππους.
στὰν δὲ μεταστοιχί, σήμηνε δὲ τέρματ' Ἀχιλλεὺς
τηλόθεν ἐν λείῳ πεδίῳ· παρὰ δὲ σκοπὸν εἶσεν
ἀντίθεον Φοίνικα, ὀπάονα πατρὸς ἐοῖο, 360
ὣς μεμνέοντο δρόμου καὶ ἀληθείην ἀποεῖποι.

οἱ δ' ἅμα πάντες ἐφ' ἵπποιιν μᾶστιγας ἄειραν,
πέπληγόν θ' ἱμᾶσιν ὁμόκλησάν τ' ἐπέεσσιν
ἔσσυμένως· οἱ δ' ὦκα διέπρησσαν πεδίῳ,
νόσφι νεῶν, ταχέως· ὑπὸ δὲ στέρνοισι κονίη 365
ἵστατ' ἀειρομένη ὥς τε νέφος ἥδ'θύελλα,
χαῖται δ' ἐρρῶντο μετὰ πνοιῆς ἀνέμοιο.
ἄρματα δ' ἄλλοτε μὲν χθονὶ πῖλνατο πουλυβοτείρῃ,
ἄλλοτε δ' ἀίξασκε μετήορα· τοὶ δ' ἐλατῆρες
ἔστασαν ἐν δίφροισι, πάτασσε δὲ θυμὸς ἐκάστου 370
νίκης ἱμένων· κέκλοντο δὲ οἷσιν ἕκαστος
ἵπποις, οἱ δ' ἐπέτοντο κονίοντες πεδίῳ.

ἀλλ' ὅτε δὴ πύματον τέλεον δρόμον ὥκέες ἵπποι
ἄψ ἐφ' ἄλδος πολιῆς, τότε δὴ ἀρετὴ γε ἐκάστου
φαίνεται, ἄφαρ δ' ἵπποισι τάθη δρόμος· ὦκα δ' ἔπειτα

αἶ Φηρητιάδαο ποδώκεες ἔκφερον ἵπποι. 376
 τὰς δὲ μετ' ἐξέφερον Διομήδεος ἄρσενες ἵπποι
 Τρώιοι, οὐδέ τι πολλὸν ἄνευθ' ἔσαν, ἀλλὰ μάλ' ἐγγύς·
 αἰεὶ γὰρ δίφρου ἐπιβησομένοισιν ἐίκτην,
 πνοιῇ δ' Εὐμήλοιο μετάφρενον εὐρέε τ' ὦμω 380
 θέρμετ'· ἐπ' αὐτῷ γὰρ κεφαλὰς καταθέντε πετέσθην.
 καὶ νύ κεν ἦ παρέλασσε ἢ ἀμφήριστον ἔδηκεν,
 εἰ μὴ Τυδέος νῆϊ κοτέσσαστο Φοῖβος Ἀπόλλων,
 ὅς ῥά οἱ ἐκ χειρῶν ἔβαλεν μᾶστιγα φαεινὴν.
 τοιοῦ δ' ἅπ' ὀφθαλμῶν χύτο δάκρυα χωομένοιο, 385
 οὐνεκα τὰς μὲν ὄρα ἔτι καὶ πολλὸν μᾶλλον λούσας,
 οἱ δὲ οἱ ἐβλάφθησαν ἄνευ κέντροιο θέοντες.
 οὐδ' ἄρ' Ἀθηναίην ἐλεφθηράμενος λάθ' Ἀπόλλων
 Τυδεΐδην, μάλα δ' ὥκα μετέσσυντο ποιμένα λαῶν,
 δῶκε δὲ οἱ μᾶστιγα, μένος δ' ἵπποισιν ἐνήκεν. 390
 ἢ δὲ μετ' Ἀδμήτου νῆϊν κοτέουσα βεβήκειν·
 ἵππειον δὲ οἱ ἦξε θεὰ ζυγόν· αἶ δὲ οἱ ἵπποι
 ἀμφὶς ὁδοῦ δραμέτην, ῥυμὸς δ' ἐπὶ γαῖαν ἐλύσθη.
 αὐτὸς δ' ἐκ δίφροιο παρὰ τροχὸν ἐξεκυλίσθη,
 ἀγκῶνάς τε περιδρῦφθη στόμα τε ῥῖνάς τε, 395
 θρυλίχθη δὲ μέτωπον ἐπ' ὀφρύσι· τῷ δὲ οἱ ὅσσε
 δακρυόφιν πλησθῆεν, θαλερὴ δὲ οἱ ἔσχετο φωνή.
 Τυδεΐδης δὲ παρατρέψας ἔχε μώνυχας ἵππους,
 πολλὸν τῶν ἄλλων ἐξάλμενος· ἐν γὰρ Ἀθήνῃ
 ἵπποις ἦκε μένος καὶ ἐπ' αὐτῷ κῦδος ἔδηκεν. 400
 τῷ δ' ἄρ' ἐπ' Ἀτρεΐδης εἶχε ξανθοὺς Μενέλαος.
 Ἀντίλοχος δ' ἵπποισιν ἐκέκλετο πατρὸς ἑοῖο·
 „ἔμβητον καὶ σφῶι· τιταίνετον ὅττι τάχιστα.
 ἢ τοι μὲν κείνοισιν ἐριζέμεν οὐ τι κελεύω,
 Τυδεΐδω ἵπποισι δαΐφρονος, οἷσιν Ἀθήνῃ 405
 νῦν ὥρεξε τάχος καὶ ἐπ' αὐτῷ κῦδος ἔδηκεν·

ἵππους δ' Ἀτρεΐδαο κιχάνετε, μηδὲ λίπησθον,
καρπαλίμως, μὴ σφῶιν ἐλεγχείην καταχεύῃ
Αἶθῃ θήλυς ἐοῦσα· τί ἦ λείπεσθε, φέριστοι;
ὥδε γὰρ ἐξερέω, καὶ μὴν τετελεσμένον ἔσται· 410
οὐ σφῶιν κομιδὴ παρὰ Νέστορι ποιμένι λαῶν
ἔσσεται, αὐτίκα δ' ὕμμε κατακτενεῖ ὀξεί χαλκῷ,
αἶ κ' ἀποκηδήσαντε φερώμεθα χεῖρον ἄεθλον.
ἀλλ' ἐφομαρτεῖτον καὶ σπεύδεται ὅτι τάχιστα·
ταῦτα δ' ἐγὼν αὐτὸς τεχνήσομαι ἥδ' ἐνοήσω, 415
στενωπῷ ἐν ὁδῷ παραδύμεναι, οὐδέ με λήσει.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δὲ ἄνακτος ὑποδείσαντες ὁμοκλήν
μᾶλλον ἐπεδραμέτην ὀλίγον χρόνον· αἶψα δ' ἔπειτα
στεῖνος ὁδοῦ κοίλης ἶδεν Ἀντίλοχος μενεχάρμης.
ῥωχμὸς ἦν γαίης, ἣ χειμέριον ἅλ' ἐν ὕδαρ 420
ἐξέρρηξεν ὁδοῖο, βάθυνε δὲ χῶρον ἅπαντα·
τῇ ῥ' εἶχεν Μενέλαος ἀματροχιάς ἀλεείνων.
Ἀντίλοχος δὲ παρατρέψας ἔχε μώνυχας ἵππους
ἐκτὸς ὁδοῦ, ὀλίγον δὲ παρακλίνας ἐδίωκεν.
Ἀτρεΐδης δ' ἔδεισε καὶ Ἀντιλόχῳ ἐγεγώνειν· 425
,,Ἀντίλοχ', ἀφραδέως ἱππάζεαι· ἀλλ' ἄνεχ' ἵππους·
στενωπὸς γὰρ ὁδός, τάχα δ' εὐρυτέρῃ παρελάσσεις,
μὴ πως ἀμφοτέρους δηλήσεται ἄρματι κύρσας.“

ὥς ἔφατ', Ἀντίλοχος δ' ἔτι καὶ πολὺ μᾶλλον ἔλαυνεν
κέντρῳ ἐπισπέρχων, ὥς οὐκ αἰοντι εἰοικώς. 430
ᾧσσα δὲ δίσκου οὐρα κατωμαδίῳ πελονται,
ὅν τ' αἰζήνδς ἀφῆκεν ἀνὴρ πειρώμενος ἥβης,
τόσσον ἐπεδραμέτην· αἶ δ' ἠρώησαν ὀπίσσω
Ἀτρεΐδew· αὐτὸς γὰρ ἐκὼν μεθέηκεν ἐλαύνειν,
μὴ πως συγκύρσειαν ὁδῷ ἐνι μώνυχες ἵπποι, 435
δίφρους τ' ἀνστρέψειαν ἐνπλεκέας, κατὰ δ' αὐτοὶ
ἐν κονίησι πέσοιεν ἐπειγόμενοι περὶ νίκης.

τὸν καὶ νεικείων προσέφη ξανθὸς Μενέλαος·
 „Ἀντίλοχ’, οὗ τις σεῖο βροτῶν ὀλοώτερος ἄλλος·
 ἔρρ’, ἐπεὶ οὗ σ’ ἐτυμόν γε φάμεν πεπνυσθαι Ἀχαιοί.
 ἀλλ’ οὐ μὰν οὐδ’ ὥς ἄτερ ὄρκου οἴσῃ ἄεθλον.“ 441

ὥς εἰπὼν ἵπποισιν ἐκέκλετο φώνησέν τε·
 „μή μοι ἐρύκεσθον μηδ’ ἔστατον ἀχνυμένω κῆρ·
 φθῆσονται τούτοισι πόδες καὶ γοῦνα καμόντα
 ἢ ὑμῖν· ἄμφω γὰρ ἀτέμβονται νεότητος.“ 445

ὥς ἔφαθ’, οἱ δὲ ἄνακτος ὑποδείσαντες ὁμοκλήν
 μάλλον ἐπιδραμέτην, τάχα δέ σφισιν ἄγχι γένοντο.

Ἀργεῖοι δ’ ἐν ἀγῶνι καθήμενοι εἰσορόωντο
 ἵππους· τοὶ δ’ ἐπέτοντο κονίοντες πεδίοιο.
 πρῶτος δ’ Ἴδομενεὺς Κρητῶν ἀγὸς ἐφράσαθ’ ἵππους·
 ἦστο γὰρ ἐκτὸς ἀγῶνος ὑπέρτατος ἐν περιωπῇ, 451
 τοιοῦτο δ’ ἀνευθεν ἐόντος ὁμοκλητῆρος ἀκούσας
 ἔγνω· φράσσατο δ’ ἵππον ἀριπρεπέα προύχοντα,
 ὃς τὸ μὲν ἄλλο τόσον φοῖνιξ ἦν, ἐν δὲ μετώπῳ
 λευκὸν σῆμ’ ἐτέτυκτο περίτροχον ἥύτε μήνη. 455

στῇ δ’ ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·
 „ὦ φίλοι, Ἀργείων ἡγήτορες ἠδὲ μέδοντες,
 οἷος ἐγὼν ἵππους ἀνγάζομαι ἦε καὶ ὑμεῖς;
 ἄλλοι μοι δοκέουσι παροῖτεροι ἔμμεναι ἵπποι,
 ἄλλος δ’ ἡνίοχος ἰνδάλλεται· αἱ δὲ πού αὐτοῦ 460
 ἔβλαβεν ἐν πεδίῳ, αἰὲν κεῖσέ γε φέρτεραι ἦσαν.
 [ἦ τοι γὰρ τὰς πρῶτα ἰδὼν περὶ τέρμα βαλούσας,
 νῦν δ’ οὗ πῃ δύναμαι ἰδέειν· πάντῃ δέ μοι ὅσσε
 Τρωικὸν ἄμ πεδῖον παπταίνετον εἰσορόωντι.]
 ἦε τὸν ἡνίοχον φύγον ἡνία, οὐδὲ δυνάσθη 465
 εὖ σχεθέειν περὶ τέρμα, καὶ οὐκ ἐτύχησεν ἐλῖξας·
 ἐνθα μιν ἐκπεσέειν ὁίω σύν θ’ ἄρματα ἄξαι,
 αἱ δ’ ἐξηρώησαν, ἐπεὶ μένος ἔλλαβε θυμόν.

ἀλλὰ ἴδεσθε καὶ ὕμεις ἀνασταδόν· οὐ γὰρ ἐγὼ γε
εὖ διαγιγνώσκω· δοκέει δέ μοι ἔμμεναι ἀνήρ 470
Αἰτωλὸς γενεήν, μετὰ δ' Ἀργείοισιν ἀνάσσει,
Τυδέος ἱπποδάμου υἱός, κρατερὸς Διομήδης.“

τὸν δ' αἰσχυρῶς ἐνέειπεν Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας·
„Ἴδομενεῦ, τί πάρος λαβρεύεαι; αἱ δέ τ' ἄνευθεν
ἵπποι ἀερσίποδες πολέος πεδίοιο δίενται. 475

οὔτε νεώτατός ἐσσι μετ' Ἀργείοισι τοσοῦτον,
οὔτε τοι ὀξύτατον κεφαλῆς ἐκδέρεται ὄσσε·
ἀλλ' αἰεὶ μύθοις λαβρεύεαι· οὐδέ τί σε χρὴ
[λαβραγόρην ἔμμεναι· πάρα γὰρ καὶ ἀμείνονες ἄλλοι.]
ἵπποι δ' αὐταὶ ἔασι παροίτεραι, αἱ τὸ πάρος περ, 480
Εὐμήλου, ἐν δ' αὐτὸς ἔχων εὖληρα βέβηκεν.“

τὸν δὲ χολωσάμενος Κρητῶν ἀγὸς ἀντίον ἠΐδα·
„Αἴαν νεῖκος ἄριστε, κακοφραδές, ἔλλα τε πάντα
δεύεαι Ἀργείων, ὅτι τοι νόος ἐστὶν ἀπηνής.
δεῦρό νυν, ἣ τρίποδος περιδόμεθον ἢ ἐλέβητος, 485
ἱστορα δ' Ἀτρεΐδην Ἀγαμέμνονα θείομεν ἄμφω,
ὀππότεραι πρόσθ' ἵπποι, ἵνα γνώης ἀποτίνων.“

ὥς ἔφατ', ὥρηντο δ' αὐτίκ' Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας
χωόμενος χαλεποῖσιν ἀμείψασθαι ἐπέεσσιν.
καὶ νύ κε δὴ προτέρω ἔτ' ἔρις γένετ' ἀμφοτέροισιν,
εἰ μὴ Ἀχιλλεὺς αὐτὸς ἀνίστατο καὶ φάτο μῦθον· 491
„μηκέτι νῦν χαλεποῖσιν ἀμείβεσθον ἐπέεσσιν,
Αἴαν Ἴδομενεῦ τε, κακοῖς, ἐπεὶ οὐδὲ ἔοικεν.

καὶ δ' ἄλλω νεμεσᾶτον, ὅτις τοιαυτὰ γε ῥέξοι.
ἀλλ' ὅμως ἐν ἄγωνι καθήμενοι εἰσοράσθε 495
ἵππους· οἱ δὲ τάχ' αὐτοὶ ἐπειγόμενοι περὶ νίκης
ἐνθάδ' ἐλεύσονται· τότε δὲ γνώσεσθε ἕκαστος
ἵππους Ἀργείων, οἳ δεύτεροι οἳ τε πάροινθεν.“

ὥς φάτο, Τυδεΐδης δὲ μάλα σχεδὸν ἤλθε διώκων·

μάστι δ' αἶεν ἔλαυνε κατωμαδόν· οἱ δέ οἱ ἵπποι 500
 ὑψόσ' ἀειρέσθην ῥίμῳα πρήσσοντε κέλευθον.
 αἰεὶ δ' ἡνίοχον κονίης ῥαθάμιγγες ἔβαλλον,
 ἄρματα δὲ χρυσῷ πεπυκασμένα κασσιτέρῳ τε
 ἵπποις ὠκνυπόδεσσιν ἐπέτρεχον· οὐδέ τι πολλή
 γίγνεται ἐπισσώτρων ἄρματροχιῇ κατόπισθεν 505
 ἐν λεπτῇ κονίῃ· τῷ δὲ σπεύδοντε πετέσθην.
 στῇ δὲ μέσῳ ἐν ἀγῶνι, πολλὺς δ' ἀνεκῆκειεν ἰδρῶς
 ἵππων ἔκ τε λόφων καὶ ἀπὸ στέρνοιο χαμᾶζε.
 αὐτὸς δ' ἐκ δίφροιο χαμαὶ θόρε παμφανόωντος,
 κλῖνε δ' ἄρα μάστιγα ποτὶ ζυγόν. οὐδὲ μᾶτησεν 510
 ἵφθιμος Σθένελος, ἀλλ' ἐσσυμένως λάβ' ἄεθλον,
 δῶκε δ' ἄγειν ἐτάροισιν ὑπερθύμοισι γυναῖκα
 καὶ τρίποδ' ὠτῶεντα φέρειν· ὁ δ' ἔλυνεν ὕφ' ἵππους.
 τῷ δ' ἄρ' ἐπ' Ἀντίλοχος Νηληΐος ἥλασεν ἵππους,
 κέρδεσιν, οὐ τι τάχει γε, παραφθάμενος Μενέλαον·
 ἀλλὰ καὶ ὥς Μενέλαος ἔχ' ἐγγύθεν ὠκέας ἵππους. 516
 ὅσσον δὲ τροχοῦ ἵππος ἀφίσταται, ὅς ῥά τ' ἄνακτα
 ἔλκησιν πεδίοιο τιταινόμενος σὺν ὄχεσφιν·
 τοῦ μὲν τε ψαύουσιν ἐπισσώτρου τρίχες ἄκραι
 οὐραῖαι· ὁ δέ τ' ἄγχι μάλα τρέχει, οὐδέ τι πολλή 520
 χώρη μεσσηγύς, πολέος πεδίοιο θέοντος·
 τόσσον δὴ Μενέλαος ἀμύμονος Ἀντιλόχοιο
 λείπει· ἀτὰρ τὰ πρῶτα καὶ ἐς δίσκουρα λέλειπτο,
 ἀλλὰ μιν αἶψα κίχανεν· ὀφέλλετο γὰρ μένος ἡνὶ
 ἵππου τῆς Ἀγαμεμνονέης, καλλίτριχος Αἴθης. 525
 εἰ δέ κ' ἔτι προτέρῳ γένετο δρόμος ἀμφοτέροισιν,
 τῷ κέν μιν παρέλασσε· οὐδ' ἀμφήριστον ἔθηκεν.
 αὐτὰρ Μηριόνης θεράπων εὖς Ἰδομενῆος
 λείπει Ἀγακλῆος Μενελάου δουρὸς ἐρωήν·
 βάρδιστοι μὲν γάρ οἱ ἔσαν καλλίτριχες ἵπποι, 530

ἥμιστος δ' ἦν αὐτὸς ἐλαυνέμεν ἄρμ' ἐν ἀγῶνι.
 υἱὸς δ' Ἀδμήτοιο πανύστατος ἤλυθεν ἄλλων
 ἔλκων ἄρματα καλά, ἐλαύνων πρόσσοθεν ἵππους.
 τὸν δὲ ἰδὼν ᾤκτειρε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,
 στὰς δ' ἄρ' ἐν Ἀργείοις ἔπεα πτερόεντ' ἀγόρευεν· 535
 „λοῖσθος ἀνὴρ ὄριστος ἐλαύνει μώνυχας ἵππους·
 ἀλλ' ἄγε δὴ οἱ δῶμεν ἀέθλιον, ὥς ἐπιεικές,
 δεύτερό· ἀτὰρ τὰ πρῶτα φερέσθω Τυδέος υἱός.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα πάντες ἐπήνεον, ὥς ἐκέλευεν.
 καὶ νῦν κέ οἱ πόρεν ἵππον, ἐπήνησαν γὰρ Ἀχαιοί, 540
 εἰ μὴ ἄρ' Ἀντίλοχος μεγαθύμου Νέστορος υἱὸς
 Πηλεΐδην Ἀχιλῆα δίκη ἡμείψατ' ἀναστάς·
 „ὦ Ἀχιλεῦ, μάλα τοι κεχολώσομαι, αἶ κε τελέσσης
 τοῦτο ἔπος· μέλλεις γὰρ ἀφαιρήσεσθαι ἄεθλον,
 τὰ φρονέων, ὅτι οἱ βλάβεν ἄρματα καὶ ταχέ' ἵππω 545
 αὐτός τ' ἐσθλὸς ἐών. ἀλλ' ὄφελεν ἀθανάτοισιν
 εὐχέσθαι· τῷ κ' οὐ τι πανύστατος ἦλθε διώκων.
 εἰ δέ μιν οἴκτειρεις καὶ τοι φίλος ἐπλετο θυμῷ,
 ἔστι τοι ἐν κλισίῃ χρυσὸς πολὺς, ἔστι δὲ χαλκὸς
 καὶ πρόβατ', εἰσὶ δέ τοι δμῳαὶ καὶ μώνυχες ἵπποι· 550
 τῶν οἱ ἔπειτ' ἀνελὼν δόμεναι καὶ μεῖζον ἄεθλον,
 ἥν καὶ αὐτίκα νῦν, ἵνα σ' αἰνήσωσιν Ἀχαιοί.
 τὴν δ' ἐγὼ οὐ δώσω· περὶ δ' αὐτῆς πειρηθῆτω
 ἀνδρῶν ὅς κ' ἐθέλῃσιν ἐμοὶ χεῖρεσσι μάχεσθαι.“

ὥς φάτο, μείδησεν δὲ ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς 555
 χαίρων Ἀντίλοχῳ, ὅτι οἱ φίλος ἦεν ἐταῖρος·
 καὶ μιν ἀμειβόμενος ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „Ἀντίλοχ', εἰ μὲν δὴ με κελεύεις οἰκοθὲν ἄλλο
 Εὐμήλῳ ἐπιδοῦναι, ἐγὼ δέ κε καὶ τὸ τελέσω.
 δώσω οἱ θῶρηκα, τὸν Ἀστεροπαῖον ἀπηύρων, 560
 χάλκεον, ᾧ πέρι χεῦμα φαεινοῦ κασσιτέροιο

ἀμφοιδεδίνηται· πολέος δέ οἱ ἄξιος ἔσται.“

ἣ δα καὶ Ἀυτομέδοντι φίλῳ ἐκέλευσεν ἑταίρῳ
οἰσέμεναι κλισίῃθην· ὁ δ' ὄχετο καὶ οἱ ἔνεικεν.

[Εὐμήλῳ δ' ἐν χερσὶ τίθει· ὁ δὲ δέξατο χαίρων.] 565

τοῖσι δὲ καὶ Μενέλαος ἀνίστατο θυμὸν ἀχεύων,

Ἀντιλόχῳ ἔμοτον κεχολωμένος· ἐν δ' ἄρα κῆρυξ

χερσὶ σκῆπτρον ἔθηκε, σιωπῆσαι τε κέλευσεν

Ἀργείους· ὁ δ' ἔπειτα μετηύδα ἰσόθεος φῶς·

„Ἀντίλοχε, πρόσθεν πεπνυμένε, ποῖον ἔρεξας. 570

ἦσχυνας μὲν ἐμὴν ἀρετὴν, βλάβας δέ μοι ἵππους,

τοὺς σοὺς πρόσθε βαλὼν, οἳ τοι πολὺ χεῖρονες ἦσαν.

ἀλλ' ἄγετ', Ἀργείων ἡγήτορες ἡδὲ μέδοντες,

ἐς μέσον ἀμφοτέροισι δικάσσετε, μηδ' ἐπ' ἀρωγῇ,

μή ποτέ τις εἰπησιν Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων· 575

Ἄντίλοχον ψεύδεσσι βιησάμενος Μενέλαος

οἴχεται ἵππον ἄγων, ὅτι οἱ πολὺ χεῖρονες ἦσαν

ἵπποι, αὐτὸς δὲ κρείσσων ἀρετῇ τε βίῃ τε·

εἰ δ' ἄγ' ἐγὼν αὐτὸς δικάσω, καί μ' οὐ τινά φημι

ἄλλον ἐπιπλήξειν Δαναῶν· ἰθεῖα γὰρ ἔσται. 580

Ἀντίλοχ', εἰ δ' ἄγε δεῦρο, διοτρεφές, ἣ θέμις ἔστιν,

στὰς ἵππων προπάροιθε καὶ ἄρματος, αὐτὰρ ἱμάσθλην

χερσὶν ἔχων ῥαδινήν, ἣ περ τὸ πρόσθεν ἔλαυνες,

ἵππων ἀψάμενος γαιήοχον ἐννοσίγαιον

ᾄμνυθι μὴ μὲν ἐκὼν τὸ ἐμὸν δόλῳ ἄρμα πεδῆσαι.“ 585

τὸν δ' αὖτ' Ἀντίλοχος πεπνυμένος ἀντίον ἤνδα·

„ἄνσχεο νῦν· πολλὸν γὰρ ἐγὼ γε νεώτερός εἰμι

σεῖο, ἄναξ Μενέλαε, σὺ δὲ πρότερος καὶ ἀρείων.

οἴσθ', οἶαι νέου ἀνδρὸς ὑπερβασίαι τελέθουσιν·

κραιπνότερος μὲν γάρ τε νόος, λεπτή δέ τε μῆτις· 590

τῷ τοι ἐπιτλήτω κραδίη· ἵππον δέ τοι αὐτὸς

δώσω, τὴν ἀρόμην· εἰ καὶ νῦ κεν οἴκοθεν ἄλλο

μείζον ἐπαιτήσειας, ἄφαρ κέ τοι αὐτίκα δοῦναι
βουλοίμην ἢ σοί γε, διοτρεφές, ἡματα πάντα
ἐκ θυμοῦ πεσέειν καὶ δαίμοσιν εἶναι ἀλιτρός.“ 595

ἦ ῥα καὶ ἵππον ἄγων μεγαθύμου Νέστορος νῖδος
ἐν χεῖρεσσι τίθει Μενελάου· τοῖο δὲ θυμὸς
ιάνθη, ὥς εἴ τε περὶ σταχύεσσιν ἐέρση
λήιου ἀλδήσκοντος, ὅτε φρίσσουσιν ἄρουραι·
ὥς ἄρα σοί, Μενέλαε, μετὰ φρεσὶ θυμὸς ιάνθη. 600
καί μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
„Ἀντίλοχε, νῦν μὲν τοι ἐγὼν ὑποεἶξομαι αὐτὸς
χωόμενος, ἐπεὶ οὗ τι παρήγορος οὐδ’ ἀεσίφρων
ἦσθα πάρος· νῦν αὖτε νόον νίκησε νεοίη.
δεύτερον αὖτ’ ἀλέασθαι ἀμείνονας ἠπεροπεύειν. 605
οὐ γάρ κέν με τάχ’ ἄλλος ἀνὴρ παρέπεισεν Ἀχαιῶν·
ἀλλὰ σὺ γὰρ δὴ πολλὰ πάθεις καὶ πολλὰ μόγησας
σὸς τε πατήρ ἀγαθὸς καὶ ἀδελφεὸς εἵνεκ’ ἐμεῖο·
τῷ τοι λισσομένῳ ἐπιπείσομαι, ἡδὲ καὶ ἵππον
δώσω ἐμήν περ ἐοῦσαν, ἵνα γνῶωσι καὶ οὔδε, 610
ὥς ἐμὸς οὗ ποτε θυμὸς ὑπερφίαλος καὶ ἀπηνής.“

ἦ ῥα καὶ Ἀντιλόχοιο Νοήμονι δῶκεν ἐταῖρῳ
ἵππον ἄγειν· ὁ δ’ ἔπειτα λέβηθ’ ἔλε παμφανόωντα.
Μηριόνης δ’ ἀνάνειρε δύω χρυσοῖο τάλαντα
τέτρατος, ὥς ἔλασεν. πέμπτον δ’ ὑπελείπεται ἄεθλον,
ἀμφίδετος φιάλη· τὴν Νέστορι δῶκεν Ἀχιλλεὺς 616
Ἀργείων ἀν’ ἀγῶνα φέρων καὶ εἶπε παραστάς·
„τῇ νῦν, καὶ σοὶ τοῦτο, γέρον, κειμήλιον ἔστω,
Πατρόκλοιο τάφου μνημ’ ἔμμεναι· οὐ γὰρ ἔτ’ αὐτὸν
ῥῆξεν ἐν Ἀργείοισι· δίδωμι δέ τοι τόδ’ ἄεθλον 620
αὕτως· οὐ γὰρ πύξι γε μαχήσεται οὐδὲ παλαίσεις,
οὐδέ τ’ ἀκοντιστὴν ἐσδύσει οὐδὲ πόδεσσιν
θεύσει· ἥδη γὰρ χαλεπὸν κατὰ γῆρας ἐπείγει.“

ὥς εἰπὼν ἐν χερσὶ τίθει· ὁ δὲ δέξατο χαίρων,
καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα· 625
„ναὶ δὴ ταῦτά γε πάντα, τέκος, κατὰ μοῖραν ἔειπες·
οὐ γὰρ ἔτ' ἔμπεδα γυῖα, φίλος, πόδες, οὐδ' ἔτι χεῖρες
ὤμων ἀμφοτέρωθεν ἐπαῖσσονται ἐλαφραί.
εἰθ' ὥς ἡβώοιμι βίη τέ μοι ἔμπεδος εἴη,
ὥς ὁπότε κρείοντ' Ἀμαρυγκέα θάπτον Ἐπειοὶ 630
Βουπρασίῳ, παῖδες δὲ θέσαν βασιλῆος ἄεθλα·
ἐνθ' οὐ τίς μοι ὁμοῖος ἀνὴρ γένετ', οὔτ' ἄρ' Ἐπειῶν
οὔτ' αὐτῶν Πυλίων οὔτ' Αἰτωλῶν μεγαθύμων.
πῦξ μὲν ἐνίκησα Κλυτομήδεα Ἥνοπος υἱόν,
'Αγκαῖον δὲ πάλῃ Πλευρώνιον, ὅς μοι ἀνέστη· 635
Ἴφικλον δὲ πόδεσσι παρέδραμον ἐσθλὸν ἐόντα,
δουρὶ δ' ὑπειρέβαλον Φυλῆά τε καὶ Πολύδωρον.
οἰοισίν μ' ἵπποισι παρήλασαν Ἀκτορίωνε,
[πλήθει πρόσθε βαλόντες, ἀγασσάμενοι περὶ νίκης,
οὔνεκα δὴ τὰ μέγιστα παρ' αὐτόθι λείπετ' ἄεθλα.] 640
οἱ δ' ἄρ' ἔσαν δίδυμοι· ὁ μὲν ἔμπεδον ἡνιόχευεν,
ἔμπεδον ἡνιόχευ', ὁ δ' ἄρα μάστιγι κέλευεν.
ὥς ποτ' ἔον· νῦν αὖτε νεώτεροι ἀντιοώντων
ἔργων τοιούτων· ἐμὲ δὲ χρὴ γήραϊ λυγρῷ
πεῖθεσθαι, τότε δ' αὖτε μετέπρεπον ἠρώεσσιν. 645
ἀλλ' ἴθι καὶ σὸν ἐταῖρον ἀέθλοισι κτερεῖζε.
τοῦτο δ' ἐγὼ πρόφρων δέχομαι, χαίρει δέ μοι ἦτορ,
ὥς μευ αἰεὶ μέμνησαι ἐνηέος, οὐδέ σε λήθω,
τιμῆς, ἧς τέ μ' ἔοικε τετιμῆσθαι μετ' Ἀχαιοῖς.
σοὶ δὲ θεοὶ τῶνδ' ἀντὶ χάριν μενοεικέα δοῖεν.“ 650
ὥς φάτο, Πηλεΐδης δὲ πολὺν καθ' ὁμίλον Ἀχαιῶν
ᾤχετ', ἐπεὶ πάντ' αἶνον ἐπέκλυε Νηλεΐδαο.
αὐτὰρ ὁ πυγμαχίης ἀλεγεινῆς θῆκεν ἄεθλα·
ἡμίονον ταλαεργὸν ἄγων κατέδησ' ἐν ἄγωνι

ἔξετέ' ἀδμήτην, ἥ τ' ἀλγίστη δαμάσασθαι· 655
 τῷ δ' ἄρα νικηθέντι τίθει δέπας ἀμφικύπελλον.
 στῇ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·
 „Ἀτρεΐδῃ τε καὶ ἄλλοι ἐκνήμιδες Ἀχαιοί,
 ἄνδρες δὴ περὶ τῶνδε κελεύομεν, ὧ περ ἀρίστῳ,
 πῶς μάλ' ἀνασχομένῳ πεπληγέμεν. ᾧ δέ κ' Ἀπόλλων
 δῶη καμμουίνην, γνῶωσι δὲ πάντες Ἀχαιοί, 661
 ἡμίονον ταλαεργὸν ἄγων κλισίῃνδε νεέσθῳ·
 αὐτὰρ ὁ νικηθεὶς δέπας οἷσεται ἀμφικύπελλον.“

ὣς ἔφατ', ὥρνυτο δ' αὐτίκ' ἀνὴρ ἡὺς τε μέγας τε 665
 εἰδὼς πυγμαχίης, υἱὸς Πανοπῆος Ἐπειός·
 ἄφατο δ' ἡμιόνου ταλαεργοῦ φώνησέν τε·
 „ἄσσον ἵτω, ὅς τις δέπας οἷσεται ἀμφικύπελλον·
 ἡμίονον δ' οὗ φημί τιν' ἀξέμεν ἄλλον Ἀχαιῶν
 πυγμῇ νικήσαντ', ἐπεὶ εὖχομαι εἶναι ἄριστος.
 ἢ οὐχ ἄλλης, ὅττι μάχης ἐπιδεύομαι; οὐδ' ἄρα πως ἦν
 ἐν πάντεσσ' ἐργοῖσι δαήμονα φῶτα γενέσθαι. 671
 ὧδε γὰρ ἔξερέω, τὸ δὲ καὶ τετελεσμένον ἔσται·
 ἀντικρὺς χρόα τε ῥήξω σὺν τ' ὅστέ' ἀράξω·
 κηδεμόνες δέ οἱ ἐνθάδ' ἀολλέες αὖθι μενόντων,
 οἳ κέ μιν ἐξοίσουσιν ἐμῆς ὑπὸ χερσὶ δαμέντα.“ 675

ὣς ἔφαθ', οἳ δ' ἄρα πάντες ἀκὴν ἐγένοντο σιωπῇ.
 Εὐρύαλος δέ οἱ οἶος ἀνίστατο, ἰσόθεος φῶς,
 Μηκιστῆος υἱὸς Ταλαῖονίδαο ἄνακτος,
 ὅς ποτε Θήβαςδ' ἦλθε δεδουπότος Οἰδιπόδαο 680
 ἐς τάφον· ἐνθα δὲ πάντας ἐνίκα Καδμεΐωνας.
 τὸν μὲν Τυδεΐδης δουρικλυτὸς ἀμφεπονεῖτο
 θαρσύνων ἔπεσιν, μέγα δ' αὐτῷ βούλετο νίκην.
 ζῶμα δέ οἱ πρῶτον παρακάμβαλεν, αὐτὰρ ἔπειτα
 δῶκεν ἱμάντας ἐντυμήτους βοδὸς ἀγραύλοιο.
 τῷ δὲ ζωσαμένῳ βήτην ἐς μέσσον ἀγῶνα, 685

ἅντα δ' ἀνασχομένω χερσὶ στιβαρῇσιν ἄμ' ἄμφω
 σὺν ῥ' ἔπεσον, σὺν δέ σφι βαρεῖται χεῖρες ἐμικθεν·
 δεινὸς δὲ χρομάδος γενύων γένετ', ἔρρεε δ' ἰδρώς
 πάντοθεν ἐκ μελέων. ἐπὶ δ' ὄρνυτο δῖος Ἑπειὸς,
 κόψε δὲ παπτήναντα παρήιον· οὐδ' ἄρ' ἔτι δὴν 690
 ἔστήκειν· αὐτοῦ γὰρ ὑπήριπε φαίδιμα γυῖα.
 ὥς δ' ὅθ' ὑπὸ φρικτὸς Βορέω ἀναπάλλεται ἰχθὺς
 θίν' ἐν φνικίοντι, μέλαν δέ ἐ κῆμα κάλυψεν,
 ὥς πληγὴς ἀνέπαλτο. ἀτὰρ μεγάθυμος Ἑπειὸς
 χερσὶ λαβῶν ὥρθωσε· φίλοι δ' ἀμφέσταν ἐταῖροι, 695
 οἳ μιν ἄγον δι' ἀγῶνος ἐφελκομένοισι πόδεςσιν
 αἶμα παχὺ πτύοντα, κάρη βάλλονθ' ἐτέρωσε·
 καὶ δ' ἄλλο-φρονέοντα μετὰ σφίσιν εἶσαν ἄγοντες,
 αὐτοὶ δ' οἰχόμενοι κόμισαν δέπας ἀμφικύπελλον.

Πηλεΐδης δ' αἰψ' ἄλλα κατὰ τρίτα θῆκεν ἄεθλα, 700
 δεικνύμενος Δαναοῖσι, παλαισμοσύνης Ἀλεγεινῆς,
 τῷ μὲν νικῆσαντι μέγαν τρίποδ' ἐμπυριβήτην,
 τὸν δὲ δυωδεκάβοιον ἐνὶ σφίσι τῖον Ἀχαιοί·
 ἀνδρὶ δὲ νικηθέντι γυναῖκ' ἐς μέσσον ἔθηκεν,
 πολλὰ δ' ἐπίστατο ἔργα, τῖον δέ ἐ τεσσαράβοιον. 705
 στῆ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·
 „ὄρνυσθ', οἳ καὶ τούτου ἀέθλου πειρήσεσθον.“
 ὥς ἔφατ', ὥρτο δ' ἔπειτα μέγας Τελαμώνιος Αἴας,
 ἂν δ' Ὀδυσσεὺς πολύμητις ἀνίστατο, κέρδεα εἰδώς.
 ζωσαμένω δ' ἄρα τῷ γε βάτην ἐς μέσσον ἀγῶνα, 710
 ἀγκὰς δ' ἀλλήλων λαβέτην χερσὶ στιβαρῇσιν
 ὥς ὅτ' ἀμείβοντες, τοὺς τε κλυτὸς ἦραρε τέκτων,
 δώματος ὑψηλοῦ, βίας ἀνέμων Ἀλεείνων.
 τετρίγει δ' ἄρα νῶτα θρασειάων ἀπὸ χειρῶν
 ἐλκόμενα στερεῶς· κατὰ δὲ νότιος ῥέεν ἰδρώς, 715
 πυκναὶ δὲ σμῶδιγγες ἀνὰ πλευράς τε καὶ ὦμους

αἵματι φοινικέσσαι ἀνέδραμον· οἱ δὲ μάλ' αἰεὶ
 νίκης ἰέσθην τρίποδος πέρι ποιητοιο.
 οὔτ' Ὀδυσσεὺς δύνατο σφῆλαι οὔδεις τε πελάσσαι,
 οὔτ' Αἴας δύνατο, κρατερὴ δ' ἔχεν Ἴς Ὀδυσῆος. 720
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἀνιάζον ἐνκνήμιδες Ἀχαιοί,
 δὴ τότε μιν προσέειπε μέγας Τελαμώνιος Αἴας·
 „διογενὲς Λαερτιάδη, πολυμήχαν' Ὀδυσσεῦ,
 ἦ μ' ἀνάειρ' ἦ ἐγὼ σέ· τὰ δ' αὖτε πάντα μελήσει.“

ὣς εἰπὼν ἀνάειρε· δόλου δ' οὐ λήθεται Ὀδυσσεύς· 725
 κόψ' ὀπιθεν κώληπα τυχών, ὑπέλυσε δὲ γυῖα·
 καδ' δ' ἔπεσ' ἐξοπίσω· ἐπὶ δὲ στήθεσσιν Ὀδυσσεὺς
 κάππεσε· λαοὶ δ' αὖτε θηεῖντό τε θάμβησάν τε.
 δεύτερος αὖτ' ἀνάειρε πολύτλας δῖος Ὀδυσσεύς,
 κίνησεν δ' ἄρα τυτθὸν ἀπὸ χθονός, οὐδέ τ' ἄειρεν, 730
 ἐν δὲ γόνυ γνάμψεν· ἐπὶ δὲ χθονὶ κάππεσον ἄμφω
 πλησίοι ἀλλήλοισι, μίανθησαν δὲ κονίη.
 καὶ νύ κε τὸ τρίτον αὐτίς ἀναῖξαντε πάλαιον,
 εἰ μὴ Ἀχιλλεὺς αὐτὸς ἀνίστατο καὶ κατέρυκεν·
 „μηκέτ' ἐρείδεσθον μηδὲ τρίβεσθε κακοῖσιν· 735
 νίκη δ' ἀμφοτέροισιν· ἀέθλια δ' ἴσ' ἀνελόντες
 ἔρχεσθ', ὄφρα καὶ ἄλλοι ἀεθλεύωσιν Ἀχαιοί.“

ὣς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα τοῦ μάλα μὲν κλύον ἠδὲ πίθοντο,
 καὶ ῥ' ἀπομορξαμένω κονίην δύσαντο χιτῶνας.

Πηλεΐδης δ' αἰψ' ἔλλα τίθει ταχυτήτος ἄεθλα, 740
 ἀργύρεον κρητῆρα τετυγμένον· ἔξ δ' ἄρα μέτρα
 χάνδανεν, αὐτὰρ κάλλει ἐνίκα πᾶσαν ἐπ' αἶαν
 πολλόν, ἐπεὶ Σιδόνες πολυδαίδαλοι εὖ ἤσκησαν,
 Φοίνικες δ' ἄγον ἄνδρες ἐπ' ἡεροειδέα πόντον,
 στῆσαν δ' ἐν λιμένεσσι, Θόαντι δὲ δῶρον ἔδωκαν· 745
 υἱὸς δὲ Πριάμοιο Λυκάονος ὦνον ἔδωκεν
 Πατρόκλῳ ἥρωι Ἰησονίδης Εὐνῆος.

καὶ τὸν Ἀχιλλεύς θῆκεν ἀέθλιον οὐκ ἐτάροιο,
 ὅς τις ἐλαφρότατος ποσσὶ κραιπνοῖσι πέλοιτο·
 δευτέρῳ αὖ βοῦν θῆκε μέγαν καὶ πίονα δημῷ, 750
 ἡμιτάλαντον δὲ χρυσοῦ λουσθήι' ἔθηκεν.
 στῆ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·
 „ὄρνυσθ', οἳ καὶ τούτου ἀέθλου πειρήσεσθε.“
 ὥς ἔφατ', ὥρνυτο δ' αὐτίκ' Ὀϊλῆος ταχὺς Αἴας,
 ἄν δ' Ὀδυσσεὺς πολύμητις, ἔπειτα δὲ Νέστορος υἱὸς 755
 Ἀντίλοχος· ὁ γὰρ αὐτε νέους ποσὶ πάντας ἐνίκα.
 στὰν δὲ μεταστοιχί' σήμηνε δὲ τέρματ' Ἀχιλλεύς.
 τοῖσι δ' ἀπὸ νύσσης τέτατο δρόμος· ὦκα δ' ἔπειτα
 ἔκφερ' Ὀϊλιάδης, ἐπὶ δ' ὥρνυτο δῖος Ὀδυσσεὺς
 ἄγχι μάλ', ὥς ὅτε τίς τε γυναικὸς ἐυζώνοιο 760
 στήθεός ἐστι κανῶν, ὅν τ' εὖ μάλα χερσὶ τανύσση
 πηνίον ἐξέλκουσα παρὲκ μίτον, ἀγρόθι δ' ἴσχει
 στήθεος· ὥς Ὀδυσσεὺς θέεν ἐγγύθεν, αὐτὰρ ὀπισθεν
 ἰχνία τύπτε πόδεσσι πάρος κόνιν ἀμφιχυθῆναι·
 καὶ δ' ἄρα οἱ κεφαλῆς χε' ἀντμένα δῖος Ὀδυσσεὺς 765
 αἰεὶ δῖμφα θέων· ἰαχον δ' ἐπὶ πάντες Ἀχαιοὶ
 νίκης ἱεμένῳ, μάλα δὲ σπεύδοντι κέλευον.
 ἀλλ' ὅτε δὴ πύματον τέλεον δρόμον, αὐτίκ' Ὀδυσσεὺς
 εὐχετ' Ἀθηναίῃ γλαυκῶπιδι ὃν κατὰ θυμόν·
 „κλυθι, θεά, ἀγαθή μοι ἐπίρροθος ἐλθὲ ποδοῖν.“ 770
 ὥς ἔφατ' εὐχόμενος, τοῦ δ' ἔκλυε Παλλὰς Ἀθήνη,
 [γυῖα δ' ἔθηκεν ἐλαφρά, πόδας καὶ χεῖρας ὑπερθευ.]
 ἀλλ' ὅτε δὴ τάχ' ἐμελλον ἐπαῖξασθαι ἄεθλον,
 ἐνθ' Αἴας μὲν ὄλισθε θέων, βλάβην γὰρ Ἀθήνη,
 τῇ ῥα βοῶν κέχυτ' ὄνθος ἀποκταμένων ἐριμύκων, 775
 οὓς ἐπὶ Πατρόκλῳ πέφνεν πόδας ὦκὺς Ἀχιλλεύς·
 ἐν δ' ὄνθου βοέου πλητὸ στόμα τε ῥῖνάς τε.
 κρητῆρ' αὐτ' ἀνάειρε πολύτλας δῖος Ὀδυσσεύς,

ὥς ἦλθε φθάμενος· ὁ δὲ βοῦν ἔλε παίδιμος Αἴας.
 στῇ δὲ κέρας μετὰ χερσὶν ἔχων βοὸς ἀγραύλοιο, 780
 θυθον ἀποπτύων, μετὰ δ' Ἀργείοισιν ἔειπεν·

„ὦ πόποι, ἦ μ' ἐβλαψε θεὰ πόδας, ἦ τὸ πάρος περ
 μήτηρ ὥς Ὀδυσῇ παρίσταται ἡδ' ἐπαρήγει.“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἄρα πάντες ἐπ' αὐτῷ ἡδὺν γέλασσαν.
 Ἀντίλοχος δ' ἄρα δὴ λαισθήμιον ἔκφερ' ἄεθλον 785
 μειδιῶν, καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·

„εἰδόσιν ὑμῖν ἔρέω πᾶσιν, φίλοι, ὥς ἔτι καὶ νῦν
 ἀθάνατοι τιμῶσι παλαιότερους ἀνθρώπους.

Αἴας μὲν γὰρ ἐμεῦ ὀλίγον προγενέστερός ἐστιν,
 οὗτος δὲ προτέρης γενεῆς προτέρων τ' ἀνθρώπων· 790
 ὠμογέροντα δέ μιν φασ' ἔμμεναι· ἀργαλέον δὲ
 ποσσὶν ἐριδήσασθαι Ἀχαιοῖς, εἰ μὴ Ἀχιλλεῦ.“

ὥς φάτο, κύδηνεν δὲ ποδώκεα Πηλεΐωνα.
 τὸν δ' Ἀχιλεὺς μύθοισιν ἀμειβόμενος προσέειπεν·

„Ἀντίλοχ', οὐ μὲν τοι μέλεος εἰρήσεται αἶνος, 795
 ἀλλὰ τοι ἡμιτάλαντον ἐγὼ χρυσοῦ ἐπιθήσω.“

ὥς εἰπὼν ἐν χερσὶ τίθει, ὁ δὲ δέξατο χαίρων.

αὐτὰρ Πηλεΐδης κατὰ μὲν δολιχόσκιον ἔγχος
 ᾗθ' ἐς ἀγῶνα φέρων, κατὰ δ' ἀσπίδα καὶ τρυφάλειαν,
 τεύχεα Σαρπηδόντος, ἃ μιν Πάτροκλος ἀπηύρα. 800

στῇ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν·

„ἄνδρε δύω περὶ τῶνδε κελεύομεν, ὦ περ ἀρίστω,
 τεύχεα ἐσσαμένω, ταμεσίχροα χαλκὸν ἐλόντε

ἀλλήλων προπάραιθεν ὁμίλου πειρηθῆναι.

ὁππότερός κε φθῇσιν ὀρεξάμενος χρὸα καλόν, 805
 ψαύσῃ δ' ἐνδίνων διὰ τ' ἔντεα καὶ μέλαν αἶμα,

τῷ μὲν ἐγὼ δώσω τόδε φάσγανον ἀργυρόηλον
 καλὸν Θρηίκιον· τὸ μὲν Ἀστεροπαῖον ἀπηύρων·
 τεύχεα δ' ἀμφοτέρωι ξυνήια ταῦτα φερέσθων·

καί σφιν δαῖτ' ἀγαθὴν παραθήσομεν ἐν κλισίῃσιν. 810
 ✕ ὥς ἔφατ', ὦρτο δ' ἔπειτα μέγας Τελαμώνιος Αἴας,
 ἂν δ' ἄρα Τυδεΐδης ὦρτο κρατερὸς Διομήδης.
 οἱ δ' ἐπεὶ οὖν ἐκάτερθεν ὁμίλου θωρήχθησαν,
 ἔς μέσον ἀμφοτέρω συνίτην μεμαῶτε μάχεσθαι,
 δεινὸν δερκομένω· θάμβος δ' ἔχε πάντας Ἀχαιοὺς. 815
 ἀλλ' ὅτε δὴ σχεδὸν ἦσαν ἐπ' ἀλλήλοισιν ἰόντες,
 τρὶς μὲν ἐπήϊξαν, τρὶς δὲ σχεδὸν ὠρμήθησαν.
 ἐνθ' Αἴας μὲν ἔπειτα κατ' ἀσπίδα πάντοσ' εἴσῃν
 νύξ', οὐδὲ χρό' ἵκανεν· ἔρυντο γὰρ ἐνδοθι θώρηξ·
 Τυδεΐδης δ' ἄρ' ἔπειτα ὑπὲρ σάκεος μεγάλοιο 820
 αἶεν ἐπ' αὐχένι κῦρε φαεινοῦ δουρὸς ἀκωκῇ.
 καὶ τότε δὴ ῥ' Αἴαντι περιδείσαντες Ἀχαιοὶ
 παυσαμένους ἐκέλευσαν ἀέθλια ἴσ' ἀνελέσθαι.
 αὐτὰρ Τυδεΐδῃ δῶκεν μέγα φάσγανον ἥρως
 σὺν κολεῷ τε φέρον καὶ ἐντμήτῳ τελαμῶνι. 825

αὐτὰρ Πηλεΐδης θῆκεν σόλον αὐτοχόωνον,
 δν πρὶν μὲν ῥίπτασκε μέγα σθένος Ἡετίωνος·
 ἀλλ' ἡ τοι τὸν ἔπεφνε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς,
 τὸν δ' ἄγρετ' ἐν νήεσσι σὺν ἄλλοισι κτεάτεσσιν.
 στῇ δ' ὀρθὸς καὶ μῦθον ἐν Ἀργείοισιν ἔειπεν· 830
 „ὄρνυσθ', οἳ καὶ τούτου ἀέθλου πειρήσεσθε.
 εἰ οἱ καὶ μάλα πολλὸν ἀπόπροθι πίονες ἀγροί,
 ἔξει μιν καὶ πέντε περιπλομένους ἐνιαυτοὺς
 χρεώμενος· οὐ μὲν γάρ οἱ ἀτεμβόμενός γε σιδήρου
 ποιμὴν οὐδ' ἀροτὴρ εἶσ' ἐς πόλιν, ἀλλὰ παρέξει.“ 835

ὥς ἔφατ', ὦρτο δ' ἔπειτα μενεπτόλεμος Πολυποίτης,
 ἂν δὲ Λεοντήος κρατερὸν μένος ἀντιθέοιο,
 ἂν δ' Αἴας Τελαμωνιάδης καὶ δῖος Ἐπειός.
 ἐξείης δ' ἴσταντο, σόλον δ' ἔλε δῖος Ἐπειός,
 ἦκε δὲ δινήσας· γέλασαν δ' ἐπὶ πάντες Ἀχαιοί. 840

δεύτερος αὐτ' ἀφέηκε Λεοντεύς ὄξος Ἄρηος,
 τὸ τρίτον αὐτ' ἔρριψε μέγας Τελαμώνιος Αἴας
 χειρὸς ἄπο στιβαρῆς, καὶ ὑπέρβαλε σήματα πάντων.
 ἀλλ' ὅτε δὴ σόλον εἶλε μενεπτόλεμος Πολυποίτης,
 ὅσσον τίς τ' ἔρριψε καλαύροπα βουκόλος ἀνὴρ· 845
 ἡ δέ θ' ἐλίσσομένη πέτεται διὰ βοῦς ἀγελαίας·
 τόσσον παντὸς ἀγῶνος ὑπέρβαλε· τοὶ δὲ βόησαν.
 ἀνστάντες δ' ἔταροι Πολυποίταο κρατεροῖο
 νῆας ἐπὶ γλαφυρὰς ἔφερον βασιλῆος ἄεθλον.

αὐτὰρ ὁ τοξευτῆσι τίθει ἰόεντα σίδηρον, 850
 καδ δ' ἐτίθει δέκα μὲν πελέκεας, δέκα δ' ἡμιπέλεκκα,
 ἰστόν δ' ἔστησεν νηὸς κυανοπρώροιο
 τηλοῦ ἐπὶ ψαμάθοις, ἐκ δὲ τρήρωνα πέλειαν
 λεπτῇ μηρίνθῳ δῆσεν ποδός, ἥς ἄρ' ἀνώγειν
 τοξεύειν· „ὅς μὲν κε βάλλῃ τρήρωνα πέλειαν, 855
 πάντας ἀειράμενος πελέκεας οἰκόνδε φερέσθω·
 ὅς δέ κε μηρίνθιο τύχῃ, ὄρνιθος ἄμαρτῶν,
 ἦσσαν γὰρ δὴ κεῖνος, ὁ δ' οἴσεται ἡμιπέλεκκα.“

ὥς ἔφατ', ὦρτο δ' ἔπειτα βίη Τεύκροιο ἄνακτος,
 ἃν δ' ἄρα Μηριόνης θεράπων εὖς Ἴδομενῆος. 860
 κλήρους δ' ἐν κυνέῃ χαλκήρεϊ πάλλον ἐλόντες,
 Τεῦκρος δὲ πρῶτος κλήρῳ λάχεν. αὐτίκα δ' ἰὼν
 ἦκεν ἐπικρατέως, οὐδ' ἠπειλήσεν ἄνακτι
 ἄρνων πρωτογόνων ῥέξειν κλειτὴν ἐκατόμβην·
 ὄρνιθος μὲν ἄμαρτε· μέγηρε γάρ οἱ τό γ' Ἀπόλλων· 865
 αὐτὰρ ὁ μῆρινθον βάλε παρ πόδα, τῇ δέδεται ὄρνις·
 ἀντικρὺς δ' ἀπὸ μῆρινθον τάμε πικρὸς διστός.
 ἡ μὲν ἔπειτ' ἤιξε πρὸς οὐρανόν, ἡ δὲ παρείθῃ
 μῆρινθος ποτὶ γαῖαν· ἀτὰρ κελάδησαν Ἀχαιοί.
 σπερχόμενος δ' ἄρα Μηριόνης ἐξείρυσσε χειρὸς 870
 τόξον· ἀτὰρ δὴ διστόν ἔχεν πάλαι, ὥς ἴθυνεν.

αὐτίκα δ' ἠπείλησεν ἐκηβόλῳ Ἀπόλλωνι
 ἄρυνων πρωτογόνων ῥέξειν κλειτήν ἐκατόμβην
 ὕψι δ' ὑπὸ νεφέων εἶδε τρήρωνα πέλειαν·
 τῇ ῥ' ὅ γε δινεύουσαν ὑπὸ πτέρυγος βάλε μέσσην, 875
 ἀντικρὺς δὲ διῆλθε βέλος· τὸ μὲν ἄψ ἐπὶ γαίῃ
 πρόσθεν Μηριόναο πάγῃ ποδός· αὐτὰρ ἡ ὄρνις
 Ἰστῷ ἐφεζομένη νηὶς κυανοπρώροιο
 αὐχέν' ἀπεκρέμασεν, σὺν δὲ πτερὰ πυκνὰ λίσσθεν·
 ὦκός δ' ἐκ μελέων θυμὸς πτάτο, τῇλε δ' ἀπ' αὐτοῦ 880
 κάππεσε· λαοὶ δ' αὖ θηεῦντό τε θάμβησάν τε.
 ἂν δ' ἄρα Μηριόνης πελέκεας δέκα πάντας ἄειρεν,
 Τεῦκρος δ' ἡμιπέλεκκα φέρειν κοίλας ἐπὶ νῆας.

αὐτὰρ Πηλεΐδης κατὰ μὲν δολιχόσκιον ἐγχος,
 καδ δὲ λέβητ' ἄπυρον, βοδὸς ἄξιον, ἀνθεμόεντα 885
 θῆκ' ἐς ἀγῶνα φέρων· καὶ ῥ' ἥμιονες ἄνδρες ἀνέστην·
 ἂν μὲν ἄρ' Ἀτρεΐδης εὐρὺν κρείων Ἀγαμέμνων,
 ἂν δ' ἄρα Μηριόνης θεράπων ἐὺς Ἰδομενῆος.
 τοῖσι δὲ καὶ μετέειπε ποδάρεκς δῖος Ἀχιλλεύς·
 „Ἀτρεΐδῃ· ἰδμεν γάρ, ὅσον προβέβηκας ἀπάντων 890
 ἢ δ' ὅσσον δυνάμει τε καὶ ἤμασιν ἐπλεν ἄριστος·
 ἀλλὰ σὺ μὲν τόδ' ἔεθλον ἔχων κοίλας ἐπὶ νῆας
 ἔρχει, ἀτὰρ δόρυ Μηριόνη ἦρωι πόρωμεν,
 εἰ σύ γε σῶ θυμῷ ἐθέλοις· κέλομαι γὰρ ἐγὼ γε.“

ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίσθησεν ἀναξ ἀνδρῶν Ἀγαμέμνων. 895
 δῶκε δὲ Μηριόνη δόρυ χάλκεον· αὐτὰρ ὁ γ' ἦρως
 Ταλθυβίῳ κήρυκε δίδου περικαλλὲς ἔεθλον.

ΙΛΙΑΔΟΣ Ω.

Ἑκτορος λύττρα.

λῦτο δ' ἀγών, λαοὶ δὲ θοὰς ἐπὶ νῆας ἕκαστοι
 ἐσκίδναντ' ἰέναι. τοὶ μὲν δόρποιο μέδοντο
 ὕπνου τε γλυκεροῦ ταρπήμεναι· αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς
 κλαῖε φίλου ἐτάρου μεμνημένος, οὐδέ μιν ὕπνος
 ἦρει πανδαμάτωρ, ἀλλ' ἐστρέφει' ἔνθα καὶ ἔνθα 5
 [Πατρόκλου ποθέων ἀνδροτῆτά τε καὶ μένος ἦν
 ἡδ' ὁπόσα τολύπευσε σὺν αὐτῷ καὶ πάθεν ἄλγεα
 ἀνδρῶν τε πτολέμους ἀλεγεινά τε κύματα πείρων·
 τῶν μιμνησκόμενος θαλερὸν κατὰ δάκρυον εἶβεν,]
 ἄλλοτ' ἐπὶ πλευρὰς κατακείμενος, ἄλλοτε δ' αὖτε 10
 ὕπτιος, ἄλλοτε δὲ προηγής· τοτὲ δ' ὀρθὸς ἀναστὰς
 διενέυεσκ' ἀλύων παρὰ θῖν' ἀλός. οὐδέ μιν ἤως
 φαινομένη λήθεσκεν ὑπεῖρ ἄλα τ' ἡιόνας τε,
 ἀλλ' ὃ γ' ἐπεὶ ξεύξειεν ὕφ' ἄρμασιν ὠκέας ἵππους,
 Ἑκτορα δ' ἔλκεσθαι δησάσκετο δίφρου ὀπισθεν, 15
 τρὶς δ' ἐρύσας περὶ σῆμα Μενoitιιάδαο θανόντος
 αὐτὶς ἐνὶ κλισίῃ παυέσκετο, τὸν δέ τ' ἔασκεν
 ἐν κόνυ ἐκτανύσας προπροηγέα. τοῖο δ' Ἀπόλλων
 πᾶσαν ἀεικείην ἄπεχε χροῖ, φῶτ' ἐλεαίρων
 καὶ τεθνηότα περ· περὶ δ' αἰγίδι πάντα κάλυπτεν 20
 χρυσεῖῃ, ἵνα μὴ μιν ἀποδρύφοι ἑλκυστάζων.

ὣς ὁ μὲν Ἑκτορα δῖον ἀείκιζεν μενεαίνων·
 τὸν δ' ἐλεαίρεσκον μάκαρες θεοὶ εἰσορόωντες,
 κλέψαι δ' ὀτρύνεσκον ἐύσκοπον ἀργεῖφόντην.
 ἔνθ' ἄλλοις μὲν πᾶσιν ἐγνῶδανεν, οὐδέ ποθ' Ἥρη 25
 οὐδὲ Ποσειδάων' οὐδὲ γλαυκῶπιδι κούρῃ,
 ἀλλ' ἔχον, ὥς σφιν πρῶτον ἀπήχθετο Ἴλιος ἱρή

καὶ Πριάμος καὶ λαὸς Ἀλεξάνδρου ἔνεκ' ἔτης,
 [ὃς νείκεσσε θεάς, ὅτε οἱ μέσσανυλον ἵκοντο,
 τὴν δ' ἤνησ', ἣ οἱ πόρε μαχλοσύνην ἀλεγεινήν.] 30
 ἀλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐκ τοῦτο δυωδεκάτῃ γένητ' ἡώς,
 καὶ τότε ἄρ' ἀθανάτοισι μετηύδα Φοῖβος Ἀπόλλων·
 „σχέτλιοί ἐστε, θεοί, δηλήμονες· οὐ νύ ποθ' ὑμῖν
 Ἔκτωρ μῆρι' ἔκῃε βοῶν αἰγῶν τε τελείων;
 τὸν νῦν οὐκ ἔτλητε νέκυν περ ἔοντα σαῶσαι, 35
 ἣ τ' ἀλόχῳ ἰδέειν καὶ μητέρι καὶ τέκεϊ ᾧ
 καὶ πατέρι Πριάμῳ λαοῖσί τε, τοί κέ μιν ὦκα
 ἐν πυρὶ κῆαιεν καὶ ἐπὶ κτέρεα κτερίσαιεν.
 ἀλλ' ὁλοῶ Ἀχιλῆϊ, θεοί, βούλεσθ' ἐπαρήγειν,
 ᾧ οὐτ' ἄρ' φρένες εἰσὶν ἐναίσιμοι οὔτε νόημα 40
 γναμπτόν ἐνὶ στήθεσσι, λέων δ' ὥς ἄγρια οἶδεν,
 ὃς τ' ἐπεὶ ἄρ' μεγάλη τε βίῃ καὶ ἀγῆνορι θυμῷ
 εἴξας εἶσ' ἐπὶ μῆλα βροτῶν, ἵνα δαῖτα λάβῃσιν·
 ὥς Ἀχιλεὺς ἔλεον μὲν ἀπώλεσεν, οὐδέ οἱ αἰδῶς
 [γίγνεται, ἣ τ' ἄνδρας μέγα σίνεταί ἡδ' ὀνίνησιν.] 45
 μέλλει μὲν πού τις καὶ φίλτερον ἄλλον ὀλέσσαι,
 ἢ κασίγνητον ὁμογάστριον ἢ καὶ υἱόν·
 ἀλλ' ἣ τοι κλαύσας καὶ ὀδυράμενος μεθέηκεν·
 τλητὸν γὰρ μοῖραι θυμὸν θέσαν ἀνθρώποισιν.
 αὐτὰρ ὃ γ' Ἔκτορα δῖον, ἐπεὶ φίλον ἦτορ ἀπηύρα, 50
 ἵππων ἐξάπτων περὶ σῆμ' ἐτάροιο φίλοιο
 ἔλκει· οὐ μὲν οἱ τό γε κάλλιον οὐδέ τ' ἄμεινον·
 μὴ ἀγαθῷ περ ἔοντι νεμεσσηθείομεν ἡμεῖς·
 κωφὴν γὰρ δὴ γαῖαν ἀεικίζει μενεαίνων.“

τὸν δὲ χολωσαμένη προσέφη λευκώλενος Ἥρη· 55
 „εἴη κεν καὶ τοῦτο τέδν ἔπος, ἀργυρότοξε,
 εἰ δὴ ὁμῆν Ἀχιλῆϊ καὶ Ἔκτορι θήσετε τιμήν.
 Ἔκτωρ μὲν θνητός τε γυναικᾶ τε θήσατο μαζόν·

αὐτὰρ Ἀχιλλεύς ἐστι θεῆς γόνος, ἣν ἐγὼ αὐτὴ
 θρέψα τε καὶ ἀτίτηλα καὶ ἀνδρὶ πόρον παράκοιτιν 60
 Πηλεί, ὃς περὶ κῆρι φίλος γένετ' ἀθανάτοισιν.
 πάντες δ' ἀντιάσθε, θεοί, γάμου· ἐν δὲ σὺ τοῖσιν
 δαίνυ' ἔχων φόρμιγγα, κακῶν ἔταρ', αἶν' ἄπιστε·“

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη νεφεληγερέτα Ζεὺς·
 „Ἥρη, μὴ δὴ πάμπαν ἀποσκύδμινε θεοῖσιν· 65
 οὐ μὲν γὰρ τιμὴ γε μὴ' ἔσσεται· ἀλλὰ καὶ Ἔκτορ
 φίλτατος ἔσκε θεοῖσι βροτῶν, οὔ ἐν Ἰλίῳ εἰσίν·
 ὥς γὰρ ἐμοί γ', ἐπεὶ οὐ τι φίλων ἡμάρτανε δῶρων.
 οὐ γὰρ μοί ποτε βωμὸς ἐδεύετο δαιτὸς εἰσης,
 λοιβῆς τε κνίσης τε· τὸ γὰρ λάχομεν γέρας ἡμεῖς. 70
 ἀλλ' ἢ τοι κλέψαι μὲν ἔασομεν — οὐδέ πη ἔστιν
 λάθρη Ἀχιλλῆος — θρασὺν Ἔκτορα· ἢ γὰρ οἱ αἰεὶ
 μήτηρ παρμέμβλωκεν ὁμῶς νύκτας τε καὶ ἡμᾶρ.
 ἀλλ' εἴ τις καλέσειε θεῶν Θέτιν ἄσσον ἐμεῖο,
 ὄφρα τί οἱ εἴπω πυκινὸν ἔπος, ὥς κεν Ἀχιλλεύς 75
 δῶρων ἐκ Πριάμοιο λάχῃ ἀπὸ θ' Ἔκτορα λύσῃ·“

ὥς ἔφατ', ὥρτο δὲ Ἴρις ἀελλόπος ἀγγελέονσα,
 μεσσηγὺς δὲ Σάμου τε καὶ Ἴμβρου παιπαλοέσσης
 ἐνθόρε μείλανι πόντῳ· ἐπεστονάχησε δὲ λίμνη.
 ἢ δὲ μολυβδαίνῃ ἱκέλη ἐς βυσσὸν ὄρουσεν, 80
 ἢ τε κατ' ἀγραύλοιο βοῶς κέρας ἐμβεβαυῖα
 ἔρχεται ὠμηστῆσιν ἐπ' ἰχθύσι κῆρα φέρουσα.
 εὖρε δ' ἐνὶ σπῆϊ γλαφυρῷ Θέτιν, ἀμφὶ δέ τ' ἄλλαι
 εἵαθ' ὀμηγερέες ἄλλαι θεαί· ἢ δ' ἐνὶ μέσσης
 κλαῖε μόρον οὗ παιδὸς ἀμύμονος, ὃς οἱ ἔμελλεν 85
 φθίσεσθ' ἐν Τροίῃ ἐριβόλακι, τηλόδι πάτρης.
 ἀρχοῦ δ' ἱσταμένη προσέφη πόδας ὠκεία Ἴρις·
 „ὄρσο, Θέτι· καλέει Ζεὺς ἄφθιτα μῆδεα εἰδώς·
 τὴν δ' ἡμεῖβετ' ἔπειτα θεά, Θέτις ἀργυρόπεζα·

„τίπτε με κείνος ἄνωγε μέγας θεός; αἰδέομαι δὲ 90
 μίσησθ' ἀθανάτοισιν, ἔχω δ' ἄχρ' ἄκριτα θυμῷ.
 εἴμι μὲν, οὐδ' ἄλιον ἔπος ἔσσεται, ὅττι κεν εἴπῃ.“

ὥς ἄρα φωνήσασα κάλυμμ' ἔλε δῖα θεάων
 κύνεον, τοῦ δ' οὗ τι μελάντερον ἐπλετο ἔσθιος.
 βῆ δ' ἰέναι, πρόσθεν δὲ ποδὴννεμος ὤκέα Ἴρις 95
 ἤγεῖτ'. ἀμφὶ δ' ἄρα σφι λιάζετο κῦμα θαλάσσης.
 ἀκτὴν δ' ἐξαναβᾶσαι ἐς οὐρανὸν αἰχμήτην,
 εὖρον δ' εὐρύοπα Κρονίδην, περὶ δ' ἄλλοι ἅπαντες
 εἶαθ' ὁμηγερέες μάκαρες θεοὶ αἰὲν ἐόντες.
 ἦ δ' ἄρα παρ Διὶ πατρὶ καθέζετο, εἶξε δ' Ἀθήνη. 100
 Ἥρη δὲ χρύσειον καλὸν δέπας ἐν χειρὶ θῆκεν
 καὶ ῥ' εὐφρην' ἐπέεσσι· Θέτις δ' ὥρεξε πιοῦσα.
 τοῖσι δὲ μύθων ἦρχε πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε·
 „ἦλυθες Οὐλύμπόνδε, θεὰ Θέτι, κηδομένη περ,
 πένθος ἄλαστον ἔχουσα μετὰ φρεσίν· οἶδα καὶ αὐτός·
 ἀλλὰ καὶ ὥς ἐρέω, τοῦ σ' εἵνεκα δεῦρο κάλεσσα. 106
 ἐννημαρ δὴ νεῖκος ἐν ἀθανάτοισιν ὄρωρεν
 Ἕκτορος ἀμφὶ νέκυι καὶ Ἀχιλλῇ πτολιπόρῳ·
 κλέψαι δ' ὀτρύνουσιν εὐσκοπον ἀργεῖφόντην·
 αὐτὰρ ἐγὼ τόδε κῦδος Ἀχιλλῇ προτιάπτω, 110
 αἰδῶ καὶ φιλότητα τεῆν μετόπισθε φυλάσσων.
 αἶψα μάλ' ἐς στρατὸν ἔλθ' καὶ νίει σφ' ἐπίτειλον·
 σκύζεσθαι οἱ εἶπε θεούς, ἐμὲ δ' ἔξοχα πάντων
 ἀθανάτων κεχολῶσθαι, ὅτι φρεσὶ μαινομένησιν
 Ἕκτορ' ἔχει παρὰ νηυσὶ κορωνίσιν οὐδ' ἀπέλυσεν, 115
 αἶ κέν πως ἐμέ τε δείσῃ ἀπό θ' Ἕκτορα λύσῃ.
 αὐτὰρ ἐγὼ Πριάμῳ μεγαλήτορι Ἴριν ἐφήσω
 λύσασθαι φίλον νῖδ' ἰόντ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν,
 δῶρα δ' Ἀχιλλῇ φερέμεν, τὰ κε θυμὸν ἰήνῃ.“
 ὥς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε θεά, Θέτις ἀργυρόπεζα, 120

βῆ δὲ κατ' Οὐλύμποιο καρήνων ἀΐξασα.

ἶξεν δ' ἐς κλισίην οὗ νῆος· ἐνθ' ἄρα τὸν γε
εὖρ' ἀδινὰ στενάχοντα· φίλοι δ' ἄμφ' αὐτὸν ἑταῖροι
ἑσσυμένως ἐπένοντο καὶ ἐντύνοντ' ἄριστον·

τοῖσι δ' οἷς λάσιος μέγας ἐν κλισίῃ ἴερευτο. 125

ἦ δὲ μάλ' ἄγχ' αὐτοῖο καθέζετο πότνια μήτηρ,
χειρὶ τέ μιν κατέρεξεν, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαζεν·
„τέκνον ἐμόν, τέο μέχρῃς ὀδυρόμενος καὶ ἀχεύων
σὴν ἔδεια κραδίην, μεμνημένος οὔτε τι σίτου

οὔτ' εὐνῆς; ἀγαθὸν δὲ γυναικί περ ἐν φιλότῃτι 130

μίσγεσθ'· οὐ γάρ μοι δηρὸν βέη, ἀλλὰ τοι ἤδη
ἄγχι παρέστηκεν θάνατος καὶ μοῖρα κραταιή.

ἀλλ' ἐμέθεν ξύνες ὦκα, Διὸς δέ τοι ἄγγελός εἰμι.

σκύζεσθαι σοί φησι θεούς, ἐξ δ' ἔξοχα πάντων
ἀθανάτων κεχολῶσθαι, ὅτι φρεσὶ μαινομένησιν 135

Ἔκτορ' ἔχεις παρὰ νηυσὶ κορωνίσιν οὐδ' ἀπέλυσας.

ἀλλ' ἄγε δὴ λῦσον, νεκροῖο δὲ δέξαι ἄποινα.“

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς

„τῇδ' εἶη· ὅς ἄποινα φέροι, καὶ νεκρὸν ἄγοιτο,
εἰ δὴ πρόφρονι θυμῷ Ὀλύμπιος αὐτὸς ἀνώγει.“ 140

ὥς οἷ γ' ἐν νηῶν ἀγύρει μήτηρ τε καὶ νῆος
πολλὰ πρὸς ἀλλήλους ἔπεα πτερόεντ' ἀγόρευον.

Ἴριν δ' ὥτρυνε Κρονίδης εἰς Ἴλιον ἱρήν·

„βάσκ' ἴθι, Ἴρι ταχεῖα· λιποῦς' ἔδος Οὐλύμποιο
ἄγγελιον Πριάμφῳ μεγαλήτορι Ἴλιον εἴσω 145

λύσασθαι φίλον νῆδον ἰόντ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν,
δῶρα δ' Ἀχιλλῇ φερέμεν, τὰ κε θυμὸν ἰήνη,
οἶον, μηδέ τις ἄλλος ἅμα Τρώων ἔτω ἀνὴρ.

κῆρύξ τις οἱ ἔποιτο γεραίτερος, ὅς κ' ἰθύνοι
ἡμιόνους καὶ ἅμαξαν ἐύτροχον, ἥδ' ἐκ αὐτῆς 150
νεκρὸν ἄγοι προτὶ ἄστυ, τὸν ἔκτανε δῖος Ἀχιλλεύς.

[μηδέ τί οἱ θάνατος μελέτω φρεσὶ μηδέ τι τάρβος·
τοῖον γάρ οἱ πομπὸν δαΰσσομεν ἀργεῖφόντην,
ὃς ἄξει, εἰως κεν ἄγων Ἀχιλλῇ πελάσση.
αὐτὰρ ἐπὴν ἀγάγησιν ἔσω κλισίην Ἀχιλλῆος, 155
οὗτ' αὐτὸς κτενέει ἀπὸ τ' ἄλλους πάντας ἐρύξει·
οὕτε γάρ ἐστ' ἄφρων οὗτ' ἄσκοπος οὗτ' ἀλιτήμων.
ἀλλὰ μάλ' ἐνδυκέως ἰκέτεω πεφιδήσεται ἀνδρός.]“

ὣς ἔφατ', ὥρτο δὲ Ἴρις ἀελλόπος ἀγγελέουσα.
ἔξεν δ' ἐς Πριάμοιο, κίχεν δ' ἐνοπήν τε γόον τε· 160
παῖδες μὲν πατέρ' ἀμφὶ καθήμενοι ἐνδοθεν αὐλῆς
δάκρυσιν εἵματ' ἔφυρον, ὃ δ' ἐν μέσσοισι γεραιὸς
ἐντυπὰς ἐν χλαίνῃ κεκαλυμμένος· ἀμφὶ δὲ πολλῇ
κόπρος ἔην κεφαλῇ τε καὶ αὐχένι τοιοῦτον γέροντος,
τὴν ῥα κυλινδόμενος καταμήσατο χερσὶν ἑῇσιν. 165
θυγατέρες δ' ἀνὰ δώματ' ἰδὲ νυοὶ ὠδύροντο,
τῶν μιννησκόμεναι, οἳ δὴ πολέες τε καὶ ἐσθλοὶ
χερσὶν ὑπ' Ἀργείων κέατο ψυχὰς ὀλέσαντες.
στῇ δὲ παρὰ Πρίαμον Διὸς ἄγγελος, ἥδὲ προσηύδα
τυτθὸν φθεγξαμένη· τὸν δὲ τρόμος ἔλλαβε γυῖα· 170
„θάρσει, Δαρδανίδη Πρίαμε, φρεσί, μηδέ τι τάρβει·
οὐ μὲν γάρ τοι ἐγὼ κακὸν ὀσσομένη τόδ' ἰκάνω,
ἀλλ' ἀγαθὰ φρονέουσα· Διὸς δέ τοι ἄγγελός εἰμι,
ὃς σευ ἀνευθεν ἐὼν μέγα κήδεται ἥδ' ἐλεαίρει.
λύσασθαι σ' ἐκέλευσεν Ὀλύμπιος Ἑκτορα δῖον, 175
δῶρα δ' Ἀχιλλῇ φερέμεν, τὰ κε θυμὸν ἰήνη,
οἶον, μηδέ τις ἄλλος ἅμα Τρώων ἔτω ἀνὴρ.
κῆρυξ τίς τοι ἐποιτο γεραίτερος, ὃς κ' ἰθύνοι
ἡμιόνους καὶ ἅμαξαν ἐύτροχον, ἥδὲ καὶ αὐτίς
νεκρὸν ἄγοι προτὶ ἄστυ, τὸν ἔκτανε δῖος Ἀχιλλεύς. 180
[μηδέ τί τοι θάνατος μελέτω φρεσὶ μηδέ τι τάρβος·
τοῖος γάρ τοι πομπὸς ἅμ' ἔψεται ἀργεῖφόντης,

ὅς σ' ἄξει, εἵως κεν ἤγων Ἀχιλλῆι πελάσση.
 αὐτὰρ ἐπὴν ἀγάγησιν ἔσω κλισίην Ἀχιλλῆος,
 οὔτ' αὐτὸς κτενέει ἀπὸ τ' ἄλλους πάντας ἐρύξει· 185
 οὔτε γάρ ἐστ' ἄφρων οὔτ' ἄσκοπος οὔτ' ἀλιτήμων.
 ἀλλὰ μάλ' ἐνδυκέως ἰκέτεω πεφιδήσεται ἀνδρός.]“

ἡ μὲν ἄρ' ὥς εἰποῦσ' ἀπέβη πόδας ὠκέα Ἴρις,
 αὐτὰρ ὃ γ' υἷας ἄμαξαν ἐντροχον ἡμιονεῖην
 ὀπλίσαι ἠνώγει, πείρινθα δὲ δῆσαι ἐπ' αὐτῆς. 190
 αὐτὸς δ' ἐς θάλαμον κατεβήσето κηώεντα
 κέδρινον ὑψόροφον, ὃς γλήνεα πολλὰ κεχάνδειν.
 ἐς δ' ἄλοχον Ἐκάβην ἐκαλέσσατο φώνησέν τε·
 „δαιμονίη, Διόθεν μοι Ὀλύμπιος ἄγγελος ἦλθεν
 λίσσασθαι φίλον υἱὸν ἰόντ' ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν, 195
 δῶρα δ' Ἀχιλλῆι φερέμεν, τὰ κε θυμὸν ἰήνῃ.
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπέ, τί τοι φρεσὶν εἶδεται εἶναι;
 αἰνῶς γάρ μ' αὐτόν γε μένος καὶ θυμὸς ἄνωγεν
 κεῖσ' ἰέναι ἐπὶ νῆας ἔσω στρατὸν εὐρὺν Ἀχαιῶν.“

ὥς φάτο, κῶκυσεν δὲ γυνὴ καὶ ἀμείβετο μύθῳ· 200
 „ὦ μοι, πῇ δὴ τοι φρένες οἴχονθ', ἧς τὸ πάρος περ
 ἔκλε' ἐπ' ἀνθρώπους ξείνους ἠδ' οἷσιν ἀνάσσεις;
 πῶς ἐθέλεις ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν ἐλθέμεν οἶος,
 ἀνδρὸς ἐς ὀφθαλμούς, ὃς τοι πολέας τε καὶ ἐσθλοὺς 205
 υἷας ἐξενάριξες; σιδήρειόν νύ τοι ἦτορ.
 εἰ γάρ σ' αἰρήσει καὶ ἐσόψεται ὀφθαλμοῖσιν
 ὤμηστης καὶ ἄπιστος ἀνὴρ ὃ γε, οὗ σ' ἐλεήσει
 οὔδέ τί σ' αἰδέσεται. νῦν δὲ κλαίωμεν ἄνευθεν
 ἤμενοι ἐν μεγάρῳ· τῷ δ' ὥς ποθι μοῖρα κραταιῇ 210
 γεινομένῳ ἐπένησε λίνῳ, ὅτε μιν τέκον αὐτῇ,
 ἀργίποδας κύνας ἄσαι, ἔων ἀπάνευθε τοκῆων,
 ἀνδρὶ πάρα κρατερῷ, τοῦ ἐγὼ μέσον ἦπαρ ἔχοιμι
 ἐσθέμεναι προσφῦσα· τότε ἄντιτα ἔργα γένοιτο

παιδὸς ἐμοῦ· ἐπεὶ οὐ ἐ κακίζόμενόν γε κατέκτα,
 ἀλλὰ πρὸ Τρώων καὶ Τρωιάδων βᾶθυκόλπων 215
 ἐστεῶτ', οὔτε φόβον μεμνημένον οὐτ' ἄλεωρῆς.“

τὴν δ' αὖτε προσέειπε γέρον Πρίαμος θεοειδῆς·
 „μὴ μ' ἐθέλοντ' ἰέναι κατερύκανε, μηδὲ μοι αὐτῇ
 ὄρνις ἐνὶ μεγάροισι κακὸς πέλεν· οὐδέ με πείσεις.
 εἰ μὲν γάρ τίς μ' ἄλλος ἐπιχθονίων ἐκέλευεν, 220
 ἢ οἱ μάντιές εἰσι θυοσκόοι ἢ ἱερεῖς,
 ψευδὸς κεν φαίμεν καὶ νοσφιζοίμεθα μᾶλλον·
 νῦν δ' αὐτὸς γὰρ ἄκουσα θεοῦ καὶ ἐσέδρακον ἄντην,
 εἴμι, καὶ οὐχ ἄλιον ἔπος ἔσσεται. εἰ δέ μοι αἴσα
 τεθνᾶμεναι παρὰ νηυσὶν Ἀχαιῶν χαλκοχιτώνων, 225
 βούλομαι· αὐτίκα γὰρ με κατακτείνειεν Ἀχιλλεύς
 ἀγκὰς ἐλόντ' ἐμὸν υἱόν, ἐπὴν γόου ἐξ ἔρον εἴην.“

ἢ καὶ φωριαμῶν ἐπιθήματα κάλ' ἀνέωγεν·
 ἔνθεν δώδεκα μὲν περικαλλέας ἐξελε πέπλους,
 δώδεκα δ' ἀπλοῖδας χλαίνας, τόσσους δὲ τάπητας, 230
 τόσσα δὲ φάρεα καλά, τόσους δ' ἐπὶ τοῖσι χιτῶνας,
 [χρυσοῦ δὲ στήσας ἔφερεν δέκα πάντα τάλαντα,]
 ἐκ δὲ δύ' αἰθωνας τρίποδας, πίσυρας δὲ λέβητας,
 ἐκ δὲ δέπας περικαλλές, ὃ οἱ Θρηῆκες πόρον ἄνδρες
 ἐξεσίην ἐλθόντι, μέγα κτέρας· οὐδέ νυ τοῦ περ 235
 φείσαςτ' ἐνὶ μεγάροισι ὁ γέρον, περὶ δ' ἤθελε θυμῷ
 λύσασθαι φίλον υἱόν. ὁ δὲ Τρῶας μὲν ἅπαντας
 αἰθούσης ἀπέεργεν ἔπεσσ' αἰσχροῖσιν ἐνίσσων·
 „ἔρρετε, λωβητῆρες ἐλεγχείες· οὐ νυ καὶ ὑμῖν
 οἴκοι ἔνεστι γόος, ὅτι μ' ἤλθετε κηδήσοντας; 240
 ἢ ὀνόσασθ', ὅτι μοι Κρονίδης Ζεὺς ἄλγε' ἔδωκεν,
 παῖδ' ὀλέσαι τὸν ἄριστον; ἀτὰρ γνώσεσθε καὶ ὕμμες·
 ῥήγιοι γὰρ μᾶλλον Ἀχαιοῖσιν δὴ ἔσεσθε
 κείνου τεθνηῶτος ἐναιρέμεν. αὐτὰρ ἐγὼ γε,

πρὶν ἀλαπαζομένην τε πόλιν κεραϊζομένην τε 245
ὀφθαλμοῖσιν ἰδεῖν, βαίην δόμον Ἄιδος εἴσω.“

ἧ καὶ σκηπανίῳ δίσπ' ἀνέρας· οἱ δ' ἴσαν ἕξω
σπερχομένοιο γέροντος. ὁ δ' νιάσιν οἷσιν ὁμόκλα,
νεικείων Ἑλενὸν τε Πάριον τ' Ἀγάθωνά τε δῖον
Πάμμονά τ' Ἀντίφονόν τε βοὴν ἀγαθὸν τε Πολίτην 250
Δηϊφροβὸν τε καὶ Ἰππόθοον καὶ Δίον ἀγανόν·
ἐννέα τοῖς ὁ γεραιὸς ὁμοκλήσας ἐκέλευεν·

„σπεύσατέ μοι, κακὰ τέκνα, κατηφόνες· αἰθ' ἅμα πάντες
Ἑκτορος ὠφέλετ' ἀντὶ θοῆς ἐπὶ νηυσὶ πεφάσθαι.

ὦ μοι ἐγὼ πανάποτμος, ἐπεὶ τέκον νῆας ἀρίστους 255
Τροίῃ ἐν εὐρείῃ, τῶν δ' οὐ τινὰ φημι λελεῖσθαι,
Μήστορά τ' ἀντίθεον καὶ Τρωῖλον ἱπποχάρμην
Ἑκτορά θ', ὃς θεὸς ἔσκε μετ' ἀνδράσιν, οὐδὲ ἐφάνειν
ἀνδρός γε θνητοῦ πάϊς ἔμμεναι, ἀλλὰ θεοῖο·

τοὺς μὲν ἀπώλεσ' Ἄρης, τὰ δ' ἐλέγχεα πάντα λέλειπται,
ψεῦσταί τ' ὀρχησταί τε, χοροῖτυπλήσιν ἄριστοι, 261
ἀρνῶν ἢδ' ἐρίφων ἐπιδήμιοι ἀρπακτῆρες.

οὐκ ἂν δὴ μοι ἅμαξαν ἐφοπλίσσαιτε τάχιστα,
ταῦτά τε πάντ' ἐπιδεῖτε, ἵνα πρήσσωμεν ὁδοῖο;“

ὥς ἔφαθ', οἱ δ' ἅρα πατρὸς ὑποδείσαντες ὁμοκλήν 265
ἐκ μὲν ἅμαξαν ἄειραν ἐύτροχον ἡμιονεῖην
καλὴν πρωτοπαγῇ, πείρινθα δὲ δῆσαν ἐπ' αὐτῆς,
καδ δ' ἀπὸ πασσαλόφει ζυγὸν ἤρεον ἡμιόνειον,
πύξινον ὁμφαλόεν, ἐν οἰήκεσσιν ἀρηγρός,
ἐκ δ' ἔφερον ζυγόδεσμον ἅμα ζυγῷ ἐννεάπηχυν. 270

καὶ τὸ μὲν εὖ κατέδηκαν ἐυξέστῳ ἐπὶ θυμῷ,
πέξῃ ἐπὶ πρώτῃ, ἐπὶ δὲ κρίκον ἔστορι βάλλον,
τρὶς δ' ἐκάτερθεν ἔδησαν ἐπ' ὁμφαλόν, αὐτὰρ ἔπειτα
ἐξείης κατέδησαν, ὑπὸ γλῶχίνα δ' ἔκαμψαν.
ἐκ θαλάμου δὲ φέροντες ἐυξέστης ἐπ' ἀπήνης 275

νῆεον Ἐκτορέης κεφαλῆς ἀπερείσι' ἄποινα,
 ξεῦξαν δ' ἡμιόνους κρατερώνυχας ἐντεσιεργούς,
 τοὺς ῥά ποτε Πριάμφ Μυσοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα.
 ἵππους δὲ Πριάμφ ὑπαγον ζυγόν, οὓς ὁ γεραῖος
 αὐτὸς ἔχων ἀτίταλλεν ἐυξέστη ἐπὶ φάτνῃ. 280

τῷ μὲν ζευγνύσθην ἐν δώμασιν ὑψηλοῖσιν
 κῆρυξ καὶ Πρίαμος, πνικινὰ φρεσὶ μῆδε' ἔχοντες·
 ἀγχίμολον δέ σφ' ἦλθ' Ἐκάβη τετιηότι θυμῷ
 οἶνον ἔχουσ' ἐν χειρὶ μελίφρονα δεξιτερῇφιν
 χρυσέῳ ἐν δέπαϊ, ὄφρα λείψαντε κιοίτην. 285
 στῆ δ' ἵππων προπάροιθεν, ἔπος τ' ἔφατ' ἔκ τ' ὀνόμαζεν·
 „τῇ, σπεῖσον Διὶ πατρί, καὶ εὖχεο οἴκαδ' ἰκέσθαι
 ἄψ ἐκ δυσμενέων ἀνδρῶν, ἐπεὶ ἄρ σέ γε θυμὸς
 ὀτρύνει ἐπὶ νῆας, ἐμεῖο μὲν οὐκ ἐθέλουσῃς.

ἀλλ' εὖχευ σύ γ' ἔπειτα κελαινεφεί Κρονίωνι 290
 Ἰδαίῳ, ὅς τε Τροίην κατὰ πᾶσαν ὀράται,
 αἵτει δ' οἰωνόν, ταχὺν ἄγγελον, ὅς τέ οἱ αὐτῷ
 φίλτατος οἰωνῶν καὶ εὖ κράτος ἐστὶ μέγιστον,
 δεξιόν, ὄφρα μιν αὐτὸς ἐν ὀφθαλμοῖσι νοήσας
 τῷ πίσυνος ἐπὶ νῆας ἴης Δαναῶν ταχυπῶλων. 295
 εἰ δέ τοι οὐ δώσει ἐδν ἄγγελον εὐρύοπα Ζεὺς,
 οὐκ ἂν ἐγὼ γέ σ' ἔπειτα ἐποτρύνουσα κελοίμην
 νῆας ἐπ' Ἀργείων ἰέναι, μάλα περ μεμαῶτα.“

τὴν δ' ἀπαμειβόμενος προσέφη Πρίαμος θεοειδής·
 „ὦ γύναι, οὐ μὲν τοι τόδ' ἐφριεμένη ἀπιδήσω· 300
 ἐσθλὸν γὰρ Διὶ χεῖρας ἀνασχέμεν, αἶ κ' ἐλέησῃ.“

ἥ ῥα καὶ ἀμφίπολον ταμῖν ὦτρυν' ὁ γεραῖος
 χερσὶν ὕδωρ ἐπιχεῦαι ἀκήρατον· ἥ δὲ παρέστη
 χέρνιβον ἀμφίπολος πρόχοόν θ' ἅμα χερσὶν ἔχουσα.
 νιψάμενος δὲ κύπελλον ἐδέξατο ἥς ἀλόχοιο· 305
 εὖχετ' ἔπειτα σταῖς μέσῳ ἔρκει, λείβε δὲ οἶνον

οὐρανὸν εἰσανιδῶν, καὶ φωνήσας ἔπος ἤῤα·
 „Ζεῦ πάτερ, Ἴδηθεν μεδέων, κύδιστε μέγιστε,
 δός μ' ἐς Ἀχιλλῆος φίλον ἐλθεῖν ἥδ' ἐλεεινόν,
 πέμψον δ' οἶωνόν, ταχὺν ἄγγελον, ὅς τε σοὶ αὐτῷ 810
 φίλτατος οἶωνών καὶ εὐκράτος ἐστὶ μέγιστον,
 δεξιόν, ὅφρα μιν αὐτὸς ἐν ὀφθαλμοῖσι νοήσας
 τῷ πύσυνος ἐπὶ νῆας ἰὼ Δαναῶν ταχυπώλων.“

ὣς ἔφατ' εὐχόμενος, τοῦ δ' ἔκλυε μητιέτα Ζεύς.
 αὐτίκα δ' αἰετὸν ἦκε, τελειότατον πετεηνῶν, 815
 μόρφονον θηρητῆρ', ὃν καὶ περκνὸν καλέουσιν.
 ὅσση δ' ὑπορόφοιο θύρη θαλάμοιο τέτυκται
 ἀνέρος ἀφνειοῦ, ἐν κληῖσ' ἀραρυῖα,
 τόσση ἄρα τοῦ ἐκάτερθεν ἔσαν πτερά· εἷσατο δέ σφιν
 δεξιὸς ἀΐξας ὑπὲρ ἄστεος. οἱ δὲ ἰδόντες 820
 γήθησαν, καὶ πᾶσιν ἐνὶ φρεσὶ θυμὸς ἰάνθη.
 σπερχόμενος δ' ὁ γέρων ξεστοῦ ἐπεβήσετο δίφρου,
 ἐκ δ' ἔλασε προθύροιο καὶ αἰθούσης ἐριδούπου.
 πρόσθε μὲν ἡμίονοι ἔλκον τετράκυκλον ἀπήνην,
 τὰς Ἰδαίος ἔλαυνε θαΐφρων, αὐτὰρ ὀπισθεν 825
 Ἰπποῖ, τοὺς ὁ γέρων ἐφέπων μάστιγι κέλευεν
 καρπαλίμως κατὰ ἄστν· φίλοι δ' ἅμα πάντες ἔποντο
 πόλλ' ὀλοφυρόμενοι ὥς εἰ θανατόνδε κίοντα.
 οἱ δ' ἐπεὶ οὖν πόλιος κατέβαν, πεδίον δ' ἀφίκοντο,
 οἱ μὲν ἄρ' ἄφορροι προτὶ Ἴλιον ἀπονέοντο, 830
 παῖδες καὶ γαμβροί, τῷ δ' οὐ λάθον εὐρύοπα Ζῆν
 ἐς πεδίον προφανέντε· ἰδὼν δ' ἐλέησε γέροντα.
 αἴψα δ' ἄρ' Ἑρμείαν νῖδον φίλον ἀντίον ἤῤα·
 „Ἑρμεία, σοὶ γάρ τε μάλιστά γε φίλτατόν ἐστιν
 ἀνδρὶ ἑταιρίσσαι, καὶ τ' ἔκλυες, ᾧ κ' ἐθέλῃσθα· 835
 βάσκ' ἴθι, καὶ Πριάμον κοίλας ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν
 ὥς ἄγαγ', ὥς μῆτ' ἄρ τις ἴδη μῆτ' ἄρ τε νοήσῃ

τῶν ἄλλων Δαναῶν πρὶν Πηλεϊωνάδ' ἰκέσθαι.“

ὣς ἔφατ', οὐδ' ἀπίθῃσε διάκτορος ἀργεῖφροντης·
 αὐτίκ' ἐπειθ' ὑπὸ ποσσὶν ἐδήσατο καλὰ πέδιλα 340
 ἀμβρόσια χρύσεια, τὰ μιν φέρον ἡμὲν ἐφ' ὑγρῇν
 ἡδ' ἐπ' ἀπείρονα γαῖαν ἅμα πνοιῆς ἀνέμοιο·
 εἴλετο δὲ ῥάβδον, τῇ τ' ἀνδρῶν ὄμματα θέλλγει,
 ὧν ἐθέλει, τοὺς δ' αὖτε καὶ ὑπνώοντας ἐγείρει·
 τὴν μετὰ χερσὶν ἔχων πέτετο κρατὺς ἀργεῖφροντης. 345
 αἶψα δ' ἄρα Τροίην τε καὶ Ἑλλήσποντον ἵκανεν,
 βῆ δ' ἰέναι κούρω αἰσυμνητῇρι ἰοικώς,
 πρῶτον ὑπηνήτη, τοῦ περ χαριεστάτη ἦβη.

οἱ δ' ἐπεὶ οὖν μέγα σῆμα παρῆξ Ἴλοιο ἔλασσαν,
 στῆσαν ἄρ' ἡμιόνους τε καὶ ἵππους, ὄφρα πίοιεν, 350
 ἐν ποταμῷ· δὴ γάρ καὶ ἐπὶ κνέφας ἤλυθε γαῖαν.
 τὸν δ' ἐξ ἀγχιμόλοιο ἰδὼν ἐφράσσατο κῆρυξ
 Ἑρμείαν, ποτὶ δὲ Πριάμον φάτο φώνησέν τε·
 „φράξο, Δαρδανίδη· φραδέος νόου ἔργα τέτυκται.
 ἄνδρ' ὁρώω, τάχα δ' ἄμμε διαρραϊσέσθαι ὀίω. 355
 ἀλλ' ἄγε δὴ φεύγωμεν ἐφ' ἵππων, ἣ μιν ἔπειτα
 γούνων ἀψάμενοι λιτανεύσομεν, αἶ κ' ἐλέησῃ.“

ὣς φάτο, σὺν δὲ γέροντι νόος χύτο, δειδίε δ' αἰνῶς,
 ὀρθαὶ δὲ τρίχες ἔσταν ἐνὶ γναμπτοῖσι μέλεσσιν,
 στῇ δὲ ταφῶν. αὐτὸς δ' ἐριούνιος ἐγγύθεν ἐλθὼν, 360
 χεῖρα γέροντος ἐλὼν ἐξείρετο καὶ προσέειπεν·
 „πῆ, πάτερ, ᾧδ' ἵππους τε καὶ ἡμιόνους ἰθύνεις
 νύκτα δι' ἀμβροσίην, ὅτε θ' εὐδουσι βροτοὶ ἄλλοι;
 οὐδὲ σύ γ' ἐδειςας μένεα πνείοντας Ἀχαιοὺς,
 οἳ τοι δυσμενέες καὶ ἀνάρσιοι ἐγγυὺς ἔασιν; 365
 τῶν εἰ τίς σε ἰδοίτο θοῇν διὰ νύκτα μέλαιναν
 τοσσάδ' ὀνειάτ' ἄγοντα, τίς ἂν δῆ τοι νόος εἴη;
 οὗτ' αὐτὸς νέος ἐσσί· γέρων δέ τοι οὗτος ὀπηδεῖ,

ἄνδρ' ἀπαμύνασθαι, ὅτε τις πρότερος χαλεπήνῃ.
 ἀλλ' ἐγὼ οὐδέεν σε ῥέξω κακά, καὶ δέ κεν ἄλλον 370
 σεῦ ἀπαλεξήσαιομι· φίλῳ δέ σε πατρὶ ἐίσκω.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα γέρον Πριάμος θεοειδής·
 „οὕτω πῃ τάδε γ' ἐστί, φίλον τέκος, ὥς ἀγορεύεις.
 ἀλλ' ἔτι τις καὶ ἐμεῖο θεῶν ὑπερέσχευθε χεῖρα,
 ὅς μοι τοιόνδ' ἦκεν ὁδοιπόρον ἀντιβολῆσαι, 375
 αἷσιον, οἶος δὴ σὺ δέμας καὶ εἶδος ἀγητός,
 πέπνυσαι τε νόφ, μακάρων δ' ἔξεσσι τοκήων.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε διάκτορος ἀργειφόντης·
 „ναὶ δὴ ταῦτά γε πάντα, γέρον, κατὰ μοῖραν ἔειπες.
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ καὶ ἀτρεκέως κατάλεξον, 380
 ἥε πῃ ἐκπέμπεις κειμήλια πολλὰ καὶ ἐσθλὰ
 ἥνδρας ἐς ἄλλοδαπούς, ἵνα περ τάδε τοι σόα μίμνη,
 ἣ ἦδη πάντες καταλείπετε Ἴλιον ἱρὴν
 δειδιότες· τοῖος γὰρ ἀνὴρ ᾧριστος ὄλωλεν,
 σὸς παῖς· οὐ μὲν γάρ τι μάχης ἐπεδευέτ' Ἀχαιῶν.“ 385

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα γέρον Πριάμος θεοειδής·
 „τίς δὲ σὺ ἐσσι, φέριστε, τέων δ' ἔξεσσι τοκήων;
 ὥς μοι καλὰ τὸν οἶτον ἀπότμου παιδὸς ἐνίσπες.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε διάκτορος ἀργειφόντης·
 „πειρᾷ ἐμεῖο, γεραιέ, καὶ εἰρεαι Ἔκτορα δῖον· 390
 τὸν μὲν ἐγὼ μάλα πολλὰ μάχῃ ἐνὶ κυδιανείρῃ
 ὀφθαλμοῖσιν ὅπωπα, καὶ εὖτ' ἐπὶ νηυσὶν ἐλάσσας
 Ἀργεῖους κτείνεσκε δαΐζων ὀξεί χαλκῷ,
 ἡμεῖς δ' ἐσταότες θαυμάζομεν· οὐ γὰρ Ἀχιλλεὺς
 εἶα μάρνασθαι, κεχολωμένους Ἀτρεΐωνι· 395

τοῦ γὰρ ἐγὼ θεράπων, μῖα δ' ἦγαγε νηὺς ἐνεργής·
 Μυρμιδόνων δ' ἔξιμι, πατήρ δέ μοι ἐστί Πολύκτωρ.
 ἀφνειὸς μὲν ὃ γ' ἐστί, γέρον δὲ δὴ ὥς σὺ περ ᾧδε,
 ἔξ δέ οἱ νῆες ἔασιν, ἐγὼ δέ οἱ ἔβδομός εἰμι·

τῶν μέτα παλλόμενος κλήρω λάχον ἐνθάδ' ἔπεσθαι. 400
 νῦν δ' ἦλθον πεδίουδ' ἀπὸ νηῶν· ἦῶθεν γὰρ
 θήσονται περὶ ἄστυ μάχην ἐλίκωπες Ἀχαιοί.
 ἀσχαλόωσι γὰρ οἷδε καθήμενοι, οὐδὲ δύνανται
 ἴσχειν ἐσσυμένους πολέμου βασιλῆες Ἀχαιῶν.“

τὸν δ' ἡμείβετ' ἔπειτα γέρον Πρίαμος θεοειδής· 405
 „εἰ μὲν δὴ θεράπων Πηληιάδεω Ἀχιλλῆος
 εἷς, ἄγε δὴ μοι πᾶσαν ἀληθείην κατὰλεξον,
 ἦ ἔτι πὰρ νήεσσιν ἐμὸς πάις, ἦε μιν ἦδη
 ἦσι κυσὶν μελεῖσσι ταμῶν προύθηκεν Ἀχιλλεύς.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε διάκτορος ἀργεῖφόντης· 410
 „ὦ γέρον, οὗ πω τόν γε κύνες φάγον οὐδ' οἴωνοί,
 ἀλλ' ἔτι κελνός κεῖται Ἀχιλλῆος παρὰ νηὶ
 αὐτῶς ἐν κλισίῃσι· δυωδεκάτῃ δέ οἱ ἦώς
 κειμένῳ, οὐδέ τί οἱ χρῶς σήπεται, οὐδέ μιν εὐλαὶ
 ἔσθουσ', αἷ ῥά τε φῶτας ἀρηιφάτους κατέδουσιν. 415
 ἦ μὲν μιν περὶ σῆμα ἑοῦ ἐτάροιο φίλοιο
 ἔλκει ἀκηδέστως, ἦώς ὅτε δῖα φανήῃ,
 οὐδέ μιν αἰσχύνει· θηοτό κεν αὐτὸς ἐπελθὼν,
 οἶον ἐερσήμενός κεῖται, περὶ δ' αἶμα νένιπται,
 οὐδέ ποθι μιαρός· σὺν δ' ἔλκεα πάντα μέμυκεν, 420
 ὅσσ' ἐτύπη· πολέες γὰρ ἐν αὐτῷ χαλκὸν ἔλασσαν.
 ὥς τοι κήδονται μάκαρες θεοὶ νῆος ἑῆος
 καὶ νέκυός περ ἐόντος, ἐπεὶ σφι φίλος περὶ κῆρι.“

ὥς φάτο, γήθησεν δ' ὁ γέρον καὶ ἀμείβετο μύθῳ·
 „ὦ τέκος, ἦ ῥ' ἀγαθὸν καὶ ἐναίσιμα δῶρα διδοῦναι 425
 ἀθανάτοις, ἐπεὶ οὐ ποτ' ἐμὸς πάις, εἴ ποτ' ἔην γε,
 λήθεται ἐνὶ μεγάροισι θεῶν, οἳ Ὀλυμπον ἔχουσιν·
 τῷ οἱ ἀπεμνήσαντο καὶ ἐν θανάτοιο περ αἶσῃ.
 ἀλλ' ἄγε δὴ τόδε δέξαι ἐμεῦ πάρα καλὸν ἄλειςον,
 αὐτόν τε ῥῦσαι, πέμψον δέ με σὺν γε θεοῖσιν, 430

ὄφρα κεν ἐς κλισίην Πηληιάδεω ἀφίκωμαι.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε διάκτορος ἀργεῖφόντης·
 „πειρᾷ ἐμεῖο, γεραιέ, νεωτέρου, οὐδέ με πείσεις,
 ὅς με κέλεαι σέο δῶρα παρὲξ Ἀχιλλῆα δέχεσθαι.
 τὸν μὲν ἐγὼ δεῖδοικα καὶ αἰδέομαι περὶ κῆρι 435
 συλεύειν, μὴ μοί τι κακὸν μετόπισθε γένηται.
 σοὶ δ' ἂν ἐγὼ πομπὸς καὶ κε κλυτὸν Ἄργος ἰκοίμην,
 ἐνδυκέως ἐν νηὶ θοῇ ἢ πεζὸς ὁμαρτέων·
 οὐκ ἂν τίς τοι πομπὸν ὀνοσδάμενος μαχέσαιο.“

ἦ καὶ ἀναΐξας ἐριούνιος ἄρμα καὶ ἵππους 440
 καρπαλίμως μάστιγα καὶ ἡνία λάξετο χερσίν,
 ἐν δ' ἔπνευσ' ἵπποισι καὶ ἡμιόνοις μένος ἦϋ.
 ἀλλ' ὅτε δὴ πύργους τε νεῶν καὶ τάφρον ἵκοντο,
 οἱ δὲ νέον περὶ δόρπα φυλακτῆρες πονέοντο·
 τοῖσι δ' ἐφ' ὕπνον ἔχευε διάκτορος ἀργεῖφόντης 445
 πᾶσιν, ἄφαρ δ' ὦϊξε πύλας καὶ ἀπῶσεν ὀχῆας,
 ἐς δ' ἄγαγε Πριάμόν τε καὶ ἀγλαὰ δῶρ' ἐπ' ἀπήνης.
 ἀλλ' ὅτε δὴ κλισίην Πηληιάδεω ἀφίκοντο
 ὑψηλήν, τὴν Μυρμιδόνες ποίησαν ἄνακτι
 δοῦρ' ἐλάτης κέρσαντες· ἀτὰρ καθύπερθεν ἔρεψαν 450
 λαχνήεντ' ὄροφον λειμωνόθεν ἀμήσαντες·
 ἀμφὶ δέ οἱ μεγάλην αὐλήν ποίησαν ἄνακτι
 σταυροῖσιν πυκνοῖσι· θύρην δ' ἔχε μῦθος ἐπιβλήs
 εἰλάτινος, τὸν τρεῖς μὲν ἐπιρρήσσεσκον Ἀχαιοί,
 τρεῖς δ' ἀναοίγεσκον μεγάλην κληῖδα θυράων, 455
 τῶν ἄλλων· Ἀχιλεὺς δ' ἄρ' ἐπιρρήσσεσκε καὶ οἶος·
 δὴ ῥα τόθ' Ἑρμείας ἐριούνιος ᾤξε γέροντι,
 ἐς δ' ἄγαγε κλυτὰ δῶρα ποδώκει Πηλεΐωνι,
 ἐξ ἵππων δ' ἀπέβαινεν ἐπὶ χθόνα φώνησέν τε·
 „ὦ γέρον, ἦ τοι ἐγὼ θεὸς ἄμβροτος εἰλήλουθα, 460
 Ἑρμείας· σοὶ γάρ με πατὴρ ἅμα πομπὸν ὄπασσεν.

ἀλλ' ἦ τοι μὲν ἐγὼ πάλιν εἰσομαι, οὐδ' Ἀχιλλῆος
 ὀφθαλμοὺς εἴσειμι· νεμεσσητὸν δέ κεν εἴη
 ἀθάνατον θεὸν ὧδε βροτοὺς ἀγαπαζέμεν ἄντην·
 τὴν δ' εἰσελθὼν λαβὲ γούνατα Πηλεΐωνος, 465
 καὶ μιν ὑπὲρ πατρὸς καὶ μητέρος ἠνυκόμοιο
 λίσσεο καὶ τέκεος, ἵνα οἱ σὺν θυμὸν ὀρίνης.“

ὣς ἄρα φωνήσας ἀπέβη πρὸς μακρὸν Ὀλυμπον
 Ἑρμείας· Πρίαμος δ' ἐξ ἵππων ἄλτο χαμᾶζε,
 Ἰδαίον δὲ κατ' αὐθι λίπεν· ὁ δὲ μίμνεν ἐρύκων 470
 ἵππους ἡμιόνους τε. γέρον δ' ἰθὺς κίεν οἴκου,
 τῇ δ' Ἀχιλεὺς ἔξεσκε διίφιλος. ἐν δὲ μιν αὐτὸν
 εὖρ', ἔταροι δ' ἀπάνευθε καθεΐατο· τῷ δὲ δὴ οἶω,
 ἥρως Ἀυτομέδων τε καὶ Ἀλκιμος ὄζος Ἄρης,
 ποίπνυον παρεόντες· νέον δ' ἀπέληγεν ἐδωδῆς 475
 ἔσθων καὶ πίνων· ἔτι καὶ παρέκειτο τράπεζα.
 τοὺς δ' ἔλαθ' εἰσελθὼν Πρίαμος μέγας, ἄγχι δ' ἄρα σταῖς
 χερσὶν Ἀχιλλῆος λάβε γούνατα καὶ κύσε χεῖρας
 δεινὰς ἀνδροφόνους, αἷ οἱ πολέας κτάνον υἷας.
 ὥς δ' ὅτ' ἂν ἄνδρ' ἄτη πυκινὴ λάβῃ, ὅς τ' ἐνὶ πάτρῃ 480
 φῶτα κατακτείνας ἄλλων ἐξίκετο δῆμον,
 ἀνδρὸς ἐς ἀφνειοῦ, θάμβος δ' ἔχει εἰσορόωντας,
 ὥς Ἀχιλεὺς θάμβησεν ἰδὼν Πρίαμον θεοειδέα·
 θάμβησαν δὲ καὶ ἄλλοι, ἐς ἀλλήλους δὲ ἰδοντο.
 τὸν καὶ λισσόμενος Πρίαμος πρὸς μῦθον ἔειπεν· 485
 „μνησάι πατρὸς σοῦ, θεοῖς ἐπιείκελ' Ἀχιλλεῦ,
 τηλίκου, ὥς περ ἐγών, ὁλοῦ ἐπὶ γῆραος οὐδῶ.
 καὶ μὲν πού κείνον περὶναιέται ἀμφὶς ἔοντες
 τείρουσ', οὐδέ τις ἔστιν ἀρῆν καὶ λοιγὸν ἀμῦναι.
 ἀλλ' ἦ τοι κείνός γε σέθεν ζώοντος ἀκούων 490
 χαίρει τ' ἐν θυμῷ ἐπὶ τ' ἔλπεται ἡματα πάντα
 ὄψεσθαι φίλον υἱὸν ἀπὸ Τροίηθεν ἰόντα·

αὐτὰρ ἐγὼ πανάποτμος, ἐπεὶ τέκον υἷας ἀρίστους
 Τροίῃ ἐν εὐρείῃ, τῶν δ' οὐ τινά φημι λελεῖσθαι.
 πεντήκοντά μοι ἦσαν, ὅτ' ἤλυθον υἷες Ἀχαιῶν· 495
 ἐννεακαίδεκα μὲν μοι ἰῆς ἐκ νηδύος ἦσαν,
 τοὺς δ' ἄλλους μοι ἔτικτον ἐνὶ μεγάροισι γυναῖκες.
 τῶν μὲν πολλῶν θεοῦρος Ἄρης ὑπὸ γούνατ' ἔλυσεν·
 ὃς δέ μοι οἶος ἔην, εἶρυντο δὲ ἄστυ καὶ αὐτούς,
 τὸν σὺ πρῶην κτεῖνας ἀμυννόμενον περὶ πάτρης, 500
 Ἔκτορα. τοῦ νῦν εἵνεχ' ἱκάνω νῆας Ἀχαιῶν,
 λυσόμενος παρὰ σείο, φέρω δ' ἀπερείσι' ἄποινα.
 ἀλλ' αἰδεῖο θεούς, Ἀχιλεῦ, αὐτόν τ' ἐλέησον
 μνησάμενος σοῦ πατρός· ἐγὼ δ' ἐλεεωτότερός περ,
 ἔτλην δ', οἷ' οὐ πῶ τις ἐπιχθόνιος βροτὸς ἄλλος, 505
 ἀνδρὸς παιδοφόνοιο ποτὶ στόμα χεῖρ' ὀρέγεσθαι.

ὥς φάτο, τῷ δ' ἄρα πατὴρ ὕφ' ἱμερον ὥρσε γόοιο·
 ἀψάμενος δ' ἄρα χεῖρὸς ἀπώσατο ἦκα γέροντα.
 τῷ δὲ μνησαμένῳ ὁ μὲν Ἔκτορος ἀνδροφόνοιο
 κλαῖ' ἀδινά, προπάρουθε ποδῶν Ἀχιλλῆος ἔλυσθαις, 510
 αὐτὰρ Ἀχιλλεὺς κλαῖεν ἐὼν πατέρ', ἄλλοτε δ' αὐτε
 Πάτροκλον· τῶν δὲ στοναχὴ κατὰ δῶματ' ὀρώρειν.
 αὐτὰρ ἐπεὶ ῥα γόοιο τετάρπετο δῖος Ἀχιλλεύς,
 [καὶ οἱ ἀπὸ πρᾶπίδων ἦλθ' ἱμερος ἡδ' ἀπὸ γυνίων,]
 αὐτίκ' ἀπὸ θυρόνου ὥρτο, γέροντα δὲ χεῖρὸς ἀνίστη,
 οἰκτεῖρων πολιόν τε κάρη πολιόν τε γένειον, 516
 καὶ μιν φωνήσας ἔπεα πτερόεντα προσηύδα·
 „ἄ δαίλ', ἧ δὴ πολλὰ κάκ' ἄνσχεο σὸν κατὰ θυμόν.
 πῶς ἔτλης ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν ἐλθέμεν οἶος,
 ἀνδρὸς ἐς ὀφθαλμούς, ὅς τοι πολέας τε καὶ ἐσθλοὺς
 υἷεας ἐξενάριξας; σιδήρειόν νύ τοι ἦτορ. 521
 ἀλλ' ἄγε δὴ κατ' ἄρ' ἔξεν ἐπὶ θυρόνου, ἄλγεα δ' ἔμψης
 ἐν θυμῷ κατακείσθαι ἐάσομεν ἀχνύμενοί περ·

οὐ γάρ τις προήξεις πέλεται κρυεροῖο γόοιο.
 ὥς γάρ ἐπεκλώσαντο θεοὶ δειλοῖσι βροτοῖσιν, 525
 ζῶειν ἀχνυμένοις· αὐτοὶ δέ τ' ἀκηδέες εἰσίν.
 δοιοὶ γάρ τε πῖθοι κατακείαται ἐν Διὸς οὐδὲι
 δῶρων, οἷα δίδωσι, κακῶν, ἕτερος δὲ ἑάων·
 ᾧ μὲν κ' ἀμμίξας δῶη Ζεὺς τερπικέραννος,
 ἄλλοτε μὲν τε κακῷ ὃ γε κύρεται, ἄλλοτε δ' ἐσθλῷ·
 ᾧ δέ κε τῶν λυγρῶν δῶη, λωβητὸν ἔθηκεν, 531
 καὶ ἑ κακῇ βούβρωστις ἐπὶ χθόνα διὰν ἐλαύνει,
 φοιτᾷ δ' οὔτε θεοῖσι τετιμένος οὔτε βροτοῖσιν.
 ὥς μὲν καὶ Πηλῆι θεοὶ δόσαν ἀγλαὰ δῶρα
 ἐκ γενετῆς· πάντας γὰρ ἐπ' ἀνθρώπους ἐκέκαστο 535
 ὄλβῳ τε πλούτῳ τε, ἄνασσε δὲ Μυρμιδόνεσσιν,
 καὶ οἱ θνητῷ ἔοντι θεῶν ποιήσαν ἄκοιτιν.
 ἀλλ' ἐπὶ καὶ τῷ θῆκε θεὸς κακόν, ὅτι οἱ οὐ τι
 παίδων ἐν μεγαροῖσι γονὴ γένετο κρείοντων,
 ἀλλ' ἓνα παῖδα τέκεν παναώριον· οὐδέ νυ τὸν γε 540
 γηράσκοντα κομίζω, ἐπεὶ μάλα τηλόθι πάτρης
 ἤμαι ἐνὶ Τροίῃ σέ τε κήδων ἠδὲ σὰ τέκνα.
 καὶ σέ, γέρον, τὸ πρὶν μὲν ἀκούομεν ὄλβιον εἶναι·
 ὅσσον Λέσβος ἄνω, Μάκαρος ἔδος, ἐντὸς ἑέργει
 καὶ Φρυγίῃ καθύπερθε καὶ Ἑλλήσποντος ἀπείρων, 545
 τῶν σε, γέρον, πλούτῳ τε καὶ νιάσι φασὶ κεκάσθαι.
 αὐτὰρ ἐπεὶ τοι πῆμα τόδ' ἤγαγον Οὐρανίωνες,
 αἰεὶ τοι περὶ ἄστν μάχαι τ' ἀνδροκτασίαι τε.
 ἄνσχεο, μηδ' ἀλίαςτον ὀδύρεο σὸν κατὰ θυμόν·
 οὐ γάρ τι προήξεις ἀκαχήμενος νῖος ἤῃος, 550
 οὐδέ μιν ἀνστήσεις· πρὶν καὶ κακὸν ἄλλο πάθῃσθα·
 τὸν δ' ἡμεῖβετ' ἔπειτα γέρον Πριάμος θεοειδής·
 „μή μέ πω ἐς θρόνον ἴξε, διοτρεφές, ὄφρα κεν Ἐκτωρ
 κῆται ἐνὶ κλισίῃσιν ἀκηδής, ἀλλὰ τάχιστα

λῦσον, ἔν' ὀφθαλμοῖσιν ἰδῶ, σὺ δὲ δέξαι ἄποινα 555
πολλά, τὰ τοι φέρομεν. σὺ δὲ τῶνδ' ἀπόναιο, καὶ ἔλθοις
σὴν ἐς πατρίδα γαῖαν, ἐπεὶ με πρῶτον ἔασας
[αὐτόν τε ζῶειν καὶ ὄραν φάος ἡελίοιο].“

τὸν δ' ἄρ' ὑπόδρα ἰδὼν προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
„μηκέτι νῦν μ' ἐρέθιζε, γέρον· νοέω δὲ καὶ αὐτὸς 560
Ἐκτορά τοι λῦσαι· Διόθεν δέ μοι ἄγγελος ἦλθεν
μήτηρ, ἣ μ' ἔτεκεν, θυγάτηρ ἁλίοιο γέροντος·
καὶ δὲ σὲ γινώσκω, Πρίαμε, φρεσίν, οὐδέ με λήθεις,
ὅττι θεῶν τίς σ' ἤγε θεὰς ἐπὶ νῆας Ἀχαιῶν.
οὐ γάρ κε τλαίῃ βροτὸς ἐλθέμεν, οὐδὲ μάλ' ἥβων, 565
ἐς στρατόν· οὐδὲ γάρ ἂν φυλακοὺς λάθοι, οὐδέ κ' ὀχῆα
φεία μετοχλίσσειε θυράων ἡμετεράων.

τῷ νῦν μὴ μοι μάλλον ἐν ἄλγεσι θυμὸν ὀρίνης,
μὴ σε, γέρον, οὐδ' αὐτὸν ἐνὶ κλισίῃσιν ἐάσω
καὶ ἱκέτην περ ἔοντα, Διὸς δ' ἀλίτωμαι ἐφετμάς.“ 570

ὣς ἔφατ', ἐδείσεν δ' ὁ γέρον καὶ ἐπείθετο μύθῳ.
Πηλεΐδης δ' οἴκοιο λέων ὥς ἄλτο θύραζε,
οὐκ οἶος· ἅμα τῷ γε δῶμα θεράποντες ἔποντο,
ἥρως Αὐτομέδων ἠδ' Ἄλκιμος, οὓς ἔα μάλιστα
τὶ' Ἀχιλεὺς ἐτάρων μετὰ Πάτροκλόν γε θανόντα. 575
οἱ τόθ' ὑπὸ ζυγόφιν λύον ἵππους ἡμιόνους τε,
ἐς δ' ἄγαγον κήρυκα καλῆτορα τοῖο γέροντος,
καδ δ' ἐπὶ δίφρου εἶσαν· ἐυσσώτρου δ' ἀπ' ἀπήνης
ἦρεον Ἐκτορέης κεφαλῆς ἀπερείσι' ἄποινα.
καδ δ' ἔλιπον δύο φάρε' ἐνννητόν τε χιτῶνα, 580
ῥομφαία νέκυν πυκάσας δοίῃ οἰκόνδε φέρεσθαι.
θμῶς δ' ἐκκαλέσας λοῦσαι κέλετ' ἀμφί τ' ἀλεῖψαι,
νόσφιν ἀειράσας, ὥς μὴ Πρίαμος ἰδοὶ νύδον,
μὴ ὁ μὲν ἀχνυμένην κραδίῃ χόλον οὐκ ἐρύσαιο
παῖδα ἰδὼν, Ἀχιλλῆϊ δ' ὀρινθείῃ φίλον ἦτορ 585

καί ἐ κατακτείνειε, Διὸς δ' ἀλίηται ἐφετμάς.
 τὸν δ' ἐπεὶ οὖν δμῳαὶ λοῦσαν καὶ χρίσαν ἐλαίῳ,
 ἄμφι δέ μιν φᾶρος καλὸν βάλλον ἡδὲ χιτῶνα,
 αὐτὸς τόν γ' Ἀχιλεὺς λεχέων ἐπέθηκεν αἰέρας,
 σὺν δ' ἑταροὶ ἥειραν ἐνξέστην ἐπ' ἀπήνην. 590

ᾧ μωξέν τ' ἄρ' ἐπειτα, φίλον δ' ὀνόμηνεν ἑταῖρον·
 „μή μοι, Πάτροκλε, σκυδμαινέμεν, αἶ κε πύθηαι
 εἰν Ἄιδός περ ἐών, ὅτι Ἑκτορα δῖον ἔλυσα
 πατρὶ φίλῳ, ἐπεὶ οὗ μοι αἰεκέα δῶκεν ἄποινα.
 σοὶ δ' αὖ ἐγὼ καὶ τῶνδ' ἀποδάσσομαι, ὅσσ' ἐπέοικεν.“ 595

ἡ ῥα καὶ ἐς κλισίην πάλιν ἦε δῖος Ἀχιλλεύς,
 ἔξετο δ' ἐν κλισίῳ πολυδαϊδάλῳ, ἐνθεν ἀνέστη,
 τοίχου τοῦ ἐτέρου, ποτὶ δὲ Πριάμον φάτο μῦθον·
 „νῖδος μὲν δῆ τοι λέλυται, γέρον, ὥς ἐκέλευες,
 κεῖται δ' ἐν λεχέεσσ'· ἅμα δ' ἡοῖ φαινομένηφιν 600
 ὄψαι αὐτὸς ἄγων· νῦν δὲ μνησώμεθα δόρπου.
 καὶ γάρ τ' ἡύκομος Νιόβη ἐμνήσατο σίτου,
 τῇ περ δώδεκα παῖδες ἐνὶ μεγάρουσιν ὄλοντο,
 ἔξ μὲν θυγατέρες, ἔξ δ' υἱέες ἡβῶντες.

τοὺς μὲν Ἀπόλλων πέφνευ ἀπ' ἀργυρέοιο βιοῖο 605
 χωόμενος Νιόβῃ, τὰς δ' Ἀρτεμις λοχέαιρα,
 οὐνεκ' ἄρα Λητοὶ ἰσάσκετο καλλιπαρῆφ·

φῇ δοιὼ τεκέειν, ἡ δ' αὐτὴ γείνατο πολλούς·
 τῷ δ' ἄρα, καὶ δοιὼ περ ἐόντ', ἀπὸ πάντας ὄλεσαν.
 οἱ μὲν ἄρ' ἐννήμαρ κέατ' ἐν φόνῳ, οὐδέ τις ἦεν 610
 κατθάψαι, λαοὺς δὲ λίθους ποίησε Κρονίων·

τοὺς δ' ἄρα τῇ δεκάτῃ θάψαν θεοὶ Οὐρανίῳνες.
 ἡ δ' ἄρα σίτου μνήσατ', ἐπεὶ κάμε δάκρυ χέουσα.
 [νῦν δέ που ἐν πέτρῃσιν, ἐν οὖρεσιν οἰοπόλοισιν,
 ἐν Σιπύλῳ, ὅθι φασὶ θεάων ἔμμεναι εὐνὰς 615
 νυμφάων, αἶ τ' ἄμφ' Ἀχελώϊον ἐρρώσαντο,

ἐνθα λίθος περ ἐοῦσα θεῶν ἐκ κήδεα πέσσει.]
 ἀλλ' ἄγε δὴ καὶ νῶι μεδώμεθα, δῖε γεραίε,
 σίτου· ἐπειτά κεν αὐτε φίλον παῖδα κλαίοισθα
 Ἴλιον εἰσαγαγών· πολυδάκρυτος δέ τοι ἔσται.“ 620

ἦ καὶ ἀναΐξας θῖν ἄργυρον ὥκνς Ἀχιλλεύς
 σφάξ'· ἔταροι δ' ἔδερόν τε καὶ ἄμφεπον εὖ κατὰ κόσμον,
 μίστυλλον τ' ἄρ' ἐπισταμένως πειρᾶν τ' ὀβελοῖσιν,
 ὥπτησάν τε περιφραδέως ἐρύσαντό τε πάντα.

Αὐτομέδων δ' ἄρα σίτον ἐλὼν ἐπένειμε τραπέξῃ 625
 καλοῖς ἐν κανέοισιν· ἀτὰρ κρέα νεῖμεν Ἀχιλλεύς.

οἱ δ' ἐπ' ὀνείαθ' ἐτοῖμα προκείμενα χεῖρας ἱαλλον.
 αὐτὰρ ἐπεὶ πόσιος καὶ ἐδητύος ἐξ ἔρον ἔντο,
 ἦ τοι Δαρδανίδης Πρίαμος θαύμαζ' Ἀχιλλῆα,
 ὅσσος ἔην οἴος τε· θεοῖσι γὰρ ἅντα ἐφύκειν· 630

αὐτὰρ ὁ Δαρδανίδην Πρίαμον θαύμαζεν Ἀχιλλεύς,
 εἰσορόων ὕπιν τ' ἀγαθὴν καὶ μῦθον ἀκούων.

αὐτὰρ ἐπεὶ τάρπησαν ἐς ἀλλήλους δρόωντες,
 τὸν πρότερος προσέειπε γέρων Πρίαμος θεοειδής·
 „λέξον νῦν με τάχιστα, διοτρεφές, ὄφρα καὶ ἤδη 635
 ὕπνω ὑπο γλυκερῷ ταρπώμεθα κοιμηθέντες·

οὐ γάρ πω μύσαν ὅσσε ὑπὸ βλεφάροισιν ἐμοῖσιν,
 ἐξ οὗ σῆς ὑπὸ χερσὶν ἐμὸς πάϊς ὤλεσε θυμόν,
 ἀλλ' αἰεὶ στενάχω καὶ κήδεα μυρία πέσσω,
 αὐλῆς ἐν χόρτοισι κυλινδόμενος κατὰ κόπρον. 640

νῦν δὴ καὶ σίτου πασάμην καὶ αἶθροπα οἶνον
 λαυκανίης καθέηκα· πάρος γε μὲν οὐ τι πεπάσμην.“

ἦ ῥ', Ἀχιλλεύς δ' ἐτάροισιν ἰδὲ δμωῇσι κέλευσεν
 δέμνι' ὑπ' αἰθούσῃ θέμεναι καὶ ῥήγεα καλὰ
 πορφυρέ' ἐμβαλέειν, στορέσαι τ' ἐφύπερθε τάπητας, 645
 χλαίνας τ' ἐνθήμεναι οὐλας καθύπερθεν ἔσασθαι.
 αἱ δ' ἴσαν ἐκ μεγάρου δάος μετὰ χερσὶν ἔχουσαι,

αἶψα δ' ἄρα στόρεσαν δοιῶ λέχε' ἐγκονέουσαι.
 τὸν δ' ἐπικερτομέων προσέφη πόδας ὠκὺς Ἀχιλλεύς·
 „ἐκτὸς μὲν δὴ λέξο, γέρον φίλε, μή τις Ἀχαιῶν 650
 ἐνθάδ' ἐπέλθῃσιν βουληφόρος, οἳ τέ μοι αἰεὶ
 βουλὰς βουλεύουσι παρήμενοι, ἣ θέμις ἐστίν.
 τῶν εἰ τίς σε ἰδοίτο θοὴν διὰ νύκτα μέλαιναν,
 αὐτίκ' ἂν ἐξείποι Ἀγαμέμνονι ποιμένι λαῶν,
 καὶ κεν ἀνάβληται λύσιος νεκροῖο γένηται. 655
 ἀλλ' ἄγε μοι τόδε εἰπὲ καὶ ἀτρεκέως κατάλεξον,
 ποσσῆμαρ μέμονας κτερεῖζέμεν Ἔκτορα δῖον,
 ὄφρα τέως αὐτός τε μένω καὶ λαὸν ἐρύκω.“

τὸν δ' ἡμεῖβετ' ἔπειτα γέρον Πρίαμος θεοειδής·
 „εἰ μὲν δὴ μ' ἐθέλεις τελέσαι τάφον Ἔκτορι δῖῳ, 660
 ὧδέ κέ μοι ῥέζων, Ἀχιλεῦ, κεχαρισμένα θείης.
 [οἷσθα γάρ, ὥς κατὰ ἄστν ἐέλμεθα, τηλόθι δ' ὕλη
 ἀξέμεν ἐξ ὄρεος, μάλα δὲ Τρῶες δεδίασιν.]
 ἐννήμαρ μὲν κ' αὐτὸν ἐνὶ μεγάροις γοάοιμεν,
 τῇ δεκάτῃ δέ κε θάπτοιμεν δαινυτό τε λαός, 665
 ἐνδεκάτῃ δέ κε τύμβον ἐπ' αὐτῷ ποιήσαιμεν,
 τῇ δὲ δυωδεκάτῃ πολεμίζομεν, εἰ περ ἀνάγκη.“

τὸν δ' αὖτε προσέειπε ποδάρκης δῖος Ἀχιλλεύς·
 „ἔσται τοι καὶ ταῦτα, γέρον Πρίαμ', ὥς σὺ κελεύεις·
 σχήσω γὰρ πόλεμον τόσσον χρόνον, ὅσσον ἄνωγας.“ 670

ὥς ἄρα φωνήσας ἐπὶ καρπῷ χεῖρα γέροντος
 ἔλλαβε δεξιτερὴν, μή πως δείσει' ἐνὶ θυμῷ.
 οἱ μὲν ἄρ' ἐν προδόμῳ δόμον αὐτόθι κοιμήσαντο,
 κῆρυξ καὶ Πρίαμος, πυκινὰ φρεσὶ μήδε' ἔχοντες,
 αὐτὰρ Ἀχιλλεύς εὐδὲ μυκῶ κλισίης ἐνπῆκτον· 675
 τῷ δὲ Βρισηὶς παρελέξατο καλλιπάρῃος.

ἄλλοι μὲν ῥα θεοὶ τε καὶ ἄνδρες ἱπποκορυσταὶ
 εὐδὸν παννύχιοι, μαλακῷ δεδμημένοι ὕπνῳ·

ἀλλ' οὐχ Ἑρμείαν ἐριούνιον ὕπνος ἔμαρπτεν,
 ὁρμαίνοντ' ἀνὰ θυμόν, ὅπως Πριάμον βασιλῆα 680
 νηῶν ἐκπέμψειε λαθὼν ἱεροὺς πυλαωρούς.

στῇ δ' ἄρ' ὑπὲρ κεφαλῆς καὶ μιν πρὸς μῦθον ἔειπεν·
 „ὦ γέρον, οὐ νύ τι σοί γε μέλει κακόν, οἷον ἔθ' εὐδεις
 ἀνδράσιν ἐν δηίοισιν, ἐπεὶ σ' εἴασεν Ἀχιλλεύς.

καὶ νῦν μὲν φίλον υἷον ἐλύσαο, πολλὰ δ' ἔδωκας· 685
 σεῖο δέ κε ζωοῦ καὶ τρεῖς τόσα δοῖεν ἄποινα
 παῖδες τοὶ μετόπισθε λελειμμένοι, αἳ κ' Ἀγαμέμνων
 γνῶν σ' Ἀτρεΐδης, γνῶσι δὲ πάντες Ἀχαιοί.“

ὣς ἔφατ', ἔδεισεν δ' ὁ γέρον, κήρυκα δ' ἀνίστη.
 τοῖσιν δ' Ἑρμείας ξεῦξ' ἵππους ἡμιόνους τε, 690
 ῥίμφα δ' ἄρ' αὐτὸς ἔλαυνε κατὰ στρατόν, οὐδέ τις ἔγνω.
 ἀλλ' ὅτε δὴ πόρον ἶξον ἐυρρεὺς ποταμοῖο,

[Ἐάνθου δινήεντος, δν ἀθάνατος τέκετο Ζεύς,]
 Ἑρμείας μὲν ἔπειτ' ἀπέβη πρὸς μακρὸν Ὀλυμπον,
 ἡὼς δὲ κροκόπεπλος ἐκίδνατο πᾶσαν ἐπ' αἶαν, 695
 οἱ δ' εἰς ἄστν ἔλων οἴμωγῇ τε στοναχῇ τε

ἵππους, ἡμίονοι δὲ νέκυν φέρουν. οὐδέ τις ἄλλος
 ἔγνω πρόσθ' ἀνδρῶν καλλιζώνων τε γυναικῶν,
 ἀλλ' ἄρα Κασσάνδρῃ, ἱκέλῃ χρυσῇ Ἀφροδίτῃ,

Πέργαμον εἰσαναβάσα φίλον πατέρ' εἰσενόησεν 700
 ἐστεῶτ' ἐν δίφρῳ, κήρυκά τε ἀστυβοώτην·
 τὸν δ' ἄρ' ἐφ' ἡμιόνων ἶδε κείμενον ἐν λεχέεσσιν.

κώκυσέν τ' ἄρ' ἔπειτα γέγωνέ τε πᾶν κατὰ ἄστν·
 „ὄψεσθε, Τρῶες καὶ Τρωάδες, Ἔκτορ' ἰόντες,
 εἴ ποτε καὶ ζῶοντι μάχης ἐκνοστήσαντι 705

χαίρειτ', ἐπεὶ μέγα χάριμα πόλει τ' ἦν παντί τε δήμῳ.“

ὣς ἔφατ', οὐδέ τις αὐτόθ' ἐνὶ πτόλει λίπειτ' ἀνήρ
 οὐδὲ γυνή· πάντας γὰρ ἀάσχετον ἵκετο πένθος·
 ἀγχοῦ δὲ ξύμβληντο πυλάων νεκρὸν ἄγοντι.

πρῶται τόν γ' ἄλοχός τε φίλη καὶ πότνια μήτηρ 710
 τιλλέσθην, ἐπ' ἄμαξαν ἐντροχον ἄϊξασαι,
 ἀπτόμεναι κεφαλῆς· κλαίων δ' ἀμφίσταθ' ὅμιλος.
 καὶ νύ κε δὴ πρόπαν ἡμαρ ἐς ἠέλιον καταδύντα
 Ἕκτορα δάκρυ χέοντες ὀδύροντο πρὸ πυλάων,
 εἰ μὴ ἄρ' ἐκ δίφροιο γέρων λαοῖσι μετηύδα· 715
 „εἵξατέ μοι οὐρεῦσι διελθέμεν· αὐτὰρ ἔπειτα
 ἄσσεσθε κλανυμοιο, ἐπὴν ἀγάγωμι δόμονδε.“

ὧς ἔφαθ', οἱ δὲ διέστησαν καὶ εἶξαν ἀπήνη.
 οἱ δ' ἐπεὶ εἰσάγαγον κλυτὰ δώματα, τὸν μὲν ἔπειτα
 τρητοῖς ἐν λεχέεσσι θέσαν, παρὰ δ' εἶσαν ἄοιδούς 720
 θρήνων ἐξάρχους, οἳ τε στυγέεσαν ἀοιδὴν
 οἱ μὲν δὴ θρήνεον, ἐπὶ δὲ στενάχοντο γυναικες.
 τῆσιν δ' Ἀνδρομάχη λευκώλενος ἦρχε γόοιο,
 Ἕκτορος ἀνδροφόνιοιό κάρη μετὰ χερσὶν ἔχουσα·
 „ἄνερ, ἀπ' αἰῶνος νέος ὦλεο, καὶ δέ με χήρην 725
 λείπεις ἐν μεγάροισι· πάϊς δ' ἔτι νήπιος αὐτως,
 δν τέκομεν σὺ τ' ἐγὼ τε δυσάμμοροι, οὐδέ μιν οἶω
 ἦβην ἔξεσθαι· πρὶν γὰρ πόλις ἦδε κατ' ἄκρης
 πέρσεται· ἥ γὰρ Ὀλῳας ἐπίσκοπος, ὅς τέ μιν αὐτὴν
 ῥύσκει, ἔχεις δ' ἄλόχους κεδνὰς καὶ νήπια τέκνα· 730
 αἰ δὴ τοι τάχα νηυσὶν ὀχῆσονται γλαφυρῆσιν,
 καὶ μὲν ἐγὼ μετὰ τῆσι· σὺ δ' αὖ, τέκος, ἥ ἐμοὶ αὐτῇ
 ἔψαι, ἔνθα κεν ἔργα ἀεικέα ἐργάζοιο
 ἀθλεύων πρὸ ἄνακτος ἀμειλίχον· ἥ τις Ἀχαιῶν
 ῥίψει χειρὸς ἐλὼν ἀπὸ πύργου, λυγρὸν ὄλεθρον, 735
 χωόμενος, ᾧ δὴ πού ἀδελφεὸν ἔκτανεν Ἕκτωρ
 ἢ πατέρ' ἢ καὶ υἱόν, ἐπεὶ μάλα πολλοὶ Ἀχαιῶν
 Ἕκτορος ἐν παλάμῃσιν ὀδᾶξ ἔλον ἄσπετον οὐδας.
 οὐ γὰρ μείλιχος ἔσκε πατήρ τεός ἐν δαΐ λυγρῇ·
 τῷ καὶ μιν λαοὶ μὲν ὀδύρονται κατὰ ἄστυ, 740

ἄρρητον δὲ τοκεῦσι γόον καὶ πένθος ἔθηκεας,
 Ἔκτορ· ἐμοὶ δὲ μάλιστα λελείψεται ἄλγεα λυγρά·
 οὐ γάρ μοι θνήσκων λεχέων ἐκ χεῖρας ὄρεξας,
 οὐδέ τί μοι εἶπες πυκινὸν ἔπος, οὗ τέ κεν αἰεὶ
 μεμνήμην νύκτας τε καὶ ἡμέατα δάκρυ χέουσα.“ 745

ὣς ἔφατο κλαίουσ', ἐπὶ δὲ στενάχοντο γυναῖκες.
 τῆσιν δ' αὖθ' Ἑκάβη ἀδινού ἐξήρχε γόοιο·
 „Ἔκτορ, ἐμῷ θυμῷ πάντων πολὺ φίλτατε παίδων,
 ἥ μὲν μοι ζωὸς περ ἐὼν φίλος ἦσθα θεοῖσιν·
 οἱ δ' ἄρα σεῦ κήδοντο καὶ ἐν θανάτοιο περ αἰσῃ. 750
 ἄλλους μὲν γὰρ παῖδας ἐμοὺς πόδας ὦκὺς Ἀχιλλεύς
 πέρνασχ', ὅν τιν' ἔλεσκε, πέρην ἁλὸς ἀτρυγέτοιο,
 ἐς Σάμον ἐς τ' Ἴμβρον καὶ Ἀἴμον ἀμιχθαλόεσσαν·
 σεῦ δ' ἐπεὶ ἐξέλετο ψυχὴν ταυαήκει χαλκῷ,
 πολλὰ ὀυστάζεσκεν ἐοῦ περὶ σῆμ' ἐτάροιο 755
 Πατρόκλου, τὸν ἔπεφνες· ἀνέστησεν δέ μιν οὐδ' ὥς·
 νῦν δέ μοι ἐρσήεις καὶ πρόσφατος ἐν μεγάροισιν
 κεῖσθαι, τῷ Ἰκελος, ὅν τ' ἀργυρότοξος Ἀπόλλων
 οἷς ἀγανοῖς βελέεσσιν ἐποιχόμενος κατέπεφνε.“

ὣς ἔφατο κλαίουσα, γόον δ' ἄλλαστον ὄρινεν. 760
 τῆσι δ' ἔπειθ' Ἑλένη τριτάτη ἐξήρχε γόοιο·
 „Ἔκτορ, ἐμῷ θυμῷ δαέρων πολὺ φίλτατε πάντων, —
 ἥ μὲν μοι πόσις ἐστὶν Ἀλέξανδρος θεοειδής,
 ὅς μ' ἄγαγε Τροίηνδ'· ὥς πρὶν ὥφελλον ὀλέσθαι —
 ἦδη γὰρ νῦν μοι τόδ' εἰκοστὸν ἔτος ἐστίν, 765
 ἐξ οὗ κεῖθεν ἔβην καὶ ἐμῆς ἀπελήλυθα πάτρης·
 ἀλλ' οὐ πω σεῦ ἄκουσα κακὸν ἔπος οὐδ' ἀσύφηλον·
 ἀλλ' εἴ τίς με καὶ ἄλλος ἐνὶ μεγάροισιν ἐνίπτοι
 δαέρων ἢ γαλόων ἢ εἰνατέρων ἐνπέπλων,
 ἢ ἐκυρή — ἐκυρὸς δὲ πατήρ ὥς ἦπιος αἰεὶ —, 770
 ἀλλὰ σὺ τόν γ' ἐπέεσσι παραιφάμενος κατέρυνκας
 σῇ τ' ἀγανοφροσύνῃ καὶ σοῖς ἀγανοῖς ἐπέεσσιν.

τῷ σέ θ' ἅμα κλαίω καὶ ἔμ' ἄμμορον ἀχνυμένη κῆρ·
οὐ γάρ τις μοι ἔτ' ἄλλος ἐνὶ Τροίῃ εὐρείῃ
ἦπιος οὐδὲ φίλος, πάντες δέ με πεφρίκασιν.“ 775

ὣς ἔφατο κλαίουσ', ἐπὶ δ' ἔστεινε δῆμος ἀπείρων.
λαοῖσιν δ' ὁ γέρων Πριάμος μετὰ μῦθον ἔειπεν·
„ἄξετε νῦν, Τρῶες, ξύλα ἄστυδε, μηδέ τι θυμῷ
δείσῃτ' Ἀργείων πυκινὸν λόχον· ἡ γὰρ Ἀχιλλεὺς
πέμπων μ' ὧδ' ἐπέτελλε μελαινώων ἀπὸ νηῶν, 780
μὴ πρὶν πημανέειν, πρὶν δωδεκάτη μόλῃ ἡώς.“

ὣς ἔφαθ', οἱ δ' ὑπ' ἀμάχησιν ῥόας ἡμιόνους τε
ζεύγνυσαν, αἶψα δ' ἔπειτα πρὸ ἄστεος ἡγερέθοντο.
ἐννῆμαρ μὲν τοί γε ἀγίνεον ἄσπετον ὕλην·
ἀλλ' ὅτε δὴ δεκάτῃ ἐφάνη φασσίμβροτος ἡώς, 785
καὶ τότε ἄρ' ἐξέφερον θρασὺν Ἑκτορα δάκρυ χέοντες,
ἐν δὲ πυρῇ ὑπάτῃ νεκρὸν θέσαν, ἐν δ' ἔβαλον πῦρ.
ἦμος δ' ἡριγένεια φάνη ροδοδάκτυλος ἡώς,
τῆμος ἄρ' ἀμφὶ πυρῇν κλυτοῦ Ἑκτορος ἦγρετο λαός.
[αὐτὰρ ἐπεὶ ῥ' ἦγερθεν ὁμηγερέες τε γέγοντο,] 790

πρῶτον μὲν κατὰ πυρκαϊὴν σβέσαν αἰθοπι οἶνφ
πᾶσαν, ὁπόσσον ἐπέσχε πυρὸς μένος· αὐτὰρ ἔπειτα
ὅστέα λευκὰ λέγοντο κασίγνητοί θ' ἔταροί τε
μυρόμενοι, θαλερὸν δὲ κατείβετο δάκρυ παρειῶν.
καὶ τὰ γε χρυσεῖην ἐς λάρνακα θῆκαν ἐλόντες, 795
πορφυρέοις πέπλοισι καλύψαντες μαλακοῖσιν·
αἶψα δ' ἄρ' ἐς κοίλῃν κάπετον θέσαν, αὐτὰρ ὑπερθεῖν
πυκνοῖσιν λάεσσι κατεστόρεσαν μεγάλοισιν.
δίμψα δὲ σῆμ' ἔχεαν· περὶ δὲ σκοποὶ εἶατο πάντῃ,
μὴ πρὶν ἐφορμηθεῖεν ἐκνήμιδες Ἀχαιοί. 800

χεύαντες δὲ τὸ σῆμα πάλιν κίον· αὐτὰρ ἔπειτα
εὖ συναγειρόμενοι δαίνυντ' ἐρικυδέα δαῖτα
δώμασιν ἐν Πριάμοιο διοτρεφέος βασιλῆος.

ὣς οἱ γ' ἀμφίεπον τάφον Ἑκτορος ἱπποδάμοιο.

[The page contains handwritten mathematical notes and calculations, likely related to the study of functions or calculus. The handwriting is cursive and somewhat faded. There are several lines of equations and some diagrams. A prominent equation at the top right is:

$$f(x) = \frac{1}{x^2} = x^{-2}$$

The derivative is calculated as follows:

$$f'(x) = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$$

Below this, there are more calculations involving limits and derivatives, including a section labeled "L'Hopital's Rule".

Digitized by Google

Mac. 1
 Raf. 1
 Kon. 1
 Luch. 1
 Dar. 11
 Burr 1
 Minut 1
 Lorr. 11

M. C. 86
 " 77
 "

6
 2
 6
 9
 7
 4
 5
 7



